श्रीवीतरागायनमः

* भूमिका *

226

समवसरण लक्ष्मी सहित, वर्धमान् जिनराय ।
नमो त्रिवध वंदित चरण, भविजन को सुखदाय ॥
जाके ज्ञान प्रकाशमें, लोक अनन्त समाव ।
जिम समुद्र ढिग गाय खुर, यथानीर दरसाव ॥
वृषभ नाथ जिन आदिदे, पारसलों तेईस ।
मनवच काया भाव धरि, वंदो कर धरि सीस ॥
नमों सकल परमातमा, रहित अठारा दोष ।
छियालीस गुण आदिदे, है अनन्त गुण कोष ॥
वसुगुण समकित आदिजुत, प्रणमों सिद्ध महन्त ।
काल अनन्तानन्त थिति, लोकशिखर निवसन्त ॥
आचारज उवझायगुरु, साधु त्रिविध निग्रन्थ ।
भविजनवासी जननि कों, दरसावे शिवपन्थ ॥
जिन वाणी दिव्य धुनि खिरी, द्वादशांग मय सोय ।
ता सरस्वति कों नमतहों, मनवच काय जिन सोय ॥

एक समय वह था कि बड़े २ विद्वान पण्डित मौजूद थे वह आचार्यों के रचे हुवे संस्कृत और प्राकृत के प्राचीन ग्रंथों को बहुत आसानी से पढ़ सकते थे। ज्यों २ समय व्यतीत हुवा विद्या का प्रचार कम होता गया और संस्कृत पढ़नेवाले बहुत थोड़े रह गये। उन पण्डितों ने अपन

दूरदर्शता से यह समझा कि आइंदा ऐसा समय आवेगा कि इस क़दर विद्या का प्रचार भी नहीं रहेगा चनांचे श्रीमान् पं० सदासुखजी, पं० टोडरमलजी, पं० जयचंदरायजी पं० हेमराजजी और अन्य पण्डितों ने जैनी भाइयों पर यह इहसान किया कि बड़े २ महान ग्रन्थ और सूत्रों की टीका देश भाषा में बहुत सुगम करदी और उनकी दूरदर्शता अब साफ़ तौर पर सहीह साबित हुई क्योंकि काल दोष से संस्कृत विद्या का तो करीब २ अभाव ही है इसलिये कि हज़ारों में भी औसत एक विद्वान का नहीं है इस वक्त १४ लाख जैनी हैं अगर फ़ी हज़ार एक पण्डित तालाश किया जावे तो नहीं मिल सकता। खासकर अंग्रेज़ी राज्य जिस जगह पर है वहां पर तो संस्कृत विद्या का प्रचार बहुतही कम होगया क्योंकि लोग आजीविका के वशीभूत होकर ज़्यादातर राजविद्या को ही पढ़ने लगे हज़ारों विद्यार्थी बी० ए० और एम० ए० पास किये हुए मिलेंगे परन्तु संस्कृत के बी० ए० और एम० ए० यानि शास्त्री और आचार्य्य परीक्षा पास किये हुवे हज़ारों में एक भी जैनी नहीं। शास्त्री और आचार्य्य तो दूर ही रहे भाषा पढ़ने और भाषा के सुगम ग्रन्थ समझने वाले भी नहीं हैं। पाठशालायें अब जगह २ खुलती जाती हैं, मगर देखने और सुनने में यह आया है कि शुरू में तो बच्चों को वहां पढ़ाया जाता है मगर ज्यों ही वह कुछ समझने के क़ाबिल होते हैं उनको अंग्रेजी मदरसों में दाख़िल करा दिया जाता है इसलिये ऐसी पुस्तकों की

आवश्यक्ता है कि जो विद्यार्थी अंग्रेज़ी पढ़ते हुवे अपने पास रखकर सुगमता से याद कर सकें और जैनमत के ग्रन्थों का रहस्यपान कर सकें। मैं कोई पण्डित नहीं हूं संस्कृत नहीं जानता भाषा भी अच्छी तरह नहीं जानता मगर पण्डित जनों की सेवा करने से और उनके व्याख्यान सुनने से कुछ अक्षर पहचानने लगा हूं। मैं ने श्रीसर्वार्थ सिद्धिजीकी स्वाध्यायकी, यह महान ग्रन्थ श्रीऊमास्वामीजी कृत दश सूत्रजी की टीका है। आचार्य्यजी महाराज ने तमाम जैनमतकी द्रव्याण,योग चरणानुयोग और करणानु योग की कथनी को दश सूत्रजी में इस तरह बन्द किया है कि जैसे दरया को कूज़े में बन्द करते हैं। इन ही दश सूत्रजी की २१ हजार श्लोककी टीका श्रीराजवार्तिकजीमें और २० हज़ार श्लोककी टीका श्रीश्लोक वार्तिकजी में है। यह दोनों टीका संस्कृत में है। श्रीराजवार्तिकजी की टीका भाषा में हुई है परन्तु वह भी इतनी कठिन है कि मुशकिलसे समझ में आती है। यह टीका "सर्वार्थसिद्धिजी भाषा में श्रीमान् पं० जयचंदजी ने की है यह टीका सब लोग अच्छी तरह समझ सकते हैं परन्तु उसके आशय को याद रखने के लिये एक सुगम तरीक़ेकी ज़रूरत है। यह तजरबा किया गया है कि जब कोई पुस्तक सवाल जवाब की शकल में करदी जाती है तो बहुत जलदी याद होजाती है और समझमें आजाती है इस लिये ऐसे बच्चोंके लिये जो पाठशाला में पढ़ते हों या ऐसे अंग्रेज़ी मदरसों

में पढ़ते हों जहां क्रमानुसार जैन ग्रन्थों को नहीं पढ़ सकते श्रीसर्वार्थसिद्धिजी के पूरे आशय को सवाल जवाब की शकल मे लिखा है और जहां तक हो सका है भाषा के वही शब्द इसतेमाल किये हैं जो असिल ग्रन्थ में हैं खासकर तारीफ़ों में और बाज़ जगह उर्दू के शब्द इसलिये इसतेमाल किये हैं कि आसानी से मतलब समझ में आजावे। इस पुस्तक के लिखने से मेरी मंशा ज़्यादातर यह है कि पाठशाला में बच्चों को कंठ याद कराई जावे और मुझे आशा है कि श्री सर्वज्ञ देव धर्म की रक्षा के अर्थ मेरे इस आशय को पूरा करेंगे। इस पुस्तक को अच्छी तरह याद करके और समझ कर पढ़ने के बाद भाषा के ग्रन्थ चाहे जैसी गम्भीर द्रव्याणुयोग की कथनी के हों हर शख्स बहुत अच्छी तरह समझ सकेगा।

पण्डितजनों की सेवा में प्रार्थना है कि जैसा प० जयचन्द्र जी ने इस ज़माने के लिये हमपर इहसान किया था ऐसा ही विचार करके अगर इसी तरह और ग्रन्थ मसलन श्री श्लोकवार्तिक जी और गोमट्टसारजी आदि महान ग्रन्थों को सवाल जवाब के तरीक़े में सुगम करदें तो आइंदा नसल को फ़ायदा हो और यह भी प्रार्थना है कि मुझको एक अल्पज्ञ समझ इस पुस्तक को पढ़ें और जो कुछ भूल चूक हो इसमें दुरुस्त करदें उसकी इत्तला मुझको देवें या छपवा देवें ताकि आइन्दा वह दुरुस्त करदी जावे। अ-

अगर यह पुस्तक कारामाद समझें तो बच्चों को पढ़नेकी आज्ञा देवें। यहभी अर्ज़ करदेना ज़रूरी है कि यह पुस्तक एक बड़े प्रसिद्ध पण्डितजी की नज़र से शुरू से आख़ीर तक गुज़र चुकी है। जो ग़लती उन्होंने समझी दुरुस्त करदी है उनके क़लम का लेख मेरे पास मौजूद है।

नेमीदास

सहारनपुर
दिसम्बर सन १९१४ } अग्रवाल दिगाम्बर शुद्ध आम्नाय जैन
एडवुकेट हाईकोर्ट
नार्थवेस्टर्न प्रविन्स (इलाहाबाद)

* सूची-श्रीसर्वार्थसिद्धी *

[अ]

सूची—श्रीसर्वार्थसिद्धि

(ग)

(न)

(व)

(भ)

(म)

(य)

(र)

(ल)

(व)

(श)

(ह)

(क्ष)

इति

॥ श्रीजिनायनमः ॥

प्रश्नोत्तर--श्रीसर्वार्थ सिद्धी

प्रथमोऽध्यायः

[१] आगम किसको कहते हैं॥

उ० शास्त्र अर्थात् [आप्त] भगवान् के उपदेश को कहते हैं

[२] आत्मा किसको कहते हैं॥

उ० जीव को कहते हैं जीव उपयोगमयी चेतना लक्षण है॥

[३] आत्मा आदि है या अनादि॥

उ० आत्मा द्रव्य की अपेक्षा से अनादि है और अनन्त है और पर्य्याय की अपेक्षा से आदि भी है। और सान्त है॥

[४] आत्मा का हित क्या है॥

उ० मोक्ष है, जिस में प्रतिबन्धकता रहित और स्वतन्त्र और नाश रहित स्वात्मोपलब्धि प्रकट होती है॥

भावार्थ—मोक्ष वह है जिसमें अपनी आत्मा की प्राप्ति प्रकट होजाती है और जहां किसीप्रकार से कर्म्मों का आधीनता रहे और आत्मा स्वाधीन होजावे और अपने निज स्वभाव को प्राप्त होकर फिर कभी अपने स्वभाव को न छोड़े॥

[५] आत्मा का गुण क्या है॥

उ० ज्ञान है॥

[६] आप्त किसको कहते हैं॥

उ० अठारह दोष रहित सर्वज्ञ हितोपदेशी आप्त होता है।

[७] आप्तको नमस्कार किसग़रज़के लिये किया जाताहै॥

उ० (१) मंगलके लिये ताकि अभीप्सित कार्य निर्विघ्न समाप्त होजावे।

(२) शिष्टाचार अर्थात् उत्तमपुरुषोंकाआचार पालने केवास्ते।

(३) ग्रंथकी प्रमाणता और उपकार स्मणार्थ किया जाता है।

(४) आत्मा के शुभोपयोग व शुद्धोपयोग की प्राप्त्यार्थ कियाजाताहै।

[८] गुण और गुणी अलहदा हैं या एकही हैं

उ० कथञ्चित एक हैं कथञ्चित जुदे हैं।

[९] तत्व किसको कहते हैं॥

उ० जो चीज़ जिस स्वभाव की है वही स्वभाव उसमें मौजूद होवे उसको तत्व कहते हैं। भावार्थ--तत् सर्वनाम वाची है अर्थात् तत्के कहने से जो चीज़ दुनियामें हैं सब उसमें दाख़िल हैं इसपर त्व प्रत्यय भाव अर्थके लिये अर्थात् ख़ासियत जाहिर करने के लिये लगाया, तत्व होगया, जिसके मानी सब चीजों की ख़ासियत का होना होगये

[१०] तत्वार्थ के मानीबतावो

उ० स्वरूप करके निश्चित जो वस्तु है उसको तत्वार्थ कहते हैं।

भावार्थ—जैसा जिसका स्वरूप होवे उसमें कोई दूषण पैदा न होवे और निश्चय होजावे दूसरे यह मानी ह

अभेद की अपेक्षा से किसी चीजका जैसा रूप है वैसाही होना यही तत्वार्थ है।

नोट—दोनों में यह फ़र्क हुवा कि इसमें निश्चय होनेकी ज़रूरत नहीं है वह खुदही निश्चय रूप समझा जाता है।

[११] अर्थ किसको कहते हैं॥

उ० अर्थ अर्य्यंते से बना है, अर्य्यंते के मानी है जो निश्चय किया जावे, इसलिये अर्थ के मानी है जो निश्चय किया जावे अर्थात् जो प्रमाण नय कर निश्चित किया जावे इसको अर्थ कहते हैं।

[१२] निकट भव्य किसको कहते हैं॥

उ० जिसका संसार में बहुत कम भ्रमण बाक़ी रहे, चाहे वह उसी भव में मोक्ष जावे चाहे एक या दो तथा दस बारह जन्म धारण करके मोक्ष जावे।

[१३] परमाणु की तारीफ़ बयान करो।

उ० परमाणु उस छोटेसे छोटे ज़र्रे का नाम है, जो निरवयव हो और क्रियावान् हो। परमाणु को अणु भी कहते हैं, निरवयव जिसका दूसरा खंड न हो।

[१४] प्रदेश किसको कहते हैं

उ० पुद्गलका ऐसा छोटा ज़र्रा जिस का दूसरा टुकड़ा न होसके, वह टुकड़ा जितनी जगह घेरता है उसको प्रदेश कहते हैं। अर्थात् जितने आकाशके क्षेत्र में परमाणु समावे, उसका नाम प्रदेश है।

(१५) पर्यायके कितने भेद हैं॥

उ० पर्य्याय के दो भेद हैं;

१ सूक्ष्म--जैसे खुशी रंज वग़ैरा।

२ स्थूल-जैसे मनुष्य, तिर्यंच, नारकी इत्यादि और पर्याय के दो भेद यह भी हैं।

अर्थपर्याय--छद्मस्थके प्रकट ज्ञानमें आजाय।

व्यंजनपर्याय छद्मस्थके ज्ञानमें न आवे।

(१६) मोक्ष किसको कहते हैं।

उ० आत्मा कर्मकलंक से छूट जावे, सर्वथा शरीरसे छूट जावे। निर्बाध अविनाश सुख स्वरूप अथात् ऐसा आराम होवे जिसमें विघ्न न पड़ें और न वह आराम दूर होवे। संसार की हालतके ख़िलाफ़ दूसरी हालत पैदा होजावे।

(१७) शास्त्र किसको कहते हैं।

उ० आसका कह्याहुवा वादी प्रतिवादी से उल्लंघन न किया जावे, और कुमार्ग का दूर करनेवाला हो।

[१८] स्कन्ध किसको कहते हैं।

उ० परमाणु के समूह अर्थात् मजमुये को स्कंध कहते हैं।

[१९] सम्यक्त के लफ़्ज़ीमानी क्याहैं और कहांसे निकला है।

उ० यह लफ्ज़ अव्युतपन्न पक्ष की अपेक्षा से तो रूढ़ि है अर्थात् हमेशा से ऐसाही चला आत है और व्युत्पन्न पक्ष की अपेक्षा से यह शब्द अञ्च से बना है, यही इसका मसदर (धातु) है।

अंच के मानी दो हैं,

(१) गति अर्थात् ज्ञान, गमन और प्राप्ति

(२) पूजन अर्थात् सत्कार करना, तारीफ़ करना और प्रशंसा करना।

और फाइलके एतबार से इसका अर्थ क्विप लगानेसे

होताहै। इनमेंसे सम्यक् माने यहांप्रशंसा अर्थात् अच्छे-केलिये हैं अव्युतपन्न पक्ष उस लफ़्ज़ को कहते हैं जो व्याकरण के क़ायदे से किसी मसदर वग़ैरा अर्थात धातु से न वनाये जावें।

व्युत्पन्न पक्ष उस क़ायदे को कहते हैं कि जिससे एक लफ़्ज़ दूसरे लफ़्ज़से वनाया जावे।

मसदर, यह लफ्ज़ अरवी ज़ुवानका है अरबीके व्याकरण में मसदर उस लफ़्ज़ को कहते हैंकि जिससे और लफ़्ज वनाये जावें।

संस्कृत के व्याकरण में उस लफ़्ज़को जिससे और लफ़्ज़ वनाये जावें धातु कहते हैं, फ़ाइल अरवी के व्याकरण में करता को कहते हैं॥

[२१] साधन किस को कहते हैं।

उ० जिसके ज़रये से सिद्ध किया जावे।

और इसको हेतु भी कहते हैं। कारण भी कहते हैं।

[२२] साध्य किसको कहते हैं।

उ० जिसको सिद्ध करना मंज़ूर होवे।

[२३] स्वसम्बेदन किसको कहते हैं॥

उ० अपना ज्ञान आप ही को होना वह स्वसम्बेदन कहलाता है।

[२४] हेत्वाभास किसको कहते हैं और के क़िस्म का है॥

उ० जो चीज़ किसी चीज़ के सववके मानिन्द मालूम हो उसको हेत्वाभास कहतेहैं, जैसे धुवां आगका हेतुहै, कोई चीज़ ऐसी निकलतीहुई मालूमहो कि जैसा धुवां

होता है मगर वह दरअसिल धुवां न हो।

इसकी चार क़िस्में हैं।

(१) असिद्ध अर्थात् ग़ैर मुमकिन

(२) विरुद्ध अर्थात् उलटा ॥

(३) अनैकान्तिक अर्थात् जिसमें बहुतसी क़िस्मके दूषण हों ॥

(४) अकिंचितकर अर्थात कुछ न करसके।

अथ द्वितीयोऽध्याय कर्मप्रकृतिवर्णन

(२५) हरएक कर्म किस नामसे पुकारा जाता है और कर्म किसको कहते हैं

उ० कर्मके उदयसें आत्माकीजैसी अवस्थाप्रतीत होजाय उस अवस्थासें कर्मको उसही नाम सें कहाजाता है और जिसके संबंध सें आत्माकी अज्ञान अवस्था होजाय उस पुद्गल परमाणु पुंजको कर्म कहते हैं।

(२६) कर्म के बड़े कै भेद हैं और कुल कितनी प्रकृति हैं

उ० कर्मकी मुख्य प्रकृति आठ हैं चार घातिया की और चार अघातिया। बड़े दो भेद हैं

(१) घातिया

[२] अघातिया

और कुल प्रकृति १४८ इसतरह हैं कि घातिया की ४७ और अघातियाकी १०१

(२७) घातिया कर्म कौन २ से हैं और उनकी तारीफ़ बयान करो।

उ० चारहैं:—

(१)ज्ञानावर्णी अर्थात जो ज्ञान होने को रोके।

(२) दर्शनावर्णी अर्थात दर्शन के मुख़ालिफ़[प्रतिपक्षी]

कर्म,जो दर्शन होने को रोके।

(३)मोहनीय--जिससे मोह कर्म अर्थात् भ्रम पैदा हो।

(४) अन्तराय वह कर्म जो दानादिक की प्राप्ति आत्मा को न होने देवै।

(२८) अघातियाकर्म कौन२ से हैं।

उ० अघातिया कर्म चार हैं:--

(१) वेदनी अर्थात तकलीफ़ और आराम पहुंचानेवाला और सुख दुख देनेवाला

(२) आयु--(उम्र) देनेवाला।

(३) नाम--शरीर के जितने हिस्से हैं वह नामसे बनते हैं उसकी ६३ प्रकृति हैं जो कर्म शरीर के हिस्से बनावे वह नाम कर्म है।

(४) गोत्र--ऊंचा और नीचा खानदान देनेवाला।

(२६) ज्ञानावर्णीकर्म की कै प्रकृतियां हैं उनकी तारीफ़ बतलावो

उ० पांच:—

(१) मति ज्ञानावर्णी।

(२) श्रुत ज्ञानावर्णी।

(३) अवधि ज्ञानावर्णी।

(४) मनः पर्य्यय ज्ञानावर्णी।

(५) केवल ज्ञानावर्णी।

मतलब यहहै कि पांच ज्ञानहैं और हरएक ज्ञान उस२ नाम के ज्ञानावर्णी कर्मके क्षयोपशमादि न होने की वजह से ढका हुवा है। और जिस क़दर जो ज्ञान खुला हवाहै उसी किस्म के ज्ञानावर्णी के क्षयोपशम के

मुवाफिक़ वहीज्ञान होताहै और क्षयोपशम के क़िसमों की कोई हद नहीं है इसलिये जिस २ क़िस्मके ज्ञानको कर्मोंकी प्रकृतियों ने ढकरक्खा है वह उसीकीप्रकृति कहलातीहै

(३०) दर्शनावर्णी कर्मकीकैप्रकृति हैं उनके नाम औरहरएककी तारीफ़करो।

उ० नव भेद हैं।

[१] चक्षु दर्शनावर्णी--जिस के उदय में नेत्र से देखना नहो।

[२] अचक्षु दर्शनावर्णी—नेत्रके सिवाय और इन्द्रियों से देखना न हो।

[३]अवधिदर्शनावर्णी जिसके उदयमेंअवधिदर्शननहो

[४] केवल दर्शनावर्णी—जिसके उदय से केवल दर्शन न हो।

[५]निद्रा–मद[ग़फ़लत] खेद[थकान] ग्लानि[नफ़रत] इनके दूर करनेके लिये सोना वह निद्रा है।

[६] निद्रा निद्रा--तिस निद्राके ऊपर बार२ नींद का आना वह निद्रा निद्राहै

[७] प्रचला–आत्माको सोतेही क्रिया रूप चलायमान करे अर्थात् बैठाही घूमे झोंका ले नेत्र शरीर चलें आंख फाड़ कर देखे मगर न दीखे।

[८] प्रचला प्रचिला–जसके उदय से बहुत ज्यादा घूमे अगर शरीर में कोई सलाई भी चुभावे फिर भी होशियार न हो।

[९] स्त्यान गृद्धि--जिसके उदयसे सोते में भी बड़ी

ताक़त ज़ाहिर हो उठकर कुछ काम भी करले और यह न मालूम हो कि मैंने कुछ किया था।

नोट—दर्शन यथार्थ के निराकार ग्रहणको कहते हैं

[३१] अन्तराय की कै प्रकृति हैं उनके नाम व तारीफ़ बतावो

उ० पांच प्रकृति हैं।

(१) दानान्तराय-देनेकी ख्वाहिश हो मगर दिया न जाय

(२) लाभान्तराय--लेनेकी इच्छा हो मगर हासिल न हो

(३) भोगान्तराय—भोगकी ख्वाहिश हो मगर भोग न सके

(४) उपभोगान्तराय--उपभोग की ख्वाहिश हो मगर उपभोग न करसके।

(५) वीर्यान्तराय-किसी काममें खशी जाहिर करनेकी ख्वाहिश करे मगर वह ताक़त न होवे।

[३२] वेदनी कर्म की कै प्रकृति हैं।

उ० दो—

[१] सातावेदनी—जिसके उदयसे देवगति या मनुष्यगति में या तिर्यंच गतिमें शरीरसे या मनसे सुखकी प्राप्ति होवे

[२] असाता वेदनी--जिसके उदयसे नर्क वगैरह गति में बहुत क़िस्मके दुख होवें।

[३३] आयु की कै प्रकृतियां हैं।

उ० चार हैं।

[१] देव आय

[२] मनुष्य आय।

[३] तिर्यंच आयु

[४] नरक आय

(३५) नामकर्मकी कितनी प्रकृति हैं उनके नाम और तारीफ बतावो॥

उ० नामकर्मकी ६३ प्रकृति हैं।

(क) गतिकी ४

१ नर्क गति

२ तिर्यंच गति

३ मनुष्य गति

४ देव गति

(ख) जाति ५

५ एकेन्द्री

६ द्वइन्द्री

७ तिइन्द्री

८ चौइन्द्री

९ पंचेंद्री

जिसके उदयसे आत्मा दूसरी पर्यायको जावे वोह गति है एकेन्द्रीसे लेकर पांच इन्द्री तक जिसमें बिना किसी दोषके अर्थ का स्वरूप सब पर एकसा मुताल्लिक हो उसको जाति कहते हैं। इसको जिन्स भी कहते हैं अर्थात जो उसी क़िस्मकी सब अफ़रादपर हावी होवे।

(ग) शरीरकी पांच ५

१० औदारिक

११ वैक्रियक

१२ आहारक

१३ तैजस

१४ कार्म्माण

जिसके उदयसे आत्माके शरीरका संयोग होवे॥

(घ) आंगोपांग की ३

१५ औदारिक आंगोपांग

१६ वैक्रियक आंगोपांग

१७ आहारक आंगोपांग

जिसके उदयसे अंग और उपअंग पैदाहोवें

(ङ) १८ निर्माण के १

जिसके उदय में आंख कान वगैरह अपने२ सही मौके पर मुनासिब मिकदार में होवे

(च) बंधके ५

१९ औदारिक बंध

२० वैक्रियक बंध

२१ आहारक बंध

२२ तैजस बंध

२३ कार्म्माण बंध

जिनके उदयसे पुद्गलकेस्कंध आपसमेंमिलजावें

(छ) संघात ५

२४ औदारिक संघात

२५ वैक्रियक संघात

२६ आहारक संघात

२७ तैजस संघात

२८ कार्म्माण संघात

जिसके उदयसे औदारिक वगैरह शरीरोंके परमाणु आपसमें विना छेदके मिलजावे ॥

(ज) संस्थान ६

२९ समचतुर संस्थान--अर्थात बिलकुल चौकोर
सुडौल जितना लंबा उतना चौड़ा
३० न्यग्रोध परमंडल संस्थान--अर्थात ऊपर का
हिस्सा बड़ा और नीचे का छोटा जैसे बट का वृक्ष
३१ स्वातिक संस्थान--नीचे बड़ा ऊपर छोटा जैसे
सर्प की बंबी
३२ कुब्जक संस्थान--कुबड़ा
३३ वामन संस्थान--बावना
३४ हुंडक संस्थान--जिसमें आंगोपांग तुण्डमुंड हो
जिसके उदयसे औदारिक वगैरह शरीरों
की शकल बन जावे

[भ] संहनन के ६

३५ बज्र ऋषभ नाराच--बहुत सख्त रगें कीले
अर्थात् जिसके रगें और हड्डियोंके कीले मि
सल वज्र के होवें।
३६ वज्र नाराच--जिसके बहुत सख्त कीले वज्र
समान होवें।
३७ नाराच--कीलें होवें मगर बहुत सख्त न होवें
३८ अर्द्धनाराच--हड्डियोंके जोड़के कीले आर
पार न होवें एक तरफ़ होवें।
३९ कीलक--हड्डियोंके जोड़में छोटी कील न होवे
४० असंप्राप्तास्फाटक--जिसमें हड्डियों के जोड़
में फर्क न होवे और उसके गिर्द रगें लिपटी
होवें और हड्डी मांस से लिपटी होवें॥

(ञ) स्पर्श के ८

४१ कर्कश—कठोर [करड़ा]

४२ मार्दव—कोमल

४३ गुरु—भारी

४४ लघु-हलका

४५ स्निग्ध--चिकना

४६ रूक्ष—रूखा

४७ शीत—ठंढा

४८ ऊष्ण-गर्म

जिसके उदयसे ऐसे स्पर्श पैदा होवें।

(ट) रसके ५

४९ तिक्त--चिरपरा जैसे मिरच

५० कटक--कडवा जैसे नींब।

५१ कषाय—कषायला जैसे बहेडा

५२ अम्ल—खट्टा जैसे इमली

५३ मधुर—मीठा जैसे गन्ना

जिसके उदयसे ऐसे रस पैदा होवें॥

(ठ) गंधके २

५४ सुगंध

५५ दुर्गंध

जिसके उदय से अच्छी बुरी व पैदा हो।

(ड) वर्ण के पांच ५

५६ कृष्ण

५७ नील

५८ रक्त

५९ पीत

६० शुक्ल
जिसके उदय से ऐसे रंग पैदा होवें।

(८) आनुपूर्वी के चार ४

६१ नर्क गत्यानुपूर्वी
६२ मनुष्य गत्यानुपर्वी
६३ तिर्य्यग् गत्यानुपूर्वी
६४ देव गत्यानुपूर्वी
जिसके उदय से पहला शरीर का आकार कायम रहे और जिस वक्त तक कि नये शरीर की वर्गणा ग्रहण न करे तब तक जिस प्रकृति का उदय रहता है उस वक्त तक आनुपूर्वी कहते हैं इसका उदय सिर्फ तीन समय तक है।

६५ अगुरुलघु-जिसके उदय से शरीर न हलका हो न भारी हो।

६६ उपघात--जिसके उदय से अपना घात खुद ही करे।

६७ परघात-जिसके उदयसे दूसरेका घात होवे

६८ आताप-जिसके उदयसे गर्मी वाला तेज़ शरीर हो।

६९ उद्योत-जिसके उदय से शरीर में रोशनी होवे।

७० उस्वास-जिसके उदय से स्वास बाहर आवे और अन्दर जावे।

७१ विहायोगति—जिसके उदय से आकाश में गमन होवे इसके दो भेद हैं :-

१ शुभ

२ अशुभ

७२ प्रत्येक शरीर—जिसके उदयसे एक शरीर में सिर्फ एक आत्मा ही रहे ॥

७४ त्रस—जिसके उदय द्वेइंद्रीयादिमें जन्म हो

७५ शुभग—जिसके उदय से दूसरेको शरीर प्यारा मालुम हो ।

७६ सुस्वर—जिसके उदयसे अच्छा आवाज़होवे

७७ शुभ—जिसके उदयसे शरीर खूबसूरत होवे

७८ सूक्ष्म—जिसके उदयसे सूक्ष्म शरीर पैदाहोवे

७९ पर्याप्त—जिसके उदयसे आहार वगैरह पूरे पर्याप्तहोवे ।

८० स्थिर—जिसके उदयसे शरीर के आंगोपांग कायम रहें ।

८१ आदेय—जिसके उदय से शरीर आदरणीय होवे अर्थात् सब उसका आदर करें

८२ यसकीर्त्ति—जिसके उदय से दुनिया में अच्छे गुण ज़ाहिर हों ।

८३ साधारण शरीर—जिसके उदय से बहुत से जीवों को भोगनेका एकही शरीर होवे जैसे कंद मूल वगैरह ।

८४ एकेंद्री या स्थावर--जिसके उदय से एकेंद्रीमें पैदायश हो।

८५ अशुभ--जिसके उदय से शरीर ख़ूबसूरत न हो, बदसूरत हो।

८६ दुःस्वर--जिसके उदय से बुरी आवाज़हो

८७ दुर्भग--जिसके उदयसे दूसरेको शरीर बुरा मालूम होवे।

८८ बादर--जिसके उदयसे ऐसा शरीर होवे जो दूसरेको रोके या रुकजाय।

८९ अपर्य्याप्त--जो छहूं पर्य्याप्त को पूरा न करै

९० अस्थिर--जिसके उदय से शरीर चलायमान होवे॥

९१ अनादेय--जिसके उदय से शरीर आदरणीय न हो॥

९२ अपयस्कीर्त्ति--जिस के उदय से मौजूदा गुण भी ज़ाहिर न होवे लोकनिंद्य होवे।

९३ तीर्थंकर--जिस के उदय से तीर्थंकर पद को प्राप्त हो।

(३५) गोत्र की कै प्रकृति हैं।

उ० दो।

१ उच्च गोत्र

२ नीच गोत्र

(३६) जोऊपर बयान की हुई कर्मकी प्रकृतियांहैं वह इसीतरह पर हैं या उनमें औरभी भेद हैं॥

उ० पहिले बयान करचुके हैं कि कर्मकी प्रकृतियांदो तरहकी हैं

१ घाति प्रकृति
२ अघाति प्रकृति

उसमें ज्ञानावर्णी, दर्शनावर्णी, मोहनीय, अन्तराय, यह तो घाति प्रकृति हैं।

और वेदनी, आयु, नाम, और गोत्र, यह चार अघाति प्रकृति हैं।

घाति कर्म की प्रकृति दो प्रकार हैं :-

१ देश घाति
२ सर्व घाति

तहां सर्व घातियों में

१ केवल ज्ञानावर्ण, यह ज्ञानावर्णी की है।

१ निद्रा
२ निद्रा निद्रा
३ प्रचला
४ प्रचला प्रचला
५ सत्यान गृद्धि
६ केवल दर्शनावर्ण, यह ६ दर्शनावर्ण की हैं, दर्शन मोह की सिर्फ़ १ है।

चारित्र मोहनीय की १२ हैं।

संज्वलन की ४ और नो कषाय की ६ इनको छोड़ कर बाक़ी १२ कषाय इस तरह कुल मिलकर २० प्रकृति सर्व घाति हैं।

देश घाति २५ हैं :-

ज्ञानावर्ण की ४ हैं।

१ मति ज्ञानावर्णी
२ श्रुत ज्ञानावर्णी
३ अवधि ज्ञानावर्णी
४ मनः पर्य्यय ज्ञानावर्णी
दर्शनावर्ण की ३ :—
१ चक्षु दर्शनावर्णी
२ अचक्षु दर्शनावर्णी
३ अवधि दर्शनावर्णी
अन्तराय की ५ :---
१ दानान्तराय
२ लाभान्तराय
३ भोगान्तराय
४ उपभोगान्तराय
५ वीर्यान्तराय
संज्वलन की ४ :--
१ संज्वलन क्रोध
२ संज्वलन मान
३ संज्वलन माया
४ संज्वलन लोभ
नौ कषाय की ६
१ हास्य
२ रति
३ अरति

४ शोक
५ भय
६ जुगुप्सा
७ स्त्री वेद
८ पुरुष वेद
९ नपुंसक वेद

(३७) और भेद प्रकृतियां के उदय की अपेक्षा क्या हैं।

उ० चार
१ पुद्गल विपाकी
२ क्षेत्र विपाकी।
३ भव विपाकी।
४ जीव विपाकी।

(३८) पुद्गलविपाकी किसको कहते हैं और वह कौन २ प्रकृतियां हैं॥

उ० जिन प्रकृतियों का सम्बन्ध शरीरसे है और वह अपना असर (फल) शरीरकोही देती हैं, इसवास्ते इनको पुद्गल विपाकी कहते हैं और गिनती में प्रकृतियां ६२ हैं

शरीर ५
बन्धन ५
घात ५
संस्थान ६
संहनन ६
अंगोपांग ३
स्पर्श ८

रस ५
गन्ध २
वर्ण ५
प्रत्येक १
साधारण १
स्थिर १
अस्थिर १
शुभ १
अशुभ १
अगुरु लघु १
उप घात १
पर घात १
आतप १
उद्योत १
निर्माण १

(३६) क्षेत्रविपाकी किसको कहते हैं और वह प्रकृतियां कितनी हैं उनके नाम बयान करो।

उ० जिनका सम्बन्ध किसी जगह से हो और उसी जगह अपना फल दे। वह प्रकृति चार हैं॥

१ मनुष्य गत्यानुपूर्वी।
२ तिर्यंच गत्यानुपूर्वी
३ देव गत्यानुपूर्वी।
४ नरक गत्यानुपूर्वी।

इसका फल यह है कि जीव को एकगति से दूसरी

गतिमें जानेमें जोतीन समय लगते हैं, उनमें पहिले शरीर के मुवाफ़िक़ जीव के प्रदेशों की शकल क़ायम रक्खे है।

[४०] भव विपाकी किसको कहते हैं और वह कितनी प्रकृतियां हैं हरएक का नाम बयान करो।

उ० भवविपाकी चार आयु हैं॥

१ मनुष्यआयु।

२ देव आयु

३ नरक आयु।

४ तिर्यंच आयु।

इसका फल सिर्फ़ भव अर्थात जन्मधारण कराने का है, इसलिये इसको भव विपाकी कहते हैं। अर्थात् भव के संबन्ध से जो उदय आवे वह भव विपाकी है॥

(४१) जीवविपाकी किसको कहते हैं हरएकका नाम बयानकरो।

उ० जीव विपाकी वह प्रकृतियां हैं जिनका सम्बन्ध सिर्फ जीव पर है, और जीव के उपयोग अर्थात् ज्ञान वग़ैरा की शक्ति का छिपादेनाइनकाफलहै। और वह कुल ७८ हैं॥

ज्ञानावर्ण की ५

दर्शनावर्ण की ९

अन्तराय की ५

मोहनीय की २८

ऐसे घातिकर्म की तो ४७ और वेदनीय २

[१] साता वेदनीय ।

[२] असाता वेदनीय ।

गोत्र कर्म की २

(१) नीच गोत्र ।

(२) ऊंच गोत्र ।

नाम की २७जिनकी तफ़सील यहहै ।

गति ४

जाति ५

विहायो गति २

(१) शुभ विहायो गति ।

[२] अशुभ विहायो गति ।

त्रस स्थावर २ :-

(१) त्रस

[२] स्थावर

सूक्ष्म १

बादर १

पर्याप्त १

अपर्य्याप्त १

सुस्वर १

दुःस्वर १

सुभग १

दुर्भग १

आदेय १

अनादेय १

यशः कीर्ति १

अयशः कीर्ति १

श्वासोच्छ्वास १

तीर्थ कर १

ऐसे सब मिल ७८ जीव विपाकी प्रकृति हैं, यह सत्ता की अपेक्षा १४८ प्रकृति जाननी।

[४२] उनको घातिया क्यों कहते हैं।

उ० आत्माके असाधारण ज्ञानादि गुण कोघात (ढाकदेना) करते हैं, इस कारणइनको घातिया कहते हैं

[४३] घातिया कर्मके नाश होनेसे क्या पदवी प्राप्ति होती है ॥

उ० केवल ज्ञान होता है

[४४] उनको अघातिया क्यों कहते हैं।

उ० आत्मा के ज्ञानादि गुणको घाति नहीं करते हैं इस कारण इनको अघातिया कहते हैं।

[४५] अघातिया कर्म के नाश होनेसे क्या पदवी प्राप्त होती है।

उ० मोक्ष होती है।

[४६] ज्ञानावर्णी और मोहनी में क्या फर्क है।

उ० जो अर्थको यथावत् न जानने देवे वोह तो ज्ञानावर्णी है और इसका काम यह है कि ज्ञान को न होने देवे और जानकर भी उसको यथावत् न मानने देवे यह मोहनी है।

(नोट) अतत्व श्रद्धान राग द्वेष रूप इष्ट अनिष्ट बुद्धि यह मोहका काम है।

[४७] मोहनी के कितने भेद हैं।

उ० २८ भेद हैं।

१ दर्शन मोहनी ।

२ चारित्र मोहनी ।

१ दर्शनमोहनी की ३ प्रकृति हैं ।

(अ) मिथ्यात्व तत्वार्थ श्रद्धान न करे और सर्वज्ञ देव का बयान किया हुवा जो मोक्षमार्ग उसके खिलाफ़ है

(आ) सम्यक्त्व जिसके उदयसे श्रद्धानमें चल मल अगाढ़ना रहे अर्थात् चलायमान दूषण रहे दृढ़ता न हो ।

(इ) जिसके उदय करि तत्व अतत्त्व को समान समझे जैसे देव कुदेव अदेव को समान समझे ।

२ चारित्र मोहनी के दो भेद हैं ।

(क) कषाय मोहनी—क्रोधादिक के होने को कहते हैं ।

(ख) अकषाय मोहनी—थोड़ी कषायको कहते हैं ॥

कषायमोहनी की १६ प्रकृति हैं ॥

(अ) अनन्तानु बन्धि क्रोध
(आ) ,, मान
(इ) ,, माया
(ई) ,, लोभ

नोट—अनन्तानुबन्धि अनन्त के मानी मिथ्यात्व क्योंकि मिथ्यात्व अनन्त संसारका कारण है उस संसार में परिभ्रमण कराने वाली अनन्त नुबन्धी है और मिथ्यात्व की सहचारिणी है ।

(उ) अप्रत्याख्यानावर्णी क्रोध
(ऊ) ,, मान
(ऋ) ,, माया
(ॠ) ,, लोभ

नोट —अप्रत्याख्यान वर्णी—जिसके उदयसे एकदेश त्यागरूप श्रावकके व्रत कुछ भी न कर सके

(ॡ) प्रत्याख्यानावर्णी क्रोध
(ॡ) ,, मान
(ए) ,, माया
(ऐ) ,, लोभ

(नोट) प्रत्याख्यानावर्णी—जिसमें श्रावक के व्रत हो सकें मगर सकल संयम को न पासके

[ओ] संज्वलन क्रोध
[औ] ,, मान
[अं] ,, माया
[अः] ,, लोभ

(नोट) संज्वलन—सकल संयम होतेभी यथाख्यात चारित्र को न होने देवे यह कषाय बहुत कम है।

क्रोध आमर्ष—अपना और दूसरे का जिससे नुकसान होवे और जिसमें नफा न होवे खोटा और परको तकलीफ देनेवाला होवे और उसकी ४ हालतें होती हैं।

[१] पत्थर की लकीर
[२] जमीन की लकीर
[३] खाक की लकीर
[४] पानी की लकीर

मान—जाति वगैरा आठ बातों का मद अर्थात गुरूर की वजह से किसी पूज्य के नमस्कार रूप परणाम न होवे। इसकी ४ हालतें होती हैं

[१] पत्थर का पाया टूट जावे मगर न मुड़े
[२] हड्डी का टुकड़ा जो कुछ दिन पीछे किसी वजह से मुड़जाता है॥

[३] लकड़ीकाटुकड़ा जो किसी मवक्कोपाकर मुड़जाताहै
[४] बेत— जो बहुत जल्द मुड़ जाता है

माया—दूसरे को धोका देकर उसको नुकसान पहुंचाने और अपना नफ़ा पहुंचाने का परणाम। इसकी भी चार हालते हैं

[१] बांस की जड़की तरह जो अंदर ज़मीनमें ही बढ़तीहै गांठ गठीली रहती है
[२] मेंढ़े के सींग की तरह
[३] लिखने के क़लम की तरह
[४] गौ मुत्र की तरह

लोभ—अपने फ़ायदे का सबब जो द्रव्य वग़ैरा वस्तु उसकी इच्छा का परणाम रहे उसकी भी ४ हालतें हैं

[१] किरमिच का रंग जो बहुत मुशकिल से मिटता है
[२] गाड़ी के पहिये की कीट की तरह
[३] शरीर का मैल की तरह
[४] हलदी की तरह

(ख) अकषाय मोहनी की ६ प्रकृति हैं

(१) हास्य—जिसके उदय से हंसी ज़ाहिर होवे
(२) रति—जिसकेउदयसे किसी वस्तुपर मोहित होजावे
(३) अरति—जिसके उदयसे कोई चीज़ अच्छी न मालूम होवे
(४) शोक—जिसके उदयसे प्यारी चीज़के नाश होजाने से रंज करे

(५) भय–जिसके उदय से दुख करने वाली चीज़ को देख कर भागें

[६] जुगुप्सा–जिसके उदय से अपने दोष को छिपावे और दूसरे के दोष को देखकर नफ़रत होवे

(७) स्त्री वेद–जिसके उदय से पुरुषसे रमण के परणाम होवे पुरुष से रमण करने की इच्छा करें और मन की नफ़रत ज़ाहिर न होवे अंदर काम की ख्वाहिश रहे आंख चलाती रहे छूने से आराम माने

(८) पुरुषवेद–जिसकेउदयसे स्त्रीसेरमणे कीख्वाहिशरहे

(६) नपुन्सक वेद–जिसके उदय से स्त्रीपुरुष दोनों से रमण की ख्वाहिश रहे

नोट–जो बातें स्त्रीवेद में बयान की हैं अगर वह बातें मर्द में होवें तो उसके स्त्रीवेदका उदय कहना चाहिये और जैसी ख्वाहिश स्त्रीवेद में बयान की है अगर वैसी ही इच्छा नपुन्सक वेद में होवें तो स्त्रीवेद का उदय समझना चाहिये

नोट–कषाय वेदनी और अकषाय वेदनी के जो ऊपर २५ भेद लिखे हैं उनको २५ कषाय भी कहते हैं

(४८) ज्ञानावरणी, दर्शनावरणी, वेदनी, अन्तराय की स्थिति अर्थात् मीआद बयान करो ?

उ० संज्ञी पंचेन्द्री पर्यासकी ज़्यादा से ज़्यादा मीआद तीस कोड़ा कोड़ी सागर की है और कम से कम अन्तरमहूर्त है

एकेंद्रीपर्य्यासके $\frac{3}{7}$ सागर की होती है

द्वीद्रिं पर्य्यास के $\frac{3}{7} \times २५$ की होती है

तेइंद्रि के $\frac{3}{7} \times ५०$ की होती है

चोइंद्री के $\frac{3}{7} \times 100$ सागर की है

असंज्ञी पंचेंद्री पर्य्याप्तके $\frac{3}{7} \times 1000$ सागर की होतीहै

संज्ञी पंचेंद्री अपर्य्याप्तके एककोड़ा कोड़ी सागरके अन्दरहै

नोट—यह बन्ध मिथ्या दृष्टि संज्ञी पंचेंद्री पर्य्याप्त जीवके होता है

(४९) मोहनी कर्मकी स्थिति ज़्यादा से ज़्यादा कितनी है और किसके होती है और कमसे कम किस के होती है

उ० सत्तर कोड़ा कोड़ी सागरकी है

नोट-मिथ्यादृष्टी संज्ञी पंचेंद्री पर्य्याप्तकी अन्तर्मुहूर्त की है

यह बादर सांपराय गुणस्थान वाले जीवके पड़ती है

(५०) अन्तराय की स्थिति कमसे कम कितनी है

उ० अन्तर मुहूर्त की और सूक्ष्म सांपराय वाले जीवोंकेपड़तीहै

[५१] वेदनीकर्मकी स्थिति कमसे कम कितनी है।

उ० बारा महूर्त की होती है।

[नोट] एक महूर्त पौने दो घड़ी का होता है॥

[५२] आयुकर्म की स्थिति ज़्यादा से ज़्यादा कितनीहै और किसको होती है और कमसे कम कितनी है।

उ० ज़्यादा से ज़्यादा तेतीस ३३ सागरकी है संज्ञी पंचेंद्र पर्य्याप्त के है कमसे कम अंतरमुहूर्तकी है आयु कर्मकी कमसे कम स्थिती उसके पड़ती है जिस की संख्यात वर्षकी आयु होवे और कर्म भूमिका मनुष्य तिर्यंचहोवे

(५३) नाम कर्म और गोत्र कर्म की स्थिति ज़्यादा से ज़्यादा कितनी और किसके होती है और कमसे कम किस क़दर है।

उ० ज़्यादा से ज़्यादा बीस कोड़ा कोड़ी सागर की है।

नोट—यह बंधसंज्ञी पंचेंद्री मिथ्या दृष्टि के होता है कमसे कम आठ मुहूर्त की है।

(५४) ज्ञानावरणी दर्शनावरणी अन्तराय की मीआद कमसेकम किस जीव के पड़ती है।

उ० सूक्ष्म सांपराय गुणस्थानवाले जीव के पड़ती है।

(५५) मोहनी कर्मकी स्थिति कमसे कम किसजीव के पड़ती है॥

उ० बादर सांपराय वाले के पड़ती है।

[५६] नींदको पाप प्रकृति बयान किया है मगर सोनेसे आराम मिलता है उसको पुन्यप्रकृति क्यों नहीं कहा।

उ० नींद पापकेही उदयसे आती है क्योंकि दर्शन ज्ञान वीर्य आत्मा का स्वभाव है उसको नाश करती है और सोनेमे थकान और नफ़रत दूरहोतीहै और आराम मालूम होता है और उसके पासही साता वेदनी का उदय है और असाताका उदय कम होताहै तो उसको नींदमदद करती है इसलिये प्राणी उसमें सुख मानता है मगर असलमें सुख नहीं है।

(५७) इनतो अड़तालीस प्रकृतियों की तफ़सील बतलावो कि हरएक कर्म की कौन कौन है॥

उ० १४८ कर्म प्रकृतियों की तफ़सील यह है।

ज्ञानावरणी कर्मकी ५
दर्शनावरणी की ६
मोहनी की २८
वेदनी २
आयु ४
गोत्र २
नाम ६३
अन्तराय ५ जोड़ १४८

[५८] पुण्यप्रकृति और पाप प्रकृति जो ऊपर लिखी हैं वह सब मिलकर १२४ हुईं बाकी २४ कहां गईं॥

उ० बंधकी अपेक्षा सिर्फ़ १२० प्रकृति हैं इस से ज़्यादा एक समय में बंध नहीं होता है सत्ता और उदय की अपेक्षा १४८ हैं।

तफ़सील

दर्शनमोहनी की ३ प्रकृतियों मेंसे सिर्फ़ १ मिथ्यात्व का बंधन होताहै इसलिये दो घटगईं।

बंधनकी पांच और संघातकी पांच और यह शरीरके साथ अन्वय हैं अर्थात् लाज़िम मलज़ूम हैं इसलिये सिर्फ़ शरीरका बंध बाक़ी रहा उसमें यह १० दाख़िल होगईं इसलिये १० यह घटगईं।

वर्ण वगैरह बीस हैं यहां सिर्फ़ चार बयान किये इसलिये १६ घटगये इस हिसाब से २८ घटगईं

[५९] १२४ तो पुन्य और पाप बंधमें बयान की और २८ घटी बयानकी तो कुल १५२ होगईं यह ४ कहांसे बढ़गईं।

उ० स्पर्श

रस

गंध

वर्ण

यह पुन्य रूपभी हैं और पापरूप भी हैं यह चार दुबारा शुमार होगये इस लिये १२४ मेसे ४ घटाई जावें तो बंधरूप १२० बाकी रहगईं और २८ घटीहुई जोड़ने से कुल १४८ का हिसाब पूरा होगया।

(६०) शुभायु कौन २ हैं।

उ० (३) तीन हैं

१ तिर्यंच

२ मनुष्य

३ देव

(६१) शुभ प्रकृति कौन २ हैं।

उ० शुभ प्रकृति ४२ है

१ मनुष्यगति

२ देवजाति

३ पंचेंद्रीजाति।

४ से आठतक शरीर पांच

६ से ११ तक आंगोपांग तीन

१२ समचतर संस्थान

१३ वज्रवृषभ नाराच संहनन

१४ प्रशस्त रस

१५ प्रशस्तगंध

१६ प्रशस्त वर्ण

१७ प्रशस्तस्पर्श

१८ मनुष्य गत्यानुपूर्वी

१९ देव गत्यानुपूर्वी

२० अगुरुलघु

२१ परघात

२२ उच्छ्वास

२३ आताप

२४ उद्योत
२५ प्रशस्त विहायो गति
२६ त्रस
२७ बादर
२८ पर्याप्त
२९ प्रत्येक शरीर
३० स्थिर
३१ शुभग
३२ शुभ
३३ सुस्वर
३४ आदेय
३५ यशस कीर्ति
३६ निर्माण
३७ तीर्थंकर
३८ उच्च गोत्र
३९ साता वेदनी
४० देवायु
४१ तिर्य्यंचायु
४२ मनुष्यायु

(६३) पाप प्रकृति कौन२ हैं
उ० पापप्रकृति २ हैं
१ से ५ तक ज्ञानावरणी ५
६ से १४ तक दर्शनावरणी ९

१५--४० तक मोहनी की २६

नोट—अर्थात् सम्यक् और मिश्र दो प्रकृति २८ मेंसे निकलगईं।

४१--४५ अंतराय का ५

४६--७६ तक नाम कमकी चौंतीस ३४

अर्थात्

४६ नर्कगति १

४७ तिर्यंच गति १

४८—५१तक जातिकी ४

५६--६१ तक संहनन ५

६२-अप्रशस्त स्पर्श

६३ अप्रशस्त रस

६४ अप्रशस्त गंध

६५ अप्रशस्त वर्ण

६६ नर्कगत्यानुपूर्वी

६७ तिर्यंचगत्यानुपूर्वी

६८ अप्रशस्त विहायोगति

६९ उपघात

७० स्थावर

७१ सूक्ष्म

७२ अपर्याप्त

७३ साधारण शरीर

७४ स्थिर

७५ अशुभ

७६ दुर्भग

७७ दुस्वर

७८ अनादेय

७९ अयशकीर्ति

८० असातावेदनी

८१ नर्क आयु

८२ नीचगोत्र

नोट—पुन्य और पाप २ प्रकृति मिलकर १२४ हैं।

* मोक्षमार्ग तृतीयोऽध्याः *

आह्निक १ सम्यग्दर्शन

[६४] मोक्षमार्ग क्या है।

उ० सम्यक्दर्शन ज्ञानचारित्राणि मोक्षमार्गः। सम्यगदर्शन और सम्यग् ज्ञान और सम्यगचारित्र की एक्यता मोक्षमार्ग है अथात् तत्त्व श्रद्धान पूर्वक सम्यक्ज्ञान की प्राप्तिहोकर जबतक सम्यक चारित्र का आराधन न करे तब तक मोक्षमार्ग नहीं बनसक्ता।

[६५] सम्यग्दर्शन की तारीफ क्या है।

उ० पदार्थों का भले प्रकार वैसाही श्रद्धान करना जैसाकि पदार्थ का यथार्थ स्वरूप है।

[६६] दर्शन यह लफ्ज किस धातु से बना हुआ है और इसके क्या मानी हैं

उ० दृश यह संस्कृत का एक मसदर (धातु) है इसके सामने ल्युट प्रत्यय लगाने से दर्शन बनता है इस जगह पर इसके मानी एतक़ाद अर्थात् श्रद्धान के लिये गये हैं

नोट—प्रत्यय किसको कहते हैं।

संस्कृत में एक सीग़े का नाम प्रत्यय है और मसदर के सामने लगाया जाता है मसदर और उस प्रत्यय सीग़े को मिलाकर एक एक लफ्ज़ तय्यारहोताहै उस प्रत्यय

के होनेसे उस शब्द में यह ताक़त होजाती है कि वह कर्ता [करनेवाला] करण जिसके द्वारा किया जावे कर्म कार्य भाव (प्रयोजन) के मानी देने लगता है क्योंकि प्रत्यय अर्थात् सीग़ा ज़रूरत में मानी लेनेकी ग़रज़ से लगाया जाता है।

(६७) दर्शन इस लफ़्ज़ के मानी के तरह पर हैं अगर हैं तो क्यों।

उ० स्वयं पश्यति इति दर्शनं (कर्ता) दृश्यतेऽनेनेति दर्शनं (करण) दृष्टिमात्रं वा दर्शनम् (भाव) इस तरहपर इस दर्शन लफ़्ज़ के तीन तरीके पर मानी होते हैं और वह प्रत्यय (सीग़ा) की ताक़त से मानी तबदील होगये हैं क्योंकि सीग़े में यह ताक़त है कि तशरीह कुनिन्दा अपनी ग़रज़ पूरी करने के लिये ज़रूरत से चाहे जो मानी लेसक्ता है।

(६८) दर्शन के नाम और इकसाम और हरएक की तारीफ़ बयान करो

उ० दर्शन ४ हैं

(१) चक्षुदर्शन

(२) अचक्षुदर्शन

(३) अवधि दर्शन

(४) केवल दर्शन

(नोट) इन के लक्षण कर्म प्रकृति संबंधी प्रश्नों के उत्तर में लिखेजा चुके हैं

(६९) सम्यग्दर्शन किनर कारणों से पैदा होता है हरएक का नाम और तारीफ़ बयान करो

उ० दो कारणों से

[१] निसर्ग से अर्थात स्वभावसे दर्शनमोह के क्षयोपशम से अपने आपही तत्व श्रद्धान होना

[२] अधिगम से—अर्थात् जैसे कि गुरु उपदेश या शास्त्र सुनने से तथा जिन बिंब दर्शनादि।

(नोट) अन्तरंग कारण तो सम्यग्दर्शन की पैदाइश का यह है कि दर्शन मोहनी कर्मकाउपशम या क्षयोपशम या क्षय होवे मगर वाह्यकारण यह है कि बिना उपदेश होवे तो निसर्गज है और दूसरे के उपदेशादि से होवे वह अधिगमज है

[७०] सम्यग दर्शन के कितने अंग हैं

उ० आठ अंग हैं

(१) निशङ्किता--तत्वार्थ श्रद्धान में किसी किसम का शक न हो

(२) निकाङ्क्षित—धर्म के आश्रय से इस भवमें या परभव के लिये किसी वस्तु की इच्छा न करना।

(३) निर्विचिकित्सा—वस्तुस्वरूप में ग्लानि न करना

(४) निर्मूढ़ता—सच्चे देव गुरु और शास्त्रको मानना और तीन किस्मका मूढ़ताको न रखना।

तीन मूढ़ता यह हैं

[अ] देव मूढ़ता

[आ] गुरु मूढ़ता

[इ] लोक मूढ़ता

(५) उपगूहण-दूसरेधर्मात्मावाल अशक्त और धर्मात्मा ओं का दोष ढकना

(६) स्थिति करण-जोधर्म से डिगता हुवाहो या धर्मसे विपरीत मार्ग पर हो उसको धर्म में स्थिर अर्थात् कायम रखना

(७) वात्सल्य—धर्मात्मा पुरुषों में प्रीति रखना और धर्मके अंगों में प्रीति रखना

(८) प्रभावना—जिससे धर्मकी महिमा शान बढ़े विद्या पढ़ना शास्त्रका श्रवण करना महाभिषेक त्रिलोक पूजनादि करना उत्तम पात्रोंको दान देना इत्यादि सब प्रभावना केही अंग हैं।

[७१] तत्वार्थ श्रद्धान रूप सम्यगदर्शन के प्रकार है

उ० सम्यग्दर्शन के दो भेद हैं

(१) सराग

(२) वीत राग

नोट—औरभी भेद हैं आज्ञासम्यक्त १ बीज सम्यक्त २ अर्थसम्यक्त३ सूत्र सम्यक्त ४ संक्षेप सम्यक्त ५ विस्तार सम्यक्त ६ मार्ग सम्यक्त७ उपदेश सम्यक्त८ अवगाढ़ सम्यक्त ९परमावगाढ़ सम्यक्त १०

(७२) सराग सम्यक्त के मालूम होने की पहचान क्या २ हरएक का नाम और तारीफ बयान करो।

उ० चार

(१) प्रशम, जिसमें अनन्तानुवन्धि सम्बन्धी चार कषाय क्रोध, मान, माया, लोभ न होवे और उनसे जो राग द्वेष पैदाहोते हैं वहभी न होवें और मिथ्यात्व और सम्यक मिथ्यात्व न होवे

(२) संवेग अर्थात् संसार में भ्रमण करने का ख़ौफ़ हो और वह भ्रमण पांच परावर्तन रूप है

(३) अनुकम्पा-त्रस और स्थावर दो क़िस्म के जीवों पै दया होना

(४) आस्तिक्य जीव वग़ैरा तत्वों को दलील से और शास्त्र से निश्चय करके जैसा का तैसा श्रद्धानकरना

[७३] वीतराग सम्यक्त्व क्योंकर जाना जाता है?

उ० अपने आत्मा के निर्मल परिणाम से जाना जाता है

उसकी कोई जाहिर अलामत अर्थात् पहिचान नहीं केवल आत्म विशुद्धिका होना है।

[७४] परिवर्तन कितने हैं हरएक के नाम और तारीफ बयान करो।

उ० चतुर्गति भ्रमण रूप संसार को परिवर्तन कहते हैं इस की पांच क़िस्म हैं।

१ द्रव्य-पुद्गलद्रव्य तीनप्रकारहैं[१]ग्रहीत[२]अग्रहीत[३] मिश्रत में अनंतवार अग्रहीत ग्रहणकर एक बार ग्रहीत ग्रहण करते हैं ऐसे अनन्तवार गृहीत ग्रहण होजावे तब एकवार मिश्र ग्रहणहोता है ऐसे अनन्तानंत बार ग्रहण होय तब एक पुद्गल परावर्तन होताहै इसका विशेष कथन गोमठसार जीमें है पुद्गल द्रव्य में ग्रहण त्यजन रूप परिभ्रमण अर्थात फिरने को द्रव्य परावतन कहते हैं खुलासा यह है कि पुद्गल परावर्तन में इस जीव ने सर्वही पुद्गल अनन्त बार सिलसिलेवार ग्रहण कर २ छोड़दिये हैं कोई पुद्गल ऐसा बाक़ी न रहा जिसको अनन्त बार ग्रहण न किया हो और न छोड़ा हो।

२ क्षेत्र--अर्थात् आकाश के प्रत्येक प्रदेशोंको क्रमशः रूप परिभ्रमण पूर्णकरै उसको परिवर्तन कहते ह।

नोट—इसक्षेत्र संसार विषे भ्रमता यह जीव अनेक अवगाहना [छोटे बड़ा शरीर को पाय सर्वलोक का क्षेत्र विषे सिलसिलेवार उपजा मरा ऐसा क्षेत्र [जगह] न रहा जहां न उपजा।

३ काल-अर्थात् काल के समयनि विषे उपजने विनशने रूप परिभ्रमण।

नोट - यह जीव काल परिवर्तन नाम में संसार विषे अमना उत्सर्पणी अव सर्पणी के समयोंकी पंक्ति [क़तार] विषें जन्म लिया तथा मरण किया असंख्यात बार कोई समय ऐसा बाकी न रहा जिसमें जन्म मरण न किया ।

४ भव—अर्थात् नारकादि भवका ग्रहण त्यजन रूप परिभ्रमण को भव परिवतन कहते हैं ।

नोट—इस जीव ने भवपरिवर्तन संसार विषे मिथ्यात्व सहित नरककी जघन्य कमसे कम आयु से लगाय ग्रीवकन [स्वर्ग] की उत्कृष्ट ज़्यादा से ज्यादा आयु बेशुमार दफा पा २ कर छोड़ी है ।

५ भाव—अर्थात् अपने कषाय योगन का रूप जे भेद तिनका पलटने रूप परिभ्रमण को भाव परिवर्तन कहते हैं ।

(७५) द्रव्य परिवर्तन के भेद उन के नाम और तारीफ़ बतलाओ ।

उ० दो क़िसम हैं

[१] नोकर्म परिवर्तन—अर्थात जो तीन शरीर और छह पर्याप्ति के लायक़ पुद्गल परमाणू के मजमूए को एक समय में क़बूल कियेहुवे और वह परमाणू स्निग्ध रूक्षा वर्ण गंध ज़ियादह कम भावों की वजह से मौजूद थे और दूसरे समयमें दूर होगये और फिर दूसरे समय में भी इसी तरह पुद्गल परमाणू के मजमूए को क़बूल करै इसतरह उसी क़िस्म के बार२ क़बूल करते और दूर होते पुद्गल परमाणू ख़तम हो-जावे और इसी दरमियान में दूसरी क़िसम के परमाणू ग्रहण करे और वह दूर होवे तब एक नो कर्म परिवर्तन पूरा होता है

[२]कर्म परिवर्तन

[नोट] इसीतरह जिस क़दर और जिस२ क़िसम के पुद्गल परमाणु शरीर के और जिस क़िसम के शरीरके लगहुवे है वह सबही मिश्न अर हरके हरेक टंडरके बारीबारीसे भव भवमें मौका मिलनेसे खतमहोताहै

[नोट]२ इसी तरह पाच परिवर्तन को बयान किया है जो असिल ग्रन्थ में देखना चाहिये

पुद्गल परिवर्तन का स्वरुप यह है कि जिस वक्त जीव पहिले कर्मयोग पुद्गल वर्गणावों को ग्रहण करता है तो उस वक्त जिस जाति की और जिस स्वभावको लिये हुए और जितने अविभाग परीच्छेद को लिये हुवे ग्रहण करता है बादमें इसी सिलसिलेसे अर्थात जिस जातिकी पुद्गलवर्गणा ग्रहण करी थी जिस अंस को लिये जिन भावों को लिये हुवे और जिन अविभाग परीच्छेद को लिये हुवे प्रकार से तमाम जितनी पुद्गल वर्गणा हैं सब को ग्रहण करे! मतलब यह है किजिस भाव करके वर्गणा पहिले ग्रहण की हैं अगर उसके खिलाफ़ दूसरे वक्त में ग्रहण करें वह वक्त शुमार में नही है बल्कि जब उस जाति को लिये हुये और उन्ही अंसो को लिये हुये उन पुद्गल वर्गणावों को अगले समय में ग्रहण करे इस तरह से ग्रहण करते२ जब तमाम पुद्गल वर्गणावों को ग्रहण करचुके तब एक पुद्गल परिवर्तन होता है

नोट मिथ्यात्व कर सहित जीव या भावसंसार विषे कुल, प्रकृति, स्थिति, अनुभाग प्रदेश बन्धके जितने स्थान अर्थात् कषायरूप परिणाम हैं। सबही पावे॥

[नोट] इन पांच परावर्तनौ का काल [वक्त] एकसे एक का अनन्ता नन्त गुणा ज़ियादा२ है द्रव्य परिवर्तनका अनन्त काल इससे अनन्त

गुणा क्षेत्र परिवर्तन का इससे अनन्त गुणा काल परिवर्तन का इससे अनन्त गुणा भवपरिवर्तन का इससे अनन्तगुणा भावपरिवर्तनका जैन ग्रन्थों में इनका बयान विस्तार रूप किया है यहां पर बहुत मुख्तसिर कहा गया है

[७६] मिथ्या दर्शन के भेद बयान करो और तारीफ़ बयान करो एकान्त विनय, विपरीत, संशय अज्ञान की

उ० मूल भेद दो हैं

१ नैसर्गिक—जोकि एकेन्द्रिय वगैरा के अनादि से चला आता है

(२) परोपदेश पूर्वक—अर्थात दूसरे के उपदेश से होता है

दूसरी तरह पांच प्रकार हैं

१ एकान्त—अर्थात जो एक पक्ष को लेकर बयान करे जैसे कोई कहे "एको ब्रह्म द्वितियो नास्ति"

२ विनय--जो सिर्फ़ अदब करने कोही धर्म समझते हैं

३ विपरीत--जो उलटा श्रद्धानकरे जैसे हिंसामें धर्ममानें

४ संशय--हरएक चीज में शक करे

[५] अज्ञान-संसार को भ्रम और पदार्थों को झूठा समझना इनके विशेष भेद करने से कुल ३६३ भेद हैं

[७७] परोपदेशक के कितने भेद है और हर एक भेदके भेद कितने है।

उ० ४ भेद हैं

१ क्रिया वादी जिसके १८० भेद हैं

२ अक्रियावादी जिसके ८४ भेद हैं

३ अज्ञानवादी जिसके ६६ भेद हैं

४ वैनेयिक जिसके ३२ भेद हैं

नोट —इनका यन्त्र विस्तार सहित गोमटसारजी में है।

[७८] क्रयावादी के कितने भेद हैं उनकी नाम और तारीफ बतावो।

उ० १८० भेद हैं। इस तरहपर। मूलभेद ५।

१ कालवादी–जो वक़्तको मानते हैं और कहते हैं वक़्त पैदा करता है वक़्त सुलाता है वक़्त जगाता है वक़्त को जीत नहीं सक्ते।

२ ईश्वर बादी–जो ईश्वर को मानते हैं और कहते हैं किजीव बिलकुल बे ताक़त है सुख दुख नर्क स्वर्ग सब ईश्वर के तअल्लुक़ हैं।

३ आत्मावादी–जो कहते हैं कि आत्मा सर्व व्यापक है पुरुष एकही है "एकोब्रह्म द्वितीयो नास्ति"

४ प्रारब्ध बादी–जो तक़दीरको मानते हैं जो होनहार होता है वोही होता है–

५ स्वभाव बादी–दुनियां की ख़ासियत को मानते हैं इन पांचोंको इसतरह चारगुणा करें।

१ आपसे–अर्थात् खुद होता है।

२ परसे–अर्थात दूसरे से होता है॥

३ नित्य से–जो कहते हैं हमेशा से है।

४ अनित्य से–जो कहते हैं इसका शुरू है।

यह बीस होगये २०

इन बीसोंको नौ पदार्थों से ज़रब देवें १८० होगये अर्थात

जीव।

अजीव

आश्रव

बन्ध

संवर
निर्जरा
मोक्ष
पुन्य
पाप

[७६] अक्रयावादी के कितने भेद हैं नाम और तारीफ़ बतावो ।

उ० अक्रयावादी के मूल भेद २ दो हैं ।
१ नास्तिक जिस्के दो भेद हैं
[क] स्वत. नास्तिक
[ख] परतः नास्तिक
इन दोनों को सात पदार्थों पर लगाया जावे तो चौदह होगये १४
इनको क्रयावादी के ५ मूलभेद पर लगावें तो ७० भेद होगये ।
और काल और नेत को फिर सात पदार्थों से ज़रब दिया तो चौदह होगये ॥
इसतरह ७० और १४ मिलकर ८४ होगये ।

(८०) अज्ञानवादी के कितने भेद हैं उनकी तफ़सील बतलाओ

उ० सातभंग—अर्थात् अस्ति नास्ति और उनकोनो में ज़रब देने से ६३ होगये ।
और उसमें नो में से सिर्फ़ १ शुद्ध पदार्थ लेकर उसमें
अस्ति
नास्ति
अस्ति नास्ति

अवक्तव्य

चार सामिल किये यह ६७ भेद होगये

(८१) वै नयिक के कितने भेद हैं उनकी तफसील बताओ

उ० वै नयिक के ३२ भेद है

विनय होती है

(१) मन से

(२) वचन से

(३) काय से

(४) दान से

और विनय इन आठ दर्जे वालों की होती है

(१) देव

(२) राजा

(३) ज्ञानी

(४) जती

(५) वृद्ध

(६) बच्चा

(७) माता

(८) पिता

इन ८ को ४ मन, बचन, काय, दानसे गुणने से ३२ होगए

[८२] एकान्त वादियो के कितने भेद हुवे

उ० इस तरह तीनसोतरेसठ (३६३) भेद हुवे.

[८३] उनके सिवाय और कौन२ मत हैं

उ० १ पौरुषवादि—जो तक़दीर के क़ायल हैं

२ देववादी--जोदेव को मानते हैं

३ संयोगवादी--जोकहते हैं कि वस्तु का संयोग मिलने से काम होता है

४ लोकरूढ़--जो दुनिया का अमल दरामद अर्थात व्यवहार बताते हैं

(नोट यह कुल एकान्तवादीकीही मिसालें हैं और ऐसही बहुत संमत हैं

❀ सम्यग्ज्ञान अन्हिक दूसरा ❀

(८४) सम्यक्ज्ञान की तारीफ़ क्या है

उ० जिस तरह जीव वगै़रा पदार्थों की हालत है उसी तरह निश्चय कर भले प्रकार जानना

(८५) ज्ञान के के प्रत्यय हैं उनके नाम और तारीफ़ बयान करो

उ० ज्ञान के भी तीन प्रत्यय हैं

[१] जानाति अर्थात जाननेवाला--वह ज्ञानहै--जानने वाला आत्मा ही है उसको ज्ञान कहा

[२] ज्ञायते ऽनेन--अर्थात जिसके ज़रिये से जाना जाय यह करण साधन हुआ

[३] ज्ञप्ति मात्रं ज्ञानम्--अर्थात जो जानना वहही ज्ञान यह भाव साधन हुवा

(८६) ज्ञान के फल क्या २ हैं।

१ अर्थ का यथार्थ ज्ञान होता है।

२ फिर उस अर्थ में प्रतीति पैदा होती है इस तरह पर कि कर्म के सम्बन्ध से जो आत्मा मैला होरहा है वह आत्मा इन्द्रियों के ज़रिये सेअर्थ का ज्ञान पैदा करता है

३ प्रतीत के बाद द्वेष का अभाव होता है और मध्यस्थ भाव होजाता है ॥

४ अज्ञान अर्थात मिथ्याज्ञान का नाश होता है

(८७) सम्यक्ज्ञान के अंग बतावो

उ० आठ अंग हैं

१ व्यंजन व्यंजित--अक्षर मात्रा को शुद्ध उच्चारण करना

२ अर्थ समग्र—यथार्थ अर्थ ग्रहण करना

३ तदुभय समग्र--शब्द और अर्थकी शुद्धता दोनों

४ कालाध्ययन पवित्र--शुद्धकाल में उच्चारण करना

५ उपाध्यायनिन्हव—गुरुके नाम को न छिपाना

६ विनय लब्धि प्रभावना--ऐसी विनय शास्त्रकी करना जिससे दूसरे के दिलपर असर हो

७ उपधान--तपश्चरण वा व्रत नियम पूर्वक शास्त्र का अध्ययन करना

८ बहुमानोन्मान मुदित--बहुत मान शास्त्र का रखना

(८८) ज्ञान कै भेद हैं ? हर एक का नाम और तारीफ़ बयान करो

उ० ज्ञान के पांच भेद हैं

१ मति ज्ञान--अर्थात मति ज्ञानावरणी कर्मके क्षयोपशम से इन्द्रिय मनकर पदार्थों को जाने या जिस से जाने या जानने मात्र

२ श्रुत ज्ञान--श्रुतज्ञानावर्णी कर्म के क्षयोपशम से जो शास्त्रज्ञान प्रगट हो वा पदार्थ मे विचार युक्त सप्तभंग वाणी से रूप प्रमाण नयगर्भित वस्तु का ज्ञान होय वो श्रुत ज्ञान है

३ अवधिज्ञान—अवधिज्ञानावर्णी कर्म के क्षयोपशम से द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव की मर्यादा लिये रूपी पदार्थ को प्रत्यक्ष पने कर जाने या जाननेमात्र

(नोट) रूपी पदार्थ के मानी हैं मूर्तीक पदार्थ

४ मनः पर्यय ज्ञान—अर्थात मनः पर्ययज्ञानावर्णी कर्मके क्षयोपशम से दूसरे के मनमें जो पदार्थ है उनको जाने या जानकर या जानने मात्र अर्थात वीर्य अन्तराय और मनः पर्यय ज्ञानावर्णी कर्मका क्षयोपशम होवे और अंगोपांग नामा कर्मके उदय के लाभ के सहारे से आत्मा दूसरे के मनकी बात को जानजावे ऐसेज्ञानको मनःपर्यय ज्ञानकहते हैं। भावार्थ--कि एक जीव जिसके मन होवे दूसरे के मन की बात जानले और यह बात उस वक़्त जान सक्ता है जब कि

१ वीर्य अन्तराय कर्म का क्षयोपशम होवे।
२ मनः पर्यय ज्ञानावर्णी कर्मका क्षयोपशम होवे।
३ और वह मनका पुरज़ा जो पहिले से पैदाइशही से मौजूद था उसके सहारेसेही जाना जाता है।

नोट—मनका पुरजा यद्यपि पहिलेसे मौजूद था और किसी कदर वीर्य अन्तराय कर्मका क्षयोपशम भी था मगर चूंकि मनः पर्याय ज्ञाना वर्णीका क्षयोपशम नहीं था इसलिये नहीं जानसक्ता था।

५ केवल ज्ञान

[८६] केवल ज्ञान किसको कहते हैं और उससे क्या जाना जाता है।

उ० पूरे और निर्मलज्ञानका नाम केवल ज्ञान है अर्थात जो ज्ञान वग़ैरह इन्द्रियोंकी सहायता के बिना एकही वक़्त में कुल द्रव्य और कुल पर्यायोंको जाने इसीको केवल ज्ञान कहते हैं। केवल ज्ञान कुल द्रव्यों को और द्रव्यों की कुल पर्याय को जानता है। भूत. भविष्यत, वर्तमानकी सर्व द्रव्य परियायोंको जानता है।

(नोट) १-इसीवास्ते इसको अप्रमेय महात्मा स्वरूप कहते हैं। अर्थात जिसमें बेशुमार तारीफ़ होवें।

[नोट) २-केवल ज्ञानका होना इस युक्ति से भी साबित होता है कि जब जीवोंके ज्ञान कम ज़्यादा होता है तो कोई जीव ऐसाभी होगा जिसके पूरा ज्ञान होवे और ऐसाही ज्ञानी जीव बिला राग द्वेष होसक्ता है और वोही यथार्थ उपदेश देनेवाला होसक्ता है यह निश्चय समझना

(६०) पहिले मतिज्ञान होता है या श्रुतज्ञान।

उ० पहिले मति ज्ञान होताहै फिर श्रुतज्ञान होता है इस लिये मति ज्ञान कारण है और श्रुतज्ञान कार्य है।

(६१) श्रुतज्ञान के भेद केकिसमके है हरएक किस्मके भेदों को मुफ़स्सिल बतलावो।

उ० तीन क़िस्म के हैं

पहिली किसिम दो भेदकी है।

(क) अक्षरआत्मक–अर्थात जिसमें अक्षर होते हैं।

(ख) अनक्षरआत्मक-अर्थात जिसमें अक्षर नहींहोते

दूसरी क़िस्मअनेक भेदकी हैं अर्थात जिसक़दर शब्द हैं उसीक़दर भेद हैं।

तीसरी क़िस्म १२ भेदकी हैं जिससे मुराद द्वादशांग वाणी है और अंग बाह्य प्रकीर्णकादि भी है।

नोट—मगर मनस सिर्फ़ अक्षरात्मक श्रुत ज्ञान होता है।

(६२) मतिज्ञान और श्रुतज्ञानसे जानने में क्या फ़र्क़ है।

उ० जिस चीज़को मति ज्ञानसे जानते हैं उसको विशेष कर श्रुतज्ञान से जानते हैं।

(६३) कौन २ ज्ञान जीवके साथ हमेशा लगाहुवा है।

उ० मतिज्ञान और श्रुत ज्ञान

(६४) कौन २ सा ज्ञान निसक्ज है।

अवधि और मनः पर्य्यय—

(६५) कौन२ ज्ञान किस दर्जे के जीवके होता है

उ० मति, श्रुति तो सबके होते हैं अवधि ज्ञान भी सब के हो सक्ता है मन पर्याय और केवल संयमी मुनि के होता है

(६६) मति ज्ञानकिस२ जीव के होता है

उ० एकेन्द्रिय जीव तक के भी होता है

(९७) कौन२ श्रुतज्ञान किस२ जीवके होता है

उ० श्रुतज्ञान के २० भेद हैं जिसमें पर्याय नाम श्रुतज्ञान का प्रथम भेद है वह लब्धिपर्याप्तक निगोदियाके होता है इसही को अक्षर के अनंत वेभाग भी कहते हैं इस से बढ़ना २ एकेइन्द्री, बेइन्द्री, तेइन्द्री, चौइन्द्री, पंचेंद्री, असेनी सेनी के बढ़ता है और बढ़ताहुवा संपूर्ण श्रुत ज्ञान श्रुतकेवली भगवान के होता है और मध्य के असंख्यात भेद हैं इसका वर्णन श्री मद् गोमट्टसारजी में सविस्तर वर्णन है वहां से देखना

(६८) अनक्षरात्मकज्ञान एकेन्द्री जीव के भी होता है या नही अगर होताहै तो किस कदर

उ० होता है मगर सिर्फ लब्धिरूप होता है

(नोट लब्धि, रूप प्रवर्तिरूप अक्षर के अनंत वभाग निगोदिया के ज्ञान होता है लब्धिरूप और स्पर्श इंद्री द्वारा ज्ञान है प्रवृति रूप है जैसे एकेंद्री वृक्ष मल स्पर्शाकार ऽसबदीखता है।

(६९) प्रत्यक्ष किसको कहते हैं और परोक्ष किसको कहते हैं

उ० अक्षकहिये आत्मा और प्रति कहिये आश्रय पस आत्मा के आश्रय से विला किसी इन्द्री की सहायताके पैदा होवे वह प्रत्यक्ष है।

परोक्ष के मानी यह हैं कि जो इन्द्रिय और मन की सहायता से होता है--चुनांचे मतिज्ञान तो इन्द्रियोंके और

मन के ज़रिये से होता है और श्रुतज्ञान मनके ज़रियेसे होता है

दूसरे मानी यह हैं जो इन्द्रियों से दूरहो अर्थात जो ज्ञान खुद आत्मही से होवे।

(१००) इन पाच ज्ञानों में से प्रत्यक्ष कौन २ हैं॥

उ० अवधिज्ञान, मनःपर्ययज्ञान, और केवलज्ञान प्रत्यक्षहैं।

(१०१) इनने से परोक्ष ज्ञान कौन २ से हैं।

उ० मति ज्ञान और श्रुतज्ञान परोक्षहैं।

(१०२) प्रत्यक्ष ज्ञानमे क्या २ बात तारीफ़की होनी चाहिये।

उ० तीन बात

१ स्पष्ट–जिसको आत्मा विदून किसी दरमियानी कारण और ज़रिये के जानले।

२ साकार--अर्थात वस्तुको उसकी तारीफ़ों समीत जाने

३ अंजसा--अर्थात तत्काल ज्ञान होय।

(१०३) मतिज्ञानके और क्या नाम हैं हरएक की तारीफ़ बयान करो।

पांच नामहै।

१ मतिज्ञान--अर्थात् जो इन्द्रिय और मन से जीवादिक पदार्थों का साक्षात ज्ञान होताहै अर्थात जो इन्द्रियों के सामने होवे।

२ स्मृति--अर्थात पहिली जानी हुई को याद करै इस को मेधा और बुद्धिभी कहते हैं॥

नोट—बुद्धिके मानी है पदार्थ ग्रहण करनेकी ताक़त।

३ संज्ञा—जानी हुईको याद करके वर्तमान में जोड़ना अर्थात जानीहुई को याद करके दूसरी चीज़ से यह समझना कि यह चीज़ फ़लानी चीज़के मा-

फ़िक्र है या पहिली देखी हुई चीज़ को कहना कि यह वह चीज है इसीका नाम प्रति भिगज्ञान भी है और इसीको प्रतिभा और उपमालब्धिभी कहते हैं यह दो चीजोंका बराबर होनेका दिखाता है।

४ चिन्ता–एक निशानको देखकर यह जानना कि यहां वह चीज़ भी है जिसका यह निशान है इसी का नाम तर्क है और इसीको प्रतिज्ञा भी कहते हैं।

५ अभिनिबोध—एक निशान से यह क़ायम करना जिस जगह ऐसा निशान हुवा करता है वहां वह चीज़ ज़रूर होती है जिसका वह निशान होता है इसका स्वार्थ अनुमान भी कहते हैं।

नोट १ यह पांचा पर्याय मतिज्ञान की ज्ञानावरणी कर्म के क्षयोपशम से होतीहै यद्यपि पर्याय की अपेक्षा लफ़ज़ी मानों में कुछफ़र्क है मगर दर असिल ये पांचों नाम मतिज्ञान केही है।

नोट २ श्रुतिज्ञान में ऐसा नहीं होसक्ता है क्यों कि वह मतिज्ञान इन्द्रियों के सबबसे होता है और यह मनकाही विषय है।

नोट ३ यहतारीफ़ सिर्फ़कर्ता साधनबयानकी है औरभीसाधनइसके हैं तहैं

(१०४) स्वार्थानुमान के भेद और हरएक की तारीफ़ बयानकरो।

उ० तीन भेद हैं।

१ सम्भव–अर्थात किसी निशान को देखकर उसचीज़ के मौजूद होने को जानना मसलन ठंडी हवा से समझना कि पानी होगा या बर्फ़।

अर्थापत्ति जैसेपुष्टपुरुषदिनकोनहीखाता औरजीता है इससे यह सिद्धहुवा कि रात्रिको खाता है जो रात्रि को नहीं खातातोजीना और पुष्टहोना कैसे होसक्ता है

३ अभाव--अर्थात एक चीज़के न होने से यह समझ लेना कि दूसरी चीज़भी नहीं है जैसे धुवां न होने से समझना कि आग नहीं है।

(१०५) प्रमाण मे स्मृति शामिल हो सकगी कि नहीं।

उ० शामिल होसकेगी क्योंकि अगर स्मृति अप्रमाण होजावे तो प्रत्यभिग्ज्ञान न होवे और इसलिये व्याप्ति भी नहीं होसक्ती।

और इसीलिये अनुमान भी प्रत्यक्ष चीज़ का नहीं होसक्ता ऐसी हालत में बिलकुल नफ़ी लाज़िम आवेगी अर्थात किसीचीज़ का ज्ञान नहीं होसक्ता इसलिये स्मृतिको प्रमाण मानने सेही और प्रमाण साबितहोंगे

नोट १ पेश्तर देखे हुयेधुवें को देखने से आगका अनुमान होना व्याप्ति कहलाती है।

नोट २ प्रत्यभिग्ज्ञान होने मे स्मृति सबब है।

(१०६) स्वार्थानुमान को अभिनिबोध क्यों कहते है

उ० स्वार्थानमान को अभिनिबोध इसलिये कहते हैं कि मति ज्ञान के भेद अवग्रह वग़ैरा हैं और जब उनकी और तफ़सील होती है तो स्वार्थ अनुमान भी उस मे शामिल करते हैं

(१०७) साधना के कै भेद हैं हर एक का नाम और तारीफ़ बतलावो

उ० दो भेद हैं

१ उपलब्धि अर्थात इन्द्रिय और मन मे जो वस्तु ग्रहण होवे

२ अनुपलब्धि अर्थात इन्द्रिय और मन से जो वस्तु का ग्रहण न होवे

नोट २ साधन उसको कहते हैं जिसके ज़रिये से ज्ञान हो जैसे धुवां और जिस का ज्ञान होय उसको साध्य कहते हैं जैसे आग

नोट २ साध्य की ३ तारीफ़ हैं, शक्य, अभिप्रेत, असिद्ध,

(१०८ उपलब्धि के कै भेद हैं हर एक का नाम और तारीफ़ बयान करो

उ० ३ भेद हैं

१ कार्योपलब्धि—मसलन पहाड़ में आग है क्योंकि उस का कारण धुवां नज़र आता है

२ कारणोपलब्धि—बादल नज़र आये इसलिये बारिश ज़रूर होगी

३ स्वभावोपलब्धि—अर्थात वस्तु उत्पादव्यय ध्रौव्यस्वरूप है इस वास्ते सत्त स्वरूप है

(१०९ मतिज्ञान किस२ ज़रिये से होता है

उ० पांचों इन्द्रिय और छठे मन के ज़रिये से होता है

(११०) इन्द्रिय किसको कहते हैं।

उ० इन्द्र के मानी हैं आतमा। पस जिस चीज़ों के ज़रिये से आतमा जानता है उसको इन्द्रिय कहते हैं।

(१११) अनिन्द्रिय किसको कहते हैं।

उ० मनको।

(११२) मनको अनिन्द्रिय क्यों कहते हैं और इसका विषय क्या है

उ० मन बाह्य इन्द्रिय नहीं है और नियत देश वा विषय भी इसका नहीं है इसलिये इसको अनिन्द्रिय कहते हैं जैसे अनुदरा कन्या।

(११३) मतिज्ञान के कै भेद हैं हरएकका नाम और तारीफ बयानकरो

उ० चार भेद हैं।

१ अवग्रह—विषय और विषयी अर्थात इन्द्रियें वग़ैरा इन दोनों के जुड़तेही दर्शन होकर फौरन जो ज्ञान

वस्तुमात्र का होजाता है उसको अवग्रह कहते हैं जैसे कि आंख एक चीज़पर पड़तेही दर्शन होकर जो ज्ञान आंख के ज़रिये से हुवा वह अवग्रह है।

२ ईहा —एक चीज़ आंखसे देखकर उसके ज़्यादा हालात मालूम करनेकी इच्छाको ईहा कहते हैं मसलन कि सफ़ेद चीज़ देखकर यह इच्छा करना कि यह मालूम होजावे कि यह दूध है या छाछ है।

नोट—इसमे शक रफ़े करनेकी इच्छा है इस लिये इसको शंसय नहीं कहते हैं

३ अवाय—उस इच्छा का पूरा होजाना अवाय है।

४ धारणा--जो ऊपर के क़ायदे के माफ़िक़ निश्चय होचुका था उसको न भूलना यह धारणा है।

(११४) अवग्रहके भेद नाम और तारीफ़ बतलावो।

उ० अवग्रह दो क़िस्मका है जिससे वस्तु से मिलकर पदार्थ का ज्ञान हो

१ व्यंजनावग्रह—अप्रगट पदार्थ का ग्रहणहो उसको व्यंजनावग्रह कहते हैं।

२ अर्थरूप--जिसमें पदार्थज्ञान पूरे तौर से होजावे जैसे कि किसी चीज़ के छूने से वह सख़्त या नरम मालूम होजावे।

नोट—बाक़ी ईहा अवाय धारणा यह तीनों सिर्फ़ अर्थरूप हैं॥

(११५) अवग्रह वग़ैरह ज्ञान कै तरह पर होता है हरएक का नाम और तारीफ़ बयान करो।

उ० १२ तरह पर।

१ बहु—अर्थात बहुत

२ बहुविधि--अर्थात बहुत तरह।

३ चिप्र-अर्थात जलदी

४ अनिसृत-अर्थात निसृत यानीजो जाहिर न होवे।

५ अनुक्त-अर्थात वग़ैर कहा हुवा।

६ ध्रुव-अर्थात निश्चय

(१) वजह इनके प्रति पक्षी अर्थात उलटी हैं

७ एक

८ एकतरह

९ देरी से

१० जो जाहिर होवे-निश्रत

११ कहाहुवा-उक्त

१२ अनिश्चय

(११६) निसृत और उक्त में क्या फ़र्क़ है और किसको कहते हैं।

उ० यह फ़र्क़ है कि अपने आपसे ग्रहण होवे वह निःसृतहै और दूसरे के उपदेशसे ग्रहण होवे वह उक्त है।

(११७) ध्रुव और अध्रुव में क्या फ़र्क़ है और किसको कहते हैं।

उ० यह फ़र्क़ है कि जैसे ज्ञान पहिले हुवाथा वैसाही बादमें कायम रहना ध्रुव है उसमें कमी ज़्यादाहोना अध्रुव है।

नोट-जैसा ज्ञान पहिले हुवा था उसको न भूलना धारणा है।

[११८] अब हसाब लगा कर बतलावो कि अवग्रह के कितने भेद हैं।

उ० अवग्रहइत्यादि चारको इन १२ से गुणाकिया ४८ हुवे और इनको पांच इन्द्री और छठे मनसे गुणाकिया २८८ भेद होगये।

नोट १-यह २८८ भेद अर्थ रूप हैं।

नोट २-इस जगह अर्थका नाम वस्तु है।

नोट ३- अवग्रह वग़ैरा जो बारा तारीफ़ें हैं वह वस्तु की हैं।

नोट ४-ऊपर साबित किया है कि अवग्रह द्रव्यका होता है क्योंकि रूप वगैरा द्रव्यकेही गुण हैं रूप वगैरा कोई द्रव्य नहीं है बल्कि द्रव्य के गुण और इन्द्रियों का मिलाप द्रव्यसेही होता है ॥

(११९) व्यञ्जन किसको कहते हैं

उ० व्यञ्जन ऐसी आवाज़ को कहते हैं जिसकी असलियत न मालूम होवे जैसे कि एक आवाज़ शोर की हुई मगर यह न मालूम हुवा कि बादल की गरज है या रेल की घोर है इसी को अव्यक्त भी कहते हैं

(१२०) व्यञ्जन अवग्रह कौन२ इन्द्रिय से होता है

उ० व्यञ्जन अवग्रह सिर्फ़ चार इन्द्रियों के ज़रिये से होता है

(१२१) आंख से व्यञ्जन अवग्रह होता है या नहीं

उ० नहीं

(१२२) चक्षु और मन अप्राप्य कारी क्यों है

उ० इसवास्ते कि वस्तु को उससे मिल कर या भिड़कर नहीं जानते हैं दूर से जानते हैं इसलिये अप्राप्य कारी कहलाते हैं

नोट १ आंख से उसवक्त जाना जाता है [बिदून छूनेके] कि सामने आया या ज़ाहिर हुवा

नोट २-और मन भी ऐसी चीज़को विचार में लेता है जो दूर मौजूद होवे

(१२३) अब बतलावो कुल मतिज्ञान के कितने भेद है और क्यों

उ० ३३६ भेद हैं ?

चार इन्द्रिय जिनसे व्यंजन अवग्रह होता है १२ भेद अर्थात बहु वगैरा में ज़रब देनेसे ४८ हुवे और इन को २८८ मे शामिल करने से ३३६ भेद हुवे

(१२४) मतिज्ञान धर्म द्रव्य को जो अमूर्तीक है क्यों कर जान सक्ता है

उ० प्रत्यक्ष सब द्रव्य को नहीं जानता है क्योंकि मति ज्ञान

और श्रुत ज्ञान परोक्ष कह चुके हैं और आत्मा मन के द्वारा मे इस तरह पर जानता है कि जो इन्द्रिय अर्थात मन के ज्ञानावरणी कर्म का क्षयोपशम होता है और उस क्षयोपशम से आत्मा मन के ज़रिये से जानता है, धर्म द्रव्य अधर्मद्रव्य आदि अमूर्तीकपदार्थों को शास्त्रके उपदेश से जान सक्ते हैं श्रुतज्ञान मति पूर्वक होता है इसलिये परोक्ष जान सक्ता है

(१२५) मतिज्ञान और श्रुत ज्ञान किस २ द्रव्य को जानते है और हरएक द्रव्य की कुल पर्यायों को जानते हैं या नहीं

उ० मति ज्ञान और श्रुत ज्ञान सब द्रव्यों को जानता है हरएक द्रव्य की कुल पर्यायों को नहीं जानता

नोट-हरएक द्रव्य की बेशुमार पर्याय हैं

(१२६) अवधि ज्ञान के तरह पर होता है

उ० अवधि ज्ञान दो तरह पर पैदा होता है

१ भव प्रत्यय-अर्थात जीव को व एतबार भव के होवे जैसा कि देव और नारकी के पैदाइशही से लाज़मी तौर पर अवधि ज्ञान होता है मगर कम ज़्यादा होता है

२ गुण प्रत्यय--अर्थात जो अवधि ज्ञानावर्णी कर्म के क्षयोपशम की मुख्यता मे होती है

(१२७) गुण प्रत्यय के के भेद हैं

उ० इसके तीन भेद हैं

१ देशावधि--अर्थात थोड़ी दूर तक काम दे और यह अवधि मिथ्या दृष्टी के भी होती है

२ परमावधि--जो ज़्यादा दूर तक काम देती है और उस में परिणामों की सफ़ाई भी ज़्यादा है और सिर्फ़ संयमी के होती है

३ सर्वावधि--सबसे ज़्यादा क्षेत्र तक होती है और ऋद्धि धारी मुनि के होती है

(१२८) अवधि ज्ञान किस चीज़ को जानता है मूर्तीक को या अमूर्तीक को।

उ० अवधि ज्ञान मूर्तीक पदार्थ को जान सक्ता है अमूर्तीक को नहीं जान सक्ता

(१२९) मूर्तिक किसको कहते हैं।

उ० जिसमें स्पर्श, रस, गन्ध, वर्ण होवें वोह मूर्तीक है।

(१३०) मनुष्य और तिर्यंच मे अवधिज्ञान किस २ निमित्त से होता है।

उ० अवधि ज्ञानावरणी कर्मके क्षयोपशमके निमित्त से।

(१३१) अवधिज्ञान के कै भेद हैं हरएकके नाम और तारीफ़ बतलावो।

उ० वोह छह भेद रूप है।

१ अनुगामी--अर्थात जो एक पर्याय से दूसरी पर्याय में साथ जावे वा क्षेत्रसे क्षेत्रांतरजावे।

२ अननुगामी--जो दूसरी पर्यायमें साथ न जावे और दूसरेक्षेत्र में न जावे।

३ वृद्धिमान--अर्थात जो बढ़ता रहे।

४ हीयमान--अर्थात जो घटता रहे।

५ अवस्थित--अर्थात जो एकसार रहे।

६ अनवस्थित--अर्थात जो घटता व बढ़ता रहे।

नोट—यह ६ हालतें गुण प्रत्यय के तीनों क़िसमों में होती हैं अर्थात कोई किसी क़िसिम में और कोई किसी क़िसिम में।

(१३२) अवधिज्ञान वाला किस दरजे तक जान सकता है

उ० एक परमाणुतक को जान सक्ता है।

(१३३) मनः पर्य्ययज्ञानके कै भेद हैं हरएकका नाम और तारीफ़ बतावो

उ० दो भेद हैं।

१ ऋजुमति--अर्थात--जो दूसरे के मनमें आचुका हो उसको सीधीतरहसे जानना।

२ विपुलमति--जो दूसरे के दिल में साफ़ और सीधी तौरपर न आचुका हो बल्कि दूसरे का दिल उसमें डांवांडोल रहे उसको भी जानलेवे अर्थात वक्र मनसे चिन्तवन कियाहुवा हो उसको जानता है।

(१३४) ऋजुमतिवाला कितने क्षेत्र और काल तक जानसक्ता है।

उ० १ कालकी अपेक्षा कमसेकम तीन भवतक जान सक्ता है और ज़्यादासे ज़्यादा आठभवकी बातको जान सक्ता है।

२ क्षेत्रकी अपेक्षा कमसे कम चारकोस और ज़ियादा से ज़ियादा आठकोस और उत्कृष्टचार योजनसे आठ योजन तक।

(१३५) विपुलमतिवाला कितने काल और क्षेत्र तक जान सक्ता है।

उ० १ कालके आठ भव अगले या पिछले और उत्कृष्ट कर असंख्यात कालतक जानसक्ताहै।

२ कमसेकम चार योजन से आठ योजन तक और उत्कृष्ठ अढ़ाई द्वीप तक जानसक्ता है क्योंकि आगे मनुष्य जीव नहीं हैं।

(१३६) ऋजुमति और विपुलमति में किस २ चीज़ में फ़र्क़ है।

उ० १ विशुद्धि—अर्थात आत्मा के परिणामोंकी सफ़ाईमें।

२ अप्रतिपात--अर्थात संयम के न विगड़नेसे।

नोट—प्रतिपात संयमके छूटने को कहते हैं और जब संयम न विगडे तब उसको अप्रतिपात कहते हैं।

खुलासा यह है कि ऋजुमति और विपुलमति ज्ञान उसीवक्त होंगे जबकि जीव संयम को धारण करलेगा फ़र्क यह है कि अगर ऋजुमति के दर्जेका ज्ञानहुवा है तो संयम बिगड़ सक्ता है और इसलिये ज्ञानभी बिगड़जाता है मगर जब विपुलमतिके दरजेका ज्ञान होजाता है तो संयम नहीं बिगड़ सक्ता इस लिये ज्ञान क़ायम रहता है और चारित्र बढ़ता जाताहैऔर ऋजुमतिसे विपुलमति में परिणामोंकीसफ़ाई ज़ियादाहै

(१३७ ऋजुमति वाला किस दरजे तक जान सक्ता है

उ० परमाणु के अनन्तवे भाग को जान सक्ता है

(१३८) विपुल मतिवाला किस दर्जे तक जान सक्ता है

उ० इस अनन्तवे भाग के भी अनन्तवे भाग को जान सक्ता है

(१३९) मन पर्य्यय ज्ञान का विषय क्या है

उ० मनःपर्य्यय ज्ञान का विषय भी वोही मूर्तीक पदार्थ है मगर अवधि ज्ञानके मुक़ाबिले में यह उसी पदार्थ के अनन्त भाग अगर किये जावें तो एकहिस्से को जान सक्ता है

(१४०) अवधि ज्ञान और मनः पर्य्यय ज्ञान में किनर बातो से फ़र्क़ है

उ० अवधिज्ञान और मनःपर्य्यय ज्ञान में चार बातों से फ़र्क़ है

(१)विशुद्धता–अर्थात अवधि ज्ञान से मनःपर्य्यय ज्ञान में परिणामों की सफ़ाई ज़ियादा है इस लिये मनःपर्य्यय ज्ञान वाला बहुत ज़ियादा बारीक बात को जान सक्ता है

(२) क्षेत्र–अर्थात अवधि ज्ञान का क्षेत्र ज़्यादा है
(३) स्वामी–अर्थात् वह जीव तादाद में ज़्यादा हैं जिनको अवधि ज्ञान होता है और वह जीव तादादमें कम हैं जिनको मन.पर्य्यय ज्ञान होता है
(४) विषय--अर्थात जिसको जाने

(१४१) केवल ज्ञान क्योंकर पैदा होता है

उ० मोह के क्षय होनेसे और ज्ञानावर्णी दर्शनावर्णी और अन्तराय इन तीनों के क्षय होने से केवल ज्ञान पैदा होता है

(१४२) केवल ज्ञान अपनी बुद्धी से भी होता है या नहीं अगर होता है तो क्यों

(उ०) केवल ज्ञान अपनी बुद्धी से नहीं होता मोहनी कर्म के क्षयसे और ज्ञानावर्णी दर्शनावर्णी और अंतराय कर्मके क्षयसे होता है औरस्वयम्सम्यक्‌दर्शनादिक होनेसे वैराग्य प्राप्तहोकर केवलज्ञान होता है उसको स्वयम् बुद्धि कहते हैं और जो परके उपदेश से होता है उसको बोधित बुद्धि कहते हैं

(१४३) एक वक्त एक आत्मा के कै ज्ञान हो सके हैं और अगर एक से ज़ियादह हैं तो कौनर

उ० एकवक्त एक आत्माके ज़्यादहसेज़्यादह चार ज्ञानहोसक्ते हैं अर्थात् मति, श्रुत, अवधि, मनःपर्य्ययतक लेकिन जिस जीव को केवल ज्ञान प्राप्तहोता है उसके सिर्फ़ एकही ज्ञान होता है क्योंकि असल में पूर्ण और निर्मल ज्ञानतो सिर्फ़ एक केवल ज्ञानही है

(१४४) एकवक्त में क्षयोपशम् ज्ञान एकही प्रवर्तता है अर्थात् काम करता है पस चार ज्ञान क्यों कहे

उ० चारों मौजूद होते हैं मगर काम एक करता है जैसे कि चार शक्ति अर्थात् ताक़तें एक जीवमें मौजूद होवें उसमेंसे एक ताक़त एक वक़्तमें काम करती है दूसरी नहीं करती मगर उसके काम न करने से यह नहीं कहा जाता कि वह ताक़त नहीं है

(१४५) मिथ्याज्ञान किसको कहते हैं उसके भेद बयान करो

उ० जिस ज्ञान में संशय, विपर्य्य, अनध्यवसाय हो वह मिथ्या ज्ञान है

१ संशय-जिस बात के जानने में शक होवे उसको संशय कहते हैं जैसे किसीके चोट लगी उसको यह शक होना कि लाठी से चोट लगी या ईटसे

२ विपर्य्य-उलटाज्ञानहोनामसलन छाछ कोदूधसमझना

३ अनध्यवसाय-निश्चय करने में ध्यान नहोना मसलन जाते हुवेको किसी चीज़ का स्पर्श हुवा परन्तु यह ध्यान न करना कि किस वस्तु से स्पर्श हुवा

(१४६) विपर्य्य के के भेद है

उ० तीन भेद

१ कारण विपर्य्य—अर्थात जिसका सबब उलटा होवे।

२ स्वरूप विपर्य्य—अर्थात जिसका स्वरूप उलटा जाने

३ भेदा भेद विपर्यय—अर्थात जिसके भेद और अभेद को उलटा जाने।

नोट-अगर यह तीन क़िस्मकी विपरीतता न होवे तो वह ज्ञान सम्यग्ज्ञान है

(१४७) विपर्य्य कै तरह से पैदा होता है।

उ० दो तरह से होता है॥

१ अगृहीत विपर्य्य--अर्थात जो आपसे आप विपरीतता पैदा होजावे।

२ ग्रहीत विपर्य्य--अर्थात जो दूसरेके उपदेशसे ग्रहण किया हो।

(१४८) कौन २ ज्ञान किस किसिमका विपर्य्य है।

उ० सम्यग्दर्शन रहित मति ज्ञान है सो कुमतिज्ञान कहलाता है और सम्यग्दर्शन रहित श्रुतज्ञानहै सो कुश्रुत ज्ञान कहलाता है अवधिज्ञान भी सम्यग्दर्शन रहित होता है वह विभंग ज्ञान और कुअवधि कहलाता है।

(१४९) इन पांच ज्ञानों में कौन२ ज्ञान सम्यक्त्वरूप और कौन २ मिथ्या रूप होसकते हैं।

उ० मति, श्रुति, अवधि, ये तीन ज्ञान सम्यग् होते हैं और मिथ्या भी होते हैं।

मनःपर्य्य ज्ञान और केवल सिर्फ़ सम्यक्ही होते हैं

नोट--जिसको ज्ञान उलटा है वो वह वस्तुके स्वरूप को यथावत् न जानने से अपनी मरज़ी से मिस्ल बावले आदमी के जिस चीज़ को जो चाहे कहदे और चूंकि वह चीजकी असलियत को ज्यों का त्यों नहीं जानता इसलिये उसके सही सहीह कहनेसे भी उसका एतबार नहीं होसकता क्योंकि यह विपर्यय जानताहै।

(१५०) दर्शन और ज्ञान का फ़र्क़ बतलावो।

उ० सामान्य अवलोकन या निराकार अर्थात जिसमे वस्तु का आकार ज़्यादा न मालूम होवे वह दर्शन है और आकार सहित वस्तु का जानना वह ज्ञान है।

(१५१) सम्यग्दर्शन और सम्यग् ज्ञान में क्या फ़र्क़ है।

उ० वस्तु का यथावत् श्रद्धान सो सम्यग्दर्शन है वस्तु का यथावत् श्रद्धान पूर्वक जानना सो सम्यग्ज्ञान है।

(१५२ अव्वल दर्शन होता है या ज्ञान होता है

उ० दर्शन और ज्ञान की पैदाइश एकही वक्त है जिस वक्त दर्शन मोहका उपशम या क्षयोपशम या क्षय होजाता है तो आत्मा के सम्यग्दर्शन के परिणाम होजाते हैं और मति अज्ञान दूर होकर मति ज्ञान, श्रुत अज्ञान दूर होकर श्रुतज्ञान पैदा होजाता है सम्यग्दर्शन को पहिले इस वजह से भी कहा है कि सम्यग् दर्शन पूज्य प्रधान है और सम्यग् दर्शन ही की वजह से सम्यग्ज्ञान नाम पाता है॥

नोट १ उपशम—परिणामों की सफ़ाई को कहते हैं कि जैसे पानी में गाद घुली हुई हो गाद नीचे बैठे और स्वच्छपानी उपर तैरता है

नोट २ क्षय उपशम—उसको कहते हैं कि पानी में से गाद कुछ तो बैठ जावे और कुछ घुली रहे

नोट ३ क्षय—उसको कहते हैं कि पानी में से गाद बिलकुल निकलकर दूर होजावे और पानी बिलकुल निर्मल होजावे क्षय अर्थात कर्म की अत्यन्त निवृत्ति (अभाव) वह क्षय है

नोट ४-३ मिथ्यात्व ४ अनंतानुबंधी की चोकड़ी एवं सातों प्रकृतियोंका उपशम होना अर्थात् उदयमें न आना और सत्तामें मौजूद रहना उसको उपशम कहते हैं और ७ मध्ये ६ प्रकृति का उदयाभाव क्षय और सम्यक्त प्रकृति

का उदय होना इसको क्षयोपशम कहते हैं और इसको वेदक भी कहते हैं

(१५३) दर्शन के पैदा होने का कारण ज्ञान है या नहीं अगर नहीं है तो क्यों

उ० सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान एक कालही होते हैं और सम्यग्दर्शन के होने से सम्यग्ज्ञान कहलाता है इस वास्ते ज्ञान को कारणता सम्यग्दर्शन की नहीं है।

सम्यक्चारित्र आन्हिक ३

(१५४) सम्यक चारित्रकी तारीफ़ बयान करो।

उ० संसार के कारण

१ मिथ्यात्व

२ अविरत

३ प्रमाद

४ कषाय

५ योग हैं

यहही आश्रव और बन्धके कारण हैं पस आश्रव और बन्ध के दूर करने के लिये जो सम्यग्ज्ञानी कोशिश करने वाला ऐसे क्रिया का त्याग करे जिससे कि आश्रव और बन्ध होतेथे ऐसी क्रिया का न करने का नाम सम्यक् चारित्र है संसार में कर्म बंध जिससे हो ऐसी क्रिया का त्याग करना उसका नाम सम्यक् चारित्र है।

[१५५] मिथ्यात्व, अविरत, प्रमाद, कषाय और योग इन सबके मानी बयान करो।

उ० १ मिथ्यात्व--अतत्व श्रद्धान अर्थात चीज़ों में उलटा

श्रद्धान—करना जैसे तकलीफ़की देनेवाली चीज़ को आरामकी चीज़ समझना ।

२ अविरत-जो किसी चीज़का त्यागरूप परिणामनहो

३ प्रमाद—ग़फ़लत, बे परवाही ।

४ कषाय—जिससे आत्माको क्लेश पहुंचै ।

५ मन, वचन, काय का चलना योग कहलाता है अर्थात आत्माके प्रदेशोंको योग कहते हैं इन सब की पूरी २ तफ़सील आगे प्रश्न५२७में आवैगी ।

(१५६) चारित्र के कै प्रत्यय हैं उनके नाम और तारीफ़ बयान करो ॥

उ० चारित्रके तीन प्रत्यय हैं ।

१ चरति--अर्थात जो आचरण करे ।

२ चर्य्यतेऽनेन—अर्थात जिस ज़रियेसे आचरणकरे

३ चरणमात्रं चारित्रम्—अर्थात जो आचरणरूप हुवा

(१५७) सम्यकचारित्र के कितने अंग हैं ।

उ० १३ अंग हैं ।

५ महाव्रत, ५ समति, ३ गुप्ति

५ महाव्रत के नाम

अहिंसाव्रत, सत्यव्रत, अचौर्यव्रत, ब्रह्मचर्य्यव्रत, अपरिग्रहव्रत ।

५ समति के नाम

इर्य्या समति, भाषा समति, एषणासमति, आदाननिक्षेपणा समति, उत्सर्ग समति

३ गुप्ति के नाम

कायगुप्ति, वचनगुप्ति, मनगप्ति

नक़्शा न० २
मुताल्लिक़ अध्याय ३
आन्हिक ३
सफ़ा ६६
प्र० १५१
मुनिके १३ प्रकार चारित्र
५ महाव्रत
५ समिति
३ गुप्ति
अहिंसा व्रत
अचौर्य व्रत
सत्य व्रत
ब्रह्मचर्य व्रत
अपरिग्रह व्रत
मनगुप्ति
वचनगुप्ति
कायगुप्ति
ईर्य्यासमिति
भाषासमिति
एषणासमिति
आदाननिक्षेपणा समिति
उत्सर्गसमिति

(१५८) व्रत किसको कहते हैं ।
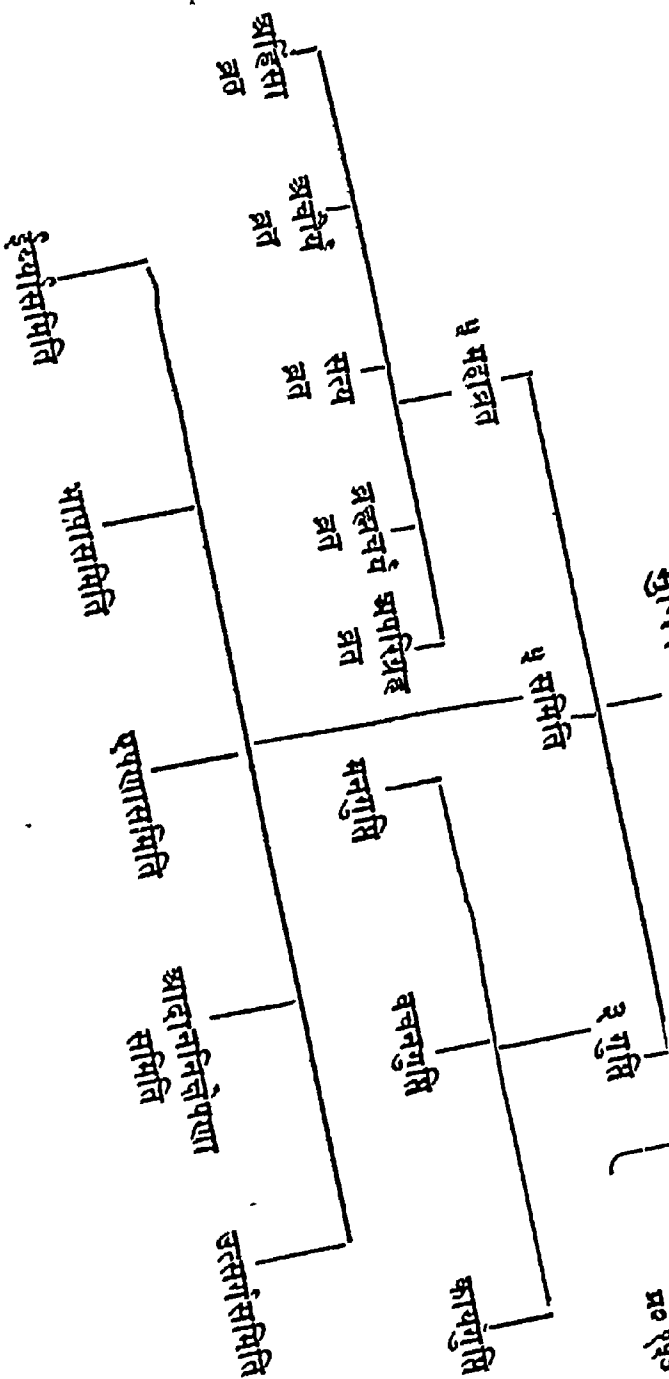
उ० हिंसा अनृत (अर्थात झूंठ) स्तेय (चोरी) अब्रह्म, परिग्रह इनका व्रत अर्थात त्याग व्रत कहलाता है । और इनके त्याग न करने को अविरत कहते हैं और

६ कायके जीव

१ पृथ्वी जीव

२ अप् जीव

३ तेज जीव

४ वायुके जीव

५ वनस्पतिके जीव

६ त्रस अर्थात द्विइन्द्रिय वग़ैरह इनकी रक्षा न करना

५ इन्द्रियां

१ आंख

२ कान

३ नाक

४ जीभ

५ स्पर्श

औरछठेमन इनके न रोकने कोभी अविरत कहते हैं । ऐसे १२ भेद रूप अविरत है ।

(१५९) हिंसाकी तारीफ़ करो ।

उ० प्रमाद के जोग से प्राण का घात करना हिंसाहै चाहे अपने प्राण का घात होवे चाहे दूसरेका । हिंसा प्राणी के लिये दुःखका कारण है इसलिये हिंसा को अधर्म का कारण कहा गया है जिसके प्रमाद का जोग होगा

उसके प्राणों का घात ज़रूर होगा चाहे अपना प्राण हो चाहे दूसरे का।

नोट-इन्द्रिय वगैरा १० प्राण हैं।

नोट-प्रमाद के १५ भेद होते हैं।

(१६०) अनृत की तारीफ़ करो।

उ० ऐसा बुरा वचन कहना जो प्राणीको तकलीफ़दे अनृत अर्थात झूंट है।

नोट-अप्रशस्तवे दोनों दाखिलहैं झूंठ कहना सो झूंठ हैही मगर ऐसा सच कहना जिसमे जीवका घातहो वहभी झूंट है।

(१६१) स्तेयकी तारीफ़ करो।

उ० प्रमाद से बिना दीहुई चीज़ लेना चोरी है।

(१६२) अब्रह्मकी तारीफ़ करो

उ० स्त्रीपुरुष के चारित्र मोह के उदय से राग परिणाम कर सहित होवें तब उसके स्पर्श करने की इच्छा होवे वह मैथुन है अगरचे कारज न होवे और यह इच्छा प्रमाद में रति के सुख के लिये होवे इसको अब्रह्म कहते हैं

(नोट)१ जिसके पालने से अहिंसा वगैरा गुण की तरक्की होवै वह ब्रह्म है

(नोट)२ त्याग दो क़िस्म का होता है एक एको देश त्याग है दूसरा सर्वदेश त्याग है गृहस्थो के सिर्फ़ एकदश त्याग होता है इसलिये व्याहतास्त्री से काम सेवन करना गृहस्थी के वास्ते अब्रह्म नहीं हैसिर्फ़ परस्त्रीका भोगना अब्रह्महै

(१६३) परिग्रह की तारीफ़ करो

उ० दूसरी चीज़ में मुहब्बत रखना मूर्छा कहलाता है और इसी को परिग्रह कहते हैं

(नोट) सम्यक्दर्शन वगैरा को अपना समझना मूर्छा नहीं है क्योंकि वह प्रमाद रूप नहीं है बल्कि सम्यक रूपहै औरउसमे राग भाव भी नहीं है वह असली स्वभाव आत्मा का है

(१६४) व्रत के किस्म के हैं उनके नाम और तारीफ बताओ

उ० व्रत दो तरह के हैं

(१) एक देश व्रत--अणुव्रत

(२) सर्व व्रत--महाव्रत

अणुव्रत--श्रावक अवस्था में छोटे त्याग को कहते हैं
महाव्रत--मुनि अवस्था में सर्व प्रकार पाप के त्याग को कहते हैं

(१६५) समति किसको कहते हैं और के हैं हरएक का नाम बताओ

उ० समति पांच हैं

(१) ईर्य्या--मुनि सूरज निकलने के बाद जब के रास्ते में जीव वगैरह अच्छी तरह नजर आने लगते हैं जिस रास्ते जानवर न होवे उसमें चार हाथ ज़मीन को आगे अच्छीतरह देख कर चलते हैं इसका नाम ईर्य्या समति है

(२) भाषा-जीवों के हितकारी वचन बोलना और थोड़ा बोलना और ऐसे वचन बोलना जिस में कोई अंदेशा न हो इसको भाषा समति कहते हैं

(३) एषणा-दिन में छीयालीस दोष रहित एक दफ़े निर्दोष आहार ग्रहण करने को एषणा समति कहते हैं

(४) आदान निक्षेपण--अपना जिस्म कमण्डल पुस्तक वगैरह ज़मीन को साफ़ करके पीछेसे रखना और उठाना उसको आदान निक्षेपणा समति कहते हैं

(५) उत्सर्ग--ऐसी शुद्ध ज़मीनपर जिस पर त्रसजीव न हो मलमूत्र डालना उत्सर्ग कहलाता है

(नोट) इनमें से हरएक पर लफ्ज सम्यक् लगाना चाहिये

(१६६) गुप्ति किसको कहते हैं

उ० काय, मन, वचन, की क्रिया रूप जो जोग उनका भले प्रकार रोकना, वस करना गुप्ति है

(१६७) गुप्ति कै क़िस्म की हैं

उ० गुप्ति तीन क़िस्म की हैं

(१) कायगुप्ति--ज़मीन को अच्छी तरहसे देख कर चलना ज़मीनपर रखना ज़मीन से उठाना ज़मीन पर बैठना यह सब अच्छी तरह देखकर करें क्योंकि ऐसा न करने से कर्म का आश्रव होता है

(२) वचनगुप्ति-ऐसा वैसा वचन न बोलें अर्थात् वचन को रोकना क्योंकि ऐसा न करने से आश्रव होताहै

(३) मनगुप्ति-मन में राग द्वेष वग़ैरह पैदा करने की ख्वाहिश नकरना

(१६८) श्रावकके १२ व्रत कौन२ हैं

उ० ५ अणुव्रत, ३ गुणव्रत, ४ शिक्षाव्रत

(१६९) अणुव्रत क्या होते हैं और कौन २ से हैं ॥

उ० अणुव्रत अगारी अर्थात गृहस्थी के होताहै ५ पापका एक देश त्याग अणुव्रत कहलाता है मसलन अहिंसा व्रत में त्रसजीव की बाधा बिलकुल नहीं करैंगे

१ थावरकी हिंसाको यत्न से टालैंगे।

२ झूठ में ऐसा झूठ न बोलैंगे जिसमें घर या गांवका नाश होवे और विपदा में भी सत्यही कहै तो जिस से परजीवके प्राण घात होवैं उसमें सत्यभी नहीं बोलेंगे

३ स्तेय-जिसमें दूसरे को तकलीफ़ होवे ऐसा धन न

लेना, राजपंच दंड देवे ऐसा विना दिया द्रव्य नहीं लेंगे
४ अब्रह्म--स्वस्त्री में संतोषकर परस्त्रीको त्यागकरना।
५ परिग्रह--अपनी ख्वाहिश व ज़रूरत के माफ़िक़ धन धान्य वगैरा रक्खे और सिवाय का त्याग करैंगे।

नोट- अणुव्रतको मूलगुणभी कहते हैं।

(१७०) गुणव्रत किसको कहते हैं और कितने हैं।

उ० पांच अणुव्रत जो ऊपर बतलाये हैं उनको गुणरूप करते हैं इसलिये उनको गुणव्रत कहते हैं।
गुणव्रत ३
१ दिग्व्रत--अर्थात दिशा का परिमाण।
२ देशव्रत--अर्थात दिशाका परिमाण में नित्यप्रति कालकी मर्याद करि देशका परिमाण करना
३ अनर्थ दंड व्रत-अर्थात बे मतलब काम करने से बचना इसके ५ भेद हैं
१ पापोपदेश--ऐसे काम बतलाना जिसमें जीवों को तकलीफ़ होवे याऐसा काम करना जिसमें जीवों की हिंसा होती हो
२ हिंसादान--जिन चीजों मे हिंसा होती होवे जैसे कि फावला कुदाल शस्त्र वगैरा मांगा देना
३ अपध्यान--अर्थात किसी के वास्ते बुरा चाहना
४ दुःश्रुति--अर्थातधर्म विरुद्ध अन्यमतकी किताबें पढ़ना जिन से ख्यालात खराब होवें
५ प्रमादचर्या--अर्थात फ़ज़ूल फिरना फ़िजूल वनास्पति काटना फ़ज़ूल जलका आरंभ तथा अग्नि आरंभ

पत्रनका आरंभ और बिना मतलब के भोग उपभोग इकट्ठे करना प्रमादचर्या है

(१७) शिक्षाव्रत किस को कहते है और कितने हैं

उ. जिसमें मुनियों के व्रत की शिक्षा मिलती है उसको शिक्षा व्रत कहते हैं

शिक्षा व्रत ४ हैं

(१) सामायक दो चार या छह घडी अलहदा जगह में बैठ कर या खड़े होकर परिग्रह का प्रमाण करके या कुल छोड़ कर दिल को क़ायम करके संकल्पित तकलीफ़ को रोक कर पाप का त्याग करना पंच परमेष्ठी आदिका जप ध्यान करना आतम स्वरूपका चिंतवन करना

(२) प्रोषधोपवास—दो अष्टमी और दो चतुर्दशी को बिलकुल भोजन न करना यानी १६ पहर का उपवास करना आरंभादिकके परित्याग से धर्म ध्यान में प्रवर्तन करना

(३) भोगोपभोग परिमाण -एकबार भोगने में आवे वह भोगहै जैसे कि खाने की चीजें बार बार भोगने में आवैंवह उपभोगहैं जैसे वस्त्रवगैरा, इनकाप्रमाणकरना

(५) अतिथि सम्विभाग-अर्थात मुनि श्रावक के लिये अपने घरके तय्यार भोजन में हिस्सा देना या उनकी वय्यावृत्य करना

(१७) चारित्र किस तरह होता है

उ० दीक्षाधारण कर मूलगुणपालना--उसकोचारित्र कहते हैं

(१७३) भावना किसको कहते हैं

उ० किसी चीज़ को बार२ चिन्तवन करने को भावना कहते हैं

(१७४) हरएक व्रत के लिये कै कै भावनाऐं

उ० पांच२ भावना हैं

[१७५] अहिंसा की ५ भावना उनके नाम और तारीफ़ बयान करो

उ० (१) वाक्- वचनगुप्ति--वचनकी रक्षा करना, फ़ज़ूल न बोलना

(२) मनो गुप्ति-मनकी रक्षा करना मनको फ़ज़ूल चलाय मान न होने देना

(३) इर्य्या सुमति--ज़मीन को सोध कर अच्छी तरह से चलना

(४) आदान निक्षेपण समिति--किसी चीज़को अच्छी तरह देखकर उठाना या रखना

(५) आलोकित पान भोजन-आहार पानी अच्छीतरह देख कर लेना

(१७६) सत्यकी ५ भावना, उनके नाम, तारीफ़ बतलावो।

उ० १ क्रोध का त्याग

२ लोभका त्याग

३ भीरुत्व--खौफ़का त्याग

४ हास्य-हास्यका त्याग

५ अनुवीचि भाषण--शास्त्रकी मा फ़िक़ वचन बोलना।

(१७७) आचौर्यकी ५ भावना, उनके नाम, और तारीफ़ बतलावो।

उ० १ शून्यागार--सूनास्थान जैसे कि पर्वतकी गुफा वगैरह

२ विमोचितावास--दूसरे का छोड़ा हुवा घर।

३ पर परोधा करण-जिस जगह दूसरा ठहरने से मना

करे और ऐसी जगह जहां आने आप दूसरेको मना करनेकी ज़रूरत पड़े वहां न बैठे।

४ भैक्ष्य शुद्धि--मनकी शुद्धि के माफ़िक आहार लेना आहार की शुद्धी करना।

५ सधर्माविसंवाद--साधर्मियोंके साथ झगड़ा न करना

(१७८) ब्रह्मचर्य व्रत की ५ भावना उनके नाम और तारीफ़ बतावो।

उ० १ स्त्रीकी राग कथा सुनने का त्याग

२ स्त्री के उमदा तनके देखने का त्याग।

३ पहिले भोगे हुये भोगों को याद करने का त्याग

५ अपने शरीर के संस्कार करने का त्याग

(१७९) परिग्रहत्याग की भावना और परिमाण बतलावो।

उ० अच्छे और बुरे पंचेन्द्रियों के विषय उनमें राग द्वेषका त्याग करना यह पांच भावनापरिग्रह प्रमाणव्रतीकी हैं

(१८०) यह पांच पाप क्या २ नुक़सान करते हैं॥

उ० यह विचार रहना चाहिये कि हिंसा वग़ैरा पांच पाप इस लोक में अपना नाश करनेवाले और दूसरलोकमें दुख देनेवाले हैं इसलिये यह विचार रखना चाहिये कि पांचों पाप दुःखही हैं।

(१८१) सात भय कौन२ से हैं॥

उ० १ इसलोक का भय।

२ परलोक का भय।

३ अकस्मात भय जैसे बिजली गिरनेका खौफ़।

४ अनरक्षा भय—हमारा कोई मददगार नहीं।

५ रोग भय

६ चौर भय

७ मरण भय

(१८२) मैत्री वगैरा भावना की तारीफ़ करो और यह भी बयान करो कि यह भावना के क़िस्म की हैं

उ० १ मैत्री--मोहब्बत के परिणाम अर्थात दुसरे की इच्छा

२ प्रमोद—हर्ष के परिणाम दिल में भक्ती की इच्छा लफ़्ज़ों से या दिल की खुशी से ज़ाहिर हो

३ कारूण्य—दयारूप परिणाम, लाचार जीवों को उपकार करने का भाव दया कहलाता है

४ मध्यस्थ--बराबरी के परिणाम अर्थात राग द्वेष और पक्षपात न होवे उनको मध्यस्थ भाव कहते हैं

उपर की भावना ४ क़िस्म की हैं

[क] सब जीवों में मैत्री भाव रखना

[ख] अपने से जो गुण में ज़्यादा हो उनमें खुशी के परिणाम रखना

[ग] जो दुखी हैं उनमें दया रखना

[घ] मिथ्या दृष्टि अविनई उनमें मध्यस्थ परिणाम रखना

(नोट) व्रतधारी श्रावक इन चार भावनाओं को निरंतर भी करके अपने व्रत को पूर्ण करता है

(१८३) वैराग्य कौन२ से खयालात से पैदा होता है

उ० जगत और काय की स्वभाव की भावना करने से संवेग और वैराग्य प्राप्त होता है

जैसे कि यह भावना करना जगत का स्वभाव अनादि निधन है, न यह पैदा हुवा न यह खतम होगा

और जगत पुरुषाकार की मानिन्द है

इस संसार में यह जीव बहुत योनियों में अनन्त काल से अनन्त काल तक भ्रमण करता है इसमें सिवाय दुख के और

कोई आराम नहीं है उस में ज़िंदगी मिस्ल बुलबुले के है भोग की जड़ बिजली की तरह है ऐसे खयालात से वैराग्य पैदा होता है और शरीर को अनित्य अशुचि चिंतवन करने से संसार भोगोंसे विरक्त परिणाम अर्थात् वैराग्य प्राप्त होता है और संवेग कहिए धर्म, धर्मका फल में अनुराग होता है अर्थात् संसार देह भोगों में विरक्त दुःखदेखता है तब धर्म, धर्मके फल में अनुराग होता है

(१८४) शल्य कै है और किसको कहते हैं।

उ० शल्य उसको कहते हैं जो शरीर में कीलकांटेकी तरह परिणामों में निरंतर आकुलता रक्खे।

शल्य तीन हैं।

१ माया—ठगने के परिणाम

२ मिथ्या—मिथ्यात्व अतत्व श्रद्धान

३ निदान—विषम भोग की ख़्वाहिश

(१८५) शल्य का नुक़सान क्या है।

उ० जिसके यह तीनों शल्य होंगी वह व्रती नहीं होसक्ता यह इसका नुक़सान है।

(१८६) व्रतीकी कै क़िस्महैं उनके नाम और तारीफ़ बयान करो और दोनों का फ़र्क़ बतावो॥

उ० व्रती की २ क़िस्म हैं

१ गृहस्थी

२ मुनि

[गृहस्थी] घरमें रहकर पंचाणुव्रत आदि ग्यारह प्रतिमा धारण करै।

(मुनि) निर्ग्रंथ दीक्षा धारण कर वन में रहै और अठाईस मूल गुण धारण करै वह मुनि है कदाचित गृहस्थ मोह कर सहित विशुद्ध परिणाम उज्वल रक्खे तो उत्कृष्ट श्रावक है और जो मुनि होकर मोह रक्खे तो वह मुनि उस गृहस्थ से भी अधम है।

[१८७] अगारी किसको कहते हैं ?

उ० अगारके मानी हैं घर, पस जिसके अगार मौजूद होवै वह अगारी अर्थात् गृहस्थी है अनागारी जिसके घर न होवे वह मुनि है।

(१८८) अणुव्रत श्रावक के कै दर्जे हैं और हरएक दरजेको क्या कहते हैं।

उ० अणुव्रत श्रावक के ११ दरजे हैं जिनको ११ प्रतिमा कहते हैं।

(१८९) हरएक प्रतिमाका नाम और उसकी क्रिया वयानकरो।

उ० १ प्रथम प्रतिमा दर्शन--सम्यग्दर्शन करि शुद्ध पच्चीस मल दोष करि रहित सप्त व्यसन का त्यागी अष्ट मूल गुणों को पालन करै वो दर्शन प्रतिमा का धारीहै। पांच अणुव्रत का ग्रहण बगैर अतीचार के करै।

[अ] अहिंसा
(आ) झूठ
(इ) चोरी
(ई) अब्रह्म
(उ) परिग्रह

आठ मूल गुण पाले अर्थात ५ उदम्बर तीन मकार

[अ] वड़
[आ] पीपल

[इ] दूमर
[ई] कठूंबर
(उ) पाकर फल
यह पांच उदम्बर हुये
(अ) मद्य
(आ) मांस
(इ) मधु
यह तीन मकार हुये

नोट—दूसरे आचार्य ने ८ इसतरह बतलाये हैं।

५ अणुव्रत
३ मकार

सप्तव्यसन छोड़े
[अ] जुवा
[आ] मांस
(इ) शराब
(ई) वेश्या
(उ) शिकार खेलना
[ऊ] चौरी
[ऋ] पर स्त्री रमण

सम्यक्दर्शन के अतीचार
मल
दोष टाले

नोट १—सम्यग्दर्शन के अतिचार आगे लिखेंगे और मल दोष पहिले बयान करचुके है।

नोट २—पांच अणुव्रत में चोरी बयानकी थी और आठ मूलगुण में मांस शराब बयानकी गई यह तीनों चीज सप्त व्यसन में दुबारा इस वजहसे बयान कीगई हैं कि सप्त व्यसन में बहुत तीव्र कषायका उदय है और मिथ्या दृष्टी सप्तव्यसन को छोड़ सक्ता है मगर वह व्रती नहीं होजाता व्रतीका दरजा उससे बढ़ा हुवा है।

नोट ३—पहिली प्रतिमामें ५ अणुव्रत पालसकता है मगर अतिचार दूर नहीं कर सक्ता इसवास्ते व्रत प्रतिमा नाम नहीं पासक्ता सम्यग्दर्शनके अतिचार मलदोष दूर होसकते हैं इसवास्ते दर्शन प्रतिमा नाम पासक्ता है क्यों कि प्रतिमा उसवक्त नाम पाता है जब कि मन, वचन, काय, कृत, कारित, अनुमोदना से अतिचार रहित प्रतिज्ञा पाली जावे।

नोट ४—प्रतिमा मूर्ति कोभी कहते हैं पस व्रत की साक्षात मूर्ती बनजावे तब प्रतिमा नाम पाता है॥

[२] व्रत प्रतिमा

५ अणुव्रत, सात शीलको अतिचार रहित और शल्य रहित पाले

३ सामायक प्रतिमा—सुबहको दोपहरको, और श्याम को मन वचन कायशुद्ध करके बाह्यआभ्यन्तर परिग्रह छोड़के चार आवर्त और ३ शिरोनतिपूर्वक त्रिकाल सामायककरे वह तीसरी प्रतिमा का धारी है

[नोट] आवर्त और शिरोनति के वास्ते देखो आवश्यकापरिहाणि १४वीं भावनामें मुनि के ६ काम। सवाल नम्बर

(४) प्रोषधोपवास प्रतिमा—प्रोषधउपवास को अतिचार रहित पाले

(५) सचित्त त्याग—कच्ची, हरी, मूल, फल, साख, शाखा, कंद, फूल, बीज कभी नहीं खाना वह दया मूर्ति सचित्त त्याग प्रतिमा वाला है

(६) रात्रिभोजन त्याग—खाद्य, स्वाद्य, लेय, पेय यह चारक़िस्मके आहार हैं इन को रात्रि में न खावे

(नोट) यहांतक जघन्य अर्थात छोटेदर्जे का श्रावक कहलाता है

(७) ब्रह्मचर्य्य-स्त्रीके निंद्यवदन को जान कर और उस को मलका बीज मलकी खान और मल का बढ़ाने वाला समझ कर काम सेवन से नफ़रत करे अर्थात् सर्वथा स्त्री का त्यागी होवे

(८) आरम्भ त्याग-जो नौकरी, खेती, व्योपार, लेन, देन वग़ैरा आरम्भ को छोड़ता है वह आरम्भ त्याग है

(९) परिग्रह प्रमाण--दश क़िसम की ज़ाहिरी परिग्रह प्रमाण प्रतिमा धारी है

(१०) अनुमति त्याग--आरम्भ और परिग्रह के त्याग में या दुनिया के कामों में राय न दे कुछ न कहे वह अनुमति त्याग है

(११) उत्कृष्ट श्रावक प्रतिमा--इसी को उदृष्ट त्याग भी कहते हैं घर से निकल जावे जंगल में चला जावे गुरु से दिक्षा ले तप करे परघर भोजन करे और ऐसा खंडवस्त्र रक्खे जो बदन पर पूरा न आवे

(१८७) गृहस्थी अणुव्रतीको औरक्यार पालनाचाहिये हरएक का नाम और तारीफ़ बतलावो

उ० १ दिग्व्रत

२ देश व्रत

३ अनर्थदंड व्रत

४ सामायक

५ प्रोषधोपवास

६ भोगोपभोग प्रमाण

७ अतिथि संविभाग अर्थात जो वेखवरी में आवे उन को दान देना और वह दान ४ चीज़ों का है

[अ] भिक्षा [भैक्ष्य अर्थात् आहार]

[आ] उपकरण

(इ) औषध

(ई) मकान

८ संलेषणा अर्थात समाधि मरण

(१८२) नियम कितने हैं हर एक का नाम बयान करो।

उ० नियम १७ होते हैं

१ भोजन का नियम

२ षट्रस का नियम अर्थात् एक दो तीन आदि छहों रस का त्याग करें

३ पान का नियम-जलपानादिक का नियम

४ केशरि चंदन आदि लगाने का नियम

५ पुष्प माला इतर आदि का नियम

६ तांबूल का नियम

७ गाना तथा दूसरे का गाना सुनना

८ नृत्य देखना वा करना

९ कुशील सेवन का नियम

१० स्नान का नियम

११ आभरण पहरने का नियम

१२ वस्त्रादिक

१३ सवारी का नियम

१४ शय्या

१५ आसन

१६ सचित का नियम

१७ दिशा का परिमाण

(१९२) संलेषणा किसको कहते हैं और किस वक्त काम में लानी चाहिये

उ० वाह्य-(कषाय) अर्थात् जाहिरी और आभ्यन्तर अर्थात अन्दरूनी कषायके सबबका कमकरना संलेपना कहलाता है मरणके अन्त अर्थात आखरी वक्तमें संलेपणा करना चाहिये जो शख़्स ऐसा करे वह भी श्रावक अर्थात् साधक श्रावक होता है

(नोट) बीमारी और कमजोरी वग़ैरा से वह ख़याल होजाताहै कि मरणे का वक्त आगया

(१९३) समाधिमरण किस को कहते हैं

उ० अच्छे ध्यान के साथ मरणा समाधिमरण है

(नोट) १२भावना का वार२ चिंतवन करे और शास्त्रकी मुताफ़िक़ समाधि मरण करै

(१९४) सम्यग्दृष्टी के ५ अतिचार वतलावो

उ० १ शंका--शक करना

२ आकांक्षा--धर्मके काम करके फलकी ख़्वाहिश करना

३ विचिकित्सा--ग्लानि, नफ़रत

४ अन्य दृष्टि प्रशंसा--मिथ्या दृष्टिके ज्ञान चारित्र गुण ज़ाहिर करने के विचार को दिल से अच्छा समझना

५ अन्य दृष्टि संस्तुति--मिथ्यादृष्टि में जो गुण मौजूद होते हों उनका बचन से ज़ाहिर करना

(१९५) सम्यग्दर्शन के आठ अंग बयान किये हैं अतिचार सिर्फ ५ का क्यों बयान किया

उ० इसवास्ते कि आख़िर के २ अतिचार में और बाक़ीके शामिल हैं

(नोट) यह अतिचार श्रावक, मुनि, दोनोंके लगते हैं क्योंकि सम्यक् दोनों के होता है

(१९६) व्रत शील और संलेपना के कै अतिचार हैं

उ० इन तीनों में सिल सिले वार पांच २ अतिचार होते हैं

(नोट) यह अतिचार गृहस्थी श्रावक के लगते हैं

(१९७) अहिंसा व्रत के ५ अतिचार कौन २ हैं नाम, तारीफ़ बतलावो

उ० (१) बंध--किसी जीव को बांध देना आज़ाद चलने फिरने मे रोक देना

(२) वध--लाठी चाबुक वग़ैरा से मारना

(३) छेद--कान नाक वग़ैरा किसी आंगोपांगको छेदना

(४) अतिभार रोपण--जिसक़दर बोझ उठानेकी ताक़त हो उससे ज़्यादा लादना

(५) अन्नपान निरोधन--खाना पीना न देना

(१९८) सत्य व्रत के कौन २ अतिचार हैं नाम और तारीफ़ बतलाओ

उ० १ मिथ्या उपदेश--अर्थात स्वर्ग मोक्ष के कारण जो क्रिया हैं उनमें प्राणियों को ग़लत तौर लगादेना

२ रहोभ्याख्यान-- स्त्री पुरुष के पोशीदा काम को ज़ाहिर करना

३ कूट लेप क्रिया--दूसरे ने जो किया न होवे या कहा न होवे अपने नफ़ा या दूसरे के नुक़सान के वास्ते कहना या लिखना कि ऐसा कहाहै यह कूट लेख है

४ न्यासापहार--किसीने अमानत सौंपी थी उस को तादाद याद न रही या मांगने के वक़्त भूल में उसने

कम मांगी तो उसको सहीह मिक़दार न बतलाना और उसकी भूल से फ़ायदा उठाना

५ साकार मन्त्र—तरह२की बातें बनाकर या सूरत बना कर फ़रेब दे कर दूसरे के दिल के भेद को जानना और चुग़ली करना और ज़ाहिर करदेना

(१९९) अचौर्य व्रत के कौन २ अतिचार है नाम, तारीफ़ बतलावो

उ० १ स्तेन प्रयोग-चोरकी मदद करे, दूसरे को कहकर मदद करावे दूसरा शख़्स चोरकीमदद करताहो तो उस की तारीफ़ करे उसको भला समझे

२ तदा हृतादान—चोर का लाया हुवा माल खावे

३ विरुद्ध राज्याति क्रम—राजाके क़ानूनसे जो व्यवहार या लेना देना मना हो उसके बरख़िलाफ़ लेना देना, जैसे महसूल न देना, या क़ीमती चीज़को कम क़ीमत में लेने की कोशिश करना

४ हीनाधिक मानोन्मान—देने के बाट कम और लेने के ज़्यादा रखना

५ प्रति रूपक व्यवहार—अच्छी चीज़ दिखाकर खोटी देना या खोटी मिलाकर देना

(२००) ब्रह्म चर्य व्रत के कौन२ अतिचार हैं नाम, तारीफ़ बतलावो

उ० १ पर विवाह करण—दूसरे का विवाह कराना

२ पर गृहीता इत्वरिका गमन—दूसरे की ब्याहता औरत से मिलना

३ अपरिगृहता इत्वरिका गमन—वेश्या औरतसे मिलना

४ अनंग क्रीड़ा—जो असली अंग क्रीड़ा के हैं उन को छोड़ कर और अंगों से काम सेवन करना

५ काम तीव्र भिनिवेश—काम सेवने की बहुत ज़्यादा ख़्वाहिश रखना

(२०१) परिग्रह व्रत के अतिचार कौन २ हैं नाम और तारीफ़ बतलाओ

उ० १ क्षेत्र अर्थात् ज़मीन और वास्तव अर्थात् घर।

२ हिरण्य—सुवर्ण, सोना चांदी, रुपया पैसा

३ धन धान्य—गाय, भैंस, नाज वग़ैरा

४ दासी दास-नौकर, बांदी, गुलाम वग़ैरा

५ कुप्य--कपास, रेशम, वस्त्र वग़ैरा

अगर किसी ने इन चीज़ों की निसबत यह प्रतिज्ञा की होवे कि मेरे इसक़दर इन चीज़ों का प्रमाण है फिर लोभकी वजहसे जियादा करले तो उसको यह अतिचार लगते हैं।

(२०२) दिग्व्रत के पांच अतिचार कौन कौन हैं उनके नाम और तारीफ़ बतलाओ।

उ० १ ऊर्द्ध अतिक्रम—ऊपर चढ़नेकी मुक़र्रर की हुई तादाद को तोड़ना जैसे पहाड़की ज़्यादा ऊंचाई पर चढ़ना

२ अधः अतिक्रम—नीचे उतरनेकी मुक़र्रर की हुई तादाद को तोड़ना जैसे कुवा या खान में ज़्यादा नीचा उतरना।

३ तिर्यग् अतिक्रम—बिल गुफावों में जाने का प्रमाण कियाथा उसको तोड़ना

४ क्षेत्रविरुद्ध-दिशाको मुक़र्रर की हुई तादादको बढ़ालेना

५ स्मृत्यंतराधान—जो तादाद मुक़र्रिर की थी उसको भूलकर दूसरी धारना करनी

(२०३) देशव्रतके ५ अतिचार कौन २ हैं उनके नाम और तारीफ़ बतलावो

उ० १ आनयन—जिसक़दर फ़ासिले की तादाद मुक़र्रिर कीथी अपनी ग़रज़ से दूसरे को कहकर उसके बाहर से चीज़ मंगाना

२ प्रेक्ष प्रयोग—दूसरे से कहना कि ऐसा करो

३ शब्दानुपात—आप एक तादाद चीज़कीमुकारर करके बैठा है उससे बाहर जो शख़्स होवे उसको खांसी या खंखारकरके इशारे से मतलब समझा देना

४ रूपानुपात--अपने बदन के किसी अंगको हिला कर उससे इशारा करके मतलब समझा देना।

५ पुद्गल क्षेप—कंकर वग़ैरा फेंक कर मतलब समझा देना।

(२०४) अनर्थ दण्ड व्रतके पांच अतिचार कौन२ हैं नाम और तारीफ़ बतावो

उ० १ कंदर्प—रागके तीव्र उदयसे काम सेवन के वचनों से मिले हुये दुर्वाक्य कहना।

२ कौत्कुच्य--इसतरह जैसा कि ऊपर कहा है गाली भी दे और शरीर से भी इशारा करे जैसा कि खांसी वग़ैरा की खंखार से और शरीरके अवयवों से खवा खसी करना कुचेष्टा करना

३ मौखर्य--बहुत शोरकरके वकबाद करना।

४ असमिद्यादि करण—बग़ैर सोचे बिना मतलब बहुत चलना, फिरना, कूदना, फांदना,

नोट—यह तीनों क्रिया मन, वचन, काय से तीनोंसे समझना चाहिये।

५ भोग परिभोग नर्थक्य–खाने पीने वग़ैराकी बहुतसी चीजें और पहिनने के कपड़े आदि विना ज़रूरत के इकट्ठे करना ।

(२०५) सामायक के पांच अतिचार कौन २ हैं इनके नाम और तारीफ़ बताओ

उ० १ मन
२ वचन
३ काय
इनको सामायक में न लगाना बल्कि और बातों में मसरूफ़ कर देना
४ अनादर–सामायिक में आदर न करना जिस तरह होसके वक्त का टालना और सामायिक को मुसीबत समझना
५ समृत्यनुपस्थान–जो पाठ पढ़ा हो उस को भूलजाना

(२०६) प्रोषधोपवास व्रत के अविचार कौन २ हैं नाम, तारीफ़ बतलावो

उ० वग़ैर ज़मीन को अच्छीतरह देखने और झाड़ने के
१ उत्सर्ग अर्थात् मल मूत्र का जमीन पर क्षेपण करना
२ आदान--ज़मीन पर से उपकरणादिक उठाना
३ संस्तरोपक्रमण–अर्थात् ज़मीन पर लेटना, बैठना,
४ अनादर–उपवास में ख़ुशी नहीं रखना जैसे कि भूख लगेतो उपवास में पछताना या उपवासको बुरा कहना
५ स्मृत्यनुपस्थान–क्रिया में भूलजाना

(२०७) उपभोग परिभोगके ५ अतिचार कौन२ हैं नाम अतिचार बतलावो

उ० १ सचित्त वस्तु—जिसमें जीव हो उसको काम में लाना
२ सचित्त सम्बन्ध वस्तु–सचित्त के साथ सम्बन्धित भई वस्तुको ग्रहण करना जैसे कुप्पेका घी

३ सचित्तसन्मिश्र वस्तु—जिसमेंसचितचीजें मिलीहुईहोवें

४ अभिषव वस्तु—द्रव्यरूप, रस, ताक़त, देनेवाला चीज़ का भक्षण करना

५ दुपक्काहार—जो चीज़ अच्छी न पकी हो कुछ कच्ची कुछ पक्की हो

इन चीज़ों का त्याग न करना यह पांच अतिचार उप भोग परिभोग के कहे हैं।

(२०८) अतिथि संविभाग के ५ अतिचार कौन२ से हैं नाम तारीफ़ बतलावो

उ० १ सचित्त निक्षेप—जीव सहित जो चीज़ होवे जैसे फूल पत्ती वग़ैरा उनमें मुनियों को देने का आहार रखना

२ अविधान— उसीजीव सहित चीज़ से मुनियों का आहार ढकना

३ परव्युपदेश—दूसरेने जो दान किया होवे वह लेकर अपना नाम करना या अपना तय्यार कियाहोवे उसको दूसरे को सौंपकर आहार देना

४ मात् सर्य्य—आहार आदर से न देना और जो कोई देता हो तो उसकी तारीफ़ न करना

५ कालातिक्रम—वक्तपरआहार न देनावक्त टालकरदेना

(२०९) संलेषणा के अतिचार कौन२ से हैं नाम तारीफ़ बतलावो

उ० १ जीने की ख़्वाहिश करना

२ मरणे की ख़्वाहिश करना

३ मित्रानुराग—पहिले दोस्तोंसे जोमेलमिलापथा घड़ी२ उसका ध्यान करके याद करना

४ सुखानुभव—पहले जो आराम पायेथे उनको वारवार यादकरके उनकी इच्छा करना

५ निदान—भोग की इच्छा करके नियम वांधना कि ऐसे भोग मिलें

(२१०) दान क्या है।

उ० अपने और दूसरे के उपकार के वास्ते अपनी ताक़त के मुवाफ़िक़ देना दान है।

(नोट) अपना उपकार तो यहहै कि पुन्यका वन्ध पड़े और दूसरे का उपकार सम्यग्दर्शन, ज्ञान, चारित्रकी तरक्की करनाहै

(२११) दान का फल किस २ चीज़से ज़्यादा होता है।

उ० १ विधि

२ द्रव्य

३ दाता—देने वाला

४ पात्र—लेने वाला

इन चारों में जितनी २ अधिकता वा न्यूनता होगी उतना २ दानका फल भी कम ज़्यादा होगा।

(२१२) मुनिको दान किस तरहपर देते हैं

उ० मुनियों को दान देनेमें नौ क़िस्मकी भक्ती कही है

१ प्रतिग्रह—पड़गाहना

२ उच्चासन देना

३ पैर धोवना

४ पूजा करना

५ प्रणाम करना

६ मन

७ वचन

८ काय शुद्धकर भोजन देना यह विधि आहार देनेकी है
९ तपस्वाध्याय का वृद्धि करनेवाला आहार देना यह द्रव्यकी खूबी है

(२१३) दाताके गुण क्या हैं

उ० १ दूसरे के दानका नाम न करे क्योंकि उसमें अनादर होता है
२ गुस्से से न देवे क्षमा से देवे
३ कपट से न दे
४ अनसूया–दूसरे देने वालेकी ज़िदसे न देवे
५ देनेके बाद रंज या पछतावा न करे
६ देने के बाद खुश होना चाहिये
७ देने के बाद गरूर नहीं करना चाहिये

(२१४) पात्र किस को कहते हैं

मोक्ष के वास्ते सम्यग्दर्शन वग़ैरा गुण जिसमें होवें वोह पात्र है

(२१५) क्षयोपशमिक चारित्र और संयमासंयम किसको कहते हैं

उ० क्षयोपशमिक चारित्र १२ प्रकृतियों के उदयमें अभाव और सत्तामें उपशमसे, और संज्वलन कषायकी चोकड़ी में से, किसी एक के उदयसे देशघाति सार्धक के उदय और नौ कषाय के उदयसे जो त्याग रूप आत्मा का परिणाम होवे अर्थात चारित्र मोहनीय की २५ प्रकृतियों में से १४ प्रकृति या १४ से ज़्यादा प्रकृति उदय होनेसे क्षयोपशमिक चारित्र पैदा होता है

(नोट) १४ प्रकृति यह हैं

१ एकचौकड़ी अप्रत्याख्यानावरणी, एक चौकड़ी प्रत्याख्यानावरणी, एकचौकड़ी अनन्तानुवन्धी, यह १२ हुई इसमें से संज्वलन की चौकड़ी में से एक और नो कषाय में से जिस कदर मुमकिन हो वह शामिल हो जावें अर्थात सब एक साथ नहीं होवें

संयमासंयम उसको कहते हैं कि अनन्तानुवन्धी की चौकड़ी और अप्रत्याख्यानावरणी की चौकड़ी का उदय मौक़ूफ़ होजावे, अगर सत्ता में बैठे हुये हैं और प्रत्याख्यान कषायका उदयहोवै और संज्वलन कषाय के देशघाति स्पर्धक का उदय होवे और नो कषाय में से जो मुमकिन है उस का उदय होवें। इससे आत्मा के परिणाम व्रताव्रत होते हैं अर्थात कुछ त्याग रूप होवें और कुछ त्याग रूप न होवे इसको संयमासंयम कहते हैं और इसी का नाम देश वृति है

(२१६) ज्ञान और चारित्र के भी वही सवव हैं जो सम्यग्दर्शन के हैं या कोई और सवव हैं

उ० नहीं! ज्ञान और चारित्र के यह दोनों सवव नहीं हैं, वल्कि ज्ञानावर्णी कर्म के क्षयोपशम से ज्ञान होता है और चारित्र मोहनी के उपशमसे उपशम चारित्र होता है,

आन्हिक ४

(२१७) अनादिसे जीवके कै कर्म का वन्ध होता है।

उ० आठ कर्म का वन्ध होता है चार घातिया

१ ज्ञानावरणी
२ दर्शनावरणी
३ मोहनीय
४ अन्तराय

चारअघातिया

१ वेदनी
२ आयु
३ नाम
४ गोत्र

परन्तु सात कर्म का वन्ध तो निरन्तर होता है और आयु कर्म के वन्ध में विशेषता है।

(२१८) सम्यक्त्व के कै कारण हैं हरएक का नाम और तारीफ बयानकरो

उ० सम्यक्त्व दो कारणसे पैदा होता है

१ अंतरंग कारण
२ वाह्य कारण

१ अन्तरंग कारण तो मोहनी कर्म का उपशम क्षयोपशम या क्षय होजावे तो सम्यक्त्व होजाताहै अर्थात् दर्शन मोहनी की ३ प्रकृति और अनन्तानुवन्धि क्रोध, अनन्तानुवन्धि मान, अनन्तानुवन्धि माया, अनन्तानुवन्धि लोभ इन सात प्रकृतियों का क्षयोप समादिक से सम्यक्त्व पैदा होता है अर्थात् इन सात प्रकृतियों के उपशम से उपशम सम्यक्त्व और क्षयोप शम से क्षयोपशम सम्यक्त्व और क्षयसे क्षायिक सम्यक्त्व पैदा होता है।

(२१९) सम्यक्त्व के अन्तरङ्ग और बहिरंग कारण कौन २ से हैं बाह्य और अन्तरंग कारण लाज़मी हैं या एक कारण सेभी होसकताहै

उ० बाह्य कारण ४ हैं

१ जाति स्मरण

२ धर्म सेवन

३ जिन बिम्ब दर्शन

४ वेदना अनुभव अर्थात तकलीफ़ का भोगना।

जिसवक्त कि बाह्य कारण मिलता हे उससे अन्तरंग कारण पैदा होकर सम्यक्त्व होताहे अर्थात दोनों कारण लाज़मी हैं।

(२२०) सम्यक्त्व के भेद का हैं हरएक का नाम और तारीफ़ बयान करो

उ० सम्यक्त्व के तीन भेद हैं

१ उपशम

२ क्षयोपशम

३ क्षायिक

उपशम सम्यक्त्व की तारीफ़—मोहनी कर्म की सात प्रकृतियों के उपशम से अन्तर मूहूरत तक उपशम सम्यक्त्व रहता हे व सातों प्रकृति सत्ता में मोजूद रहती हैं मगर अपना फल नहीं देसकती। मसलन एक कटोरी जल में मिट्टी घुली हुई हे वह गाद नीचे बैठ जावे और पानी बिलकुल साफ़ होजावे।

नोट—ऐसी गंदगी को सत्तामें बैठा रहना कहते हैं और फल न देने को उदयका अभाव कहते हैं।

२ क्षायिक सम्यक्त्व इसको कहते हैं कि वो सातों कर्मकी प्रकृतियां बिलकुल छूटजावे अर्थात न तो

सत्तामें रहें न उदयमें आवें जैसे कि ऊपरकी मिसाल मेंसे गाद जो बैठचुकीथी उसको कटोरी मेंसे निकाल कर बिलकुल फेंक दें और पानी साफ़ रहजावे

३ क्षयोपशम सम्यक्त्व उसको कहते हैं कि कर्मकी सर्व घाति प्रकृतियां सत्ता में बैठी रहें मगर उदय के अयोग्य होजावें और देशघाति एक सम्यक्त्व प्रकृतिका उदय बनारहे अर्थात् वह फल दियेजावें जैसे कि ऊपर की मिसाल में जो हिस्सा मिट्टीका पानीको ज़्यादह मैला करनेवाला था वह तो नीचे बैठगया और किसी क़दर जल में गदला पन रहा।

नोट—हर एक कर्म में दो क़िस्म की प्रकृतियां होती हैं

१ सर्वघाति—जो कि किसी गुणको बिलकुल रोक देवे।

२ देश घाति जो किसी गुणको किसी क़दर नुक़सान पहुंचावे।

(२२१) उपशम किस निमित्त से होता है।

उ० दर्शन मोहनी कर्म के उपशम का निमित्त द्रव्य, क्षेत्र, काल, भव, भाव हैं अगर यह निमित्त न मिलैंगे तो उपशम नहीं होगा पंच लब्धि कारण है अर्थात पंच लब्धिके होनेसे द्रव्य, क्षेत्र, काल, भव, भाव सेही लब्धि उत्पन्न होती है इसमें कर्ण लब्धिकी मुख्यता है

(२२२) उपशम को रोकने वाली कौन सी चीज़ हैं

उ० मिथ्या दर्शन और अनंतानुबंधी कषाय है

(२२३) उपशम और क्षायिक में क्या फ़रक़ है

उ० उपशम और क्षायिक में निर्मलता का भाव तो एकही है सिर्फ़ इसक़दर फ़र्क़ है कि क्षायिक में प्रकृतियां सत्ता में भी मौजूद नहीं होती मगर उपशम में होती हैं

लेकिन उपशम का वक्त बहुत थोड़ाहै अंतर्मुहूर्तकेबाद नतीजा लाज़मी यह है कि परिणामों की सफ़ाई ज़्यादह होगी तो क्षायिक सम्यक्त्व होजाता है वरना क्षयोपशम होजाता है और क्षयोपशम नहीं हो तो मिथ्या दृष्टी होजाता है

(नोट) अंतर्मुहूर्त उसे कहते हैं केआवलीके ऊपर एकसमयसे लेकर दोघड़ीमें से एक समय घटावो वो सब काल अतर मुहूर्त कहलाता है

(२२४) सम्यक्त किस२ जीव के होता है और किस२ शर्त पर होता है

उ० सम्यक्त्व हमेशा पंचेन्द्रियसंज्ञीपर्यासकके होता है संज्ञीको ही सेनी भी कहते हैं असंज्ञी के नहीं होगा। शर्त्तें यह हैं

१ पर्य्यास के होता है

२ त्रस पंचेन्द्रिय जीवके होता है

३ भव्यके होता है

४ करण लब्धि उसका उत्कृष्ट भेद जो अनिबृत्ति करण है उसके आख़ीर में होतो है क्योंकि सम्यक्त्व नतो चढ़ते परिणाम में होता है और न उतरते परिणाम में होताहै अनिवृत्ति करणके परिणाम ठहरे हुए होतेहैं तब होता है।

(२२५) सेनी और संज्ञी और समनस्क किसको कहते हैं

उ० सेनी संज्ञी, समनस्क उस जीवको कहते हैं जिसके मन होवे यह तीनों मन सहित जीव के नाम हैं

नोट—संज्ञाके बहुतसे माने हैं

संज्ञा, नाम, ज्ञान, और मन येसब एकार्थहैं और आहार, भय, मैथुन, परिग्रह, इनका अभिलाष-इनको भी संज्ञा कहते हैं

(२२६) संज्ञी की पहिचान क्या है

उ० शिक्षा, क्रिया, आलाप, यानी आवाज़को समझ ले और बुलाया आजाय भेजा चला जाय और समस्या इशारे को समझ ले

(२२७) पर्य्याप्त किस को कहते हैं

उ० पर्य्याप्त उसको कहते हैं कि जिस को

१ आहार--अर्थात् ग्रहण करना, कर्म वर्गणा का
२ शरीर--अर्थात औदारिकादि तीन शरीर के योग्य पुदगल--वर्गणा का ग्रहण करना
३ इन्द्रियें अर्थात् आंख, नाक, वग़ैरह इनकी शक्ति होना
४ स्वासोश्वास--अर्थात् दमका आना जाना की शक्ति
५ भाषा--अर्थात् वचन बोलनेकी शक्ति
६ मन अर्थात् विचारने की शक्ति होना यह छह नाम पर्याप्त के हैं

(२२८) अपर्याप्त किस को कहते हैं

उ० जबतक जीव के दुसरी पर्याय के ग्रहण में ऊपर लिखी हुई छह पर्याप्त पूरी नहीं होती तब तक अपर्याप्त कहलाता है अपर्याप्त दोय प्रकार के हैं-लब्ध पर्याप्त, निबृति पर्याप्त--लब्ध पर्याप्त वो है जिसको पर्याप्त पूरण करणे का मौक़ा नहीं है और स्वास के अठारा-वैभाग जन्ममरण करता है--और निब्रीति पर्याप्त वोहै कि जबतक पर्याप्त पूरण न करै

[२२९] त्रस जीव किसको कहते हैं

उ० द्विइन्द्रिय से लेकर सेनी पंचेन्द्रिय तक त्रस हैं

(२३०) योगी किसको कहते हैं

उ० योगी उसको कहते हैं जिसके मन वचन काय हों, योगी मन, वचन, काय को रोके अथवा ध्यान धरै ऐसे मुनि को भी योगी कहते हैं

(२३१) भव्य किसको कहते हैं।

उ० भव्य उसे कहते हैं जिसमें मोक्षजानेकी योग्यताहो।

(२३२) ज्ञानोपयोगी किसको कहते हैं।

उ० ज्ञानोपयोग आठ प्रकारका है इसको धारण करै सोही ज्ञानोपयोगी है।

(२३३) अधः प्रवर्तिकरणादिक भाव किसको कहते हैं और यह भाव किस जीव के होते हैं।

उ० वह भाव कि जिनमें सम्यक्त्व पैदा होवै अधःप्रवृत्ति करणादिक भाव कहलाते हैं उनके सिवाय किसी और परिणाम में सम्यक्त्व पैदा नहीं होता और यह परिणाम भव्य जीव के होते हैं ये भाव तीन हैं।

१ अधः करण

२ अपूर्व करण

३ अनिवृत्ति करण

क्योंकि इन परिणामों में निर्मलतावढ़ती चलीजातीहै

(२३४) लब्धिकै हैं उनकीतादाद, नाम और हरएक क़िस्मकी तादादबतलावो

उ० लब्धि पांच हैं और वह सम्यक्त्व से पहिले होती हैं।

१ क्षयोपशम लब्धि

२ विशुद्ध लब्धि

३ देशनालब्धि

४ प्रायोग्यलब्धि

५ करण लब्धि

[१] क्षयोपशम लब्धि उसको कहते हैं कि ज्ञानावरणी जो चारघातिया कर्म हैं उनकी कुल अप्रशस्त अर्थात नाक़िस प्रकृतियोंकी ताक़त का फल हर समय अनन्त गुणा घटता २ अनुक्रम से ज़ाहिर होवे उस वक़्त में क्षयोपशमलब्धि होती है क्षयोपशम लब्धि कर्म के क्षयोपशम की प्राप्ति को कहते हैं क्षयोपशम उसको कहते हैं कि देशघाति स्पर्धक का तो उदय होवे और सर्वघाति स्पर्धक जो उदय होरहे थे वो उदयहोनेके लायक़ न रहें और आगे को उदय होनेवाले हों और सत्ता में मौजूद होवें उसको क्षयोपशम कहते हैं।

[२] विशुद्ध लब्धि उसको कहते हैं, क्षयोपशम लब्धि से पीछे साता बेदनी कर्म्म और पुण्य रूप आराम देने वाली प्रकृतियों के बन्ध के सबब धर्म में अनुराग होवे जिस से परिणामों में ज़्यादा विशुद्धता अर्थात् सफ़ाई होती है

[३] देशना लब्धि—६ द्रव्य सात पदार्थ और उपदेश करने वाले आचार्य्यों का मिलना या और तरह उपदेश की प्राप्ति या उसको अच्छी तरह दिल में याद रखना यह देशना लब्धि है

[४] प्रायोग्य लब्धि-(इसीको काल लब्धि भी कहते हैं) पहिली तीन लब्धि जीव को हासिल होजावें उस वक्त हर समय परिणामों की सफ़ाई करके आइंदा के लिए अयु कर्म के सिवाय बाक़ी सात कर्म्मों की स्थिति को सिर्फ़ एक कोड़ा कोड़ी

सागरकेअन्दर बाक़ी रक्खे (मतलब यहहै कि बाज़े कर्मके बन्ध की स्थिति सत्तर कोड़ा कोड़ी सागरतक है तो सिर्फ़ एक कोड़ा कोड़ी सागर की स्थिति रह जावे इससे ज़्यादा न हो सके।

और उस वक्त जो स्थिति पहिले सात कर्म्मों की बंध चुकीथी वहभी इस अगली स्थितिमें शामिलहोजावे और दोनों स्थिति अर्थात् पहिली गुज़रीहुई स्थिति [चाहे वो कितने ही सागरों कीथी] और जो स्थिति आगेको बंधे दोनों मिलकर एककोड़ा कोड़ी सागर से न बढ़े और आइन्दा के लिए घातिया कर्म्मों का अनुभाग अर्थात् नतीजा दारू और लताके तौर पर बाक़ी रक्खे और शैल और पाषाण के तौरपर बाक़ी न रक्खे और आइन्दा के लिए अघातिया कर्म्मों का नतीजा मिस्ल नीब और कांजीर के रहे विष और हालाहल के तौर पर बाक़ी न रहे मगर पहिले से जो इन सातों कर्मों का अनुभाग अर्थात् नतीजा होनेवाला होता उसके अनन्त हिस्से करें उसमें से बहुत से हिस्से तो आइन्दा नतीजे में शामिल होजाते हैं और वह नतीजे उसी क़िस्म के (अर्थात् घातिया कर्म की हालत में मिस्ल दारू और लता के) होजाते हैं। और अघातिया कर्म की हालत में मिस्ल नीब और कांजीर के होजाते हैं॥

जब जीवकोस्थिति और अनुभागका ऐसामौक़ा मिलता है तो कहते हैं कि प्रायोग्य लब्धि हुई।

नोट-१ घातिया कर्मों के बन्धका नतीजा चार किसमका है अर्थात उसकी चार किसमें हैं।

(क) शैल अर्थात् पहाड़

(ख) पाषाण अर्थात पत्थर

(ग) दारु अर्थात लकड़ी

(घ) लता अर्थात बेल

सारांश इसका यह हुवा कि इसहालतमें कर्मके बन्ध का नतीजा ज़्यादा सख्त न रहै नरम होजावे।

नोट—२ इसीतरह अघातिया कर्मके बंध के नतीजे चार प्रकार हैं

(क) हालाहल अर्थात जिसके खातेही मरजावे ऐसा जहर जो विष से ज़ियादा हो।

(ख) विष अर्थात ऐसा जहर जोहालाहलसे कम होता है

(ग) तीसरे नींव अर्थात ज़ियादा कड़वा हो

(घ) कांजीर अर्थात कम कड़वा

इसलिये अघातिया कर्मों का नतीजा ऐसा रहै जो बिलकुल मारनेवाला तो न होवे मगर कड़वा होवे।

नोट—३ अनन्त के लफ़्ज़ी माने तो बेशुमार के हैं मगर जैन शास्त्रोंमें अनन्तकी एक तादादभी मुक़र्रिर है।

(५) करण लब्धि जो तीन प्रकार हैं।

(क) अधः करण

(ख) अपूर्व करण

(ग) अनिवृत्तिकरण

नोट करणकी तारीफ़-२५ कषायोंकेमन्द होने की वजहसे जो परिणामों की सफ़ाई होती है उस सफ़ाई का नाम है।

(क) अधः करण—बहुत से जीवों के परिणामों की

सफ़ाई इस तौर पर शुद्ध होवे कि जिसके परिणामों की सफ़ाई में कमी होवे वह सफ़ाई बढ़ते २ उन जीवों के परिणामों की सफ़ाई के बराबर होजावे जिनके परिणामों की सफ़ाई ज़्यादा थी इसका नाम अधःकरण है ॥

इसमें चार बातें ज़रूरी हैं—

(अ) हरसमय अनन्तगुणी सफ़ाई परिणामों की हो ।

(आ) स्थितिबन्धापिसरण अर्थात कर्मों की जितनी स्थिति पहिले बंध ली थी उससे घटा घटा कर स्थिति बन्धे ॥

(इ) सातावेदनी आदि अच्छे कर्मों की प्रकृति का अनुभावअनन्त गुणा बढ़ता २ गुड़ खांड शर्कराअमृत कीतरह ४ चार प्रकार का अनुभाग बन्ध करै ॥

(ई) असाता वेदनी इत्यादि पाप प्रकृतियों का बन्ध अनन्तगुणा घटता २ नीव कांजी रूप होजावै और विष हालाहल रूप न होवे अर्थात जो कर्म विष और हालाहल रूप बन्धे हुए थे उसके रसको अनन्तगुणा घटाकर नीव और कांजीरूप बाक़ी रक्खे ।

नोट-१ अधः के मानी नीचे और करणके मानी परिणाम ।

नोट-२ चूंकि दूसरे जीवके मुक़ाबले मे परिणामों की सफ़ाई दिखलाना मन्ज़ूर है इसवास्ते बहुतसे जीवोंका मुक़ाबला करना ज़रूरीहुवा

नोट -३ जैसे घातिया अघातियाके कर्मों के बन्ध अर्थात फल चार प्रकार के बतलाए हैं वैसेही अच्छे कर्म के फलभी चार क़िस्मके है ।

(अ) गुड़ अर्थात् मीठा ।

(आ) खांड अर्थात् उससे ज़्यादा मीठा

(इ) शर्करा अर्थात् मिश्री उससे ज़्यादा मीठा

(ई) अमृत उससे भी ज़्यादा मीठा

इस तरह अच्छे कर्म्मों का फल एक से एक ज़्यादा अच्छा होता जावे

(ख) अपूर्व करण लब्धि उसको कहते हैं जबकि हर समयजीव के नये २ परिणाम पैदा होवें और हर समय वह परिणाम सफ़ाई में बढ़ते जावें। और इस तरह बढ़ें कि दूसरे जीव के परिणामों से न मिलैं बल्कि बढ़तेही रहें और बेरूप बढ़ै अर्थात एक मुक़र्रर की हुई गिनती के हिसाब से बढ़ै और एक समय की सफ़ाई परिणामों की जो बड़े दर्जे की थी वह दूसरे समय के परिणामों की सफ़ाई छोटे दर्जे की सफ़ाई समझी जावै।

नोट] अपूर्व के मानी हैं नये के इस में भी चार बातों की ज़रूरत है

(अ) गुण श्रेणी निर्जरा अर्थात जो कर्म पहिले बन्ध चुके थे और मौजूद थे उनके उद्देशों से जो द्रव्य बनगया था उनकी हालत बिना इन्तज़ार उस वक़्त के जब कि उनकी निर्जरा होती इस तरह पर बदली जावै कि उनकी निर्जरा लगातार हर समय अनन्तगुणी शुद्ध होजावे और होती रहे।

(आ) गुण संक्रमण--कर्म की प्रकृति के परमाणु पलटकर हर समय लगातार दुचन्द २ करते हुए बुरे से अच्छा करना॥

अर्थात कर्मप्रकृति के परमाणु को पलट कर हर समय लगातार दुचन्द २ शुभ रूप करै अर्थात बुरे को अच्छा करै ॥

(इ) स्थिति खंडन--जो कर्म पहिले बन्धे हुए मौजूद थे और उनकी स्थिति मौजूद थी उस स्थितिको कमकरना

[ई] अनुभाग खंडन--अर्थात् जो असर कर्म का पहिले बन्धचुका था और मौजूद था उसको कम करना।

[ग] अनिबृत्तिकरण-- जब कि जीवों के परिणामों में भेद न रहे और बराबर होजावें और हरसमय एकही परिणाम है उसको अनिवृत्तिकरण कहते हैं।

नोट-१ करण के माने परिणाम और इस जगह निवृति यानी भेद अर्थात् फ़रक़

नोट-२ यहां पर जीवों से मतलब वोही जीवहैं जो इस दर्जेपर पहुंचगये हों, आम जीव नहीं

नोट-३ जो चार बातें ऊपर अपूर्व करण लब्धि में ज़रूरी बतलाइ थी वोही चार बातें इसमें भी ज़रूरी हैं मगर इससे ज़्यादह २ होती हैं

नोट-४ ताक़त-शक्ति

सिलसिलेवार—अनुक्रम

आइन्दा-आगामीकाल

तौर-तरह

नतीजा-फल

मुक़ाबला-एकका दूसरी चीज़ से मिलाकर यहदेखना कि कौन कम ज़्यादा है

सफ़ाई—विशुद्धता

इन्तज़ार-बाट

असर-फल

(२३५) कौन २ लब्धि किस जीवके होती हैं।

उ० पहिली चार लिब्ध तो अभव्यकेभी होसकती हैं मगर पांचवीं अर्थात् करण लब्धि सिर्फ़ भव्यकेही होती है क्योंकि जब पांचवीं लब्धि होगी तो सम्यक्त्व ज़रूर होगा और सम्यक्त्व सिर्फ़ भव्यकेही हो सक्ता है क्योंकि यह मुमकिन नहीं है कि पांचवीं लब्धि हो और सम्यक्त्व न होवै।

यह मुमकिन है कि अभव्य के पहिली और दूसरी लब्धि न हो मगर तीसरी होजावै क्योंकि यहतो ज़रूरी है कि दूसरी लब्धि उसीको होगी जिसको पहिली लब्धिहुई मगर यह ज़रूरी नहीं है कि तीसरी लब्धि उस वक्तमें होवै जबकि पहिली और दूसरी लब्धिहोचुके

(२३६) स्पर्धक किसको कहते हैं।

उ० कर्म्मों के जर्रों का मजमुआ जो आत्माके साथ लिपटा हुवा है स्पर्धक कहलाता है।

अर्थात कर्म के परमाणुओं में फल देनेकी ताक़त है उसका छोटेसे छोटा हिस्साऐसा हिस्सा होजावे जिसका और कोई हिस्सा न होसके उसके सिलसिलेवार घटने बढ़नेको स्पर्धक कहते ह-कर्म के परमाणुओं के समूहको वर्ग कहते हैं-और वर्गके समूहको वर्गणा और वर्गणा समूहको स्पर्धक कहते हैं।

(२३७) एक समयमें कितने स्पर्धक उदय होते हैं, उसमें कितने परमाणु हैं

उ० सिद्धिराशि के अनन्तवें भाग और अभव्य राशि के अनन्त गुणे परमाणु ह उसको समय प्रवर्द्धक कहते हैं

(२३८) स्पर्द्धक के भेद और हरएक की तारीफ़ बयानकरो।

उ० दो भेद हैं

(१) देश घाति अर्थात जो आत्मा के परिणामों को थोड़ा बिगाड़े।

(२) सर्व घाति जो आत्मा के परिणामों को बिलकुल बिगाड़दे और सर्व घाति के भी दो भेद हैं।

[क] वोह जिसका उदयाभावि क्षय हो अर्थात जिनके उदय होनेका भाव रुकजावे।

(ख) वोह जो सत्ता में मौजूद रहें और उदयमें न आवें

(२३९) राशि किसको कहते हैं उनके भेद और हरएक की तारीफ बयान करो।

उ० एकढेर अर्थात पुंजको राशि कहते हैं और उसके ३ भेदहैं

(१) सिद्ध राशि

[२] भव्य राशि

(३) अभव्य राशि

(२४०) अविभाग प्रतिच्छेद किसको कहते हैं।

उ० इस समय प्रबद्ध मेंसे एक ऐसा परमाणु लेना कि जिसमें कम दर्जे का गुण अर्थात रस होवे उसके इसक़दर टुकड़े किये जावें कि फिर उसका दूसरा टुकड़ा न होसके और वह टुकड़े कुल दुनिया के जीवों से अनन्तगुणे हैं इन्हीं टुकड़ोंकानाम अविभागप्रतिच्छेद शक्त्यंशहोताहै

(२४१) वर्ग किसको कहते हैं और वर्गणा किसको कहते हैं।

उ० सब टुकड़े इकट्ठे किये जावें उसका नाम वर्ग है। बराबर अविभाग प्रतिच्छेद के मज्मुएका नाम जघन्य वर्गणा है और कमसे कम दर्जेके अविभाग प्रतिच्छेदके पर-

माणुका नाम जघन्यवर्ग है, और उसी के बराबर परमाणुओं के वर्गके मजमूए को नाम जघन्य वर्गणा है जघन्य वर्ग से एक अविभाग प्रतिच्छेद जिरासैं बढ़ता होवे ऐसे परमाणुके समूहका नाम द्वितीय वर्गणा है, जहांतक एक२ अविभाग प्रतिच्छेद क्रम से बढ़तें जितनी वर्गणा होवें उतनेही वर्गणा के समूह का नाम जघन्य स्पर्द्धक है और जघन्य वर्गणा के वर्गों में दूने २ परमाणु जिसमैं होवें वह द्वितीय स्पर्द्धक है और तीन गुणे होवें वोह तृतीय स्पर्द्धक हैं, खुलासा यह है कि वर्गणाके समूह का नाम स्पर्द्धक है ऐसे स्पर्द्धक एक दफ़े जो उदय आवैं जिसको उदयस्थान कहते हैं अभव्य राशि के अनन्त गुणो और सिद्धराशि के अनन्तवें भाग हैं

(२४२) लब्धिके बाद सम्यक्त्व किस तरह पर होता है।

उ० अनिवृत्ति करणके आखिर के वक्त में दरशन मोहनीय की ३ प्रकृति, और चारित्र मोहनीय अनन्तानुबन्धी की चार प्रकृति, इन सातों प्रकृतियोंके।

१ प्रकृति बन्ध
२ स्थिति बन्ध
३ प्रदेश बन्ध
४ अनुभाग बन्ध

को उदयहोने के बिलकुल नाक़ाबिल करदे (मगर यह बन्ध मौजूद रहते हैं) तब उपशम कहलाता है और उपशम होने से तत्वार्थ रूप श्रद्धान को पाता है और उपशम सम्यग्दृष्टि कहलाता है।

(२४३) मिथ्यादृष्टि की कै किस्म हैं उनके नाम और तारीफ़ बताओ ॥

उ० दो क़िस्म हैं

१ सादि--जिसको सम्यक्त्व होकर छूट गयाहो मगर फिर होगा।

२ अनादि--अर्थात जिसके कभी सम्यक्त्व नहीं हुवा

(२४४] अनादि मिथ्या दृष्टि के सम्यक्त्व किस तरह पैदा होता है .

उ० अनादि मिथ्या दृष्टिके सम्यक्त्व इस तरह पर पैदा होताहै कि दर्शन मोहनीय कर्म की एक प्रकृति और चारित्र मोहनीय कर्म की ४ प्रकृति अर्थात् अनन्तानुवन्धि क्रोध, मान, माया, लोभ, इन पांच प्रकृतियोंका उपशम होता है तब उपशम सम्यक्त्व पैदा होता है क्योंकि इस वक्त सिर्फ पांच ही प्रकृति हैं अर्थात दर्शन मोहनीय एक ही है अबतक उसके टुकड़े नहीं हुवे

(२४५) अनादि मिथ्या दृष्टि के कौनसा सम्यक्त्व पैदा होता है

उ० अव्वल सिर्फ उपशम ही पैदा होगा क्योंकि दर्शन मोहनीय के ३ टुकड़े हुये और जबतक ३ टुकड़े नहीं होवेंगे क्षयोपशम नहीं हो सक्ता

(२४६) इस सम्यक्त्व का काल किसक़दर है।

उ० अन्तरमुहूर्त, अर्थात दो घड़ी में १ समय घटै उसको अन्तर्मुहूर्त कहते हैं।

(२४७) इस कालमें कै टुकड़े दर्शन मोहकी एक प्रकृति के हैं उनके नाम बयान करो।

उ० तीन टुकड़े हैं।

१ मिथ्यात्व

२ सम्यक् मिथ्यात्व
३ सम्यक् प्रकृति

(२४८) बाद गुजरने पौनेदो घड़ीके कौन सम्यक्त्व पैदा होता है और इन तीनों टुकड़ों का क्या होता है।

उ० बाद गुजरने पौने-दो घड़ी के तीसरा टुकड़ा सम्यक् प्रकृति का उदय होता है तब उपशम सम्यक्त्व छूटकर क्षयोपशम सम्यक्त्व पैदा होजाताहै और बाकी दोनों टुकड़े मौजूद रहते हैं।

(२४९) अपर्याप्त के सम्यक्त्व क्योंकर होता है क्योंकि उसका जिस्म पूरा नहीं होता।

उ० जो सम्यक्त्व पहिले भव का इस भवमें साथ लाया है वह मौजूद रहता है इसलिये कहते हैं कि अपर्याप्तको सम्यक्त्व है अर्थात् पैदाइश सम्यक्त्वकी नहीं है मौजूदगी पहली है।

(२५०) प्रथमोपशम सम्यक्त्व किसको कहते हैं।

उ० मिथ्यात्वी मिथ्यात्व से छूटकर सम्यक्त्व को प्राप्त होता है वह प्रथमोपशम सम्यक्त्व कहलाताहै यह चौथा गुण स्थान है।

(२५१) द्वितीयोपशम किसको कहते हैं।

उ० जीवको प्रथमोपशम सम्यक्त्व होकर और उपशम श्रेणी मांडकर चारित्र मोहनी कर्मका उपशम होता है तब कहते हैं कि द्वितीयोपशम हुवा क्योंकि एक दफे पहिले उपशम होचुका था अब दूसरी दफे हुवा है।

(२५२) श्रेणी मांडना किसको कहते हैं।

उ० हरसमय में जीवके परिणामोंकी सफाई अनन्त गुणी होती चली जावे उसको श्रेणी कहते हैं।

(२५३) उपशम श्रेणी किसको कहते हैं।

उ० आठवें गुणस्थान से ग्यारवें गुणस्थान तक कर्म को नीचे बैठाकर समय समय परिणामों की निर्मलता होतीजावे उसको उपशम श्रेणी कहते हैं।

(२५४) गुण स्थानके नाम और तादाद और हरएककी तारीफ़ बयान करो

उ० जीव के परिणाम के चौदह ठिकाने हैं उनको चौदह गुणस्थान कहते हैं।

(१) मिथ्या दृष्टि
(२) सासादन सम्यग्दृष्टि
(३) सम्यङ् मिथ्या दृष्टि
(४) असंयत सम्यग्दृष्टि
(५) संयता संयत
(६) प्रमत्त संयत
(७) अप्रमत्त संयत
(८) अपूर्व करण
(९) अनि वृत्ति कारण वा बादर साम्पराय
(१०) सूक्ष्म साम्पराय
(११) उपशान्त कषाय ॥ वीतराग छद्मस्थ
(१२) क्षीण कषाय ॥ वीतराग छद्मस्थ
(१३) सयोग केवली
(१४) अयोग केवली

१ मिथ्यादृष्टि--मिथ्यात्व नामा दर्शन मोह कर्म की प्रकृति के उदय से जीव कुदेव, कुआगम, कुशास्त्र में सच्चा देव, गुरु, शास्त्र का श्रद्धान करता है वो मिथ्यादृष्टि है जैसे

पित्तज्वर वाले रोगी को मधुररस रुचिकर नहीं होता वैसे मिथ्यादृष्टि को सच्चा धर्म नहीं रुचता है न परम गुरु के कहे हुए बचन में श्रद्धान करता है ॥

२ सासदन—उपशम सम्यक्त्व का काल अंतर्मुहूर्त का है—उसमें एक समय से लेकर छहआवली तक यथासंभवकाल बाकी रहे उससमय किसी भी अनंतानुबंधी कषाय के उदय से जिसके सम्यक्त्व की विराधना होजाय वोह सासादन सम्यग्दृष्टि है—सम्यक्त्व से च्युतहोकर मिथ्यात्व गुणस्थानकी प्राप्ति के मध्यको जो काल है उसमें सासादन अवस्था रहती है

३ सम्यग्मिथ्यादृष्टि—जहां सम्यक्त्व और मिथ्यात्व रूप मिला हुवा समान परिणाम होवे जैसा देव गुरु एक धर्मका श्रद्धान करे वैसाही कुदेवादिक में भी श्रद्धान रहे

४ असंयतसम्यग्दृष्टि--तीन दर्शन मोहनी मिथ्यात्व, सम्यक् मिथ्यात्व,मिश्र,और चार अनंतानुबंधी,इन सात प्रकृतियोंके उपशमतेंउपशमऔरक्षयतेक्षायिकसम्यक्त्वहोताहै इसगुणस्थान में संयमकी अपेक्षा नहीं है केवल श्रद्धान की प्रधानता है

नोट—यहां अप्रत्याख्यानावरण कषाय के उदय ते श्रावक के व्रत नहीं होते।

५ संयत्तासंयत या देशसंयात-प्रत्यख्यानावरण कषाय का यहां उदय रहता है जिससे सकल चारित्र तो होता नहीं केवल देश संयम एकोदेशव्रतका ग्रहण होताहै यहां त्रस वध का

त्याग और स्थावर वध में यत्नाचार रहता है सम्यक्त पहले होहीगयाहै वो ४ गुणस्थान से चोदहवें तक रहेगा।

६ प्रमत्तसंयत--यहां महाव्रत रूप सकल चारित्र होताहै परन्तु प्रमाद दोष लगता रहता है इसलिए इसका नाम प्रमत्त संयत है यहां संज्वलन कषाय और हास्यादिक नव कषाय के तीव्र उदय से प्रमाद उत्पन्न रहता है

७ अप्रमत्त--प्रमाद रहित जहां सकल चारित्र हो वह अप्रमत्त संयत है यहां संज्वलन नव नोकषाय का उदय मंद रहने से प्रमाद दोष नहीं रहता अप्रमत्त के २ भेद-निरतिशय, सातिशय-जोऽप्रमत्त संयत-उपशमक्षपक श्रेणीके सन्मुख नहीं होता वो निरतिशयहै-और जो श्रेणी मांडनेके सन्मुख हो मोहनी कर्मकी २१प्रकृतिके उपशम वा क्षय के निमित्त ३ करण वा १ करण करे वो सातिशय है--अधःप्रवृतकरण, अपूर्वकरण, अनिवृत्ति करण, तहाअधः प्रवृत्तकरण वो है जहां परिणामों की विशुद्धि, उपरितन समय वर्ती परिणामों की अधस्तन समय वर्ती परिणामोंके साथ संख्या और विशुद्धि कर समानहो इसका विशेषकथन गोमहसार सिद्धांत में देखना ॥

८ अपूर्व करण-अन्तर्मुहूर्त प्रमाण अधःप्रवृत्त करण काल को व्यतीत कर४आवश्यक करता हुवा अधः प्रवृत्त परिणाम उल्लंघन कर अपूर्व करण का परिणाम श्रेणी द्वय में प्रविष्ट होकर आश्रय करता है

इसगुणस्थानमें-जोकारण करि भिन्न समय स्थित जीवों

करि उपरितन समयस्थित जीवों करि जो पहले अधः प्रवृत्त करण काल में नहीं प्राप्त हुए उन परिणामों को अपूर्व प्राप्त होता है इसकारण इस गुण स्थान का नाम अपूर्व करणहै यहां अपूर्वही करणअर्थात् परिणामहोत हैं

९ अनिवृत्तिकरण--अन्तमुहूर्त काल अपूर्व करण परिणामों करि विशुद्धहुवा जीव अनिवृत्तिकरण परिणाम को प्राप्त होता है अनिवृत्ति करणका यह प्रयोजन है कि एक समय में प्रवर्त्तमान जीव जैसे संस्थान वर्ण अवगाहन लिंगादि वहिरंग वा ज्ञान दर्शनादि अंतरंग परिणामों करि आपसमें भेद रूप हैं वैसे परिणामोंकी विशुद्धतामें यहां भेद नहीं है जो समय २ के परिणाम हैं वो क्रम करि अनन्तगुणी विशुद्धता को लिएहुएहै जिस समय में १ जीवके जैसे विशुद्ध परिणाम होंगे अन्य जीवकेभी उस समयमें उस गुणस्थान में वैसेही परिणाम होंगे।

१० सूक्ष्मसांपराय--इसगुण स्थानमें सूक्ष्म संज्वलन लोभ का उदय है जैसे कुसुम्भका भलेप्रकार धोयाहुवा भी वस्त्र में कुछ रंगका अंश रहता है वैसेही यहां भी सूक्ष्म कषाय रहता है जिससे यथाख्यात चारित्र नहीं होता अलक्ष्य सूक्ष्मलोभको अन्तमुहूर्त काल अनुभव करता जीव जो उपशम वा क्षपकश्रेणी का आरोहण करता है वो सूक्ष्म सांपराय गुणस्थानी है।

११ उपशान्तकषाय--इस गुणस्थानमें सब कषायें उपशमरूप रहती हैं अर्थात् सत्तामें रहती हैं उदयमें नहीं आतीं

जैसे मिट्टी का मिलाहुवा जल कतकादिफलकर कर्दम नीचे जमजाता है और स्वच्छ जल ऊपर आजाता है वैसेही सूक्ष्म सांपराय के उत्तर समयमें विशुद्धपरिणाम विजृम्भित यथाख्यात चारित्रोपयुक्त जीव सकल मोह कर्म की प्रकृति स्थिति अनुभाग प्रदेश संक्रमण उदीरणादि समस्त उपशमकर उपशांत कषाय नामकहोता है

१२ क्षीणकषाय—इस गुणस्थान में संपूर्ण मोह प्रकृतियोंका क्षयहोकर जैसे स्फटिक के पात्र में जल स्वच्छ रहता है वैसे विशुद्ध परिणाम होजाते हैं यहां मोहोदय जनित समस्त विभाव परिणामों का निरवशेष क्षय होजाता है और आत्मा सोला वानी के स्वर्णकी तरह परम विशुद्ध होजाता है।

१३ सयोग केवली—क्षीण कषायके अन्तिम समय में एकत्व वितर्क द्वितीय शुक्ल ध्यान भाव करि उत्तर समय में ज्ञानावरण दर्शनावरण अन्तराय तीन घाति कर्म का नाश होनेसे केवल ज्ञानरूप सूर्यका प्रकाश होता है और नव केवल लब्धि क्षायिक सम्यक्त्व, ज्ञान, दर्शन, दान, लाभ, भोग, उपभोग, वीर्यकी प्रादुर्भावितासे परमात्मा इस नामकी प्राप्ति होजाती है यह केवली भगवान योग सहित होने से सयोग केवली कहलाता है।

१४ अयोग केवली—वोही सयोगी जिन, योग रहित हुवा अयोगी कहलाता है यहां अठारह हजार शील भेदों का स्वामित्व को प्राप्त हो सर्वाश्रव के निरोध से परम संवरयुक्तकर्मरज कररहितहुवा अयोग केवली ५ लघु अक्षर

उच्चारण प्रमाण काल अयोग केवली पणेको प्राप्तहो सिद्ध परमात्मा गुणस्थानातीत मोक्ष पद में विराजता है

(२५५) श्रेणी के गुणस्थान कौन २ हैं।

उ० आठवां से १२ तक हैं।

(२५६) कौन २ सम्यक्त्व होकर छूटसकता है और कौन २ नहीं छूटसक्ता।

उ० उपशम और क्षयोपशम सम्यक्त्व होकर छूट सक्ता है। मगर क्षायक सम्यक्त्व होकर नहीं छूट सक्ता।

(२५७) जिस जीवके सम्यक्त्व होकर छूटजावे उसकी क्या हालत होती है

उ० उसको सिर्फ़ अर्द्ध पुद्गल परावर्तन संसार में भ्रमण करना पड़ेगा यह अरसाभी अनन्त काल है मगर ५ परावर्तन के मुक़ाबिले में बहुतही कम है।

(२५८) जो जीव उपशम श्रेणी मांडता है वह किस गुणस्थान तक जाता है और फिर छूटजाताहै या नहीं अगर छूटताहै तो कहां गिरताहै

उ० वह ग्यारहवें गुणस्थान तक जाता है फिर ज़रूर गिरता है और चौथे गुणस्थान में आताहै और उसके परिणामोंकी जैसी हालत होगी वैसे गुणस्थान को प्राप्त होगा चाहे ऊपर जावे चाहे नीचे आवे।

(२५९, क्षायक सम्यक्त्व के बाद कै भवमें मोक्षका नियम है।

उ० तीसरे भव ज़रूर मोक्ष चला जावेगा।

॥ अध्याय चौथा तत्ववर्णन ॥

आन्हिक पहिला जीवतत्व।

(२६०) तत्व कै हैं हरएकके नाम और मानी बयान करो।

उ० तत्व सात हैं।

१ जीव--चेतना लक्षण है अर्थात् जीवति जो जीता

नक़्शा नं० ४
मुतालिक़ अध्याय ४
आन्हिक १
सफ़ा ११५
प्र० २६७
तत्व ७
जीव
अजीव
आश्रव
बन्ध
सम्वर
निर्जरा
मोक्ष

है, अजीवत्, जो जीता था, जीविष्यति जो जीवेगा,
नाट–चेतना नाम ज्ञान का है।

२ अजीव पुद्गल–अर्थात जिसमें चेतना न होवे।

३ आश्रव—अच्छे और बुरे कर्मोंके आने का दरवाज़ा उसको आश्रव कहते हैं।

४ बन्ध–जीवके प्रदेश और कर्म के परमाणु दोनोंका परस्पर बन्धहोजावे जैसे दूध और पानी मिलजाता है

५ सम्बर–अच्छे बुरे कर्म आतेहुये रुकजावें।

६ निर्जरा– कर्म का एक देश अर्थात् किसी क़दर दूर होजाना।

७ मोक्ष–कुल कर्मोंका सर्वथा दूर होजाना।

नोट—चेतना के तीन भेद हैं जैसे कि।

[क] ज्ञानचेतना–जिस जगह ज्ञानोपयोग और दर्शनोपयोग परिणमन आत्मा का होवे अर्थात जब कि केवल दर्शन रूप और केवल ज्ञान रूपही आत्माका परिणमन हो सो ज्ञान चेतना है।

[ख] कर्म चेतना–आत्माका परिणाम कर्म रूप होता है तो उसको कर्म चेतना कहते हैं।

[ग] कर्म फलचेतना–जहांपर कर्म के फल भोगने रूप जो परिणाम हो वह कर्मफल चेतना।

नोट—चूंकि आश्रव बन्ध वग़ैरा आत्मा में होते हैं इसवास्ते पहिले जीव कहागया और जीव का सहकारी है अजीव, इसलिये अजीव उसके साथ वर्णनकिया गया है।

(नोट—२ ज्ञान चेतना केवली भगवानके होतीहै, कर्म चेतना त्रस जीवोंके होतीहै, कर्म फल चेतना स्थावर एकन्द्रि के होती है।

(२६१) जीव का क्या लक्षण है।

उ० जीवका लक्षण उपयोग है।

भावार्थ--बाह्य और आभ्यन्तर सबब से पैदा हुवे चेतन के मुवाफ़िक़ मिलेहुए चेतनही के परिणाम इसको उपयोग कहते हैं अर्थात ज़ाहिरी और अन्दरूनी सबब से आत्माका ज्ञान उसी चीज़की शक्ल का हो जावे जिसको वह जानना चाहता है या जिसको उसने जानलिया इसी का नाम उपयोग है।

उपयोग नाम चेतना का है वह उपयोग २ प्रकार है ज्ञानोपयोग, दर्शनोपयोग। इसका वर्णन सप्त तत्त्वों के कथन में है।

(२६२) लक्षण किस को कहते हैं।

उ० जब बहुत सी चीजें जमा होवें उन में जिस निशान से एक चीज़ दूसरी चीज से जुदा समझी जासके उस निशान को लक्षण कहते हैं।

(२६३) लक्षण कै क़िसम के हैं।

उ० लक्षण दो क़िसम के हैं।

[१] आत्म भूत--जैसे कि आग में गरमी।

[२] अनात्म भूत--जैसे किसी शख़्स के पास दण्ड होवे तो दण्डी कहें।

(२६४) आत्मा का लक्षण जो उपयोग है वह कै क़िसम का है॥

उ० दो क़िसम का है अर्थात् ज्ञानोपयोग और दर्शनोपयोग

[२६५] उपयोग से किस २ चीज़ का फ़रक़ ज़ाहिर होता है॥

उ० पुद्गलादिक अजीव से जीव का फ़र्क़ ज़ाहिर होता है

(२६६) उन जीवों के कै भेद हैं जिन का लक्षण उपयोग बयान किया है हर एक का नाम और तारीफ़ बतलावो ॥

उ० उन जीवों की दो भेद हैं।

१ संसारी अर्थात जिस जीव के संसार परिभ्रमण मौजूद होवे वह संसारी है।

२ मुक्त--अर्थात जिस जीव के वह भ्रमण दूर होगया होवे वह मुक्त है।

(२६७ संसार किस को कहते हैं।

उ० संसार भ्रमण करनेका नाम है और इसीकोपरावर्तन भी कहते हैं

(२६८) परिवर्तन से कै शरीर लिये गये हैं।

उ० पांच में ३ लिये गये हैं

१ औदारिक शरीर।

२ वैक्रियक शरीर।

३ आहारक शरीर।

(२६९) संसारी जीवों के कै भेद हैं उन का नाम और तारीफ़ बयान करो

उ० वह संसारी जीव जो ऊपर बयान किये गये हैं उनके दो भेद हैं !

१ समनस्क--अर्थात जिनके मन होवे

२ अमनस्क--अर्थात जिनके मन न होवे ।

(२७०) मन के भेद, उनके नाम और हर एक की तारीफ़ बयान करो॥

उ० मन के २ भेद हैं।

१ द्रव्य मन---अर्थात कर्म की प्रकृति के उदय से हृदय में अष्टदल फूले कमल की शकल में पुद्गलों का समूह होता है उसको द्रव्य मन कहते हैं

२ भावमन--वीर्यान्तराय अर्थात नो इन्द्री आवर्ण नाम ज्ञानावर्णी कर्मके क्षयोपशम से आत्मा में जानने की शक्ति क्षयोपशमनुसार प्रकट होवे वह भाव मन है।

(२७१) और भेद संसारी जीवों के क्या हैं॥

उ० और भेद संसारी जीवों के दो हैं

१ त्रस

२ स्थावर

(२७२) त्रस और स्थावर के लफ़्ज़ी मानी बतलावो।

उ० [१]त्रस के लफ़्ज़ी मानी चलने वाला है

[२]स्थावर के मानी ठहरने वाला अर्थात ठहरा हुवा।

(२७३) इन जीवोंको त्रस और स्थावर क्यों कहा।

उ० १ जो त्रस नामा नाम कर्म की प्रकृति से पैदा होवे वह त्रस है।

२ और स्थावर नामा नामकर्म की प्रकृति से जो पैदा होवै वह स्थावर है।

(२७४) त्रसको चलनेवाला और स्थावर को ठहरनेवाला क्यों न कहा जैसा कि लफ़्ज़ी मानी थे।

उ० सयोग केवली भगवान जब योग निरोध करते हैं चलते नहीं इसलिये लफ़्ज़ी मानी के एतबार से उनको स्थावर कहना पड़ता-और हवा और पानी जो चलते हैं उनको लफ़्ज़ी मानी के एतबारसे त्रस कहना पड़ता हालांकि वह एकेन्द्री स्थावर है इसलिये लफ़्ज़ी मानी से विरोध आता है।

(२७५) स्थावर जीव कै काय के हैं उनके नाम और तारीफ़ बयान करो।
उ० यह जीव ५ काय के हैं।

१ पृथ्वी काय
२ अपकाय
३ तेजकाय
४ वायुकाय
५ वनस्पतिकाय

इनमेंसे हरएक के चार २ भेद किये हैं

१--[क] पृथ्वी--अर्थात् अचेतन, पुद्गल और कठोरता वगैरा गुण जिसमें मौजूद हों वह पृथ्वी कहलाती है या तीनों नीचे के भेद जिसमें हों।

[ख] पृथ्वी काय--पृथ्वी कायक जीव जिसमें मौजूद था वह निकलगया या मर चुका सिर्फ़ शरीर रहा उसको पृथ्वी काय कहतेहैं जैसे कि सूकाकाष्ट

[ग]पृथ्वीकायक-अर्थात जिसजीवके पृथ्वीकाय मौजूद हो उसजीव को पृथ्वीकायक कहते हैं क्योंकि पृथ्वी शरीर इसके साथ हैं।

[घ]पृथ्वी जीव--अर्थात् पृथ्वीकाय नामा नाम कर्मकी एक प्रकृति है जिसवक़्त उसका उदय हो और दूसरे कायके शरीर से छुटकर जबतक पृथ्वी काय के शरीर को ग्रहण न करे बीच में कार्माण योग में रहे, तब तक उसको पृथ्वी जीव कहते हैं।

(क) अप
(ख) अप काय
(ग) अप कायक
(घ) अप जीव

} यह चार अप काय के भेद हैं

(क) तेज
(ख) तेजकाय
(ग) तेजकायिक
(घ) तेज जीव
} यह ४ तेज काय के भेद हैं

(क) वायु
(ख) वायु काय
(ग) वायुकायिक
(घ) वायु जीव
} यह ४ वायु कायके हैं।

(क) वनस्पति
(ख) वनस्पतिकाय
(ग) वनस्पतिकायिक
(घ) वनस्पति जीव
} यह ४ वनस्पति काय के हैं

इनकी तारीफ़ ऊपरकी तरह लगालेनी चाहिये।

२ अप—असाधारण ठंढापन जिसमें पायाजावे वह अप है और जिस चीज़ में ठंडापन होगा ज़रूर समझलेना चाहिये कि उसमें पानीका अंश है। बाक़ी ख, ग, घ, की तारीफ़, ऊपरके ख, ग, घ, की तरह जानना सिर्फ़ नाम बदलना।

३ तेज--जिसमें असाधारण गरमी पाईजावे वह तेज है बाक़ी ख, ग, घ, की तारीफ़ ऊपरके ख, ग, घ, की तरह लेना, सिर्फ़ नाम बदलना।

४ वायु—जिसमें स्पर्श सुगन्ध दुर्गंधके साथ हमेशा चलने की ताक़त मौजूद हो।
बाक़ी ख, ग, घ, की तारीफ़ ऊपर के ख, ग, घ, की तरह जानना सिर्फ़ नाम बदलना।

५ वनस्पति—साधारण और प्रत्येक जीवों समीत मौजूद होवे वह वनस्पति है।

बाकी ख,ग, घ, की तारीफ़ ऊपर के ख, ग, घ, की तरह जानना सिर्फ़ नाम बदलना चाहिये।

नोट—जिस एकशरीरमें अनन्त जीवहैं एकके साथसबका जन्ममरण, स्वासोस्वास, आहार, वर्गणा, समान है वह साधारणहै और जिसमें शरीर का स्वामी एकही जीव है वह प्रत्येक है।

(२७६) इन्द्रियों की तादाद, नाम और तारीफ़ बतलावो।

उ० इन्द्रिय ५ हैं

१ स्पर्श—वीर्यान्तरायनाम मतिज्ञानावरणी कर्म का क्षयोपशम और आंगोपांग नामा नाम कर्म के उदयके लाभ के सहारेसे आत्मा जिसके द्वारा स्पर्शैं यानी छूवें सो स्पर्श है।

२ रसना—इनहीं कर्मोंकी वजहसे आत्मा जिस के ज़रियेसे चाखैं उसको रसना कहते हैं

३ घ्राण—उन्हीं कर्मों के ज़रियेसे आत्मा जिस इन्द्रिय द्वारें सूंघें सो घ्राण हैं

४ चक्षु—उसही कर्म के ज़रियेसे आत्मा जिस के द्वारैं देखें वोह चक्षु हैं

५ श्रोत्र—उसही कर्म के ज़रिये से आत्मा जिस के द्वारा सुनें वोह श्रोत्र हैं

(२७७) एकेन्द्री कौन २ से जीव हैं और एकेंद्री कौन सी होती है॥

उ० पृथ्वी, अप, तेज, वायु, वनस्पति हरएकके एकही इन्द्री है, जिसमें सिर्फ़ स्पर्श होवे।

(२७८) एकेंद्री पैदा होनेका आभ्यन्तर यानी अन्दरूनी सबब क्या है

उ० वीर्य्यान्तराय स्पर्शनइन्द्री आवरण नाम ज्ञानावरणी कर्मके क्षयोपशमसे और जो बाकी इंद्रियां हैं उनके सर्वघाती स्पर्धकनि का उदय होने से और शरीरनाम नामकर्म के उदय के सहारे से और एकेंद्रीनाम नामकर्मके उदय के आधीन होने से एक स्पर्शन इन्द्री उत्पन्न होती हैं

(नोट) १ अर्थात जो बाकी इन्द्रियां पैदा होने के कर्म होते हैं वोह इसवजहसे पैदा नहीं होसक्ते के उनके सर्वघाती स्पर्धकों का उदय होजाता है।

(नोट) २ स्पर्धक की तारीफ़ सवाल नम्बर (   ) में देखो॥

(२७९) दो इन्द्रियां कौन कौनसी हैं और द्विइन्द्री जीव कौन कौन हैं

उ० स्पर्शन और जिह्वा (जीभ)हैं-और लट, कीड़ा, वग़ैरा द्विइन्द्री जीव हैं।

(२८०) तीन इन्द्री कौन कौन सी होती हैं और तिइन्द्री जीव कौन२ हैं।

उ० स्पर्शन,जीभ, और नाक हैं और पिपीलिका अर्थात् चींटी, चींटा वग़ैरा तिइन्द्री जीव हैं

(२८१) चार इन्द्री कौन कौन सी होती हैं और चौइन्द्रिय जीव कौन२ हैं

उ० स्पर्शन, जीभ, नाक, आंख हैं और भ्रमर अर्थात भौंरा मक्खी माछर वग़ैरा-मसलन ततय्या।

(२८२) पंचेंद्री कौन २ जीव हैं।

उ० हाथी, घोड़ा, मनुष्य, वग़ैरह।

(२८३) प्राण कुल कितने हैं।

उ० दस हैं।

पांच इंद्री

(१-५)स्पर्शन, रसन, घ्राण, चक्षु, श्रोत्र,

बल तीन

(६-८) मन, वचन, काय,

(६) स्वाशोस्वास

(१०) आयु

(२८४) हरएकजीव के ज़ियादह से ज़ियादह कुल कितने प्राण होसकते हैं।

उ० ज़ियादहसे ज़ियादह वोही दस होते हैं जो ऊपर बयान किये गये हैं।

(२८५) एकेंद्री जीव के कै प्राण तक होसकते हैं।

उ० सिर्फ़ चार होसकते हैं।

१ स्पर्शन इंद्री

२ काय बल

३ स्वासो स्वास

४ आयु

(२८६) दो इन्द्री के कौन २ प्राण होसकते हैं।

उ० छह होसकते हैं।

यानी चार वोह जो एकेंद्री के, पांचवां जीभ, और छठा वचन बल

(२८७) तीन इन्द्री के कौन २ प्राण होसकते हैं।

उ० सात होसकते हैं।

छह ऊपर लिखे हैं और सातवां नाक।

(२८८) चार इन्द्री के कौन प्राण होसकते हैं।

उ० आठ प्राण होते हैं सातो वोह जो ते इन्द्रीके हैं और आठवां आंख।

(२८९) पांच इन्द्री के कौन २ प्राण होसकते हैं।

उ० असंज्ञी पंचेन्द्री के नौ प्राण होसकतेहैं याने आठों वोह जो ऊपर बयान किये हैं और नवां कान।
और संज्ञी पंचेन्द्री के दश प्राण होते हैं नौ जो ऊपर लिखे हैं और दशवां मन।

(२९०) इंद्री के भेद कै हैं उनके नाम और तारीफ़ बतावो।

उ० इन्द्री के दो भेद हैं।

१ द्रव्य इन्द्री
२ भाव इन्द्री

द्रव्य इन्द्री--चक्षु, श्रोत्र, जो पुद्गलमई है और वह पुद्गल इंद्री के आकार परणम्य है उसको द्रव्येंद्रिय कहते हैं जैसे नेत्र के मांही बाहिरका आकार और काला धोला बिन्दु

भावइंद्री-जो द्रव्येंद्री प्रकट है उसके अन्दर आत्माके प्रदेशों परकर्मका क्षयोपशम होना और लब्धि उपयोग रूप परणमना।

(२९१) द्रव्येंद्रिय के कै क़िस्म हैं उनके नाम और तारीफ़ बतावो।

उ० द्रव्येन्द्रिय के दो भेद हैं।

१ निर्वृति यानी जो कर्मकी वजह से बनी होवें इसके फिर दो भेद हैं॥

१ बाह्य निर्वृति
२ आभ्यन्तर निर्वृति

२ उपकरण इसके भी २ भेद हैं।

१ बाह्यउपकरण
२ आभ्यन्तर उपकरण

(२९२) आभ्यन्तर निर्वृति किसको कहते हैं।

उ० आभ्यांतर निर्वृति उसकोकहतेहैं आठ जौ चौड़ेरुख मिला कर रक्खेजावें(उस्को उदत्सेधांगुल कहते हैं)उसके असं-ख्यात वे हिस्से की बराबर शुद्ध आत्मा के प्रदेश जुदे २ इन्द्रियकी शकलपर द्रव्य इन्द्रियसे मिलकर मौजूद रहैं ।

मसलन-आंख में अन्दरूनी बनावट में आत्मा के ज़र्रे अगर मौजूद न होवें तो नजर नहीं आसक्ता जैसे कि मुरदे की आंखमें देखनेकी ताकत नहीं होती

नोट—निर्वृत्ति के मानी उस रचना के हैं जो कर्म के वजहसे होवे।

(२९३) बाह्यनिर्वृति किसको कहते हैं।

उ० बाह्यनिर्वृत्ति—आत्मा के ज़र्रोंमें जो इन्द्री होवेउस में पृथक् पृथक् नाम कर्मकी वजहसे पुद्गलोंके मजमुये की हालत बाह्यनिर्वृतिहै अर्थात् आत्माके प्रदेशों पर कर्मके उदयसे पुदगल परिचयका अवस्था विशेष होना उसको बाह्यनिर्वृति कहते हैं।

(२९४) उपकरण के भेद और नाम और हरएक की तारीफ़ बयान करो।

उ० उपकरणके दो भेद हैं।

१ आभ्यन्तर उपकरण-जैसे आंख में सफ़ेद,स्याह,गो-ल डेला वगैरा जो मौजूद है वोह अभ्यन्तर उपकरण है-बाह्योपकरण जो चीज़ बाहरके ढकनेके लिये मौजूद हो जैसे पलक और आंख का ढकना वगैरा।

नोट—उपकरण के माने सहकारी हैं।

नोट—इसी तरह हरएक इन्द्रिय की किसमैं समझनी चाहिये।

(२९५) भावइन्द्री कौन२ हैं उनके नाम बयान करो।

उ० भावइन्द्री दो हैं।

१ लब्धि।

२ उपयोग।

(२९६) विग्रह गती किस को कहते हैं॥

उ० जो एक जीव दूसरा शरीर ग्रहण करने के लिये गमन करता है और दूसरा शरीर जबतक ग्रहण नहीं करै वह तब तक विग्रह गती कहलाती हैं और वह वक्त ज़्यादा से ज़्यादा तीन समय है।

(२९७) विग्रह गतिमें कौन२कर्म और कौन२योग मौजूद होते हैं और उदय में आते हैं या नहीं॥

उ० विग्रह गति में जीव के साथ कार्माण शरीर रहता है वह कार्माण शरीर अष्ट कर्म की वर्गणा का समूह है औरकार्माण काय योग है।

(नोट-१ ऐसे आत्माके प्रदेशों का चलाचल पना है तो विग्रहगति में वह कार्माण जोग मौजूद है और इसी वज़ह से कर्मों के आश्रव विग्रह गति में होताहै और एक जगहसेदूसरी जगहभी इसीवजहसे जाता है

(२९८) जीव की चाल सीधी है या टेढ़ी॥

उ० पुद्गलका और जीवका चलना आकाश की श्रेणी रूप प्रदेशों में होता है अर्थात सीधा चलता है टेढ़ा नहीं चलता।

(२९९) श्रेणी किस को कहते हैं

उ० लोक के बीच में लेकर ऊपर या नीचे या तिरछा आकाश के प्रदेशों की सिलसिलेवार पंक्तीरूप हालत को कहते हैं।

(३००) कौन २ जीव की चाल सीधी होती है टेढ़ी नहीं होती है, संसारी जीव कै दफ़े मोड़ा खाता है ॥

उ० संसारी और मुक्ति सबही जीवोंकी चाल सीधी होती है टेढ़ी नहीं होती है, मुक्त जीव तो श्रेणी बद्ध गमन करके एक समय में मोक्ष में पहुंच जाता है और संसारी जीव आवश्यक्ता पर तीन मोड़े तक खाता है परंतु मोड़े में भी जीव सीधा गमन करता है।
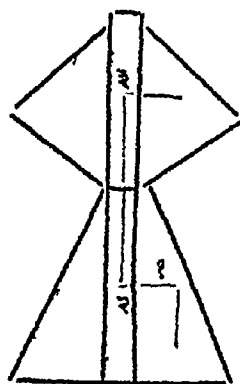
नोट—तीन मोडे जीव को निष्कुट क्षेत्र में लगते हैं त्रसनाड़ी के बाहर जो लोकाकाश है वह निष्कुट क्षेत्र कहलाता है नीचे के निष्कुट क्षेत्र में से ऊपर के निष्कुट क्षेत्रमें जब जीव गमन करता है तब उसको गमनमें ३ मोडें खाने पड़ते हैं

(३०१) जीव की चाल की कै क़िस्मे हैं उनके नाम और तारीफ़ बतलावो

उ० जीव की चाल चार क़िसम की हैं।

१ इषुगति—अर्थात जैसे तीर सीधा चला जाताहै यह चाल संसारी और मुक्त जीव दोनों की है।

नोट—इषु तीर को कहते हैं

२ पाणिमुक्त—अर्थात जो चीज़ हाथ से छोड़ी जावे उसका काल दो समय का है जैसे हथेली में पानी भर कर छोड़दे यह एक मोड़ा हुवा-यह सिर्फ़ संसारी जीव के होता हैं

नोट—पाणी हाथ को कहते हैं

३ लाङ्गलिक—जैसे हलकी लकड़ी इसके दो मोड़े हुवे—यह भी संसारी जीव के होता है।

नोट—लाङ्गल हल को कहते हैं

४ गोमूत्रिका—अर्थात मिसल गाय के मूत्र के इसमें तीन मोड़े होते हैं यह भी संसारी जीव के होता है

नोट—१ जो जीव मौड़ा न ले उसके एक समय है

नोट-२ इषुगतिपर { जीव और पुद्गल परमाणु यह दोनों शीघ्रता से सीधा चलेतो एक समयमें १४ रज्जु पहुंचे

(३०२) विग्रह गतिमें जीवके आहारका ग्रहण होता है या नहीं अगर होता है तो कै समय के बाद।

उ० जीव एक समय, दो समय, तीन समयतक अनाहारकहै अर्थात आहार वर्गणा ग्रहण नहीं करता अर्थात नवीन। चतुर्थ समय में जीव आहार वर्गणा को अवश्यही ग्रहण करलेता है।

(३०३) आहार किसको कहते हैं।

उ० औदारिक, वैक्रयक, आहारक यह तीन शरीर और आहार वगैरह छः पर्यासका ग्रहण करना आहार कहलाता है और जहां इस सब चीजों का ग्रहण न होवे उसको अनाहारक कहते हैं

(३०४) जीवकी पैदाइशकै तरहपर होती है हरएकके नाम और तारीफ बतावो

उ० तीन तरहपर होती है।

१ सम्मूर्छन—अर्थात तीनलोक में ऐसे परमाणु मौजूद है कि गरमी सरदी वगैरह से उनमें जीव आपसे आप पैदा होजाता है और अवयव अर्थात शरीर के हिस्से बन जाता है।

२ गर्भज--अर्थात जो गर्भ से पैदा हो।

३ औपपादिक--अर्थात स्वर्ग और नर्क में ऐसे स्थान बने हुये हैं कि जीव उनमें पहुंचतेही अंतरमुहूर्त में शरीरको धारण करलेता है इस स्थानको उपपाद कहते हैं।

नोट—उपपाद के असिल माने उत्पन्न होनेके हैं।

(३०५) जीव किस२ योनिमे पैदा होताहै हरएकका नाम और तारीफ बतावो।

१ सचित्त--अर्थात चेतन के साथ हो।

२ शीत--अर्थात ठंढापन जिसमें हो।

३ संवृत--अर्थात ढका हुवा हो।

४ अचित्त—अर्थात चेतन रहित हो।

५ ऊश्ण—अर्थात गरम।

६ असंवृत—अर्थात खुलाहुवा।

७ सचित्त अचित—जिसमें चेतना और चेतना रहित दोनों गुण पायेजावें।

८ शीत ऊष्ण—अर्थात जिसमें ठंढा और गरमीपन दोनों पायें जावें।

९ संवृत असंवृत—अर्थात् जिसमें खुलाहुवा और ढका हुवा दोनों पाये जावें।

नोट—सूत्र ३२ अध्याय २ में यह तफ़सील लिखी है कि कौन किस योनी में पैदा होता है इसी के ८४ लाख भेद होगये हैं।

(३०६) योनि किसको कहते हैं

उ०. जिस जगह जीव पैदा हो या जीव के पैदा होनें की जगह हो।

(३०७) योनियों के कितने भेद है

उ० चौरासी लाख

(३०८) गर्भ कै क़िसम के है हरेक के नाम और तारीफ़ वतलावो

उ० गर्भ तीन क़िसम के हैं।

१ जरायुज--अर्थात एक पतली झिल्ली में पैदा होना जैसे कि आदमी का बच्चा एक बारीक खाल में लिपटा होता है

२ अण्डज--अर्थात जो अण्डे से पैदा होता है।

३ पोतज--अर्थात बच्चा बग़ैर झिल्ली के पैदा हो जैसे सिंहादिके बच्चे।

(३०९) सन्मूर्छन जन्म किस के होता है

उ० जो गर्भ से पैदा होवे उनके सिवाय, और देव नारकी के सिवाय बाक़ी जीवों के सन्मूर्छन जन्म होता है

(३१०) शरीर कै क़िस्म के हैं हरएक का नाम और तारीफ़ वतलावो

उ० शरीर पांच क़िस्म के हैं।

१ औदारिक--जिसके दो मानी हैं।

(१) उदर से अर्थात पेट से पैदा हुवा।

(२) उदार अर्थात बड़ा हो, स्थूल हो

२ वैक्रियक--जिस शरीर में यह आठ ऋद्धि अर्थात ताक़तें हों वह वैक्रियक कहलाता है।

वह आठ ऋद्धि यह है

[१] अणिमा--अर्थात जिस्म को छोटा करलेना।

[२] महिमा--जिस्मको बहुत बड़ा बनालेना।

[३] गरिमा--शरीर को वज़नदार बना लेना।

[४] लघिमा--शरीर को हलका बना लेना।

[५] प्राप्ति--जिस जगह चाहें चला जाना।

[६] प्राकम्प--जैसा चाहे शरीर बना लेवे

[७] ईशत्व--बड़ी ताकृत बना लेना

[८] वशित्व--सबको काबू में करलेना।

३ आहारक--किसी सूक्ष्म संशय को दूर करने के वास्ते छठे गुणस्थान वाले मुनिके मस्तक मेंसे एक पुतला आदमीकी सूरतका एकहाथ लम्बा शुक्लवर्णनिकल कर केवली भगवानके दर्शनोंको जाताहै और सीधा दर्शन करके वापिस आकर उसी जगह मस्तक में छुपजाता है उसको आहारक कहते हैं

[४] तैजस--यह एक किस्म का शरीर है जो आत्मा के साथ लगारहता है और मोक्ष होने तक लगारहेगा सिर्फ मोक्ष में छुटेगा यह शरीर असली शरीर को चमकदार बनाता है इसलिये इसको तैजस कहते हैं और ऋद्धि से भी तैजस शरीर होता है वह शुभ अशुभ भेद से दो प्रकार है।

[५]कार्माण--आठ कर्म के मजमुए अर्थात समूह को कार्माण शरीर कहते हैं इस शरीर से कर्म बंधते हैं इस लिये इसको कार्माण कहते हैं यह दूसरा शरीर है जो आत्मा के साथ हमेशा से लगा हुआ है

नोट--साबित हुआ कि तैजस और कार्माण दो शरीर ऐसे हमेशा से जीव के साथलगे हुवे हैं और मोक्ष होने से पहले तक रहते है।

[३११] ऋद्धि पैदाइशी होती है या हासिलकी हुई।

उ० ऋद्धि पैदाइशी भी होती है जैसे देव और नारकी के (और उसको भव प्रत्यय भी कहते हैं) और तप से भी पैदा होजाती है (उसको लब्धि प्रत्ययभी कहते हैं) जैसे विद्याधर या ऋद्धिधारी मुनि के।

३१२—वैक्रियक शरीर किन २ के होता है।

उ० देव और नारकियोंके तो वैक्रियक शरीर नियमसे होता है अर्थात पैदाइशी है और मुनि तथा विद्याधरों के तपश्चरण व विद्या साधन से होता है।

(३१३) गुण प्रत्यय अवधि कै क़िस्मकी होतीहै

उ० छह क़िसिम की होती है।

१ अनुगामी--जो उसक्षेत्रमें जहां पैदा हुवाहो और उस भव में दूसरे क्षेत्र में भी जावे तो साथ रहे।

२ अननुगामी--जिस क्षेत्रमें हुईहो वहांही रहे जो और क्षेत्र में जावे तो छूटजावे।

३ वर्द्धमान--होकर बढ़ती रहे।

४ हीयमान--हुवे बाद कमती होती रहे।

५ अवस्थित--तमाम पर्याय में रहे घटै बढ़ै नहीं।

६ अनवस्थित--उसी पर्याय में घटती बढती रहै।

नोट—यह मनुष्य पर्याय में होती है।

(३१४) इन शरीरों में एक दूसरों से कितनी छोटाई बड़ाई है और इनमें से कौन नज़र आता है और कौन नहीं आता है।

उ० औदारिकसे छोटा वैक्रियक उससे छोटा आहारक उससे छोटा तैजस, उससे छोटा कार्माण है।

यहांतक कि आहारक, तैजस, कार्माण शरीर नज़र भी नहीं आते हैं।

[३१५] इन शरीरों के परमाणु एक से दूसरे के कितने छोटे बड़े हैं

उ० एक से दूसरे के परमाणु आहारक शरीर तक असंख्यात २ गुणे ज़्यादा होते जाते हैं अर्थात औदारिक से असंख्यात गुणे वैक्रियक के और वैक्रियक से असंख्यात गुणे आहारक के —आहारक से तैजस के और तैजस से कार्माण के जर्रे अनन्त गुणे अनन्त गुणे ज़्यादा हैं

(३१६) इन शरीरों में कौन २ से शरीर अप्रति घात हैं।

उ० तैजस और कार्माण अप्रति घाती है अर्थात यह किसी शरीर से नहीं रुकते हरएक चीज़ में से निकल कर चले जाते हैं।

(३१७) कौन२ शरीर का सम्बन्ध अनादि से है और इससे क्या मतलब है

उ० यही तैजस और कार्माण शरीर आत्मा के साथ अनादि से लगे हुये हैं।

[नोट] मौजूदगी की अपेक्षा तो अनादि हैं अर्थात जुदा नहीं होते लेकिन खिरते रहते हैं और बनते रहते हैं इस वास्ते आदि भी हैं।

[३१८] कौन २ शरीर हरेक जीव के रहता है।

उ० औदारिक शरीर मनुष्य तिर्यंचो के होता है।
वैक्रियक--देवनारकीयों के होता है।
आहारक—छठे गुणस्थानवर्ती मुनिराजों के होता है
तैजस--कार्माण--सर्वजीवों के होता है।

(३१९) एक जीव के एक वक्त में ज़्यादा से ज़्यादा कै शरीर होते हैं।

उ० चार शरीर तक हो सक्ते हैं।

(३२०) अगर दो होवे तो कौन कौन।

उ० अगर दो होवे तो तैजस और कार्माण।

[नोट] यह विग्रह गति में होते हैं

(३२१) तीन होवें तो कौन २।

उ० औदारिक तैजस कार्माण यह मनुष्य और तियञ्च के होते हैं या वैक्रियक तैजस और कार्माण।

(३२२) चार होवें तो कौन २।

उ० औदारिक, आहारिक, तैजस, कार्माण, यह सिर्फ़ मनुष्य गतिमें छटे गुणस्थान वाले के होते हैं।

(३२३) इनमेंसे कौनसा शरीर उपभोग रहित है और उसकी क्या वजह है।

उ० अन्त का शरीर कार्माण उपभोग रहित है क्योंकि वह इन्द्रियां विग्रह गतिमें मौजूद नहीं होती जिन वजह से भोग होता है मगर तैजसमें यह ताक़तभी नहीं है कि वह किसी इन्द्री के साथ मिलकर भोग करसके उसका ज़िकर करने की ज़रूरत नहीं।

(३२४) औदारिक शरीर किसतरह पर पैदा होता है।

उ० गर्भ और सन्मूर्छन दोनों तरहपर पैदा होता है बल्कि यों कहना चाहिये कि गर्भ और सन्मूर्छन से जो पैदा होगा वह औदारिकही होगा।

(३२५) जो जीव औपपादिक होगा उसका कैसा शरीर होगा।

उ० वैक्रियकही होगा।

(३२६) तैजस शरीर किस प्रत्यय से होता है।

उ० तैजस शरीर लब्धि प्रत्यय सेभी होता है और तैजस शरीर नाम कर्म के उदयसे होता है।

[३२७] तैजसके भेद और नाम, और तारीफ बताओ।

उ० तैजस के दो भेद हैं।

१ निः सरण—अर्थात जो निकलता है इसके दो भेद हैं

(क) शुभ अर्थात अच्छा तैजस।

(ख) अशुभ तैजस अर्थात बुरा।

२ अनिः सरण तैजस—अर्थात जो निकलता नहीं है।

नोट—यह सब संसारी जीवों के मौजूद हैं और लब्धि प्रत्यय नहीं है।

[३२८] आहारक शरीर में क्या २ तारीफें हैं और किस गुणस्थान तक होता है

१ शुभ

२ विशुद्ध

३ अव्याघात—अर्थात न रुकनेवाला। नोट १-यह सिर्फ़ छठे गुणस्थानमें होता है इससे पहले या आगे नहीं यह शरीर छठे गुणस्थान में निकलता है।

नोट—२ इसका काल अन्तरमुहूर्त है और अगले गुणस्थानोंका बहुत कम है परिणामोंकी हानि वृद्धिसे बहुत दफ़े गुणस्थानघटते बढ़ते रहते हैं मगर यह प्रमाद अविरत की तरह नहीं होता।

[३२९] नारकी और सन्मूर्छन के कौन २ वेद होते हैं।

उ० नपुन्सक वेद होता है।

[३३०] देवगतिमें कौन २ वेद होता है।

उ० देव गति में नपुन्सक वेद नहीं होता है पुरुष वेद स्त्री वेद दोनों होते हैं।

(३३१) बाकी जीवों में कौन २ वेद होता है।

उ० तीनों वेद होते हैं।

(३३२) कौन २ अकाल मृत्यु से नहीं मरते हैं।

उ० १ औप पादिक—अर्थात देव और नारकी।

२ चरमोत्तमदेह—अर्थात उसी भव मोक्ष जानेवाले तीर्थंकर और चरम शरीरी ।

३ असंख्यात वर्ष आयु वाले आर्थात भोग भूमिवाले

* अध्याय चौथा *

[आन्हिक दूसरा—अजीव तत्व]

(३३३) अजीव काय कौन२ हैं हरएक का नाम और तारीफ़ बतावो ।

उ० १ धर्म—जबकि जीव और पुद्गल चलते हैं चलने के वक्त जो उनका ज़रिया, सहारा होता है वह धर्म है जैसे मछली के वास्ते जल और इस को गमन का उदासीन कारण कहा है ।

२ अधर्म—जो पदार्थ जीव पुद्गल को ठहराने में उदासीन सहकारी कारण है वह अधर्म द्रव्य हैं जैसे चलता हुवा मुसाफ़िर छाया से ठहरता है ।

३ आकाश—जो पदार्थ अन्य पदार्थों को अवकाश देने में समर्थ है और स्वयं अवकाश लक्षण हो वह आकाश है ।

४ पुद्गल—जो चीज़ बने और विगड़े वह पुद्गल है जिसका पूरण गलन स्वभाव हो और स्पर्श रस गंध वर्ण वान् जोहो उसको पुद्गल कहते हैं ।

[३३४] इनको काय क्यों कहतें हैं ।

उ० इनको काय इस वजह से कहते हैं कि इनमें ज़र्रों का मजमुवा वहुत ज़्यादहै अर्थात् प्रदेशोंकी वाहुल्यता है

नोट—काल सिर्फ़ एक ज़र्रा है उसमें मजमुवा ज़र्रों का नहीं है इसलिये उसको अलहदा बयान करेंगे ॥
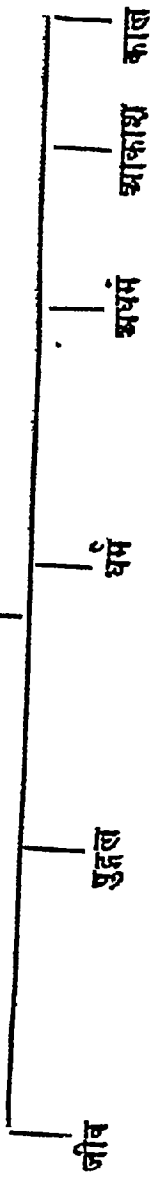
द्रव्य ६
जीव
पुद्गल
धर्म
अधर्म
आकाश
काल
नकशा नं० ५
मुताल्लिक़ अ० ४
अन्हिक २ सफा १३७
प्र० ३२५

(३३५) द्रव्य कौन२ हैं हरएक का नाम और तारीफ़ बयान करो ॥

उ० जीव, पुद्गल, धर्म, अधर्म, आकाश, काल यह छह द्रव्य हैं इनका लक्षण पहले लिखा गया है

(३३६) द्रव्य के असली मानी क्या हैं ॥

उ० द्रव्य के असली मानी यह हैं कि जो पर्यायों को प्राप्त होवे वह द्रव्य है। या पर्याय जिसको प्राप्त होवे।

(३३७) द्रव्य का क्या स्वभाव है ॥

उ० १ नित्य है अर्थात् हमेशासे है और हमेशा रहेगा और किसी काल में नाश न हो।

२ अवस्थित—अर्थात क़ायम हैं और अपनी ख़ासियत नहीं छोड़ते और वह छःसे न कम होंगे न ज़्यादा होंगे

३ अरूपि है-अर्थात उन में न कोई रूप होगा केवल पुद्गल रूपी है।

[३३८] कौन २ सा द्रव्य एक २ है ॥

उ० धर्म, अधर्म, और आकाश द्रव्य एक२ है।

(३३९) कौन द्रव्य में क्रिया नहीं है

उ० धर्मद्रव्य, अधर्मद्रव्य, और आकाश द्रव्य मेंक्रियानहीं है

(३४०) क्रिया किसको कहते है।

उ० क्षेत्रसे क्षेत्रांतर में गमनकरना उसको क्रिया कहते हैं।

[३४१] क्रियाके कै भेद हैं, हरएकका नाम और तारीफ़ बतावो

उ० क्रिया दो क़िस्म की है।

१ वाह्यक्रिया--अर्थात दूसरे द्रव्य की कोशिश या मदद से होती है।

२ अभ्यन्तरक्रिया--जोपरिणामों की शक्ति से होती है।

(३४२) जिस द्रव्यमें क्रिया नही है उसमें उत्पाद क्यों है।

उ० उत्पाद क्रिया के निमित्त से भी होता है और दूसरे निमित्तसेभी होता है इसवास्ते क्रिया रहित मेंभी उत्पाद होता है।

उत्पाद, व्यय, ध्रौव्य, यह स्वरूप हैं और सर्व द्रव्यों में हैं अस्ति इसही से है क्रियाका होना सर्व पदार्थों का स्वरूप नहीं है।

(३४३) उत्पादकी कै किसिम हैं हरएक का नाम और तारीफ बतानो।

उ० उत्पाद की दो क़िस्म हैं।

(१) स्वनिमित्त-जो अगरु लघु गुण की वजह से होवे वह स्वनिमित्त है जैसे दरया में लहर।

नोट—अगुरु लघुद्रव्य का एक खास गुण है जो आंखसे नज़र नहीं आता सिर्फ केवल ज्ञान से जाना जाता है उसमें गुण घटतेबढ़तेहैं

(२) पर निमित्त-अर्थात जो दूसरे के निमित्त से होवे जैसे काया चलती है जो धर्म द्रव्य के सहारे से चलती है और अधर्म द्रव्य से ठहरती है।

(३४४) निमित्त की कै क़िसम हैं।

उ० दो क़िसम हैं।

(१) प्रेरक-अर्थात कोशिश करके जबरन चलानेवाला

(२) बलाधान--अर्थात सिर्फ़ सहारा।

...धर्म में किस क़िसमकी क्रिया है।

...किसम का स्वभाव है कि दूसरे द्रव्यको सिर्फ़ ...हरने का सहारा देते हैं खुद कोशिश नहीं ...कुछ नहीं है।

(३४६) आत्मा सर्वव्यापी है या असर्वव्यापी।

उ० कथञ्चित सर्वव्यापी है, कथञ्चित असर्व व्यापी है।

(३४७) आत्मा क्रियावान है या क्रिया रहित है।

उ० कथंचित क्रियावान है कथंचित क्रिया रहित है--जो कर्म सहित संसारी हैं सो क्रियावान है और सिद्धि जीव निःक्रिय है।

(३४८) पुद्गल क्रिया वान हैं या नहीं।

उ० कुल पुद्गल क्रियावान हैं।

(३४९) काल, धर्म, अधर्म, आकाश क्रियावान है या नहीं।

उ० यह सब क्रिया रहित हैं।

(३५०) पुद्गल द्रव्य किसको कहते हैं।

उ० पुद्गल वह है जिसमें रूप हो और रूप उसे कहते हैं जिसमें:—

(१) स्पर्श।
(२) रस।
(३) गन्ध।
(४) वर्ण होवे।

(३५१) स्पर्श के क़िस्म का है।

उ० आठ क़िस्म का है।

(१) नर्म।
(२) सख़्त।
(३) भारी।
(४) हलका।
(५) गर्म।
(६) ठंडा।
(७) रूखा।
(८) चिकना।

(३५२) रस कै हैं।

उ० पांच हैं।

१ चर चरा (चिरपरा)।

२ कड़वा।

३ खट्टा।

४ मीठा।

५ कषायला।

(३५३) गंध कै क़िस्म के हैं।

उ० दो हैं।

१ खुशबू।

२ बदबू।

(३५४) वर्ण की क़िस्म कै हैं॥

उ० पांच हैं।

१ काला।

२ नीला [हरित]

३ पीला।

४ लाल।

५ सुफ़ैद।

(३५५) पुद्गल में और क्या २ बातें पाई जाती हैं, हर एक का नाम और तारीफ़ बयान करो॥

उ० १ शब्द—अर्थात् आवाज़।

२ बन्ध--अर्थात् दो चीज़ों का एक होना।

३ सूक्ष्म--अर्थात् बारीकी।

४ स्थूल--अर्थात् मोटापन।

५ संस्थान--अर्थात् आकार।
६ भेद—अर्थात टूटना।
७ तम--अर्थात अँधेरा।
८ छाया—अर्थात साया।
९ आतप—अर्थात धूप
१० उद्योत--अर्थात रोशनी।

(३५६) शब्द की कै क़िस्म हैं उनका नाम और तारीफ़ बयान करो॥

उ० दो क़िस्में हैं।

१ वर्णात्मक–अर्थात जो अक्षर रूप होके निकले।
२ ध्वन्यात्मक-अर्थात जो अनक्षर रूप ध्वन्यात्मक है।

(३५७) भाषा स्वरूपके कै भेद हैं उनके नाम और तारीफ़ बयान करो

उ० दो भेद हैं।

१ एक अक्षर सहित--जैसे संस्कृत, फ़ारसी, अंग्रेजी वग़ैरह
२ अक्षर रहित--जैसे द्वेइन्द्रियादि जीवों की आवाज़

(३५८) आभाषा स्वरूप के कै भेद हैं उनके नाम और तारीफ़ बयान करो

उ० दो भेद हैं

१ प्रायोगिक--अर्थात जो आदमी की कोशिश से पैदा हो
(२) वैस्रेशिक–जैसे बादल वग़ैरह की गरज वग़ैरह।

(३५९) प्रायोगिक के कै भेद हैं उनके नाम और तारीफ़ बयान करो।

उ० चार भेद हैं।

१ तत्--मसलन ढोल, नक़ारेकी आवाज़।
२ वितत--तांत और लोहेके तारकी आवाज़, मसलन सितार तंबूरे की आवाज़।

३ घन--ताल घंटे वगैरह की आवाज़।

४ सुषिर--शंख भेरी वगैरह की आवाज़।

[३६०] बंध के कै भेद हैं हरएक के नाम, और तारीफ़ बतावो ॥

उ० बंध के भी दो भेद हैं।

१ वैस्रेषिक-जिसमें आदमीकी कोई कोशिश न होवे,मसलनरूखाऔरचिकनाअंशमिलनेसेबन्ध होजाताहै

२ प्रायोगिक—जो इन्सानकी कोशिश से होवे जैसेकि काठ में लाखसे जोड़ लगादिया जावै।

नोट—रूखे और चिकनें का बन्ध उसवक्त होगा जबके एकतरफ़ अंश ज़्यादा होंगे अगर अंश बराबरहोंगे तो बन्ध नहीं होगा।

(३६१) सूक्ष्म के कै भेदहैं उनके नाम और तारीफ़ बतावो।

उ० दो भेद हैं।

१ एक आनत अर्थात परमाणु जो निहायत ही सूक्ष्म है।

२ दूसरे आपेक्षिक--अर्थात् एकदूसरे से छोटा होता चला जावे।

(२६२) स्थूल के कै भेद है हरएक का नाम और तारीफ़ बतावो।

उ० दो

१ आनत—अर्थात् निहायत बड़ा।

२ आपेक्षिक—अर्थात् एक दूसरेसे बड़ा होता चलाजावे

(३६३) संस्थान के कै भेद हैं हरएकका नाम और तारीफ़ बतावो।

उ० दो भेद हैं।

१ इत्थम् लक्षण—अर्थात जो बयान करने में आवे, मसलन गोल, लम्बा, चौकोर, त्रिकोण वग़ैरह।

२ अनित्थम् लक्षण-अर्थात अनेक किस्म का जो बयान में न आवे जैसे बादल बिजली वगैरह का आकार।

(३६४) भेदकी के किस्में हैं हरएकका नाम और तारीफ बतावो।

उ० छः किस्में हैं।

१ एक उत्कर-जो चीज चीरी जावे जैसे लकड़ी।

२ चूर्ण-अर्थात पीसना जैसे गेहूं वगैरह।

३ खंड-टुकड़े होना जैसे घड़ा टूटना।

४ चूर्णिका-जैसे दाल वगैरह की शकल बनाना।

५ प्रतर--पत्र उतारना।

६ अनुचटन-ऐसे फूल उड़ना जैसे कि गरम लोहे के पीटने से फूल उड़ते हैं।

(३६५) छाया के के भेद हैं, नाम और तारीफ बतावो।

उ० दो भेद हैं।

१ सांतर वर्ण परणित--जैसे आदमी, दरख्त, दीवार का छाया।

२ प्रतिबिम्ब स्वरूप--जैसे आईने वगैरह में नजर आना

(३६६) पुद्गल की और क्या तारीफ है।

उ० अणु और स्कन्धरूप पुद्गल के २ भेद हैं।

१ अणु--एक प्रदेश मात्रको कहते हैं जिसका दूसरा हिस्सा न होवे और इन्द्रिय गोचर न होवे उसका मौजूद होना मूर्तिक कार्यकी वजहसे साबित होताहै

२ स्कन्ध-जो बहुतसे अणुसे मिलकर बनता है।

नोट-स्कन्ध उत्पत्तिकी अपेक्षा आदि है और द्रव्यकी अपेक्षा अनादि है

(३६७) पुद्गल के स्कन्ध किस २ चीज़से पैदा होते हैं।

उ० भेद से या संघात से या भेद और संघात दोनों से पैदा होते हैं।

(३६८) भेद किसको कहते हैं।

उ० भेद उसको कहते हैं कि अन्दरूनी या बेरूनी सबब से स्कन्ध के टुकड़े होजावें--परमाणु तक रहजावे—परमाणु का खंड नहीं होसक्ता है।

(३६९) संघाति किसको कहते है।

उ० जुदा २ टुकड़ों का मिलकर एक होजाना संघात कहलाता है।

(३७०) परमाणु किस चीज़का भेद है।

उ० परमाणु पुद्गलका भेद है।

(३७१) स्कन्ध के के भेद है।

उ० स्कन्ध के दो भेद हैं।

१ वोह जो इन्द्रियों से देखने में आवे।

२ वोह जो इन्द्रियोंसे देखनेमें नहींआता,जैसेकर्म वर्गणा

(३७२) वह स्कन्ध जो इंद्रियोंसे देखनेमें आवे किसचीज़से पैदा होता है।

उ० वोह भेद और संघात दोनों से पैदा होता है।

[३७३] आत्मा और पुद्गल द्रव्यका क्या ताल्लुक़ है।

उ० हरएक आत्माके साथ पुद्गल द्रव्य अनादि से लगाहुवा है और मोक्ष होने के पूर्व समय तक रहेगा केवल संयोग संबन्ध है और अज्ञान से है।

(३७४) वह पुद्गल द्रव्य जो आत्मा के साथ रहता है उसके कै भेद हैं हरएक का नाम मै मिसाल बयान करो॥

उ० दो भेद हैं॥

(१) वह जो बन्ध रूप होगया है अर्थात् कर्म रूप होकर आत्मा से ऐसा मिलगया है जैसा कि दूध और पानी-और इसको बन्ध कहते हैं।

(२) वह जो सिर्फ सम्बन्ध रूप है अर्थात कर्म रूप न हो। जैसे वस्त्रका पहनना वा शरीर का नोकर्म होना।

(३७५) जीव, धर्म, अधर्म, द्रव्यमें कितने प्रदेश हैं॥

उ० इन द्रव्यों में असंख्यात असंख्यात प्रदेश हैं॥

[३७६] धर्मास्ति काय किसको कहते हैं॥

उ० धर्म द्रव्य को कहते हैं, बहु प्रदेशी पणातें अस्तिकाय हैं।

[३७७] असंख्यात के कितने भेद हैं।

उ० असंख्यात के ९ भेद हैं।

परीतासंख्यात[१], युक्तासंख्यात[२], असंख्यातासंयात[३], इस तरह ३ भेद हुये इनको उत्तम, मध्यम, जघन्य से गुणा करनेसे ९ भेद होते हैं। यानी एक एक के जघन्य मध्यम उत्कृष्ट ऐसे ३ भेद हैं।

[३७८] उनमेंसे यानी एक जीव केप्रदेश वा धर्म अधर्म के प्रदेश में कौन भेद समझना चाहियें

उ० यहां पर मध्यम भेद जानना चाहिये।

(३७९) जीवमें छोटा बड़ा होनेकी खासियत किस वजह से है

उ० इसवजह से है कि कर्मसे जो शरीर रचा जाता है उसमें

कर्म के अनुसार उसी प्रमाण आत्मा के प्रदेश रहते हैं जैसे हाथी और कीड़े में जीव के प्रदेश फैल जाते हैं और सुकड़ जाते हैं और जब केवल समुद्घात करता है तो कुल लोक में फैल जाते हैं ।

नोट--मगर सुमेरु गिरके नीचे वज्रमयीपटल के बीच में आठ प्रदेश आत्मा के निश्चल रहते हैं बाक़ी नीचे ऊपर फैल जाते हैं

(३८०) केवल समुद्घात किसको कहते हैं

उ० जिस वक्त जीव केवली के दर्जेको पहुंच जाता है तो चार कर्म बाक़ी रहतेहैं अर्थात आयु, नाम, गोत्र, वेदनी, और उस वक्त आयु कर्म की स्थित कम होती है तो और बाक़ी ३ कर्म की स्थिति ज़्यादा होती है उसवक्त आत्मा के प्रदेश कुल लोक में फैलजाते हैं । ऐसे प्रदेशों के फैलने से चारों कर्मों की स्थिति बराबर होती जाती हैं क्योंकि क्षेत्रके छूनेसे कर्म के परमाणु बिना रस दिये झड़जाते हैं । इसका नाम केवल समुद्घात है ।

[३८१] समुद्घात किसको कहते हैं

उ० आत्माके प्रदेशों के फैल जाने को समुद्घात कहते हैं

(३८२) जब जीव केवल समुद्घात करता है तो उसका फैलाव किस क़दर होता है।

उ० तीन लोक प्रमाण होजाता है

(३८३) आकाश द्रव्य के कितने प्रदेश हैं

उ० अनन्त प्रदेश हैं और केवल ज्ञानगम्य है ।

(३८४) आकाश एकही है या एक से ज़्यादा

उ० आकाश द्रव्य तो एकही है परंतु उपचार से व्यवहार में

घटाकाश [जितनी जगह घट ने रोकी] पटाकाश [जितनी जगह पट ने रोकी] आदि भेद गिनेजाते हैं।

(३८५)पुद्गल द्रव्य के प्रदेश कितने हैं।

उ० संख्यात भी हैं, असंख्यात भी हैं, अनन्त भी हैं।

(३८६)असंख्यात प्रदेशी किसको कहते हैं।

उ० जिस पुद्गल स्कन्ध में संख्यात से अधिक अर्थात जिन की गिनती नहीं करसक्ते ऐसे प्रदेश होवें वह असंख्यात हैं।

नोट-बहुत से पुद्गल दो परमाणु के स्कंधहैं वह जघन्य संख्यातका भेद हैं

(३८७) अनंत प्रदेशी किसको कहते हैं।

उ० जो पुद्गल अनन्त परमाणु मिलकर स्कन्ध बने वह अनन्त प्रदेशी हैं।

(३८८)अनन्त के कै भेद हैं हर एक का नाम और तारीफ़ बतावो।

उ० अनन्त के तीन भेद हैं।

१ परीतानन्त-उत्कृष्ट असंख्यातासंख्यात में एक एक मिलाने से जघन्य परीतानन्त होता है।

२ युक्तानन्त-जो परीतको परीत से ज़रब देने से हासिल होवे॥

३ अनन्तानन्त-युक्तानन्तको युक्तानन्त से ज़रब देने से हासिल होता है।

नोट-और इनके एक एक के उत्तम मध्यम जघन्य भेद करके ९ भेद होते हैं इनका सविस्तार वर्णन श्रीमत त्रैलोकसार जी ग्रन्थ में है।

(३८९) लोक असंख्यात प्रदेशी है उसमें अनन्त प्रदेशी पुद्गल कैसे जगह पासक्ता है।

उ० १ अव्वल तो आकाश की ऐसी ताक़त है कि सबको जगह देता है।

२ पुद्गल के ज़र्रों में ऐसी ताक़त है कि वह सुकड़ जाते हैं।

नोट—इस आकाश की ऐसी शक्ति है जो अनंत द्रव्य और भी होते तो समा जाते और द्रव्य का स्वभाव अतर्क्य होता है ।

(३९०) छह द्रव्यों का ठिकाना किसजगह है

उ० लोकाकाश में छह द्रव्यों का ठिकाना है.।

(३९१) आकाश किसको कहते हैं

उ० सब द्रव्योंको अवगाहन देवे उसको आकाश कहते हैं

(३९२) आकाश केकै भेद है

उ० दो भेद हैं।

१ लोकाकाश—अर्थात जितने हिस्से आकाश मे तीन लोक की रचना है वह लोकाकाश है ।

नोट—धर्मादिक छह द्रव्य जहां पाएजावें वह लोक है॥

२ अलोकाकाश—वोह है जहां धर्म्मादिक पांच द्रव्य न्नाहीं केवल आकाश मात्रही है

(३९३) आकाश का ठिकाना अर्थात सहारा क्या है॥

उ० कोई नहीं है।

आकाश सिर्फ़ अपने ही सहारे है वह सब से बड़ा है और अनन्त है यह व्यवहार है और एवम्भूत नय की अपेक्षा से हरएक द्रव्य अपने२ सहारे है।

(३९४) द्रव्य आदि है या अनादि है ॥

उ० पर्याय की अपेक्षा आदि है सत्ता की अपेक्षा अनादि है

३९५) जब द्रव्य अनादि है तो एक दूसरे के सहारे पर रहना क्योंकर हैं

उ० अनादि में भी ऐसा होता है जैसे कि जो चीज़ें एक

वक्त में पैदा होवें उनमें भी एक दूसरे के सहारे पर हो सक्ती है जैसे घड़े में रूप और जिस्म में हाथ पैर वग़ैरा

(३९६) धर्म और अधर्म किस हिस्से पर भरे हुवे हैं

उ० धर्म और अधर्म द्रव्य कुल लोक में भरे हुवे हैं कोई जगह ख़ाली नहीं है जैसे तिल में तेल हरजगह और हर जुज़ में होता है।

(३९७) धर्म और अधर्म व्याघात है या अव्याघात है।

उ० अव्याघात हैं अर्थात् एक दूसरे को नहीं रोकते

(३९८) धर्म और अधर्म अव्याघात क्यों हैं

उ० क्योंकि अमूर्तिक हैं

(३९९) पुद्गल द्रव्य की अवगाह किस क़दर है॥

उ० पुद्गल द्रव्य का अवगाह एक प्रदेश से लेकर संख्यात असंख्यात प्रदेश तक है।

(४००) अवगाह किसको कहतें हैं।

उ० अवगाह जगह देनेको कहते हैं।

(४०१) मूर्तीक द्रव्य एकही जगहपर कैसे ठहर सक्ता है।

उ० मूर्तीक द्रव्य में भी आपस में एक दूसरे को जगहदेने की ताक़त है, जैसे एक घरमें चंद चिराग़ों की रोशनी

(४०२) जीवों का ठिकाना लोकके छोटे से छोटे और बड़े से बड़े किस हिस्से में है।

उ० जीवों का ठिकाना लोकके असंख्यातवें भागसे लेकर कुल लोकमें है।

अर्थात कुललोक के असंख्यात हिस्से किये जावें तो एक हिस्से में भी जीव है और बाकी हिस्सों में जीव

के सिवाय और द्रव्य भी हैं यह संकोच की अपेक्षा कहा, अगर बढ़ाया जावे एकही जीव तमाम लोकमें व्याप्त होजाता है ।

(४०३) जीवके प्रदेश लोकके बराबर हैं या नहीं ।

उ० जीव के प्रदेश लोक की बराबर हैं ।

(४०४) जीवके प्रदेश किस क़दर छोटे बड़े होजाते हैं और किस तरह ।

उ० जीव के प्रदेश संकोच विस्तार की वजह से दीपकके प्रकाशवत् हैं अर्थात जैसा छोटा बड़ा शरीर पावे उसी के अनुकूल प्रदेश संकोच विस्तार रूप होजाते हैं

(४०५) आत्मा किसी अपेक्षासे मूर्तिक है या नहीं ।

उ० आत्मा अमूर्तिक है मगर कर्मोंकी वजह से मूर्तिकभी है

(४०६) संकोच विस्तारसे आत्मा अपने अमूर्तिक स्वभावको छोड़ताहैया नहीं

उ० छोड़ता है ।

(४०७) आत्मा घटतें २ परमाणुवोंकी बराबर होजाता है या नहीं ।

उ० नहीं होसक्ता ।

सूक्ष्म निगोदया जीव सबसे छोटा है वह अंगुल के असंख्यातवें भाग है इससे छोटा नहीं होसक्ता ।

(४०८) जीव और पुद्गलतो क्रियावान हैं और धर्म वगैरह क्रियावान नहीं हैं तो उनका अवगाह कैसे होता है ।

उ० यहां उपचार अर्थात व्यवहार से जगह देना साबित होता है, मसलन आकाशको सर्वगत कहा है अर्थात आकाश सब जगह है और हमेशासे है और क्रियावान नहीं है मगर उसको व्यवहारमें सर्वगत कहा जाता है ऐसाही धर्म अधर्मको कहाजाता है ।

(४०९) लोहा वगैरह जो एक दूसरे को रोकता है तो आकाशका दोष है या किसका।

उ० आकाश का दोष नहीं है बल्कि आपस में खुद एक दूसरेको रोकने वाले हैं।

नोट—आकाश का काम जगह देने का है और आकाश सब चीज़ो को एकसार जगह देता है।

इसलिये और जो छोटी २ चीज़ें एक दूसरेको जगह देती हैं वह एकसार जगह नहीं देतीं और न भिन्न आकाशके होसक्ती हैं।

(४१०) अलोकाकाश में जगह लेनेवाली चीज़ें हैं या नहीं।

उ० अलोकाकाश में जगह लेनेवाली कोई चीज़ नहीं है आकाश का लक्षण बदस्तूर क़ायम है।

(४११) जीवको किस२ पुद्गलकी मदद है हरएकका नाम और तारीफ़ बतावो

उ० १ शरीर--अर्थात पुद्गल जो स्कन्ध शरीर रूप हुवा है
२ वचन--अर्थात बोलना।
३ मन—अर्थात विचारना।
४ प्राण--अर्थात जो सांस ऊपर जाता है।
५ अपान—अर्थात जो सांस नीचे जाता है।

(४१२) कार्मीण शरीर पुद्गलमयी और मूर्तिक है या नहीं।

उ० कार्माण शरीर भी पुद्गलमयी और मूर्तिक है क्योंकि कार्माणका कारज कुछ मूर्तिक है, मसलन जब कर्म का उदय आता है गुड़ मीठा मालूम होता है।

(४१३) वचन केकै भेद हैं हरएक का नाम और तारीफ़ बतलावो

उ० वचन के दो भेद हैं।

१ द्रव्य वचन--अर्थात पुद्गल कर्म के निमित्त से हुई पुद्गल वचन रूप वर्गणा, कर्ण इन्द्रिय के ज़रिये से वह द्रव्य वचन है।

२ भाव वचन--वीर्यान्तराय मति, श्रुति, ज्ञानावर्णी कर्म के क्षयोपशम से और आंगोपांग नाम कर्म के उदय से आत्मा की बोलने की ताक़त होवे वह भाव वचन है।

(४१४) वचन मूर्तिक है या अमूर्तिक और अपने जवाबकी दलील बयानकरो.

उ० वचन मूर्तिक हैं उसकी दलील यह है।

१ इन्द्रिय उसको ग्रहण करती है।

२ मूर्तिक से रुक जाता हैं।

३ मूर्तिक से बिगड़ जाता है।

४ मूर्तिक के धक्के से एक दिशा से दूसरी दिशा में चला जाता है.

(४१५) मन आत्मा से मिला हुवा है या जुदा॥

उ० भाव मन आत्मा से सम्बन्ध रूप है.

(४१६) मन मूर्तिक है या अमूर्तिक है।

उ० मन मूर्तिक है उसकी दलील यह है।

१ बिजली वग़ैरह से रुकता हैं और दहलता है।

२ शराब वगैरह पीनेसे बिगड़ता है।

३ दूसरे की झिड़की से रुकता है।

४ कहीं से कहीं चला जाता है।

(४१७) जीव की उपकारक और क्या क्या चीज़ें हैं

उ० १ सुख अर्थात साता बेदनी कर्म के उदय अन्तरंग कारण से और द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव के निमित्त से उपजा जो आत्मा का प्रीत रूप परिणाम यहसुखहै.

२ दुख--असाता वेदनी कर्म के उदय, अन्तरंग कारण से और बाह्य द्रव्य, क्षेत्र, काल, भावके निमित्तसे आतमा का क्लेश रूप परिणाम दुख है

३ जीना--अर्थात् भवधारण का सबब आयु नाम कर्म उसके उदय से भव में जीव क़ायम रहना उसका सांस का आना जाना मौकूफ़ न होना जीना कहलाता है

४ मरणा--इनका मौजूद न होना मरना कहलाता है

(४१८) जीव आपसमें एक दूसरे का उपकार करते है या नहीं॥

उ० करते हैं।

(४१९) काल द्रव्य का उपकार क्या२ है॥

उ० १ वर्तना।

२ परिणाम।

३ क्रिया

४ परत्व।

५ अपरत्व।

यह काल द्रव्य का उपकार है।

(४२०) वर्तना किसको कहते हैं॥

उ० वर्तना के मानी हैं पलटना। धर्म वग़ैरा द्रव्य अपनी पर्यायको आपही पलटते रहते हैं। लेकिन उस पलटने में कोई ज़ाहिरी सबब ज़रूर होता है--बिला दूसरी चीज़ की मदद के वर्तना नहीं हो सक्ती है, पस वर्तना से अर्थात् एक हालत से दूसरी हालत बदलने में जो वक़्त लगता है वह काल की

अलामत है इसलिये उस द्रव्य की उत्पत्ति करने वाला वही काल है।

(४२१) परिणाम किस को कहते हैं॥

उ० द्रव्य की पर्याय को परिणाम कहते हैं पहिली हालत को छोड़ के दूसरी हालत हासिल करे उसका नाम परिणामहै

(४२२) क्रिया किसको कहते हैं।

उ० एक चीज़ से दूसरी चीज़ में जाना।

(४२३) परत्व किसको कहते हैं।

उ० जिसमें किसी दूसरेकी अपेक्षा ज़्यादा वक्त लगाहो उसमें परत्व का व्यवहार होता है।

(४२४) अपरत्व किसको कहते हैं।

उ० जिसमें किसी दूसरेकी अपेक्षा कम वक्त लगाहो उसमें अपरत्व का व्यवहार होता है।

(४२५) कालको किसी अपेक्षा क्रियावान भी कहसक्तें है या नहीं।

उ० काल सिर्फ़ बर्तना में निमित्त है इसलिये इसको उपचार करता कहा है।
जैसे कोई शख़्स आग के सामने ताप रहाथा और पढ़ रहा था तो यह कह दिया कि आग पढ़ा रही थी।

(४२६) काल के होनेका सबूत क्या है।

उ० धर्म वग़ैरह द्रव्यों की पर्य्याय हर समय तबदील होती है उस तबदील होने में समयही सबब है उस समयको ही कालकी पर्य्याय कहते हैं, इसी से कालका होना साबित होता है, जितनी देर पर्य्याय बदलनेमें लगती है उसीका नाम समयादिक काल है।

यह व्यवहार काल है इसीसे निश्चय काल साबित होता है।

(४२७) काल के कै भेद हैं हर एक का नाम और तारीफ़ और भेद बतलाओ

उ० काल के दो भेद हैं

१ एक निश्चयकाल--जो वर्त्तना रूप है और हमेशा से चला आता है।

२ व्यवहार काल--यह परिणाम वग़ैरह लक्षण रूप है और दूसरेके सबबसे जाना जाताहै, जैसे सूरज वग़ैरह से दिनरात जाने जाते हैं और इसी से निश्चयकाल भी जाना जाता है।

व्यवहार काल के भी तीन भेद हैं।

[क] भूत--अर्थात जो गुज़र गया।

[ख] वर्त्तमान--जो जारी है।

[ग] अनागत—जो आगे आनेवाला है।

(४२८) असलकाल और काल द्रव्य किसको कहते हैं॥

जो ज़र्रे काल के आकाश एक एक परमाणुमें मौजूद हैं उसको असल काल कहते हैं और यही काल द्रव्य है

(४२९) परिणाम के भेद और हरएक की तारीफ़ करो

उ० दो हैं॥

१ नैमित्तिक॥

२ स्वाभाविक॥

नोट—नैमित्तिक परिणाम जीवके उपशम वग़ैरह तीन भावहैं और क्षायिक वा पारणामिक यह स्वाभाविक हैं पुद्गल के घट पिंड वग़ैरह रूप है यह नैमित्तिक है शुद्ध परमाणु का जो परिणमन है वह स्वाभाविक है जीवादि षट द्रव्यों में तो अगुरु लघु गुण की हानि वृद्धि है सो उनका स्वाभाविक परिणमन है।

(४३०) द्रव्य का लक्षण क्या है।

उ० द्रव्य का लक्षण सत् है सत् के माने मौजूद होना ॥

(४३१) सत् मे चार बातें पाई जाती हैं हरएक की तारीफ करो।

उ० उत्पाद ॥
  २ व्यय
  ३ ध्रौव्य ।
 जिसमें तीनों बातें मौजूद होवें वोह सत् है।
 [१] उत्पाद चेतन या अचेतन द्रव्य का अपनी जाति को न छोड़ने निमित्त के वससे एक भाव से दूसरे भाव की प्राप्ति होना, अर्थात् एक हालत से दूसरीहालत का हासिल होना, जैसे मिट्टी से चाक पर रख कर घड़ा बनाया तो घड़े का बनना उत्पाद है।
 [२-व्यय] पहली हालत मिट्टी के पिण्ड का नाश होना व्यय कहलाता है
 [३--ध्रौव्य]जो चीज़ मिट्टीमेंथी वोह घड़े में है वहध्रौव्यहै

(४३२) नित्यकी तारीफ़ बयानकरो।

उ० जो चीज़ पहले समय में थी वोह दूसरे समय में रही उसको तद्भाव कहते हैं उस तद्भावका व्यय अर्थात नाश न होना वह नित्य है।

(४३३) अर्पित किसको कहते है।

उ० १ मुख्य, अर्थात जिसको साबित करना चाहतेहो, अर्थात, किसी ग़रज़ की वजहसे अनेक धर्म वाली चीज़ में किसी एक धर्म को साबित करने की ख़्वाहिश से उस चीज़को मुक़द्दम समझना।

(४३४) अनर्पित किसको कहते हैं ।

उ० गौण—अर्थात जो उस वक्त बिला ज़रूरत चीज़ होवे. ।

(४३५) १ विरोध २ वैध करण ३ परस्पराश्रय ४ अनवस्था ५ व्यतिकर ६ शंकर ७ अप्रतिपत्ति ८ अभाव, इनके जुदे २ मानी बतावो ।

उ० (१) विरोध-- जब सत, असत दोनों एक वस्तु में कहे तो एक दूसरे के ज़िद्द, प्रतिकूल, होगया ।

(२) वैध कर्ण—एक चीज़ में दो चीज़ नहीं रहती ।

(३) परस्पराश्रय--जब सत होता है तो असत होता है और असत होताहै तो सतभी होता है यह एक दूसरे पर मुनहसिर है ।

(४) अनवस्था—उसको कहते हैं कि जहां जवाब खतम न हो जैसे पृथ्वी सर्प के फणपर है, सर्प किसके ऊपर है? बैलके सींगपर! बैल किसके ऊपर है ? इत्यादि, किसी परभी न ठहरना यह अनवस्था है।

(५) शंकर--सत में असत और असतमें सत मिलजावे वह शंकर है ।

(६) व्यतिकर—सतसे भिन्न असत होजावे और असत से सत होजावें ।

(७) अप्रतिपत्ति--अर्थात जब सतको जानें तो असत रहजावे, असत को जाने तो सत-रहजावे ।

(८) अभाव—सतके होनेसे असतका अभाव और असत के होने से सत का अभाव ।

(४३६) अगर वस्तु में सत असत दोनों कहे जावें तो यह आठ दूषण आते हैं यह शङ्का बताओ कि ऐसी हालत में भी यह दूषण न आवें ।

उ० एकान्त में दूषण आते हैं अनेकान्त में नहीं ।

इसको स्याद् वाद भी कहते हैं ।

[४३७] पुद्गल आपस में किस ज़रिये से मिलते हैं।

उ० रूखे और चिकने पन से पुद्गल परमाणु आपस में मिलते हैं।

(४३८) स्निग्ध पन क्योंकर ज़ाहिर होता है।

उ० वाह्य और आभ्यन्तरके सवबसे चिकनेपने रूप गुणका ज़ाहिर होना स्निग्ध कहलाता है।

(४३६) रूक्षपन क्योंकर ज़ाहिर होता है।

उ० वाह्य और अभ्यन्तर के सवब से रूखे पन रूप गुण ज़ाहिर होता है।

(४४०) रूखे और चिकने का कितना गुण।गुण होना चाहिये।

उ० जिसमें एक गुण रूखेका और एक गुण चिकने का होगा और वह सवसे छोटा हिस्सा होगा तो वन्ध नहीं होगा रूखे और चिकने मिलनेसे एकतरफ़ अंश ज़्यादा होवे तव वन्ध होता है।

(४४१) बरावर गुण रूखा और चिकना होने में बंध होता है या नहीं

उ० बन्ध नहीं होता है।

(४४२) कितना २ गुण ज़्यादा रूखा और चिकने का होना वन्ध के लिये ज़रूरी है।

उ० एक से दूसरे में दो या दो से ज़्यादा गुण होवें तव वन्ध होता है।

(४४३) वन्ध किस रूप होगा।

उ० बन्ध मे जो ज़्यादा होगा वह पारणामिक होगा और उसीरूप बन्ध होगा।

[४४४] अव मुख़्तसिर तारीफ़ द्रव्य की वतावो।

उ० जिसमें गुण और पर्याय दोनों पाये जावें वह द्रव्य है

(४४५) गुण किस को कहते हैं।

उ० अन्वय—अर्थात् जो चीज़ हर वक्त द्रव्य के साथ रहे यह अयुत सिद्ध है अर्थात शुरूही से द्रव्य में चला आता है जैसे आग में गरमी।

तादात्म्य स्वरूप है, अर्थात एक में एक मिलाहुवा है।

नित्य, अर्थात अपनी सिफ़त को कभी नहीं छोड़ता

नोट—जीव के गुण ज्ञान वग़ैरा है और पुद्गल के गुण रूप वग़ैरा हैं

[४४६] पर्याय किस का कहते हैं

उ० व्यतिरेक—अर्थात सदाकाल एक रूप नहो, समय२ पर पलटती रहे।

ज्ञान वग़ैरा गुण में जो विकार पैदा हो जाता है वह गुण की पर्याय है जैसे खुशी रञ्ज वग़ैरा।

(४४७) गुण और पर्याय में क्या भेद है

उ० गुण तो हरवक्त द्रव्य के साथ रहता है और पर्याय बदलती रहती है।

[४४८] अशुद्ध द्रव्य के लक्षण बतावो।

उ० दूसरे द्रव्य से मिला हुवाहो उसको अशुद्ध द्रव्यकहते हैं

(४४९) शुद्ध द्रव्य के लक्षण बतावो।

उ० ऊपर जो बयान किया है कि शुद्ध द्रव्य का लक्षण सत है वही यहां समझना।

नोट—१ जो द्रव्य ज्ञान में आवे या लफ़्ज़ों से बयान किया जाये वह सब सत्ता मयी है॥

नोट-२ और द्रव्य अद्भुतसे हैं उनका जुदागाना व्यवहार करने को गुण पर्याय सहित लक्षण कहा है चूंकि दूसरे केमिलने से द्रव्य में अशुद्धता आगई इसलिये यह अशुद्ध द्रव्य का लक्षण कहा

[४५०] कालभी द्रव्य है या नहीं।

उ० काल भी द्रव्य है।

[४५१] जो लक्षण और द्रव्यों में बयान किए हैं वह कालमें भी है या नहीं।

उ० वह काल में भी मौजूद हैं।

[४५२) १ ध्रौव्यपना २ उत्पाद ३ व्यय ४ साधारण असाधारण, ५ २ सब गुण कालमें मौजूदहै या नहीं

उ० ध्रौव्य पना कालमें है क्योंकि काल स्वभावसेही अनादि से मौजूद है और स्वकारणहै अर्थात दूसरे के सबब से नहीं।

२ उत्पाद और व्यय दोनों अगुरु लघु गुण की कमी बेशी की निसबत स्वभाव ही से हैं यह स्वकृत कहलाता है--उत्पाद, और व्यय, प्रकृत अर्थात दूसरे के सबब से भी हैं जैसे एक चीज़ एक वक्त में पैदा हुइ और दूसरे वक्त में नाश होगई।

साधारण और असाधारण दोनों गुण मौजूद हैं साधारण गुण तो अचेतन पना, अमूर्तिक पना, सूक्ष्मपना अगुरु लघुपना वगैरह हैं।

असाधारण गुण कालका वर्तना है अर्थात चीज़को नई से पुरानी और पुरानी से नई करना है।

(४५३) कालकी पर्याय क्या है।

उ० षटगुणी हानि, वृद्धि से जो उत्पाद और व्यय है वही कालकी पर्याय है

(४५४) कालको और द्रव्योंके शामिल क्यों न बयान किया

उ० पहलेजो द्रव्य बयान कियेहैं उनके काय हैं इसलिये

वह पांचों अस्तिकाय हैं और काल के काय नहीं है इस लिये यह उनमें शामिल नहीं क्योंकि काल का एक२ प्रदेश भिन्न २ आगम प्रमाण है

(४५५) काल के कितने समय है

उ० काल के अनन्त समय हैं अर्थात व्यवहार में उसके अंश अनन्त हैं

नोट— समय के मजमूए को आवली कहते हैं

(४५६) गुण किस चीज के आश्रय है।

उ० द्रव्य के आश्रय गुण है।

(४५७) गुण में और कोई गुण है या नहीं।

उ० नहीं है।

(४५८) गुण को निर्गुण क्यों कहा।

उ० इस वजह से कि पर्याय भी द्रव्य के आश्रय होती है मगर वह गुण नहीं होती जैसे कि स्कन्ध द्रव्य के आश्रय है मगर वह गुण नहीं है पर्याय है। गुण में गुण नहीं है इसलिये गुण निर्गुण है।

(४५९) जीव का साधारण गुण क्या है।

उ० साधारण गुण अस्तित्व वगैरह है।

(४६०) जीव का असाधारण गुण क्या है।

उ० ज्ञान वगैरह है।

(४६१) पुद्गल का साधारण गुण क्या है।

उ० अचेतनत्व वगैरह है।

(४६२) पुद्गल का असाधारण गुण क्या है।

उ० रूप वगैरह है।

(४६३) जीवकी पर्याय क्या हैं।

उ० देव, मनुष्य, तिर्यंच, नारकी यह पर्याय हैं।

(४६४) और पुद्गलकी पर्याय क्या हैं।

उ० घट वगैरा बनना।

और ठीकरे वगैरा बनना यह पुद्गल की पर्याय हैं।

शब्द, बंध, सौक्ष्म, स्थूल, संस्थान, भेद, तम, छाया, आतप, उद्योत, यह पुद्गल की पर्याय हैं।

(४६५) द्रव्य का परिणाम क्या है।

उ० द्रव्य जिस स्वरूप बन जावे उसका नाम वही भाव है और वही द्रव्यका परिणाम है।

(४६६) परिणाम की कै क़िस्म हैं।

उ० जीव का परिणमन दो प्रकार है, स्वभाव[1] परिणमन, बिभाव[2] परिणमन।

(४६७) धर्म, अधर्म, आकाश, काल के परिणाम का क्या सबूत है॥

उ० आगम प्रमाण हैं।

(४६८) जीव और अजीव के परिणाम प्रत्यक्ष हैं या नहीं।

उ० एक अपेक्षा प्रत्यक्ष हैं।
एक अपेक्षा परोक्ष भी हैं।

* आन्हिक तीसरा आश्रव वर्णन *

(४६९) आश्रव किसको कहते हैं।

उ० शुभाशुभ करमों के आगमन का जो द्वार, सो आश्रव है भावार्थ मन, बचन, काय के योग ही आश्रव हैं

नोट—योग मिस्ल एक दरवाज़े के हैं और उससे कर्म आते हैं इसलिये योग ही आश्रव है। जैसे कि गीला कपडा मिट्टी को ग्रहण करता है या लोहे का गर्म गोला पानी को जज़्ब करता है इसीतरह आत्मा कषाय सहित होकर योगों के ज़रिये से कर्मों को ग्रहण करता है।

(४७०) आश्रव के भेद कै हैं हरएकका नाम और तारीफ़ बतलावो॥

उ० आश्रव के दो भेद हैं।

(१) द्रव्याश्रव

(२) भावाश्रव।

(१) द्रव्यश्रव से मतलब यह है कि जो२ पुद्गल परमाणु कर्म रूप होने के वास्ते तय्यार होवें वहतो द्रव्याश्रव हैं अर्थात वह चीज़ है जो तय्यार हुई।

[२] भावाश्रव--आत्मा के वह परिणाम हैं कि जिनकी वजह से वह पुद्गल परमाणु कर्म रूप होने के वास्ते तय्यार होवें क्योंकि बदून आत्मा के परिणाम के पुद्गल परमाणु कर्म रूप होनेकेवास्ते तय्यार नहींहोते

(४७१) पहिले भावाश्रव होता है या द्रव्याश्रव।

उ० द्रव्याश्रवपूर्वक भावाश्रव है और भावाश्रवपूर्वक द्रव्याश्रव है।

(४७२) योग कौन२ होते हैं॥

उ० तीन योग होते हैं।

काय योग, वचन योग, मन योग।

(४७३) काय योग किसको कहते हैं।

काय के द्वारा आत्मा के प्रदेशों का हलना चलना उसको काय योग कहते हैं।

(४७४) वर्गणा किसको कहते हैं।

उ० वर्ग के समूह को वर्गणा कहते हैं।

(४७५) वचन योग किसको कहते हैं।

उ० वचनद्वार आत्माके प्रदेशोंका हलन चलन सो वचनयोगहै

(४७६) मन योग किसको कहते हैं।

उ० आभ्यन्तर तो नोइन्द्रिय आवरण नामा ज्ञानावर्णी कर्म और अन्तराय कर्म का चयोपशमरूप लब्धि उसके मौजूद होनेसे और बाहर मनोवर्गणा का सहारा होने से मन परणाम के सन्मुख जो आत्मा उसके प्रदेशों का जो चलना मन योगहै। अर्थात मन के द्वारा आत्माके प्रदेशों का हलन चलन हो उसको मनन योग कहते हैं।

(४७७) काययोगके कै भेद हैं उनके नाम बतावो।

उ० सात हैं

१ औदारिक काय योग।
२ औदारिक मिश्र काय योग।
३ वैक्रियक काययोग।
४ वैक्रियक मिश्र काय योग
५ आहारिक काययोग
६ आहारिक मिश्र काययोग
७ कार्माण काय योग।

(४७८) बचनयोगके कै भेद है उनके नाम बतावो।

उ० चार भेद हैं।

१ सत्यबचन योग
२ असत्य बचन योग
३ उभय बचन योग
४ अनुभय बचन योग

(४७९) मनयोग के कै भेद हैं उनके नाम बतावो।

उ० चार हैं।

१ सत्य मन योग।
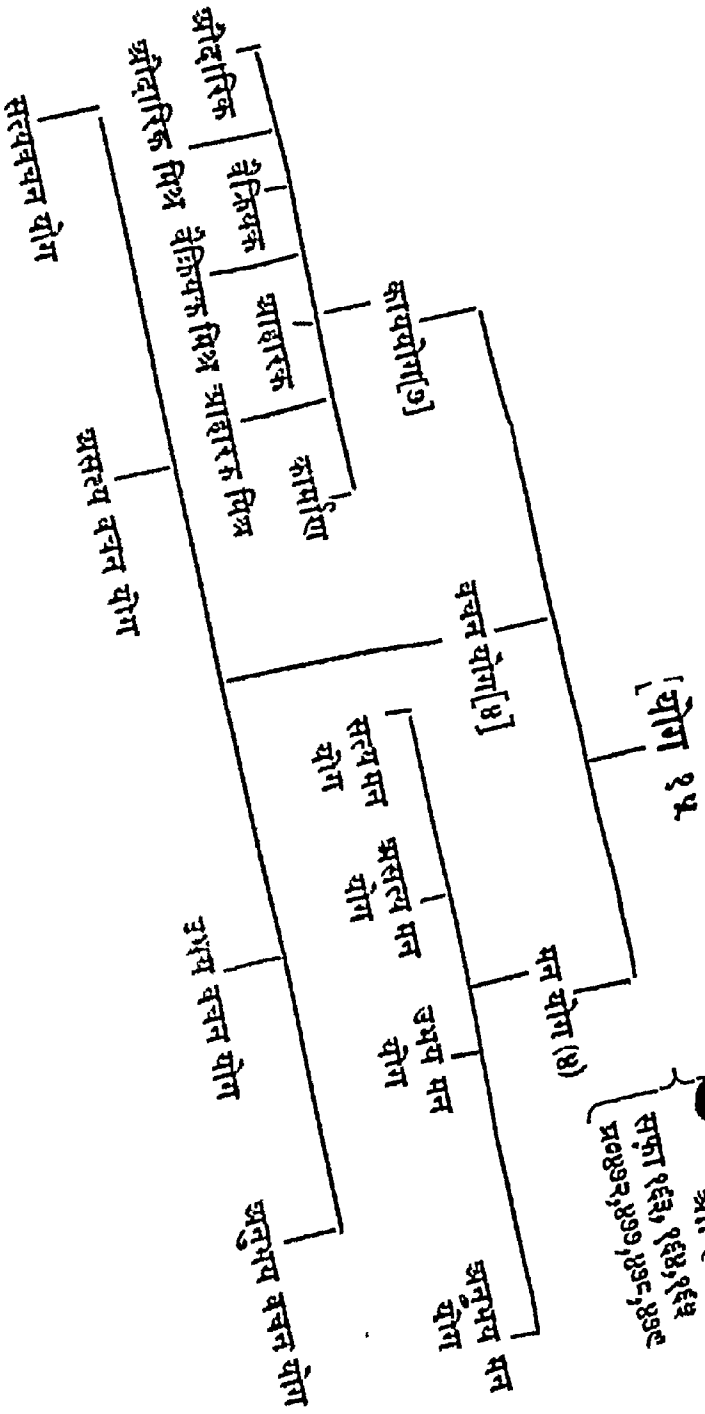
शा नं० ८
लिक् अध्याय ४
आन्हिक ३
सफ़ा १६३, १६४, १६५
प्र० ४७२, ४७७, ४७८, ४७९
योग १५
काययोग [७]
वचन योग [४]
मन योग (४)
औदारिक
वैक्रियक
आहारक
कार्माण
औदारिक मिश्र
वैक्रियक मिश्र
आहारक मिश्र
सत्यवचन योग
असत्य वचन योग
उभय वचन योग
अनुभय वचन योग
सत्य मन योग
असत्य मन योग
उभय मन योग
अनुभय मन योग

- द्रव्याश्रव
- भावाश्रव { मुताल्लिक अध्याय ४ आन्हिक ३ म० ४७०,४८०, ४९४, ४९५ सफा १६३, १६५, १६६

(आ) आश्रव के भेद फलकी अपेक्षा (२)

- पुन्याश्रव
- पापाश्रव

(इ) आश्रव के भेद स्वामीकी अपेक्षा (२)

- साम्परायिक (कारण) [४]
  - ५ इन्द्रि
    - स्पर्श
    - रसना
    - नासिका
    - चक्षु
    - श्रोत्रि
  - ४ कषाय
    - क्रोध
    - मान
    - माया
    - लोभ
  - ५ अविरत
    - हिंसा
    - अनृत
    - स्तेय
    - अब्रह्म
    - परिग्रह
  - २५ क्रिया
    - सम्यक्त
    - प्रयोग
    - ईर्य्यापथ
    - काय
    - पारितापिकी
    - दर्श
    - स्पर्शन
    - समतानुतपातन
    - स्वहस्त
    - विदारण
    - अनाकांक्ष
    - पारग्राहक
    - माया
    - अप्रत्याख्यान
    - मिथ्यात्व, समादान, प्राद्रोषक, अधिकरण, प्राणानिपातिकी, प्रात्यायकी, अनाभोग, निसर्ग, आज्ञाव्यापादकी, प्रारम्भ, मिथ्यादर्शन,
- ईर्यापथिक

२ असत्य मन योग।

३ उभय मननयोग

४ अनुभय मननयोग।

(४८०) आश्रव नतीजेकी अपेक्षा कितने प्रकार का है।

उ० दो प्रकार का है

१ पुण्याश्रव।

२ पापाश्राश्रव

[४८१] पुण्यका आश्रव कौन है।

उ० शुभ योग पुण्य का आश्रव करता है।

(४८२) पाप का आश्रव कौन है।

उ० अशुभ योग पाप का आश्रव करता है।

(४८३) अशुभ काय योग कौन हैं।

उ० अर्थात काय के द्वारा अशुभ चेष्टा करना सो अशुभ काय योग है जैसे उपरोक्त प्राणों का घात, बिन दी हुई चीज़ को लेना, मैथुन वग़ैरह।

[४८४] अशुभ वचन योग कौन हैं॥

उ० झूंठ बोलना और अशुभ वचन कहना इत्यादि यह अशुभ वचन योग हैं।

(४८५) अशुभ मन योग कौन है॥

उ० परघात का ख़याल करना और हसद करना इत्यादि यह अशुभ मन योग हैं।

४८६) शुभ योग कौन कौन हैं॥

उ० मन वचन काय के योगों की शुभ कार्य में प्रवृत्ति सो शुभ योग हैं

[४८७] शुभ किसको कहते हैं॥

उ० हिंसादि पापों का त्याग, शील संतोष रूप सदा काल परिणाम रखना, दान, तप, पूजा, उपवासादि में परिणाम सो शुभ है।

(४८८) अशुभ किसको कहते हैं॥

उ० उपरोक्त शुभ परिणाम से विपरीत परिणाम, सो अशुभ है

[४८९] आश्रव के कै भेद हैं।

उ० और आश्रव के दो भेद हैं।

१ साम्परायिक–कषाय सहित परिणाम

२ ईर्यापथिक—कषाय रहित परिणाम

(४९०) साम्परायिक किस को कहते है

उ० जो संसार का बढ़ाने वाला हो।

(४९१) ईर्यापथिक किसको कहते है॥

उ० योगों की गति का अर्थात् चलने का नाम ईर्यापथिक अर्थात् जो एक समय में होवे दूसरे में नाश होजावे

(४९२) साम्परायिक आश्रव किस जीवके होता है।

उ० कषाय सहित जीव के।

(४९३) ईर्यापथिक आश्रव किस जीवके होता है।

उ० कषाय रहित जीव के होता है।

(४९४) साम्परायिक कर्म के आश्रव के कितने दरवाजे है।

उ० ३९ हैं।

इन्द्रिय पांच, कषाय ४, अविरत ५, क्रिया २५, इस तरह कुल ३९ हुवे।

(४९५) २५ क्रिया के नाम और हरएक क्रिया की तारीफ़ करो।

उ० १ सम्यक्त क्रिया–अर्थात् देव, गुरु, शास्त्र, की पूजा आदि क्रिया करना जिससे सम्यक्त बढ़े।

२ मिथ्यात्व क्रिया—कुदेव वगैरा का पूजना।

३ प्रयोग क्रिया--फ़िज़ूल चलना फिरना वगैरह।

४ समादान क्रिया-संयमीपुरुषका असंयमकेसन्मुखहोना

५ ईर्य्यापथ--ज़मीनको देख कर चलना।

६ प्रादोशक क्रिया--क्रोध वगैरहसे किसी दूसरेको दोष लगा देना।

७ काय क्रिया—चोरी वगैरह की कोशिश करना।

८ अधिकरण—हिंसाके औज़ार वगैरा रखना।

९ परितापिकी-ऐसा काम करना जिससे अपनेको या दूसरेको तकलीफ़ हो।

१० प्राणाति पातिकी--आयु, इन्द्रिय, बल, सासोश्वास को तकलीफ़ पहुंचाना या इनको जुदा करना।

११ दर्श क्रिया—प्रमाद की वजह से राग भाव से खूब सूरत चीज़को देखनेकी ख़्वाहिश करना।

१२ स्पर्शन क्रिया--प्रमाद की वजह से राग भाव से खूब-सूरत चीज़ को छूनेकी ख़्वाहिश करना।

१३ प्रात्यायकी क्रिया--विषय भोगोंके वास्ते नये नये सबब पैदा करना।

१४ समतानुपातन क्रिया--जिस जगह मर्द या औरत या जानवर वगैरा बैठतेहों वहांपरपेशाब वगैराडालना

१५ अनाभोग क्रिया--बिना सफ़ाई किये व बिना देखे ज़मीनपर बैठना तथा सोना।

१६ स्वहस्त क्रिया—दूसरे के करनेका काम ख़ुद करना जैसे कोई शख़्स कपड़े धोवे जिसका काम कपड़े धोने का नहीं है।

१७ निसर्गक्रिया—पापके कामको समझना अर्थात् दूसरे के ऐब या ख़ताको ज़ाहिर करना।

१८ विदारणक्रिया—पराकृत पापक्रियाताको प्रकाश करना

१९ आज्ञा व्यापारकी क्रिया—सर्वज्ञ जो क्रिया ज़रूरी करने लायक़ बतलाते हैं वह अपने से पाली नहीं जाती तब दूसरे तरीके से बयान करना।

२० अनाकांक्ष क्रिया—शास्त्रोंमें जो तर्गीका बयान कियाहै उसको मूर्खतासे या आलससे विनय न करना

२१ प्रारम्भ क्रिया—किसीको छेदन भेदन करना या ऐसा करते हुये देखकर खुश होना।

२२ पारिग्राहक क्रिया—परिग्रहकी रक्षा केवास्ते परिवर्तना

२३ मायाक्रिया—ज्ञान दर्शन चारित्रमें दग़ाबाज़ी रूप रहना

२४ मिथ्यादर्शन क्रिया—कोई मिथ्या दृष्टी किसी मिथ्यात्व के काममें लगा होवे उसकी तारीफ़ करके उसको मज़बूत करना।

२५ अप्रत्याख्यान क्रिया—संजमके नाश करनेवाले कर्म के ज़ोर से कुछ त्याग न करना।

(४९६) यह भेद किस वजह से है।

उ० यह कुल क्रिया इन्द्रियों के ज़रिये से होती हैं और कारज औरकारणकी वजहसे उसमें भेद है यह साम्परायिक आश्रवका दरवाज़ह हैं इन्द्रिय कषाय अविरत यह कारण हैं और क्रिया उनकी वजहसे होती हैं।

(४९७) इन्द्रिय कषाय अव्रत वग़ैरा खुदही क्रियारूप हैं इनको कारण क्यों कहा

उ० बाज़ी इन्द्रियां नाम, स्थापना, निक्षेप वालीही होती हैं वह क्रियास्वभाव वाली नहीं हैं और वह आश्रव

नकशा नं० ३
मुताल्लिक अध्याय ३
अन्हिक ३ सफा ७०-७२
प्र० १६८-१७१
श्रावक के १२ व्रत
५ अणुव्रत
३ गुणव्रत
शिक्षाव्रत ४
अहिंसा
सत्य
अचौर्य
परिग्रह प्रमाण
ब्रह्मचर्य
दिग्व्रत
देशव्रत
अनर्थ दण्ड व्रत
पापोपदेश
हिंसादान
अपध्यान
दुःश्रुत
प्रमादचर्य
सामायक
भोगोपभोग प्रमाण
अतिथिसम्विभाग
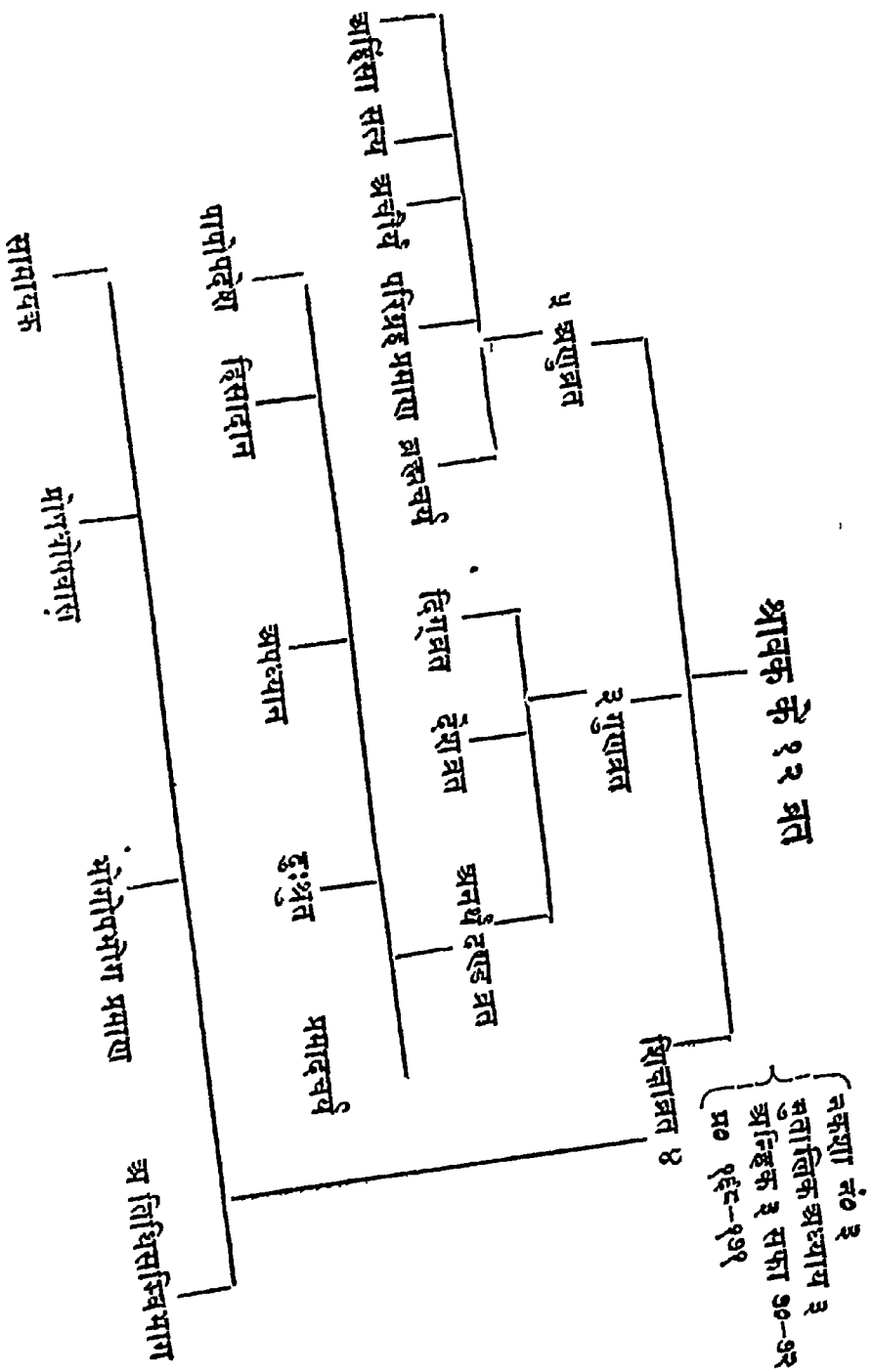
का सबब है मसलन देव, गुरु, शास्त्र की भक्ति करने से आश्रव होता है पस देव, गुरु, वग़ैरा की इन्द्रियां नाम, स्थापना, द्रव्य, रूप हैं--भाव रूप नहीं हैं ।

[४९८] आश्रव में किस२ चीज़ से फ़र्क़ होता है ॥

उ० १ तीव्र--ज़्यादा अर्थात अन्दरूनी और बेरूनी सबब से जो बहुत ज़्यादा तीव्र परणाम ज़ाहिर हों अर्थात गुस्सा वग़ैरा ज़्यादा होने से होता है ।

२ मंद-- अर्थात कम, यह तीव्र का उलटा है.

३ ज्ञात भाव--अर्थात जाना हुवा ।

४ अज्ञात भाव--बिना जाना हुवा ।

५ अधिकरण--जिस में आश्रव रहता है और उस को आधार और द्रव्य भी कहते हैं

६ वीर्य--ताक़त अर्थात द्रव्य की असली ताक़त इनके फ़र्क़ से आश्रव में भी फ़र्क़ होता है ।

(४९९) जीवों के भाव की तादाद क्या है ॥

उ० कषायों के स्थान असंख्यात लोक प्रमाण हैं इसलिये, जीवों के भाव भी बहुत हैं ।

(५००) आश्रव का अधिकरण क्या है ॥

उ० जीवद्रव्य, और अजीव द्रव्य ।

[५०१] जीव अधिकरण के कितने भेद हैं सब तफ़सीलवार बतलाओ ॥

उ० १०८ भेद हैं ।

१. समरम्भ--प्रमादी जीवके हिंसा वग़ैराकी तजवीज़ के लिये कोशिश और तदबीर करने के परिणाम जिसको इरादा भी कहते हैं ॥

२ समारम्भ--हिंसाके कारण का अभ्यास करना या उसका सामान इकट्ठा करना जिसको तदबीर भी कहते हैं।

३ आरम्भ—हिंसा वग़ैरा के काम का शुरू करना।

इन तीनोंको तीन योग अर्थात मन, बचन, काय से ज़रब दिया तौ नौ हुये।

इन नौ ९ को कृत, कारित, अनुमोदना, अर्थात आप करना, दूसरेसे कराना, और दूसरेके कार्यको अनुमोदन करना इन तीनों से ज़रब दिया २७ होगये। फिर इन २७ को चार कषाय क्रोध, मान, माया, लोभ से ज़रब दिया १०८ होगये।

(५०२) अजीव अधिकरण के भेद और तारीफ़ बतलावो।

उ० चार भेद हैं।

१ निर्वर्तना--किसी चीज़ को बनवाया जावे।

२ निक्षेप—किसी चीज़को क़ायम करना।

३ संयोग--दो चीज़ोंको मिलाना।

४ निसर्ग--काम में लाना।

(१) निर्वर्तना के दो भेद।

(अ) मूल गुण निर्वर्तना--जिसके ५ भेद हैं।

[क] शरीर

[ख] वचन

[ग] मन

[घ] उस्वास

[ङ] निश्वास

इनको दूसरे तरीक़े से काममें लाना

(आ) उत्तर गुणनिर्वर्तना-जैसे लकड़ी वगैरहकी मूर्ती बनाना।

(२) निक्षेप--के चार भेद हैं॥]

(क) अप्रति वेक्षित निक्षेपाधि करण-बिदून देखेहुये चीज़को रखना।

(ख) दुः परिमर्षण निक्षेपाधि करण-ज़मीनपर बिना झाडू दिये हुये चीज़ रखना।

(ग) सहसा निक्षेपाधि करण-किसी चीज़को जल्दी रखना या फेंक देना॥

(घ) अनाभोग निक्षेपाधिकरण-किसी चीज़को बेमौके रखना।

(३) संयोग-- के दो भेद हैं।

(क) भुक्तपान संयोगाधि करण-खाने पीनेकी चीज़को मिला देना।

(ख) उपकरण संयोगाधि करण-जिन चीज़ों से काम किया जाय उनका मिला देना।

(४) निसर्ग के ३ भेद हैं।

(क) काय निसर्गाधिकरण।

(ख) वाक् निसर्गाधिकरण।

(ग) मन निसर्गाधिकरण।

(५०३) ज्ञानावर्णी और दर्शना वर्णी कर्म के आश्रव के सबब क्यार हैं हरएक का नाम और उसकी तारीफ़ बयान करो।

उ० १ तत्प्रदोष-मोक्ष के कारण तत्व ज्ञान का कोई शख़्स विस्तार से बयान कररहा हो सुननेवाला सुन कर चुप हो जावे और तारीफ़ न करे और बयान करनेवाले की ईर्षा से उस में ख़ुश न होवे।

२ निन्हव-जिस चीज़ का ज्ञान किसी शख़्स को होवे

किसी वजह से वह अपने को नावाक़िफ़ ज़ाहिर करे या उलटा बयान करे।

३ मात्सर्य्य—कोई शख़्स शास्त्र वग़ैरा का पूरा ज्ञानी होवे और दूसरे को सिखलासके मगर सिखलावे नहीं

४ अन्तराय—ज्ञान के हासिल न होने का सबब पैदाकरदे

५ आसादना—दूसरे को उपदेश देने या ज्ञान सिखलाने से मना करे

६ उपघात—दूसरा शख़स जो सच्चा बयान कर रहाहो उसमें ख़्वाह मख़्वाह ग़लत दूषण लगा देना।

नोट—यह बातें ऊपर की ज्ञानके मुतअल्लिक़ बयान की गई है इसीतरह यह छ: बातें दर्शन के मुतअल्लिक़ करनी चाहिये अर्थात दर्शनावर्णी कर्म का भी आश्रव करती हैं।

[५०४] उनके सिवाय और कौन सबब ज्ञानावर्णी, दर्शनावर्णी कर्म के आश्रव का है।

उ० १ आचार्य, उपाध्याय से ख़िलाफ़ रहना।

२ बेवक़्त पढ़ना।

३ श्रद्धान न करना।

४ पढ़ने में आलस्य करना।

५ अनादर से शास्त्र के अर्थ को सुनना।

६ मोक्ष मार्ग का रोकना।

७ बहुत पढ़ा हुवा होकर ग़रूर करना।

८ झूठा उपदेश करना।

९ बहुत पढ़े हुवे की बे इज़्ज़ती करना।

१० खोटे मत के तरफ़दार हो कर उसमें अपने को पण्डित ज़ाहिर करना और अपने मत के पक्ष को छोड़ देना।

११ उत्सूत्रभाष--शास्त्र के बर खिलाफ़ बयान करना ।

१२ ज्ञान के सहारे में दुनयावी काम को साधना ।

१३ शास्त्र वगैरा बेचना है।

१४ असम्बन्ध प्रलाप--बेफ़ायदा ज़्यादा बोलना ।

(४७५) दर्शन के मात्सर्य क्या २ है

उ० १ दूसरे को पुस्तक न दिखलावे ।

२ दूसरा देखताहो उसमें खराबी डाल देवे ।

३ किसी की आंख बिगाड़ दे या बिगाड़ना चाहे ।

४ अपनी खूबसूरत नज़र का ग़रूर करे ।

५ आंखों से ताड़कर देखे ।

६ दिन को सोवे या आलस्य रूप रहे ।

७ नास्तिक मत कबूल करे ।

८ सम्यग्दृष्टी को दोष लगावे।

९ झूंठे तीर्थ की तारीफ़ करे ।

१० प्राणियों का घात करे ।

११ यति लोगों को देख कर नफ़रत करे।

(५०६ आसाता वेदनी कर्म के आश्रव का सबब कौन २ है ॥

उ० १ दुःख--तकलीफ़ पाना।

२ शोक--ग़म।

३ ताप--दिलका आज़ुर्दा होना।

४ आक्रन्दन--विलाप कर आंसुवों के साथ रोना।

५ वध--मार पीट वगैरा।

६ परिदेवन--ऐसा रोना कि जिससे दूसरे को दया आजावे

नोट-१ यह बातें अपने करे या औरों के करे या दोनों के करे ॥

नोट २-केश लोंच उपवास वग़ैरह इस वास्ते दुख में शामिल नहीं हैं कि वह तपमें दाखिल है और शास्त्र के क़ायदे से बिना संक्लेश परिणाम के करते हैं और औरों से कराते हैं और असाता वेदनी के आश्रव का कारण वह बाते हैं कि जो अन्दरूनी गुस्से वग़ैरा के परिणाम की वजह से दुख देनेवाली होती है।

(५१७) सातावेदनी आश्रवके कौन २ कारण हैं उनके नाम और तारीफ़ बतलावो।

उ० १ भूत वृत्यनुकंप-अर्थात् जो प्राणी कर्मके उदयसे जो एक गतिसे दूसरी गतिमें भ्रमण करते हैं उनमें दया रूप परिणामों का रखना।

२ दान-दूसरे के फ़ायदे के वास्ते अपना रुपया वग़ैरह देना।

३ सराग संयमादियोग-सराग संयमादि में भले प्रकार चित्त लगाना।

नोट—संसार के कारण जो द्रव्य कर्म और भाव कर्म उनके नाशकरने की जिनके चित्तमें इच्छा होवे उनको सराग कहते हैं-प्राणी या इन्द्रियोंमें अशुभ प्रवृत्ति का जो त्याग है वह संयम है-आदि में संयमासंयम अकाम निर्जरा बाल तप भी शामिल हैं इनकी तारीफ़ दूसरी जगह आचुकी है और आजायगी।

४ शांति-गुस्सा वग़ैरह न हो।

५ शौच शुद्धता अर्थात जिसमें लोभ न होवे।

नोट—लोभके भेद यह हैं। जीनेका लोभ, तन्दुरुस्त रहनेका लोभ, इन्द्रिय क़ायम रखनेका लोभ, सामान वग़ैरा का लोभ, अपना द्रव्य देना दूसरे का लेना, अमानतको छिपाना, और ऐसी बहुतसी बातें हैं इनका न करना शौच है॥

६ अर्हंत देवका पूजन वग़ैरा।

(५०८) दर्शन मोहनी आश्रव का कौन २ कारण है।

१ केवली

२ श्रुत अर्थात शास्त्र

३ संघ अर्थात मुनि, अर्जिका, श्रावक, श्राविका,

४ धर्म

५ देव

इनका अवर्ण वाद करना अर्थात दूषण लगाना दर्शन मोहनी कर्म के आश्रव का कारण है।

(५०९) हरएक का आवर्णवाद क्या २ है तफ़सीलवार बयान करो।

उ० १ केवली

और जीव तो इन्द्रियों से जानते हैं और एक साथ नहीं जानते बल्कि आगे पीछे जानते हैं या सामने कोई पदार्थ आड़ा आजावे तो नहीं जानते हैं मगर केवली के एसी कोई रोक नहीं है वह कुल वस्तु को एकही कालमें बिलाइन्द्रियों की मदद के जानते हैं उन को केवली कहते हैं-उनकी निस्बत यह कहना कि कवलाहार करते हैं बिदून ग्रास खाने के क्योंकर ज़िंदा रहसक्ते हैं कमंडल तूंबी वग़ैरा रखते हैं उनको ज्ञान घटता बढ़ता रहता है और इसीतरह से कहना केवली का अवर्ण वाद है

२ शास्त्र-केवलीका बयान किया हुवा बुद्धिकर अतिशय ऋद्धिकर उस बयान से जो गणधर ने ग्रन्थ रचा उसको शास्त्र कहते हैं यह कहना कि इस शास्त्र में शराब वग़ैराका उपदेशहै यह शास्त्र काअवर्णबाद है

३. संघ--मुनियों को अघोरी निर्लज्ज यह कहना संघ का अवर्ण वाद है।

४ धर्म--केवली ने जो उपदेश किया होवे वह धर्म है यह कहना कि इसमें गुण नहीं है इस के सेवने वाले असुर होंगे यह धर्म का अवर्ण वाद है।

५. देव--देवोंको मांस भक्षी कहना यह देवावर्णवाद है इन में दर्शनमोहनी कर्मका आश्रव होता है जिस का फल मिथ्या श्रद्धान होता है ऐसीही हज़ारों बातें हरएक में समझ लेना

(५१०) चारित्र मोहनी कर्म के आश्रव का कौन २ कारण है हरएक का नाम और तारीफ़ तफ़सीलवार बयान करो

उ० कषाय के उदय से तीव्र परिणाम होवें उससे चारित्र मोहनी कर्म का आश्रव होता है जैसे कि अपने और दूसरे के कषाय पैदा करना

तपस्वी कों या उनके व्रत को दूषण लगाना और व्रत धारणा जिसमें संक्लेश परिणाम हो।

[५११] नौ कषाय के आश्रव का कारण बयान करो

उ० १ हास्य--सद्धर्म की हांसी करना, ग़रीब और मजबूर आदमियों की हंसी करना बेफ़ायदा ज़्यादा बकना या हंसीकी आदत रखना

२ रति--बहुत क़िस्म के खेल करने के लिये आमादा रहे, व्रत और शीलमें रग़बत न होवे।

३ अरति--दूसरे को नफ़रत पैदा करना।
दूसरे के रति का नाश करना।

पापी पनकी आदत रखना ।

पापी लोगों की सोहबत रखना।

४ शोक-आपके शोक पैदा करना या दूसरे के रञ्ज पैदा करने में खुशी मानना।

५ भय--अपने परिणामों में खौफ़ रखना दूसरे के खौफ़ पैदा करना ।

६ जुगुप्स--अच्छी चाल चलने से नफ़रत रखना या उसकी बुराई करना ।

दूसरे की बुराई करने की आदत रखना ।

७ स्त्री--झूठ बोलने की आदत रखना दूसरे के ऐब तलाश करने की इच्छा रखना ज़्यादा काम खेल और हंसी वगैरा की इच्छा रखना।

दूसरे के कुशील में तय्यार रहना ।

८ पुरुष--थोड़े क्रोध वगैरा कषाय में मशग़ूल रहना. अपनी ही स्त्री में सबर रखना ।

६ नपुंसक--ज़्यादा कषाय के परिणाम, इन्सान की इन्द्रिय वगैरा काटना, दूसरेकी स्त्री की ख्वाहिश में लवलीन रहना-यह नौ कषाय हैं और हरेक कषाय के आश्रव के कारण बयान किये गये हैं।

(५१२) नरक आयु के आश्रव का कारण कौन२ हैं उनके नाम और तारीफ़ बताओ।

उ० १ बहुत आरम्भ और परिग्रह से नारकी की आयु का आश्रव होताहै

(नोट) बहुतआरम्भ-प्राणियोको तकलीफ़का कारणहो ऐसा व्यवहार करना.

२ परिग्रह-वस्तु में ममत्त्व भाव रखना अर्थात उसको अपनी समझना।

और यह बातें भी नारकी आयुका अश्रवका कारण है

हिंसा वगैरा ५ पाप में बुरे परिणामसे मसरूफ़ रहना

दूसरे का माल लेना।

विषय भोगों की ज़्यादा ख़्वाहिश करना

ऐसे ध्यानमें मरना जो कृष्ण लेश्यासे रौद्र ध्यान होवे

बहुत ज़ियादा मान कषाय रखना।

ऐसा गुस्सा रखना जो पत्थर की तरह कभी न हटे।

ज़ियादा लोभ।

ऐसे परिणाम जिसमें दया नहो।

दूसरे को तकलीफ़ देने के परिणाम।

वध, बन्धन की ख़्वाहिश।

कुलजीवों के मारने का परिणाम।

असत्य बचन।

कुशील।

चोरी के परिणाम

दूसरे का नुक़सान करना।

देव, गुरु, शास्त्रके ख़िलाफ़ अपना बनाया हुवा मज़हब जारी करना।

(५१३) तिर्यंचआयु के आश्रवका कौन २ कारण है उनके नाम और तारीफ़ बतलावो।

उ० माया—अर्थात खोटे परिणामों से तिर्यंच योनि का आश्रव होता है।

नोट-चारित्र मोहनी कर्म के विशेष उदय से आत्माके जो खोटा भाव ज़ाहिर हुवा उसको माया कहते हैं और इसीको निकृत भी कहते हैं।

और इसमें यह बातें भी शामिल हैं। मिथ्यात्व सहित धर्मका उपदेश देना, शील रहित होना, दूसरेको ठगने के लिये मोहब्बत-नील, कपोत, लेश्या, आर्त्त, ध्यान से मरणा।

(५१४) मनुष्य आयु के आश्रव के कारण कौन २ हैं उनके नाम और तारीफ़ बतलाओ।

उ० थोड़ा आरम्भ और थोड़ी परिग्रह मनुष्य आयु के आश्रव का कारण है।

इसमें यह बातें भी शामिल हैं।

विनय रूप आदत होना।

नर्म परिणाम होवें।

मन, वचन, काय में दग़ाबाज़ी न होवे।

सीधा व्यवहार करे

थोड़ी कषाय हो।

मरने समय संक्लेश परिणाम न होवे।

खुलासा यह है कि ऐसे परिणाम होवें कि जिन में पाप और पुण्य औसत अर्थात बराबर दर्जे के होवें।

नोट—जिस जीवके अपनी ज़ाती आदतही से परिणाम में नरमी होवे वहभी मनुष्य आयुके आश्रवका कारण है।

नोट—स्वभाव उसको कहते हैं जो बग़ैर किसी और सबब के हो।

(५१५) कौन २ परिणाम ऐसे हैं जो चारों गति के आयु के आश्रव के कारण हैं

उ० १२ व्रत श्रावक के जिसके न होवें वह चारों गति के आश्रव का कारण है।

१२ व्रत यह हैं।

सात उत्तर गुण अर्थात तीन गुण व्रत और ४ शिक्षा व्रत जिसको सप्तशील भी कहते हैं और ५ मूल गुण

(५१६) देव आयुके आश्रवका कारण कौन २ है हरएक का नाम और तारीफ़ तफ़सीलवार बतावो।

उ० १ सराग संयम

२ संयमासंयम

३ अकाम निर्जरा-अर्थात कोई शख़्श रोक में होवे और उसको भूख प्यास भुगतना पड़े और ज़मीन पर सोना पड़े ब्रह्मचर्य भी सेवना पड़े मतलब यह है दूसरेकी दीहुई तकलीफ़ को मजबूर होकर सहना अकाम निर्जरा है।

४ बाल तप--मिथ्यात्व सहित बग़ैर उपाय के काय क्लेश होवे और ज़्यादह तर उस में फ़रेब न होवे उसको बाल तप कहते हैं।

(५१७) और कौन २ कारण देवायु के आश्रव के हैं।

उ० ऐसे दोस्तों से मिलना जिसमें अपना भला समझे देव, गुरु, शास्त्र जो कल्याण होनेके ठिकाने हैं उनकी सेवा करे।

और अच्छे धर्म का सुनना।

धर्मकी और गुरुओंकी बड़ाई दिखलाना।

निर्दोष उपवास करना।

जीव, अजीव पदार्थों को जाने विना अज्ञान रूप संयम पाले।

यह १२ वें स्वर्ग तक पैदा होते हैं।

पहाड़से गिरें या दरख़्तसे गिरें।

उपवास करैं।

आगमें जलैं।

या पानी में डूवे

या ज़हर खावैं

मगर दिलमें दया रक्खें।

और इसक़दर गुस्सा आवे जो पानीकी लकीरकी तरह जल्द मिटजावे।

इनसे व्यन्तर आयु का आश्रव होता है।

(५१८) सम्यक्त्व किस क़िस्म के देवकी आयुके आश्रव का कारण है।

उ० सम्यक्त्व कल्पवासी देव के आश्रवका कारण है भवन वासी का नहीं है।

(५१९) अशुभ नाम कर्म के आश्रव के कारण कौन २ हैं।

उ० योगों का टेढ़ापन--अर्थात मन, वचन, काय में ज़ाहिर में कुछ औरहो और दिलमें कुछ और हो और किसी दूसरे को उलटे तरीक़े पर उपदेश देना, यह अशुभ नाम कर्म के आश्रव के करण हैं।

(५२०, अशुभ नाम कर्मके आश्रव के कारण और क्या २ हैं।

उ० मिथ्या दर्शन--अर्थात अतत्व श्रद्धान।

अदेख शकका आदेषक भाव—अर्थात दूसरे को देखकर
हसद करना।
चुग़ली खाना।
मन क़ायम न रहना।
कम तोलना ज़्यादा लेना।
दूसरे की बुराई और अपनी तारीफ़
खोटा माल बना कर ठगना।
अच्छा दिखलाकर बुरा देना।
झूठी गवाही देना।
दूसरे के आंगोपांग बिगाड़देना।
वर्ण, रस, गन्ध, स्पर्श को दूसरा तरह पर बदल देना
पिंजरा वग़ैरा बनाना।
एक में दूसरी चीज़ मिलाकर बेचना जैसे दूधमें पीना।
झूंट बोलना
चोरी करना
ज़्यादा आरम्भ करना।
दूसरे के ठगने को अच्छा लिबास रखना।
ग़रूर करना।
सख़्त बात कहना।
बकबाद करना।
दूसरे के बस करने को अपनी तरक्क़ी दिखाना।
दूसरे को खेल में लगाना।
उमदा कपड़े पहन कर मन्दिर का सामान चुराना।
दूसरे को फ़जूल फ़िकर में डालना।

दूसरे की हंसी करना ।

ईंटों के पज़ावे लगाना।

जंगल में आग लगवाना।

आग का ज़्यादा काम करना

प्रतिमा, मन्दिर, वन बाग़ बाग़ीचे वग़ैरा का नाश करना

तीव्र क्रोध, मान, माया लोभ में दाख़िल होना

पाप के ज़रिये से रोज़गार करना।

[५२१] शुभनाम कर्म के आश्रव के कारण और क्या २ हैं

उ० इनसे उलटा शुभ नाम कर्म के आश्रव का कारण है। अर्थात् काय, मन, वचन, का सीधा रखना, और सीधे रास्ते पर औरों का लगाना।

धर्मात्मा पुरुषों का दर्शन करना, उनका आदर सत्कार करना।

अपना दोष मानना।

संसार से ख़ौफ़ करना।

ग़फ़लत का दूर करना।

(५२२) तीर्थंकर की आयु के आश्रव के कारण कौन २ हैं

उ० नीचे की लिखी हुई १६ भावना तीर्थंकर की आयु के आश्रव का कारण हैं।

(१) दर्शन विशुद्धि--अर्थात सम्यग्दर्शन की निर्मलता और यह सम्यग्दर्शन की निर्मलता उस वक्त होती है जबकि उसमें २५ दूषण न आने पावें।

२५ दूषण यह हैं:—

आठ अंग सम्यक्त के

(अ) निःशंकितत्व अर्थात जिनमत में शंका न करना

(आ) निःकांक्षितत्व--किसी संसारी चीज़ की ख्वाहिश न करना और दूसरे मज़हब में कोई चिमित्कार देख कर उस मत की ख्वाहिश न करना।

(इ) निर्विचिकित्सा--मुनि का शरीर मैला देख कर नफ़रत न करे और यह समझे कि रत्नत्रय के धारण करने से यह पवित्र है और ऐसा ख़याल न करे कि अरिहन्त के धर्म में फ़लानी बात सख़्ती से कही गई जो यह न होता तो मत अच्छा और सच्चा है।

(ई) अमूढ़ दृष्टी--दूसरे मत जो खोटे होवें उनको विचार कर इमतहान करके वे अक़्ली से सच्चा न समझे बल्कि उनको खोटाही समझे।

(उ) उपगूहन या उपबृंहण--उत्तम क्षमा वग़ैरा से अपने आत्मा के धर्मकी तरक़्क़ी करना; साधर्मी जीव को किसी धर्म के उदय से कोई अवगुण लगाहोतो उपदेश करके उसको दूर करना या उसको ऐसी तरह से छिपाना कि जिसमें धर्म की बेइज़्ज़ती नहो

(ऊ) स्थिती करण--अर्थात किसी वजहसे धर्म से छूटने का कारण पैदा होजावे तो अपने या दूसरे साधु को धर्म में दृढ़ करदेना।

(ऋ) वात्सल्य--धर्म में या धर्मात्मा जीवों में दृढ़ और सच्ची मुहब्बत होवे।

(ऋ) प्रभावना-दर्शन, ज्ञान, चारित्र से अपनी आत्मा को ख़ूबसूरत बनाना या उनको तरक़ी देना या बड़े दान, तप, जिन पूजा, प्रतिष्ठा, विद्या, मन्त्र अतिशय, चमत्कार करके मोक्ष मार्ग का ज़ाहिर करना जिससे पर मत वाले समझें कि यह धर्म सच्चा है।
इनसे प्रतिकूल आठ दोष हैं-और आठ मद यह हैं।
[अ] ज्ञानका मद।
[आ] पूजा अर्थात इज्ज़त का मद।
[इ] कुल का मद।
[ई] जाति का मद।
[उ] शरीर का मद।
[ऊ] बल का मद।
[ऋ] ऋद्धि का मद।
[ॠ] तप का मद।
छह अनायत्न-अनायतन उसको कहते हैं जो धर्मका स्थान न होवे।
(अ) कुगुरु।
(आ) कुदेव।
(इ) कुधर्म।
(ई) कुगुरु का स्थान।
(उ) कुदेवका स्थान।
(ऊ) कुधर्म कास्थान।

तीन मूढ़ता।

[अ] देव मढ़ता।

[आ] लोक मूढ़ता ।

[इ] गुरु मूढ़ता ।

यह पच्चीस दोष न होवें तब सम्यक्त्व निर्मल होताहै

२ बिनय सम्पन्नता--अर्थात् सम्यग्ज्ञान वगैरा जो मोक्ष के साधन हैं और उनके साधनेवाले जो गुरु हैं उनका मुनासिब तरीक़े से अदब करना या कषायकी निबृति।

३ शीलबृतेष्वनतिचार—अर्थात ३ गुणब्रत, ४ शिक्षा वृत, ५ मूल गुण उनको अपने दर्जे के मुवाफ़िक़ मन, बचन, काय से निर्दोष पालना।

४ आभीक्ष्ण ज्ञानोपयोग—अर्थात हमेशा ज्ञान में उपयोग रखना सम्यग्ज्ञान के भेद प्रत्यक्ष, परोक्ष, प्रमाण जिनसे अज्ञान का अभाव होता है और हेय का त्याग उपादेयका ग्रहणपना या वीतरागता ऐसे ज्ञानकी भावना में उपयोग रखना ।

नोट—जो चीज़ छोड़नेके क़ाबिल हो उसको हेय कहते हैं, जो चीज़ ग्रहण करने के काबिलहो उसको उपादेय कहते हैं ।

५ संबेग—संसार में शरीरके मुतअल्लिक़ हज़ारों क़िस्म की तकलीफ़ें हैं जैसे कि चाहती चीज़ का जाती रहना और बेचाहती का मिलना ऐसे ख़ौफ़नाक संसार से डरना ।

६ शक्तितस्त्याग—अपनीहिम्मतके मुवाफ़िक़त्यागकरना

नोट—दूसरे को अपनी चाहती चीज़ देना त्याग कहलाता है, लायक़

शख़्सको आहार देना, अभयदान देना, ज्ञानदान, और औषधि दान यह चार क़िस्म के त्याग बतलाये हैं।

[७] शक्तितस्तप–अर्थात तप करना अपनी ताक़तको न छिपावे मोक्ष मार्ग के ख़िलाफ़ न होवे ऐसा क्लेश शरीर से करे।

ऐसा खयाल करना कि शरीर तकलीफ़ का सबब है, अनित्य है, उसको आज़ाद रखना मुनासिब नहीं है, अगर दर्शन ज्ञानचारित्र का काम लिया जावे तब फलदायक हो सक्ता है।

इसवास्ते इस शरीर को संसार सुखका साथ छोड़कर काम में लगाना और शरीरको दमन करना तप कहलाता है।

[८] साधुसमाधि--अर्थात समाधि मरण में यत्न करना

[९] वैयावृत--अर्थात मुनियोंके दुखको दूर करना।

[१०] अरहन्त भक्ति--अर्थात अरहन्तकी भक्ति करना।

[११] आचार्यभक्ति--आचार्य्योंकी भक्ति करना।

[१२] बहु श्रुत भक्ति–उपाध्यायकी भक्ति करना।

[१३] प्रवचन भक्ति–शास्त्रकी भक्ति करना जो मोक्ष मार्ग की सीढ़ी के मुवाफ़िक़ है।

(१४) आवश्यका परिहाणि--अर्थात ६ काम जो ज़रूरी हैं उनको अपने २ वक्त़ पर करना, ६ काम मुनिधर्म के वास्ते भी ज़रूरी हैं उनके जुदे २ नाम यह हैं

मुनिके ६ काम :—

[अ] सामायक—चित्तको एक तरफ़ करके कुल पापों के योग का दूर करना।

[आ] चतुर्विंशतिस्तव--तीर्थंकरों के गुणों की ज़बान से स्तुति करना।

[इ] वंदना--दो आसन खड़े होकर या बैठकर दोनों हाथ जोड़कर माथे पर लगा कर दिशा की तरफ़ सिर झुकाना और हाथजोड़कर तीन २ दफ़ा हरएक दिशा की तरफ़ घूमना

मन बचन कायकी शुद्धता करना।

(ई) प्रतिक्रमण--पिछले गुज़रे हुवे वक्त के दोप याद करके उनको दूर करना या पछताना

[उ] प्रत्याख्यान--अगले पाप का खयाल करके उस को दूर करना।

[ऊ] कायोत्सर्ग--वक्त की मीयाद मुकर्रिर कर के शरीर से अपना मोह बिलकुल छोड़ देना।

श्रावक के ६ काम ज़रूरी यह हैं

(अ) देवपूजा--अर्हंत देवकी नित्य पूजा करना।

(आ) गुरुउपासना--गुरु मौजूद हों तो सेवा अगर मौजूद न हों तो उनके गुणों को चिन्तवन करना।

(इ) स्वाध्याय

(ई) तप।

[उ] दान

[ऊ] संयम

(१५) मार्ग प्रभावना--ज्ञान के ज़रिये से अज्ञान मत की तरक्कीको रोके, बड़े २ उपवास करना जिन पूजन करना इन कामों से मोक्ष मार्ग की तरक्की करना तप करना

(१६) प्रवचन वात्सल्य-धर्म और धर्मात्मा में वा देव, शास्त्र, गुरू, में सच्ची मुहब्बत भक्ति करना।

(५२३) नीच गोत्र के आश्रव के कारण कौन२ हैं उन के नाम और तारीफ़ बतलावो।

उ० दूसरेकी बुराई करना।
अपनी तारीफ़ करना।
दूसरे में गुण हों उन को छिपाना।
अपने में जो गुण नहीं उन को ज़ाहिर करना
यह नीच गोत्र के आश्रव का सबब है।

[५२४] नीच गोत्र के आश्रव के और क्या २ कारण हैं।

उ० आठ मद का करना।
दूसरे की बुराई में ख़ुशी मानना।
दूसरे को झूठा इलज़ाम लगाने का स्वभाव रखना।
धर्मात्मा की निन्दा करना।
दूसरे की बड़ाई अच्छी मालूम न होना।
गुरुवों की बे इज़्ज़ती करना या बुराई करना या उन के साथ अदब से पेश न आना।

(५२५) ऊच गोत्र के आश्रव के क्या२ कारण हैं।

उ० जोबातें ऊपर बयान की गई हैं उनका उलटा बरताव करना, गरूर न करना, नम्रता से रहना यह उच्च गोत्र के आश्रव का कारण हैं।

(५२६) अन्तराय कर्म के आश्रव के कौन २ कारण हैं।

१ दान
२ लाभ

३ भोग
४ उपभोग
५ बीर्य

इनमें विघ्न पैदा करना अन्तराय कर्म के आश्रव का कारण है।

ज्ञानका निषेध करना--सत्कार का निषेध करना। दूसरे के दान, लाभ, भोग, उपभोग, वीर्य, स्नान, इतर, फूल माला, ज़ेवर, कपड़ा, सोना, बैठना, भोजनवग़ैरह का बिघ्न करदेना। दूसरे का माल देखकर तअज्जुब करना लोभकी वजह से अपने द्रव्य सें दान न करना। ताक़त होवे तो भी ग़फ़लत करना। दूसरेकी ताक़तको ख़राब करना। धर्म में विघ्न करना, उमदा आचार तप वग़ैरह न करना दूसरे के काम का रोकना बांधना। किसी पोशीदा आंगोपांग का छेदना या काटना। प्राणका घात करना मारना। यह सब अन्तराय कर्म के आश्रव के कारण हैं।

(५२७) व्रत आश्रवका कारणहै या सम्वर का। अपने जवाबकी वजह बतलावो

उ० जीव के दो तरह के परिणाम हैं।

१ निवृत्ति रूप--उदासीन रूप परिणामको निवृति कहते हैं जैसे किसी बात में झूठ और सच कुछ न हो यहतो संवर का कारण है।

२ प्रवृत्तिरूप—एक कामको छोड़कर दूसरे काम करने का उपदेश करना जैसे झूठ बोलने को मना करना सच बोलने की ताकीद करना यह आश्रवका कारण है।

॥ आन्हिक चौथा, बन्ध बर्णन ॥

(५२८) बंध की तारीफ़ करो।

उ० जीव अर्थात् आत्मा कषाय सहित होने से कर्म के योग्य पुद्गलों को ग्रहण करता है वोह बंध कहलाता है तशरीह--मिथ्या दर्शन के उदय से आत्मा चिकना और गीला हुआ है चारों तरफ़ से योगों की वजह से सूक्ष्म और एक क्षेत्र अवगाह कर बैठै अनंतानंत पुद्गल के परमाणु का आत्मा के एक एक प्रदेश के साथ ऐसा मिलजाना कि उसमें कोई जुदाई नरहै इसी का नाम बंध है।

(५२९) बंध के भेद के हैं हरएक का नाम और तारीफ बताओ।

उ० दो प्रकार का है।

१ अनादि--जोअनुक्रम से अर्थात सिलसिलेवार मिसल बीज और दरख़्त के चला आता है।

२ सादि--जो पुराणा झड़ता है और दूसरा नया बन्धताहै

(५३०) आश्रव और बन्ध में क्या फर्क़ है।

मन, वचन, काय के द्वारा कर्मों का आना इसका नाम आश्रव है और आत्मा के प्रदेशों पर कर्म का एक क्षेत्रा वगाह रूप बंध जाना सो बंध है।

(५३१) आश्रवके बाद बन्ध किस समय में होता है।

उ० आश्रव बंध एक समयही में होता है भिन्नकाल नहीं है

[५३२] बन्ध के कौन २ सबब हैं।

उ० (१) मिथ्यादर्शन।

(२) अविरत।

(३) प्रमादि ।

(४) कषाय ।

(५) योग ।

(५३३) प्रमादके कै भेद हैं हरएक का नाम और तारीफ़ बयान करो ?

उ० प्रमाद के मूल भेद १५ हैं

चार विकथा

(१) स्त्री कथा ।

(२) भोजन कथा

(३) राज कथा

(४) चोर कथा

चार कषाय

[५]--१ क्रोध

[६]--२ मान ।

[७]--३ माया ।

[८]--४ लोभ

इंद्रियां पांच ।

[९]--१ आंख

[१०]-२ कान

[११]-३ नाक

[१२]-४ जिव्हा

[१३]-५ स्पर्श

(१४) निद्रा १

(१५) स्नेह १

इनके ज़्यादा २ बारीक भेद करने से ३७५०० भेद होते हैं

(५३४) प्रमादकी तारीफ़ करो।

१-भाव

२-काय

३ विनय

४ ईर्य्यापथ

५ भिक्षा

६ प्रतिष्ठापन

७ शय्याशन

८ वाक्य

९ दश लक्षणधर्म में खुश होकर परणाम न रक्खें।

(५३५) योगकी तादाद और नाम बयान करो।

उ० योग पन्द्रह हैं

४ मनयोगः—

१ सत्य मन योग

२ असत्य मनयोग

३ उभय मनयोग

४ अनुभय मनयोग

४ वचन योगः—

१ सत्य वचन योग

२ असत्य वचन योग

३ उभय वचन योग

४ अनुभय वचनयोग

७ काय योग हैं:—

१ औदारिक काययोग

२ औदारिक मिश्र काय योग
३ वैक्रियक काय योग
४ वैक्रियक मिश्र काय योग
५ आहारक काय योग
६ आहारक मिश्र काय योग
७ कार्माण काय योग

(५३६) बंध कै तरह का होता है हरएक का नाम और तारीफ बतावो।

उ० बंध चार तरह का होता है।

१ प्रकृतिबंध--प्रकृति के माने ख़ासियत के हैं, मसलन ज्ञानावर्णी कर्म की प्रकृति पदार्थ को न जानना है। ऐसे कामको ज़ियादह तर करैं जिस से ज्ञान न होवे वोह प्रकृति बन्ध है।

२ स्थिति बन्ध--और जबतक उस प्रकृति से न छूटें तब तक वोह स्थिति बन्ध है।

३ अनुभाग बन्ध—कर्मों का फल तीव्र मन्द जैसा होवे अनुभाग बन्ध है।

४ प्रदेशबन्ध—ज्ञानावर्णी वग़ैरह प्रकृति बँधने का सबब तीन काल संबन्धी जीव योगों की विशेषता से सर्वही आत्मा के प्रदेशों में अनन्तानन्त पुद्गल के स्कन्ध होकर सूक्ष्म एक क्षेत्र अवगाह होकर तिष्टै है, इसको प्रदेश बन्ध कहते हैं।

नोट—योग से प्रकृति बन्ध प्रदेश बन्ध होता है, कषायों की वजह से स्थिति बन्ध और अनुभाग बन्ध होता है।

(५३७) बन्ध कै क़िसम के हैं हरएक का नाम और तारीफ़ बतलावो

उ० बन्ध दो क़िस्म के हैं।

१ भावबन्ध--मिथ्यात्व, अविरत, कषाय, प्रमाद रूप आत्माका परिणाम होना।

२ द्रव्यबन्ध--आत्मा के प्रदेशों पर कर्मपुद्गल का ठहरना द्रव्य बंध है॥

(५३८) पहले गुणस्थान में बन्ध के कितने सबब मौजूद हैं

उ० पाचों सबब मौजूद हैं

(५३९) दूसरे से पांचवे तक में कितने सबब मौजूद हैं

उ० सिवाय मिथ्या दर्शन के बाकी चारों मौजूद हैं

(५४०) छठे से दसवें तक कितने सबब मौजूद हैं

उ० योग और कषाय सिर्फ़ दो सबब बाकी रहते हैं

(५४१) ग्यारहवें से तेरहवें तक कितने सबब मौजूद हैं

उ० सिर्फ़ योग ही बन्ध का सबब मौजूद है।

(५४२) चौदहवें में कितने सबब मौजूद हैं

उ० कोई सबब नहीं रहता है इस वास्ते बन्ध नहीं होता है

(५४३) अनुभव किस को कहते हैं

उ० कर्मों की प्रकृति पक कर उदय में आवें उसका नतीजा भोगने में आवे वह अनुभव कहलाता है।

(५४४) विपाक किसको कहते हैं

उ० जो कर्म तीव्र या मंद कषाय की वजहसे नतीजे में सख्त या मंद होवे उससे कर्मों के नतीजेमें फ़र्क़ होजावे दूसरे मानी यह हैं-द्रव्य, क्षेत्र, काल, भावकी वजह से जो कर्म तरह २ से पके, वह शुभ परणामों की तेज़ीकी वजह से शुभ प्रकृति का उत्कृष्ट अनुभाग बन्ध होता है और अशुभ प्रकृति मे कम अनुभाग बन्ध होता है

(५४५) अनुभव के तरह से होता है हरएक का नाम और तारीफ़ बताओ

उ० अनुभव दो तरह से होता है।

१ स्वमुख की वजह से

२ पर मुख की वजह से

(१) स्वमुख उसको कहते हैं जो प्रकृति जिस तरह पर बंध हुई थी उसी रूपसे उदय में आवे पलट कर उदय में न आवे।

२ परमुख उसको कहते हैं कि एक२ कर्म दूसरे रूप होके उदय में आवे

(५४६) किस२ कर्म का अनुभव किस२ तरह से होता है

उ० मूल प्रकृति आठ कर्म का अनुभव स्वमुख से ही होता है अर्थात् अपने २ बन्ध के मुवाफ़िक़ उदय में आता है एक कर्म का दूसरे कर्म रूप उदय हो कर नहीं आता॥ इन्ही आठ कर्म्मोंकी उत्तर प्रकृति १४८ हैं उसमेंजो समान जातिवालेकर्म हैं उनका पर मुखकी भी वजहसे अनुभव होताहैअर्थात् एक कर्म दूसरेकर्म रूपउदय होकरआताहै, आयु कर्म के भेदों का उदय पर मुख के वजह से नहीं है,जोआय जिसक़दर बांधीथी उसीका उदयहोताहै दर्शन मोह और चारित्र मोह की आपस में अलटा पलटी नहीं है जिस क़दर बांधे उसी क़दर उदय में आवे हैं मगर नर्क आयु तिर्य्यंचरूप उदय में नहीं और मनुष्य आयु नर्कतिर्यंच रूप उदय होकर नहीं आती

(५४७) प्रकृति के नाम और अनुभव में क्या निसबत है।

उ० जो प्रकृतिका नाम है उसी तरहका उसका अनुभव है जैसे ज्ञानावर्णी कर्म का फल है ज्ञान का न होना

(५४८) जबकि आत्मा अमूर्तिक है तो कर्म का ग्रहण क्योंकर होता है।

उ० आत्माके साथ कर्म अनादि कालसेलगे हुये हैं और इसी वजहसे किसी न किसी क़िस्म का शरीर उसके साथ रहता है इसलिये आत्मा के कर्म का ग्रहण शरीर के सम्बन्धसे है।

जबकि आत्मा केवल रहताहै और शरीर से रहित हो जाता है जिसका नाम मोक्षहै उस वक़्त केवल अमूर्तिकहै और कर्म का ग्रहण नहीं करसक्ता।

आन्हिक पांचवां सम्बर, निर्जरा बयान

(५४९) सम्बर किसको कहते हैं।

उ० आश्रवों का निरोध होना-संवर है अर्थात कर्मों के ज़रिये मन, वचन, काय, मिथ्यात्व वग़ैरह है उनका निरोध होने से सुख दुख के कारण कर्मोंका पैदा न होना सम्बर है।

(५५०) सम्बरके भेद और उनकी तारीफ़ बतावो।

उ० दो भेद हैं।

१ द्रव्य सम्बर-(अर्थात) पुद्गलमयी कर्मों के आश्रव का रोकना द्रव्य सम्बर है।

२ भाव सम्बर—द्रव्य मई आश्रवके रोकने से जो कारण रूप आत्मा के भाव हैं वोह भाव सम्बर हैं।

(५५१) सम्बर किन२ भावों की वजहसे और किस वजहसे होताहै हरएक का नाम तारीफ़ बयान करो

उ० सम्बर इन छः भावों की वजहसे होता है और इन्हीं की वजह से होता है और किसी की वजह से नहीं होता

१ गुप्ति–मन, बचन, कायकी प्रवृत्तिसे कर्मका आगमन होता है उसको रोकना सो गुप्ति है

२ समति--ऐसे तौर पर काम करने की इच्छा करनाकि उस तदबीर से अपने शरीर में दूसरे जीवों को तकलीफ़ न होवे वोह समति कहलाती है अर्थात् ऐसी प्रवृति करना जिससे कर्मोंका आगमन न होवे

३ धर्म—स्वर्ग मोक्ष वग़ैरह स्थान जिनकी इच्छा होती है उनमें जो धारणा करें पहुंचावें वोह धर्म है

४ अनुप्रेक्षा--शरीर वग़ैरह दूसरे द्रव्य और ज्ञानमई आत्म द्रव्य और दूसरे धर्म वग़ैरह द्रव्योंके स्वभाव का बार २ चिन्तवन करना अनुप्रेक्षा है।

५ परीषह जय-बाह्य आभ्यन्तर कारणमें भूख प्यास लगनेपर उनको ऐसे परणाम से सहना जिसमें क्लेश न होवे परीषह जय है।

६ चारित्र–ऐसी बाह्य आभ्यन्तर क्रियाओंको त्याग करना जो संसार में भ्रमण करने का कारण है चारित्र है।

नोट– गुप्ति और समति को पहिले बयान करचुके हैं।

(५५२) निग्रह किसको कहते हैं।

उ० उन योगों को उनकी इच्छाके मुवाफ़िक़ काम करनें देनें से रोक देना निग्रह कहलाता है।

(५५३) गुप्ति और निग्रह में सम्यक क्यों लगाया गया।

उ० इस वजह से कि मन, बचन, काय, के रोकने से यह ख़्वाहिश पैदा न होवे कि दुनियामें लोग मुझको बड़ा

तपस्वी और मुनि कहें और न दूसरे जन्ममें उस के वदला पानेकी इच्छाकरें अर्थात केवल आत्मकल्याण के वास्ते मन, वचन, कायके योगोंको रोकना उसको सम्यग्योग निग्रह कहते हैं उसको ही गुप्ति कहीहै। सम्वर तो निर्वृतिरूप है जिसको आगे बयान करेंगे। इस जगह आश्रव के अधिकार में प्रवृत्ति रूप है। और जिसके यह प्रवृति रूपव्रत होजाता है उस साधु के सम्वर सुख से होजाता है।

(५५४) निर्जरा की तारीफ़ करो।

उ० कर्म का आत्माको सुख दुख देकर झड़जाना और जो स्थिति बांधी थी उसका नाश होजाना निर्जरा कहलाती है।

(५५५) निर्जरा के कै भेद हैं हरएक के नाम और तारीफ़ बतावो।

उ० निर्जरा दो भेद की है।

१ सविपाक–इस जीव ने संसार में भ्रमण करके बहुत कर्मों का वन्ध किया वोह अपने फलको देकर झड़

२ अविपाक निर्जरा–जो कर्म जीवने कियाथा उसकी मीयाद पूरी न होवे।
और तप वगैरह करने से वोह मीयाद ख़तम होने से पहलेही झड़जाय।

(५५६) निर्जरा और संवर का कारण क्या है।

उ० निर्जरा और संवर का कारण तप है।

१ (तशरीह) तपको धर्म में भी दाखिल किया है मगर यहां पर विशेषता की वजह से अलहदा भी कहा है।

२ (तशरीह) तपका असली और मुख्य फल तो यह है कि कर्मों को नाश करें और दूसरा फल यह है कि देवेंद्र वगैरह पदवी को देवे

३ (तशरीह) तपसे नये कर्मों का सम्बर होता है और जो कर्म पहले बंधे हुवे थे उनकी निर्जरा होती है इसलिये तप मोक्ष देने वाला है

(५५१) दस धर्म का नाम और हरएक नामकी तारीफ बतावो। जिसधर्म के भेदहों वोह भी तफ़सीलवार बयान करो

उ० १ उत्तम क्षमा—शरीर की रक्षा और धर्म पालने के वास्ते मुनि आहार को जावें रास्ते में दुष्ट लोग उन को देखकर उनकी निसबत खोटा वचन कहैं उनको सतावें उनका गुस्सा न करना यह उत्तम क्षमाधर्म हैं

२ उत्तम मार्दव—उत्तम जाति, कुल, रूप, विद्या, पूजा, शास्त्रलाभ, ताक़तका ग़रूर न करे चाहे येह बातें पहले थी चाहे अब हों

३ उत्तम आर्जव—काय, मन, बचन, के जोगोंमें खोटा पन और मायाचारी न होना

४ उत्तमसत्य—दस क़िस्म के असत्य का त्याग सत्य है

५ उत्तमशौच—आत्मा का परिणाम स्त्री रुपये वगैरह के लोभ में मुबतला रहता है इसलोभ का दूर होना और छह काय के जीवों की हिंसा का रद्द होना शौच है।

लोभ चार क़िसम का इस मौक़े पर कहा है

१ जीने का लोभ

२ निरोग रहने का लोभ
३ इंद्रिय क़ायम रहने का लोभ
४ उप भोग वस्तु का लोभ

(नोट) यह लोभ अपना और पराया दो किस्म का है

(६). उत्तम संयम—मुनियों को--समति की रक्षा के लिये प्राणियों की रक्षा और इंद्रियों का राग सहित विषयों का परिहार (त्याग) संयम कहलाता है.

संयम के दो भेद हैं

१ अपहृत संयम
२ उपेक्षा संयम

अपहृत संयम के तीन भेद हैं.

१ उत्तम—जो मुनि प्रासुक चीज़ का आहार करते हैं और जिनके ज्ञान चारित्र की प्रवृत्ति स्वाधीन है उनके चलने, बैठने, सोने की क्रिया में जीव आजावें तो आप दूसरी जगह चले जावें उन जीवों को तकलीफ़ न देवें यह उत्कृष्ट अपहृत संयम है।

२ मध्यम--जो मुनि उसी जीव को नर्म पीछी से हटा देवें वोह मध्यम अपहृत संयम है।

३. जघन्य--उस मुलायम पीछी के सिवाय जो मुनि किसी और चीज़ से हटावें जिसमें उसको तकलीफ़ न होवे यह जघन्य अपहृत संयम है।

२ उपेक्षा संयम-जो दुष्ट मुनियों को तकलीफ़ दें यहां तक कि उनकी जान तकभी लेनेकी कोशिश करें और मुनि ध्यान में बैठे रहैं ज़रा भी राग द्वेष का ख़याल न लावें।

नोट—अपहूत संयम पालने के लिये आठ क़िस्मकी शुद्धि की जरूरत है।

[१] भावशुद्धि—जो शुद्धि कर्म के क्षयोपशम से पैदा होवे और मोक्ष मार्ग की ख़्वाहिश से जिसमें ख़ुशी होवे और जिसमें राग वग़ैरह का उपद्रव न होवे वह भाव शुद्धि है उसके होने से आचरण ज़्यादा चमकदार होजाता है।

(२) कायशुद्धि—मुनियो के पास कोई ज़ेवर या कपड़ा नहीं होता मगर उनका बदन ऐसा साफ़ होता है जैसा कि पैदाहुये बच्चे का और कुछ विकार न होवे और मूर्तिवान शान्तरूप होवे जिसको देख कर अपनेको या दूसरेको ख़ौफ़ पैदा न होवे।

(३) विनयशुद्धि-अरहन्तकी भक्तिमें और गुरुकीभक्ति या औरवड़ेसंगके मुनियोमें उनके दरजेके मुवाफ़िक़ शास्त्रके अनुसार विनय करे।

(४) ईर्यापथ शुद्धि—सूर्यकी रोशनी में आंख से देख कर सीधे चलना जिसमें जीवों को तकलीफ़ न हो।

(५) भिक्षाशुद्धि--४६ दोष और ३२ अन्तराय को टाल कर शास्त्र के मुवाफ़िक़ आहार लेना।

(६) प्रतिष्ठापन शुद्धि--मल मूत्र वग़ैरह देखकर डाले।

(७) सयनाशन शुद्धि--जिस जगह चोर शिकारी वग़ैरह होवें या गाने वजाने वग़ैरह का सामान होवे मुनि-वहां न जावें न सोवें।

(८) बाक्यशुद्धि-- आराम देने वाला वचन बोले तकलीफ़ देनेवाला न बोले।

(नोट—२) भित्ता ५ क़िसम के नामों से ज़ाहिर कीगई है

[१] गौचरी--जैसे गौ घास चरती है रस विरस आहार नहीं देखती ग़रीब अमीर नहीं देखती शरीर की ख़ूबसूरती या बद सूरती को नहीं देखती जैसे गौको घास खानेपर नज़र रहती है और किसी तरफ़ नज़र नहीं होती इसी तरह मुनि आहार देनेवाले की दौलत की तरफ़ नहीं देखते

[२] अत्त म्रत्तण--जैसे कि रत्न की भरी हुई गाड़ी को उसका मालिक ऊंग लगा कर लेजाता है ऐसे ही मुनि अपने सम्यक्त भरे शरीर को आहार की ऊंग लगाकर मोत्त की मंज़िल पर पहुंचाते हैं।

[३] उदार अग्नि परशमन—जैसे कि किसीके घर में आग लग जाये उसको पानी से बुझाकर माल को बचालेता है ऐसेही मुनि अपने पेटकी आग का बुझाते हैं।

[४] भ्रामरी--जैसे भौंरा फलकी खुशबू ले लेता है और फलको तकलीफ़ नहीं होती ऐसेही मुनिका आहार देने वाले को तकलीफ़ नहीं देते।

[५] गर्त पूरण--मुनि गढ़के तौरपर उदर भरलेते हैं मज़े को नहीं देखते।

(७) तप—कर्म के त्तय करने के वास्ते तप लेना या तकलीफ़ सहना तप कहलाता है।

नोट—इस के बारभेद हैं जो आगे कहे जायंगे।

(८) त्याग—संयमी पुरुषों को ज्ञान वग़ैरह देना त्याग कहलाता है।

(९) आकिंचन्य–शरीर वगैरह परिग्रह जो मौजूद रहती है उनमें मोहब्बत न रखना, उनको अपना न समझना आँकिंचन्य कहलाता है।

(नोट) अ के मानी हैं नहीं और किंचन के मानी कुछभी अर्थात जीवका जगतमें कुछभी नहीं॥

(१०) ब्रह्मचर्य्य–पहले स्त्री से भोग किये उनको याद नहीं करना—स्त्रियों की कथा को न सुनना जिस जगह स्त्रियां जमा होवें वहां न बैठना न सोना ऐसे गुरुवों के पास रहना जो अपनी ख्वाहिश से आज़ाद रहते हैं इसका नाम ब्रह्मचर्य्य है।

नोट—ब्रह्म के मानी आत्मा चर्य के मानी आचरण करना यह मानी ब्रह्मचर्य्य के है अर्थात आत्मस्वरूप में चर्याकरना।

(५५८) यह दसधर्म किसके लिये बयान किये और इस जगह धर्म के क्या मानी है

उ० यह दस धर्म इस वास्ते बयान किये हैं कि जो मुनि समति मे प्रवर्तते हैं उनका प्रमाद दूरहा जावे॥ वस्तु स्वरूप की प्राप्तिका नामधर्म है और यह दस धर्म आत्मा के स्वभाव हैं इसी से इनका नाम लक्षण कहा है

[५५९] अनुप्रेक्षा किस को कहते है

उ० किसी चीज़ को बार२ चिंतवन करने को और हरवक्त ध्यान में रखने को अनुप्रेक्षा कहते हैं और इसी का नाम भावना भी है।

(५६०) अनुप्रेक्षा कितनी है उनके नाम और तारीफ़ बयान करो

उ० अनुप्रेक्षा १२ हैं।

१ अनित्यानुप्रेक्षा-द्रव्योकेसंयोगसेवियोगहोना, अर्थात

द्रव्योंका संयोग छूटना, अनित्यहै। आत्मा राग वग़ैरह परणाम से कर्म नो कर्म भावकी वजह से पुद्गल परमाणु बाह्य द्रव्य हैं, वह अनुपात हैं यह सब द्रव्य की अपेक्षा तो नित्य हैं और पर्याय की अपेक्षा अनित्यहै, यह शरीर इन्द्रियों की वजह से भोगने वाला है, यह इन्द्रियां मिलकर एक बूंद पानी के मुवाफ़िक़ हैं, इन में संयोग हमेशा रहता है, नादान आदमी उनको हमेशा नित्यमानता है, यह ग़लती है, संसार में कोई चीज़ मुस्तक़िल यानी ध्रुव नहीं है, संसार देह भोग सब विनश्वर है, आत्मा का ज्ञान दर्शन रूप उपयोग स्वभावही ध्रुव है, ऐसा बार२ चिंतवन करना अनित्यअनुप्रेक्षा है।

२ अशर्णानुप्रेक्षा—संसार में इसजीव का कोई शरण अर्थात् मददगार नहीं है, चाहे इसजीवको जन्म मरण वग़ैरह की कैसीही तकलीफ़ होवे यह शरीर भी जीवका मददगार नहीं है, धन दौलत भी मदद् गार नहीं है, दोस्तभी मदद गार नहीं है, कुनबे के लोग भी मददगार नहीं हैं, सिवाय धर्म के और कोई मददगार नहीं है, धर्म अविनाशी है, यह नहीं मिटता, ऐसा बार२ चिंतवन करना अशर्णानुप्रेक्षाहै

३ संसार अनुप्रेक्षा-कर्मके उदय से आत्मा पांच परावर्तन में भ्रमण करता है और बहुत से भवधारण करता है इससे हमेशा डरता रहे और इस खौफ़ की वजह से बैराग भाव पैदा होंगे

तब संसार के नाश करने का यत्न करेगा इसका नाम संसारानुप्रेक्षा है।

नोट-१—आत्मा की चार अवस्था हैं।

१ संसार--चार गति में अनेक योनि में भ्रमणकरना

२ असंसार--चारों गति से छुटजाना मोक्षहोजाना

३ नोसंसार -जबकि जीव सयोग केवली के दर्जे पर पहुंच जावे तो चारों गति में भ्रमण करना तो मौकूफ़ होजाता है मगर अबतक वाक़ई मोक्ष नहीं होती है सिर्फ़ इस वजह से संसार कहा जाता है कि प्रदेशोंका चलना पायाजाता है।

४ तत्त्रितयव्यपेत-यह ऐसी अवस्था है जो तीनों से जदा है और सिर्फ़ अयोग केवली के होती है चतुर्गति का भ्रमण करना तो मौकूफ़ होगया इसलिये संसार नहीं रहा।
मोक्ष नहीं हुई इसवास्ते असंसार नहीं
और प्रदेशों का चलना भी नहीं इसलिये नो संसार भी नहीं
इसका काल अन्तर मुहूर्त्त है अर्थात् पञ्च लघु अक्षर उच्चारण काल प्रमाण है:--

नोट--२--क्षेत्र निमित्त संसार दो क़िस्म का है।

१ स्वक्षेत्र--कर्म्मों की वजह से छोटा बड़ा होकर घटना बढ़ना सो स्वक्षेत्र निमित्त है।

२ परक्षेत्र--अर्थात जन्म योनि के भेदकी वजह से लोक में पैदा होवे और लोकको छूवें वोह परक्षेत्रहै

नोट-३ कालके निश्चय और व्यवहार की अपेक्षा से संसार के दो भेद हैं।

१ निश्चय कालकी वजहसे जो क्रिया रूप हुवा या उत्पाद व्यय ध्रौव्य रूप परणाम यह निश्चय काल संसार है।

२ अतीत अनागत वर्तमानरूप भ्रमण सो व्यवहार कालरूप संसार है।

नोट-४ भव निमित्तक २२ भेद हैं। अर्थात

१ पृथ्वी
२ अप्
३ तेज
४ वायु
चारों को
१ सूक्ष्म
२ बादर
३ पर्याप्त
४ अपर्याप्त

इन चारों में गुणने से सोलह हुये।

१७ प्रत्येक बनस्पति पर्य्याप्त।
१८ प्रत्येक बनस्पति अपर्य्याप्त।
१९ साधारण बनस्पति सूक्ष्म।
२० साधारण बनस्पति बादर।
२१ साधारण बनस्पति पर्याप्त।
२२ साधारण बनस्पति अपर्य्याप्त।
२३ द्विंद्रिय पर्याप्त।

२४ ते इन्द्री पर्याप्त ।

२५ चौइन्द्री पर्याप्त ।

२६ दो इन्द्री अपर्याप्त ।

२७ ते इन्द्री अपर्याप्त ।

२८ चौइन्द्री अपर्याप्त ।

२९ संज्ञी पर्य्याप्त ।

३० संज्ञी अपर्य्याप्त ।

३१ असंज्ञी पर्य्याप्त ।

३२ असंज्ञी अपर्याप्त ।

नोट-५ भाव निमित्तक संसार दो प्रकार का है ।

[१]स्वभाव--मिथ्या दर्शनवगैरह अपने भाव तो स्वभावहै

[२]परभाव--ज्ञानावरणी कर्मों का रस सोपरभाव हैं ।

४—एकत्वानुप्रेक्षा—पैदा होने में, मरणे में, तकलीफ़ में, बुढ़ापे में; अपने को अकेलाही समझे दूसरे को अपने साथ न समझे जो शख़्स ऐसा चिन्तवन करे वोह किसीको अपना समझकर राग नहीं करता और दूसरेको गैर समझकर उससे द्वेष नहीं करता सिर्फ़ मोक्षही की तैयारी करताहै ।

—अन्यत्वानुप्रेक्षा-अपने शरीर कुनबे वग़ैरह को ग़ैर समझना और यह समझना कि सिर्फ़ बन्धके सबब से आत्मासे शरीर मिलाहुवाहै,वरना दरअसल जुदा है ऐसे ख़यालात से शरीर की ख़्वाहिश नहीं होती

६—-अशुचित्वानुप्रेक्षा–शरीरको महा अपवित्र समझा इस भावको सम्यग्दर्शन वग़ैरह के साथ भावनेमे शुद्धता पैदा होती है ।

शुचि दो क़िस्मकी होती है ।

[१]अलौकिक–आत्मा कर्म,मल,कलंकको धोकर अपने शुद्ध स्वरूप में तिष्ठे है यह मुनियों के होती हैं।

[२]लौकिक--यह आठ क़िस्मकी है ।

(१)काल--कालको पाय शुद्धहोना जैसेसूतक पातक में शुद्ध होता है ।

(२)भस्म--राखकर शुद्ध होना ।

[३]अग्नि—अग्निकर शुद्ध होना ।

[४]मृत्तिका–मिट्टीहीके सन्स्कार से शुद्ध होना ।

[५]गोमेय–गोबरसे शुद्ध होना ।

[६]जल-जलसे धोने से शुद्ध होना ।

[७]ज्ञान-ज्ञान द्वारा विचारकर शुद्ध होना ।

[८]वायु-हवा से शुद्धि होना ।

यह आठ लौकिक शुद्धि हैं ।

७–आश्रअनु प्रेक्षा--मिथ्यात्व अविरत वग़ैरह कषायों की वजह से कर्मों का आश्रव होता है आश्रवही संसार में भ्रमण करने का कारण है और आत्माके गुण का नाश करनेवाला है इस तरह आश्रव के स्वरूपका चिन्तवन करना ।

८--संवर अनप्रेक्षा–संवर के स्वरूका चिन्तवन करना

९--निर्जरअनुप्रेक्षा--कर्मोंकी निर्जरा किस तदबीर से होती है इस तरह निर्जरा के स्वरूपका चिन्तवन करना ।

१०-लोकअनुप्रेक्षा--लोक के आकार वग़ैरह का चिंतवन करना ।

भावार्थ—इससे स्वर्ग और नर्कके सुख दुख का चिंतवन होता है और जीव अजीव वगैरह रहनेका ठिकाना मालूम होता है इससे ज्ञान उज्वल होता है।

११-बोध दुर्लभअनुप्रेक्षा—सम्यग्दर्शन,ज्ञान, चारित्र की प्राप्ति दुर्लभ है,दुर्लभ इसवजह से है कि एक निगोद के शरीर में जीव सिद्धराशी से अनन्तगुणे हैं उन शरीरोंसे जीवइस तरहभरा हुवा है कि कोई जगह खाली नहीं है यह बात सत्यार्थ है।

द्विइन्द्री जीव इससे कम हैं।

द्वींद्रिय पर्याय पाना ऐसाही दुश्वार है जेसा कि रेत के समुद्र में हीरेकी कणी गिरजावे उसका पाना दुश्वार है इसलिये एकेन्द्रिय से दो इन्द्री होना मुशकिल है।

इसी सिलसिले से पंचेद्रियतक पहुंचना बहुतही दुर्लभ है।

जेसे कि अहसान माननेवाले जीव बहुत कम हैं ऐसेही पंचेद्री जीव होना बहुत मुशकिल है फिर देश मुल्क अच्छी सोहबत पाना इससे ज़्यादा दुश्वार है।

अच्छा कुल पाना इससे ज़्यादा दुश्वार है।
ज़्यादा आयु पाना इससे ज़्यादा दुश्वार है।
तंदुरुस्ती पाना इससे ज़्यादह दुश्वार है।
धर्मलाभ पाना सबसे ज़्यादा दुश्वार है।
बिदून धर्म के यह सब फ़ज़ूल हैं।

समाधि मरण इससे ज़्यादा मुशकिल है ।
स्वभावकी प्राप्ति ज्यादा मुशकिल है ।
जो शख़्स ऐसा चिंतवन करें उनको प्रमाद कभी नहीं होता और ज्ञान की तरक़्क़ी करते रहते हैं ।

१२ धर्मानुप्रेक्षा–जिनेश्वर का उपदेश किया हुवा धर्म ऐसा है कि जिसमें हिंसा नहीं है ।
और सत्य और अधिकार उसके साथ लगा हुवा है उसकी जड़ विनय है ।
और उसकी ताक़त क्षमा है ।
और उसकी रक्षा ब्रह्मचर्य है ।
और उसमें कषायका नाश होना मुख्य है ।
नियम और त्याग उसका स्वरूप है ।
और उसका सहारा निर्ग्रंथपणा है ।
और भगवान सर्वज्ञदेव का बयान किया हुवा है उसके लाभ नहोने की वजह से जीव संसार में भ्रमण करता है ।
पाप कर्म की वजह से जो दुःख पैदा होता है उसको भोगता है ।
धर्मकी वजह से मोक्ष तक हासिल होती है ।
ऐसे चिंतवन से धर्म में प्रेमता होती है

(५६१) परीषह का जीतना किसको कहते हैं और क्यों परीषह सहीजाती हैं

उ० जिस मोक्षमार्ग को अख़तियार किया है किसी तकलीफ़ के आनेपर उस रास्ते को न छोड़ें ।
उसपर दृढ़ रहें इसका नाम परीषह का जीतना है, रत्न

त्रय के मार्ग से न छूटने के वास्ते और कर्मों की निर्जरा के वास्ते परीषह सही जाती हैं

(५६२. परीषह कितनी है उनके नाम और तारीफ़ बतावो।

उ० परीषह २२ हैं।

१ क्षुधा--भूख।

२ तृषा—प्यास।

३ शीत--सरदी

४ उष्ण--गरमी।

५ दंशमसक--कीड़े मकौड़े वगैरह का काटना।

६ नग्न--नंगे रहना।

७ अरति-कामकी ख्वाहिश न होना।

८ स्त्री--औरत।

९ चर्य्या-चलना।

नोट—मुनि बड़े शहरमें ज़्यादासे ज़्यादह पांचरोज़ रहतेहैं और छोटे ग्राममें १ दिन रहते हैं

११ निषद्या-लेटनाबैठना अर्थात जिस आसन बैठें फिर नहीं बदलते।

११ शय्या-अर्थात सोना जिसतरह सीधे सोवें करवट नहीं बदलते ताकि जीव नहीं मरें।

१२ आक्रोश-दूसरों के सख़्त वचन गाली वगैरह सुनकर सहना।

१३ बध—मारनेवाले पर नाराज़ नहीं होते

१४ याचना-(मांगना) कैसीही भूख होवे मांगते नहीं

१५ अलाभ-परघर भोजन को जाते परंतु भोजन नहीं मिलने को भी लाभही समझते हैं।

१६ रोग–बीमारी ।

१७ तृणस्पर्श–कांटे तृणके वग़ैरह बदन को लगना

१८ मल--अपने शरीरके मल दूर करने की ख़्वाहिश न करना और दूसरे का मैल देखकर नफ़रत न करना

१९ सत्कार-पुरस्कार--अर्थात् मान अपमानको समान समझना ।

२० प्रज्ञा--इल्म का ग़रूर न होना ।

२१ अज्ञान--अज्ञानपणे से अवज्ञा से ज्ञानकी अभिलाषा रूप परीषह–या दूसरा शख़्स मुनियोंको अज्ञानी कहै

२२ अदर्शन–यह ख़याल न करना कि दीक्षा लेना बेफ़ायदा है हमने इतना तप किया तथापि कोई ऋद्धि चमत्कार नहीं हुवा ऐसा इन परीषहों का जीतना है ।

(५६३) परीषह में और काय क्लेश में क्या फ़र्क़ है ॥

उ० जो आपसे आप आवें वोह परीषह हैं और आप यत्न कर २ उदय में लावे वह काय क्लेश है ।

(५६४ किस २ गुणस्थान के कितनी और कौन परीषह रहती हैं ।

उ० सूक्ष्म साम्पराय अर्थात् दशवें गुणस्थान तक और छद-मस्त वीतराग याने ग्यारवे गुण स्थान तक सिर्फ़ चौदह परीषह होती हैं ज़ियादह नहीं होती अर्थात ।

१ क्षुधा

२ पियास

३ शीत

४ उष्ण

५ दंशमशक
६ चर्या
७ शय्या
८ बध
९ अलाभ
१० रोग
११ त्रणस्पर्श
१२ मल
१३ प्रज्ञा
१४ अज्ञान

तेरवें गुणस्थान में सिर्फ ग्यारह परीषह होती हैं जब के केवल ज्ञान होजाता है वहां वेदनी कर्म के उदय के सद्भावसे सिर्फ ग्यारह परीषह होती हैं परन्तु उपचार मात्र हैं ।

१ क्षुधा
२ प्यास
३ शीत
४ उष्ण
५ दंश मशक
६ चर्य्या
७ शय्या
८ बंध
९ रोग
१० तृणस्पर्श
११ मल

नवें गुणस्थान तक कुल २२ परीषह रहती हैं ।

(५६५) कैसे चारित्र मे परीपह जीती जाती हैं।

उ० १ सामायिक

२ छेदोपस्थापना

३ परिहारविशुद्धि

संयम मेंसे किसी एक संयममें कुल परीपहजीतीजाती है अर्थात जब कोई जीव ऐसा चारित्र धारेगा तो उसको परीपह जीतना पड़ेगा।

(५६६) किस कर्मके उदय से कौनर परीपह होती है

उ० १ ज्ञानावरणी कर्म के उदयसे प्रज्ञा और अज्ञान दो परीपह होती हैं।

२ दर्शन मोह के होने से अदर्शन परीपह होती है।

३ अन्तराय के होने से अलाभ परीपह होती है।

४ चारित्र मोहके होनेसे।

१ नाग्न्य।

२ अरति।

३ स्त्री।

४ निपद्या।

५ आक्रोश।

६ सत्कार पुरस्कार।

७ याचना।

यह सात परीपह होती हैं।

बाक़ी ग्यारह परीपह वेदनी के उदय होने से होती हैं

(५६७) एक वक्त कौनर परीपह इकट्ठी नहीं होती हैं और ज़्यादासे ज़्यादा कितनी परीपह होसक्ती हैं

उ० एक वक्त में एक आत्मा में १९ परीपह तक होती हैं

अर्थात्--जो परीषह एक दूसरेके प्रति पत्ती हैं उन में से सिर्फ़ एक२ होती है इसतरह तीन घट जाती हैं जैसे शीत उष्ण में से एक रहती है और निषद्या, शय्या, चर्य्या में से एक रहती है।

(५६८) चारित्र के कितने भेद हैं उनके नाम और तारीफ़ बयान करो

उ० चारित्रके पांच भेद हैं।

१ सामायिक।

इसका हाल पहले बयान हो चुका है इसकी दो क़िस्म हैं।

१ नियतकाल-अर्थात् वक्त की मीआद मुकर्रर करके स्वाध्याय वग़ैरह की जावे।

२ अनियतकाल--अर्थात् इर्य्यापथ वग़ैरह में अनियत काल है।

२ छेदोपस्थापना—अर्थात् प्रमाद की वजह से दोष पैदा होकर संयम बिगड़ गयाहो प्रायश्चित करके उसको फिर क़ायम करना और इसके यह भी मानी हैं कि सामायिक में अहिंसा वग़ैरह और समति वग़ैरहका फ़र्क़ करना।

३ परिहार बिशुद्धि-प्राणियों की तकलीफ़ कम करने की वजह से जो विशुद्धिता होवे वोह परिहार विशुद्धि है।

४ सूक्ष्मसांपराय-जिस जगह सिर्फ़ लोभ कषाय रहे वह बहुत ही कम होजावे वोह सूक्ष्म सांपराय है यह दसवें गुणस्थान में होती है।

५ यथाख्यात चारित्र-जहां मोहनी कर्म का पूरा उपशम

होवे और सत्ता में द्रव्य कर्म मौजूद होवें वह उपशम यथाख्यात चारित्र कहलाता है और क्षय होवे और द्रव्य कर्म सत्तामें से उठ जावे और आत्मा के स्वभाव की वीतराग अवस्था होजावे वोह क्षायिक यथाख्यात चारित्र कहलाता है।

और सत्तामें द्रव्य कर्म मौजूद होवें वह उपशम यथाख्यात चारित्र कहाता है

(५६९) बाह्य तप कै हैं उनके नाम और तारीफ़ बयान करो

उ० बाह्य तप छः हैं।

१ अनशन-रुपये के पैदा करने के लिये, दुनिया में इज़्ज़त हासिल करने के लिये, बीमारी दूर करने के लिये, खौफ़ दूर करने के लिये, मंत्र साधन करने के लिये, और इसी किस्म की दुनिया के कामों के लिये जिस में इच्छा न हो।

ऐसेही दूसरे जन्म के विषयों की इच्छा न होवे, मसलन स्वर्ग वग़ैरह के फल की इच्छा जिसमें न होवे और संयम की प्रसिद्धता और राग वग़ैरह दूर होने से कर्म की निर्जरा, ध्यान का हासिल होना शास्त्रके अभ्यास का हासिल होना।

इसके वास्ते आहार कषाय विषय का त्याग करना वह अनशन है।

२ अवमौदर्य--थोड़ा सा आहार इस ग़रज़से लेना कि संयम बढ़े, निद्रा आलस्य वग़ैरह दूर होजावे, वात पित्त कफ़ वग़ैरह का विकार दूर होजावे, स्वाध्याय वग़ैरह संतोष से हो जावें, उसको अवमौदर्य्य कहते हैं।

३ व्रतप्रसंख्यान—जिसवक़्त मुनि आहार को जावें उस वक़्त यह प्रतिज्ञा करैं कि एकही घरको जायंगे, या एक रस का भोजन करेंगे, या स्त्री का दिया आहार लेंगे, या एकही द्रव्य का भोजन लेंगे, इसी क़िस्म की बहुत सी प्रतिज्ञा हैं कि अगर ऐसा आहार मिला तो ले लिया वरना वापिस चले आये इसका नाम व्रत प्रसंख्यान है

४ रसपरित्याग—इन्द्रियों की ताक़त के कम करने के वास्ते, नींद के जीतने के वास्ते, स्वाध्याय आराम से होने के लिये घी वग़ैरह ताक़त देनेवाली और मज़ेदार चीजों का त्याग करना अर्थात् छहों रसों मेंसे कितनेही रसों का त्याग करना रस परित्याग है

५ विविक्त शय्यासन—ख़ाली एकान्त जगह में संयमी का इस ग़रज़ से सोना, बैठना कि जीवों को तकलीफ़ न होवे और स्वाधयय बढ़े, ब्रह्मचर्य्य बढ़े, ध्यानकी सिद्धिहोवे इसका नाम विविक्त शय्यासन है

६ काय क्लेश—तकलीफ़ की जगह मसानन दरख़्त के नीचे, पहाड़ पर, मैदान में, सोना, बैठना।

(नोट) यह कुल तप जिस्म को तकलीफ़ देने के लिये, परीषह सहने के लिये, सुख की इच्छा दूरकरने के लिये होते है

(५१०) आभ्यन्तर अर्थात् रूहानीतप कैहै, उनके नाम और तारीफ़ बताओ

उ० छः हैं

१ प्रायश्चित्त—अर्थात प्रमाद कीवजह से जो व्रत में दोष लग जावे उसको मिटाना

२ विनय-जो लोग पूज्य होवें या इज़्ज़त करने के क़ाबिल होवें उनको आदर करना।

३ वैयावृत्य-अपने तनसे या दूसरी चीज़ों से साधुवों की ख़िदमत करना।

४ स्वाध्याय-ज्ञान की भावनामें आलस्य को दूरकरना

५ व्युत्सर्ग-दूसरी चीज़ों से मोहब्बत तोड़ना और उनमें यह ख़याल न रखना कि यह मेरा है

६ ध्यान-चित्त डांवां डोल होने को छोड़ना,

(नोट) चूंकि इनका तालुक़ मनसे है, और ज़ाहिरीचीज़ों से नहीं है इसवास्ते इनको आभ्यन्तर अर्थात् रूहानी तप कहा

(५३) प्रायश्चित के कितने भेद हैं उनके नाम और तारीफ़ बतावो॥

उ० प्रायश्चित के नौ भेद हैं।

१ आलोचन–जो क़सूर अपने से होगया हो वो दस दोष टाल कर ऐसे गुरु पर ज़ाहिर करदेना जिसमें दस दोष न हों।

२ प्रतिक्रमण–यह ज़ाहिर करके कहना कि जो दोष मुझको लगा है वह छूटजावे और बेकार होजावे।

३ तदुभय–आलोचन और प्रतिक्रमण दोनों करना

४ विवेक-आहार,पानी,वर्तन वग़ैरहजिसमेंदोषथाउनका क़तई त्यागकरना या किसी मुद्दतके वास्ते त्यागकरना

५ व्युत्सर्ग--बाह्य शरीरादिक आभ्यन्तर रागादिक का त्याग करना सो व्युत्सर्ग है।

६ तप--अनशन वग़ैरह तप करना।

७ छेद–दिन, पखवाड़ा, महीने की दीक्षाका घटाना।

८ परिहार--पन्दरह, रोज़ महीनेकी मियाद मुक़र्रिर करके मुनियोंके संग से निकाल देना।

९ उपस्थापना–पहली कुल दीक्षा को छेद कर दुबारा दीक्षा देना।

(५७२) प्रायश्चित किसग़रज से कियाजाता है।

उ० प्रमाद वग़ैरह का दोष दूर होना, उससे भावकी सफ़ाई होना, सल्य का मिटाना।
अनवस्था का दूर होना।
क़ायदे के अन्दर रहना।
संयम का क़ायम रहना।
और इसी क़िस्म की चीज़ें शुद्ध करनेके लिये।

(५७३) दस दोष कौन कौन २ हैं॥

१ गुरुकी कुछ भेट करैं या भेट करनेका ख़याल करैं।

२ गुरुसे कहैं कि मैं कमज़ोर हूं, उपवासा हूं, चीण हूं इत्यादि अपनेको प्रायश्चित देने के लिये गुरु से कायरता के वचन कहना।

३ दूसरे के न देखेहुये दोषका छिपाना और दूसरे के देखे हुयेको ज़ाहिर करना।

४ प्रमाद से छोटे क़सूरको न कहै और बड़े क़सूर को ज़ाहिर करे।

५ बड़े प्रायश्चितके ख़ौफ़ से अपना बड़ा क़सूर न कहना उसके मुवाफ़िक़ छोटाही क़सूर ज़ाहिर करना।

६ यह कहना कि ऐसे व्रत के अतीचार मोजूद हैं प्रायश्चित से क्या होगा यह समझकर दोष न कहना सिर्फ़ गुरुवोंकी ख़िदमत करना।

७ बहुत से मुनि पन्द्रह रोज़ या चौमासे में क़याम करैं वहां आलोचना के शब्द होते हैं उनमें आपभी अपना क़सूर बयान करैं दिलमें यह विचार करके कुछ सुनैंगे कुछ नहीं सुनैंगे।

८ अपने गुरुवों के दिये हुवे प्रायश्चितमें यह शक करना कि यह मुवाफ़िक़ शास्त्र के है या नहीं । दूसरे गुरुवों से दरयाफ़्त करना ।

९ जो अपने मुवाफ़िक़ होवें उसी से अपना क़सूर कहकर प्रायश्चित लेलेना इस तौर पर बड़ा प्रायश्चित लेवें तबभी फ़ायदेमन्द नहीं होगा ।

१० दूसरे मुनियों को जो अतीचार लगा था और प्रायश्चित लियाथा उसको देखकर अपने आपभी प्रायश्चित लेलेना और ज़ाहिर करदेना ।

(५७४) विनय के भेद उनके नाम और हरएक की तारीफ़ बयान करो ।

उ० विनयकी चार क़िस्मैं हैं ।

१ ज्ञानकी विनय-बहुत आदरसे मोक्षके वास्ते ज्ञानका अभ्यास करना स्मरण करना ।

२ दर्शन विनय—शकको छोड़कर तत्वार्थ का श्रद्धान करना ।

३ चारित्र विनय--ज्ञान दर्शन सहित होकर चारित्र में चित्तको समाधान करना ।

४ उपचार विनय--आचार्य्य वग़ैरह प्रत्यक्ष मौजूद होवें उनको देखकर उठना, उनके सामने जाना अंजुली करना और सामने प्रत्यक्ष न हों तो मन वचन कायसे हाथ जोड़कर नमस्कार करना गुण बयान करना, याद करना ।

(५१५) विनय से क्या फ़ायदा होता है।

उ० विनयसे ज्ञान का लाभ होता है आचार शुद्ध होता है, भली आराधना होती है।

(५१६) वैयावृत्य किसको कहते है उसके भेद नाम और हरएककी तारीफ़ बयान करो।

उ० नीचे लिखे हुवों की टहल करना वैया वृत्य कहलाता है और इसी वजह से उसकी यह दस क़िस्में हैं।

१ आचार्य--जिनसे व्रतलें और आचार सीखें अर्थात् दीक्षा शिक्षा देनेवाले।

२ उपाध्याय--जिनसे मोक्ष देनेवाला शास्त्र पढ़ैं।

३ तपस्वी--बड़े तप, उपवास करनेवाले।

४ शैक्ष्य--जो शास्त्र पढ़ैं, और शिक्षा लेनेवाले।

५ ग्लानि--जिनका बदन बीमारीकी वजहसे ख़राब होगयाहो।

६ गण--जो बड़े मुनिकी परिपाटी का हो।

७ कुल—दीक्षा देनेवाले आचार्य के चेले हों।

८ संघ—चार क़िस्मके मुनियों के समूहको संघ कहते हैं

९ साधु--बहुत दिनोंका दीक्षाधारी साधु कहलाता है।

१० मनोज्ञ--जिनको दुनिया के आदमी मानते हों, बड़ा जानते हों, जिसमें पंडित के गुणहों, या पूर्व कदापि गृहस्थ अवस्था में दोष नहीं लगायेहों या चक्रवर्तीहो, राजाहो, राज मन्त्रीहो, श्रेष्ठी हो।

(इन दसोंकी बीमारी वग़ैरह की हालत में अपने तन, मन, वचन से टहल करना वैयावृत्य है।)

(५१७) वैया वृत्य का क्या फल है।

उ० समाधि की धारणा होती है
निर्विचिकित्सा अंग जो सम्यक्त का एक अंग है
वोह पलता है और वात्सल्यता बढ़ती है

(५१८) चारप्रकार का संघ कौन २ है।

उ० १ ऋषि--ऋद्धि धारी मुनि।
२ यति-जो इंद्रियों को क़ाबू में करें
३ मुनि--जिसको अवधि और मनःपर्य्ययज्ञान हो।
४ अनागार--सामान्य ग्रह के त्यागी
और ४ संघ यहभी कहलाते हैं
१ मुनि
२ आर्जिका
३ श्रावक
४ श्राविका

(५१९) स्वाध्याय किसको कहते हैं उसके भेद हरएक का नाम और तारीफ़ बयानकरो।

उ० १ बाचना-निर्दोषग्रन्थ, अर्थ, उभय, इनका भव्य जीवों को देना, सिखाना, बाचना कहलाता है
२ प्रच्छना--शंकाके दूर करने के वास्ते ऐसी तरह निश्चय करना जिसमें कोई बाधा न रहै, दूसरे से ग्रंथ का अर्थ पूछना।
३ अनुप्रेक्षा--जिस पदार्थका स्वरूप जान लिया उस को बारंबार चिंतवन करना।
४ आम्नाय--पाठको शुद्ध घोषणा अर्थात् याद करना, आम्नाय पूर्वक उच्चारण करना।
५ धर्मोपदेश धर्म की कथा का उपदेश देना।

[५८०] स्वाध्याय का फल बयान करो

उ० स्वाध्याय के फल यह हैं।

१ प्रज्ञा का अतिशय होवे, अर्थात् अकल बढ़ती है

२ प्रशस्त आशय होवें, अर्थात् अच्छे खयालात होवें

३ परम संवेग होवे, अर्थात् संसारसे वैराग्य रूप परिणाम होवे।

४ तपकी तरक्की होवे।

५ अतीचार का शोधन होवे, दोषों को दूर करें।

६ शक दूर होजाता है।

७ मोक्ष मार्ग में दृढ़ता होती है।

८ दूसरे के एतराज़ को दूर करता है।

(५८१) व्युत्सर्ग किसको कहतेहैं उसके भेद और हरएककी तारीफ बयानकरो

उ० व्युत्सर्ग त्यागको कहते हैं उसके दो भेद हैं।

१ बाह्य उपाधि शरीरादिक का त्याग, अपने से अलहदा जो चीज़है जैसे रुपया, पैसा, धन, दौलत, हाथी, घोड़ा, दास, दासी वग़ैरह।

२ आभ्यन्तर उपाधि—अर्थात कर्म के निमित्त से जो आत्माके भाव हों मसलन क्रोध वग़ैरह उनका त्याग

नोट—यह त्याग कालकी मर्यादा सेभी होता है और हमेशाके वास्तेभी होताहै

(५८२) व्युत्सर्ग का फल क्या है।

उ० इसका फल निः संगपणा अर्थात दूसरा कोई साथ न होवे किसीतरह की परिग्रह न रहै।

(५८३) ध्यान किसको कहते हैं।

उ० मनकी चिन्ता बहुत से पदार्थों की वजह से चलाय-

मान होती है उसको दूसरी तरफ़ से हटा कर एक तरफ़
लगाना उसको ध्यान कहते हैं।

(५८४) ज़्यादा से ज़्यादा मीआद ध्यानकी क्या है और किस जीवके लिये।

उ० ज़्यादा से ज़्यादा मीआद अंतर्मुहूर्त और यह ध्यान
उत्तम संहनन के मुनि के लिये है।

नोट–१ वज्र वृषभ नाराच।
२ वज्रनाराच।
३ नाराच।
यह उत्तम संहनन हैं।

(५८५) ध्यान के कै भेद हैं हरएकका नाम और उनकी तारीफ़ बतावो।

उ० ध्यान के ४ भेद हैं।
१ आर्त्त ध्यान--जिसमें बड़ी बाधा हो।
२ रौद्र ध्यान–जिसमें क्रूर कर्म होवें अर्थात दूसरेकी
बुराई चाहे और दूसरे को नुक़सान पहुंचाने के
ख़्यालात होवैं।
३ धर्मध्यान--जो धर्म सहित होवे।
४ शुक्लध्यान--सच्चे गुण के योग से आत्माका परि-
णाम मैलसे पाक होवे।

(५८६) कौन २ ध्यान मोक्ष का कारण हैं।

उ० धर्मध्यान और शुक्लध्यान कर्मके नाश करने वाले और
मोक्ष का कारण हैं और इस वास्ते उनको प्रशस्त कहते हैं

(५८७) कौन २ ध्यान संसारका कारण है।

उ० आर्त ध्यान और रौद्र ध्यान पापका कारण हैं इस वास्ते
इनको अप्रशस्त कहते हैं।

(५८८) आर्त ध्यान कै प्रकार का है हरएक का नाम और तारीफ़ बतलावो.

उ० आर्तध्यान ४ प्रकार का है

१ स्मृत समन्वाहार-ज़हर, दुशमन, हथियार, वगैरा ऐसी चीजें जो तबीअत के खिलाफ़ और नापसंद हैं उनके संयोग होनेपर उनके दूर करने के लिये बार२ ख्वाहिश करना—इसको अनिष्ट योग भी कहते हैं

२ ऊपर ज़ो चीज़ें बयान की गई हैं उनसे उलटी अर्थात् मनोज्ञ और पसंद आने वाली चीज़ों के वियोग होनेपर उनके मिलने का बार २ चिन्तवन करना उसे इष्टवियोग कहते हैं।

३ वेदना—बीमारी की तकलीफ़ का वारम्बार ख़याल करना

४ निदान---आगे के वास्ते भोगों की ख्वाहिश को निदान कहते हैं इसका बार बार ख़याल करना।

[५८९] आर्त ध्यान के ये चारों भेद किस २ के होते हैं

उ० १ अविरत अर्थात असंयमी के

नोट—अविरत मिथ्यात्व गुणस्थान से लेकर अविरत चतुर्थगुणस्थान तक जानना

२ देशविरत--संयमा संयम पंचमगुणस्थान।

३ प्रमत्त संयत--प्रमाद सहित संयमी के

(नोट) १५ प्रमाद सहित मुनि यति के आहार विहार क्रिया के आचरण वाले के जानना

भावार्थ—छठे गुणस्थान तक जानना।

(५९०) रौद्रध्यान क्यों होता है

उ० १ हिंसा।

२ अनृत

३ स्तेय ।

४ विषय ।

इनकी रक्षा से रौद्र ध्यान होता है ।

(५९१) रौद्रध्यान किन २ के होता है ।

उ० अविरति देश विरति दोनों के होता है

(५९२) रौद्रध्यान के के भेद हैं उनके नाम लिखो

उ० चार भेद हैं ।

१ हिंसानंद--हिंसा से ख़ुशी मानना ।

२ मृषानंद--झूट बोल कर आनन्द मानना

३ स्तेयानंद--चोरी कर कर आनन्द मानना

४ परिग्रहानंद--परिग्रह बढ़ने में आनन्द मानना

[५९३] धर्मध्यान किसको कहते हैं ।

उ० धर्म सहित ध्यान को धर्मध्यान कहते हैं ।

(५९४) धर्मध्यान के कै भेद हैं उनके नाम और तारीफ़ बतावो ।

उ० चार भेद हैं ।

१ आज्ञा विचय ।

२ अपाय विचय ।

३ विपाक विचय ।

४ संस्थान विचय ।

इनकी तारीफ़ें यह हैं ।

१ आगम अर्थात शास्त्र को सच्चा सर्वज्ञ का कहा हुवा मानकर उसके अर्थको विचार करना भगवत की आज्ञा का चिन्तवन करना ।

२ मोक्षमार्ग के वास्ते वार २ यह चिन्तवन करना

कि मिथ्या दर्शन मिथ्याज्ञान और मिथ्या चारित्र से जीव किसतरह छूटे।

३ ज्ञानावर्णी वग़ैरह कर्मों का द्रव्य क्षेत्र काल भाव की वजहसे जो नतीजा मिला उसका वार वार चिन्तवन करना।

४ तीनलोक के स्वरूप का वार २ चिन्तवन करना।

[५९५] शुक्लध्यान किसको कहते है।

उ० आत्माके द्रव्य गुण पर्याय का श्रेणी मांडकर चिन्तवन करना अर्थात द्रव्य पर्याय का श्रुतज्ञान पूर्वक चिन्तवन करना, और अर्थ व्यंजन योग संक्रमण अर्थात पलटना अर्थ से अर्थान्तर, व्यंजन से व्यंजनान्तर, योगसे योगांतर पलटना, इसका नाम शुक्ल ध्यान है।

[५९६] शुक्लध्यान का कौन २ सा भेद किस किस के होता है।

उ० पहिला और दूसरा भेद सकल श्रुत धारक श्रुतकेवली के होताहै और श्रुतकेवली के धर्म ध्यानभी होता है।

(५९७) किस किस योगवाले के कौन २ सा भेद शुक्ल ध्यान का होता है।

उ० पहिला भेद तीनों योगोंमें होताहै अर्थात जिसके तीनों योग होते हैं उसके प्रथक वितर्क वीचार होताहै जिसके तीनो योगों मेंसे सिर्फ़ एक योग होताहै उसको एकत्व वितर्क अवीचार होता है जिसके सिर्फ़ काय योग होता है उसके सूक्ष्म क्रिया प्रतिपाति होता है। जिसके कोई योग न होवे उसके व्युपीरत क्रिया निवृत्ति होता है।

(५९८) श्रुतकेवलीको सवितर्क वीचार क्यों कहते है।

उ० श्रुतकेवली वितर्क वीचार सहित होता है इस लिये

प्रथक्त वितर्क और एकत्व वितर्क दोनों ध्यान श्रुतकेवली के आश्रय होते हैं, इसी लिये इसको सवितर्क वीचार कहते हैं अर्थात उसके वितर्क और वीचार दोनों होते हैं।

(५९९ वितर्क और वीचार सहित कौन सा शुक्ल ध्यान होता है।

उ० वितर्क वीचार सहित पहला शुक्ल ध्यान होता है।

(६००) वीचार सहित और वितर्क सहित कौनसा भेद शुक्लध्यान का होता है

उ० दूसरा भेद शुक्लध्यान का होता है।

(६०१) वितर्क किसको कहते हैं।

उ० वितर्क नाम श्रुत का है।

(६०२) वीचार किसको कहते हैं इसको मुफ़स्सिल बयान करो।

उ० १ अर्थ।
२ व्यंजन।
३ योग।
इनका पलटना वीचार है।

नोट—अर्थ का मनशा तो यह है कि अभिधेय वचन से जो कहने योग्य है वह द्रव्य है यह पर्याय है।
व्यंजन शब्द से वचनका ग्रहण होता है।
योग--काय, मन, वचन कीक्रियाको कहते हैं।
द्रव्यको छोड़कर पर्यायमें आवे और पर्यायको छोड़कर द्रव्य में आवे यह अर्थ संक्रान्ति है।
एक श्रुत का वचन छोड़कर दूसरे को ग्रहण करे और दूसरेको छोड़कर तीसरेको ग्रहणकरे यह व्यंजन संक्रान्तिहै काय योगको छोड़कर वचन योग या मनयोगको ग्रहण करे, ऐसाही एकको छोड़कर दूसरेको ग्रहणकरै यह योग संक्रान्ति है।

[६०३] ऐसे पलटने में ध्यान क्यों कर क़ायम रहसकता है।

उ० जैसे एक चीज़ ठहरी हुई थी वैसेही दूसरीभी ठहरी हुई है इसलिये ध्यान क़ायम रहता है।

(६०४) बाह्य और आभ्यन्तर तपसे क्या २ फ़ायदा हो सकता है

उ० नयेकर्म का आश्रव नहीं होने देता इसलिये सम्वर होता है पहले बंधे हुवे कर्मको मिट्टी की तरह उड़ा देता है इसलिये निर्जरा होती है

[६०५] किस२ स्थानमें कितने २ गुणे कर्मों की निर्जरा होसक्ती है

उ० १ सम्यग्द्दष्टी।

२ श्रावक।

३ विरत।

४ अनन्तान बन्धि का वियोजक

५ दर्शन मोह क्षिपक

६ उपशमिक-आठवां नवां दशवा गुणस्थान में उपशम श्रेणी मांडनेवाला।

७ उपशान्त मोह-अर्थात ग्यारहवां गुणस्थान

८ क्षपक-क्षपकश्रेणी का माड़नेवाला।

९ क्षीण मोह- बारहवां गुणस्थान।

१० जिन—केवली

ऐसे १० स्थानों में एक से दूसरे में सिलसिले वार समय२ असंख्यात२ गुणे कर्मों की निर्जरा होती है।

(६०६) मुनियों के भेद बतलावो और यहभी बतलाओ कि यह सब निर्ग्रन्थ हैं या नहीं।

उ० मुनियों की ५ क़िस्में हैं

१ पुलाक-पुलाक के मानी धान्यके हैं पुलाकजो बिना

छड़ा चावलों का छिलका उतर जाय और चावलों पर लाली रहजाय तद्वत् परिणामों में अनुराग रहता है उसको पुलाक कहते हैं, जो उत्तर गुणों की भावना रहित हो व्रतों में भी किसी काल किसी क्षेत्र में पूरे न हों

२ वकुश-जिन के मूलगुण परिपूर्ण होवें और अपने शरीर उपकर्ण वग़ैरा की शोभा बढ़ाने की किसी क़दर ख़्वाहिश होवे ।

३ कुशील-जिस की दो क़िस्में:—

(क) प्रति सेवना कुशील-जिनके उपकरण शरीर वग़ैरा से विरक्तता होवे और मूल गुण या उत्तर गुण की परिपूर्णता है मगर उत्तर गुणमें कुछ विरोध ना होवे

(ख) कषाय कुशील—जिन्होंने संज्वलन कषाय अतिरिक्त (सिवाय) और कषायों को जीत लियाहो

४ निर्ग्रन्थ-जिनके मोह कर्म का उदय नहीं है और जैसे जलमें दंड डालने से लहर पड़ी और मिट जाती है, इसी तरह और कर्मों का उदय मंद होता है और ज़ाहिर होकर अपना फल नहीं देता ।

५ स्नातक—कुल घातिया कर्म का नाश करने वाले केवली भगवान स्नातक हैं

नोट--यह पांचो क़िसम सब निर्ग्रन्थ हैं।

(६०७) और किसर कारण से मुनियों में एक दूसरे से फ़र्क़ होता है

उ० १ संयम ।

२ श्रुत ।
३ प्रति सेवना ।
४ तीर्थ ।
५ लिंग ।
६ लेश्या ।
७ उपपाद ?
८ स्थान

॥ आन्हिक छठा, मोक्ष वर्णन ॥

(६०८) मोक्षकी तारीफ करो

उ० मिथ्यातादि जो बन्ध के कारण ऊपर बतलाये हैं उनके दूर होने से, और बन्धे हुवे कर्मों की निर्जरा होने से, कुल कर्मों का सर्वथा अभाव होता है उसको मोक्ष कहते हैं तशरीह १—मिथ्यादर्शनादिक जो बन्ध के कारण हैं उनके अभाव से तो नये कर्म नहीं बन्धते ।

और जो कर्म पहले बन्धे हुवे मौजूद थे उनकी निर्जरा होजावे ।

ऐसे दोनों सबब मौजूद होवें तब जितनी आयु कर्म की स्थिति बाक़ी रहजाती है उतनी ही उतनी स्थिति बाक़ी तीन अघातिया कर्मों की बाक़ी रहजाती है, और यह उसवक़्त होता है जब केवल ज्ञान होजाता है इन चारों अघातिया कर्मों की जिस२ क़दर स्थिति बाक़ी रह गई थी उसके एक ही समय में बिपर मोक्ष अर्थात अत्यन्त अभाव से मोक्ष होजाता है ।

(तशरीह २) जिसवक़्त जीव केवली के दरजे को पहुंचता है तो उसके चार कर्म बाक़ी रहते हैं

१ आयु ।

२ नाम ।

३ गोत्र ।

४ वेदनी ।

उस वक़्त आयुकर्म की स्थिति कम होती है और बाक़ी तीनों की ज़्यादा होती है ।

उसवक़्त आत्मा के प्रदेश कुल लोक में फैल जाते हैं इस तरह पर प्रदेशों के फैलने से चारों कर्मों की स्थिति बराबर होजाती है, क्योंकि क्षेत्र के स्पर्शन से कर्म के परमाणु बिला रस दिये झड़ जाते हैं, इसीका नाम केवल समुद्घात है जो ऊपर बयान किया जाचुका है। देखो सवाल न० ३८०

(तशरीह ३) आयुकर्म भव अर्थात् पर्याय की प्राप्ति का कारण है ।

(६०९) और क्या २ कारण मोक्ष के हैं ।

उ० औपशमिक वगैरा जो भाव पहले कहचुके हैं उनके अभावसे भी मोक्ष होताहै क्योंकि औपशमकादि भावों के नाशसे भी कर्मों का नाश होता है ।

(६१०) मुक्ति के जीव के कौन २ सा भाव बाक़ी रहता है ।

उ० १ केवल सम्यक्त्व ।

२ केवल ज्ञान

३ केवल दर्शन

४ केवल सिद्धत्व

इन चारों भावों के सिवाय और कोई भाव नहीं है।

(६११) जीव किस जगह तक चढ़ता है और किस जगह नहीं चढ़ता।

उ० जीव लोक के आख़ीर तक जाता है अलोक में नहीं जाता और जहां मुक्ति होवे अर्थात जहां कर्मों का नाश करै वहां नहीं ठहरता और दूसरी दिशाको भी नहीं जाता किन्तु ऊर्द्ध गमन कर मुक्ति स्थान को पहुंचता है।

(६१२) जीव कब चढ़ता है।

उ० जब कुल कर्मों का अभाव होजाता है तब चढ़ताहै।

(६१३) जीव किस २ हेतु से ऊपर को जाता है हरएक हेतुकी मिसाल औरनाम बतावो।

उ० चार हेतु से।

१ पूर्व के प्रयोग से—जैसे कुम्हार ने चक्र फेरा और वह फिरता रहा जब कि दंड हटा लिया तब भी फिरता रहा, क्योंकि पहली चलाई हुई ताकत उसमें बाकी थी; ऐसाही संसारी जीव ने जो मोक्ष होने के लिये बहुत दफ़े परिणाम चिन्तवन किया था सो शरीर से भिन्न होने पर वह अभ्यास मिट गया, फिरभी पहिले अभ्यास के मुवाफ़िक मुक्ति जीव के ऊर्द्ध गमन निश्चय कीजिये है।

२ असंग होने से-व्युपगत लेपालाम्बुवत्--जैसे तूम्बी मिट्टी के लेपसे पानी में पड़ी हुईथी फिर पानी से मिट्टी गल गलकर उतर गई, तब तूम्बी हलकी हो कर ऊपर आगई ऐसाही जीव कर्मों के बोझ से दबा हुवा है और उस कर्म की वजह से

आत्मा संसार में पड़ाहुवा है जब कर्म दूर होजाते हैं तब आत्मा ऊर्द्ध गमन करता है।

३ बन्ध के छेद से—कर्म बन्ध नाश होजाने से--अरण्ड बीजवत्--जैसे अरंड बीज डोड़े में है जब डोड़ा सूख गया तो तड़ख गया, और बीज निकल कर ऊपर चला, वैसेही मनुष्य अन्य भव के प्राप्त करनेवाले जो कर्म हैं उनके बंध में बंधा हुवा था इस बंधका छेद हुवा तब जीव स्वयं मुक्तिको गमन करताहै।

४ तथा गतिपरिणाम-अर्थात स्वभावसे-अग्निशिखा-वत्—जैसे चिरागकी लौ जब उस को चारों तरफ़ से हवा नहीं लगती तो अपने स्वभाव से ऊंचीही जाती है ऐसेही सब तरफ़ से कर्म जो विकारका कारण है दूर होजाता है, तो जीव जो अपने स्व-भाव से ऊर्द्ध गमन है इसलिये ऊंचाही जाता है

(६१४) अलोक में जीव हैं या नहीं अगर नहीं तो क्यों।

उ० अलोक में जीव नहीं हैं। वहां मुक्ति आत्मा नहीं जाता है, अगर धर्म काय वगैरह अलोक में भी होवें तो लोक अलोक में कुछ फ़र्क़ नहीं होता।

(६१५) सिद्धों में भेद किस वजहसे होता है हरएक का नाम बताओ।

उ० सिद्धों में भेद नहीं है, परन्तु उपचार से भेद कल्पना कीगई है।

१ क्षेत्र

२ काल

३ गति

४ लिंग

५ तीर्थ

६ चारित्र

७ प्रत्येक बुद्धि बोधित

८ ज्ञान

९ अवगाहना

१० अन्तर

११ संख्या

१२ अल्प बहुत्व

इनबारह अनुयोगों स सिद्धोंमें विकल्प नहीं है भेदहै।

अध्याय ५ पदार्थोंके जाननेका कारण

अन्हिक पहला प्रमाण और नय वर्णन ।

(६१६) जीव वगैरा ६ पदार्थों को किसर जरियेसे जानते हैं

उ० निम्नलिखित जरियों से जानते हैं ।

(१) प्रमाण

(२) नय

(३) (अ) निर्देश

(आ) स्वामित्व ।

(इ) साधन ।

(ई) अधिकरण ।

(उ) स्थिति

(ऊ) विधान ।

(४) (अ) सत ।

(आ) संख्या ।

(इ) क्षेत्र।
(ई) स्पर्शन
(उ) काल।
(ऊ) अन्तर।
(ऋ) भाव।
(ॠ) अल्प बहुत्व।

(नोट) इन सब को विस्तार पूर्वक आगे सिलसिलेवार बयान किया जावेगा

(६१७) प्रमाण की तारीफ़ करो।

उ० प्रमाण सम्यग्ज्ञानको कहते हैं, अर्थात संशय विपर्य्यय अनध्यवसाय के बिदून जो ज्ञान होवे उसको प्रमाण कहते हैं, यह स्वपर प्रकाशक है, अर्थात अपनेको और दूसरी चीज़ को रोशनी करनेवाला है इसको कोई दूसरी चीज़ रोशनी नहीं देती।

(६१८) नयकी तारीफ़ करो।

उ० इसी प्रमाणके एक हिस्सेको नय कहते हैं, नय से अस्ति नास्ति, नित्य, अनित्य, भेदाभेद, वग़ैरह, इनमेंसे एक या दूसरी बात पाई जाती है।
अनेकान्तातमक वस्तु के किसी एक धर्म विशेष को जाननेवाले ज्ञान को नय कहते हैं।

(तशरीह)
एक चीज़ में बहुतसे धर्म होते हैं उसमेंसे जिस स्वरूपको साबित करना हो उसको मुख्य मानकर ज्यों का त्यों ऐसे तौरपर साबित करने की कोशिश करना कि जिसमें कोई विरोध न आवे।

[६१६] प्रमाण और नय में क्या भेद है।

उ० चीज़के कुल स्वरूपको एक साथ प्रमाणसे जाना जाता है, और चीज़के एक हिस्सेको नय बयान करती है यही फ़र्क़ है।

धर्म और धर्मी दोनोंके समुदाय रूप वस्तुको जानने वाले ज्ञानको प्रमाण कहते हैं और उस, वस्तुके धर्मी अंश अथवा धर्म अंश के जाननेवाले ज्ञानको नय कहते हैं।

[६२०] प्रमाण के अधिगमके हेतु से कितने भेद हैं।

उ० प्रमाण के दो भेद हैं[१] प्रत्यूत्त, [२] परोक्त।

[६२१] प्रत्यक्ष की तारीफ़ करो।

उ० बिला दूसरी चीज़की मददके पदार्थ को स्पष्ट रूप जानने वाले प्रमाणको प्रत्यक्ष कहते हैं।

(६२२) परोक्ष की तारीफ़करो।

उ० जो दूसरे की मदद से पदार्थ को स्पष्टरूप जाने उस प्रमाणको परोक्ष कहते हैं।

[६२३] दूसरे तौर पर प्रमाणकी कै क़िस्म हैं हरएक का नाम और तारीफ़ बयान करो।

उ० १-स्वार्थ--जो ज्ञानस्वरूप है मसलन हरएक जीवका ज्ञान, हर एक जीव को ज्ञान होता है और मनः पर्य्यय केवल स्वार्थ रूप है।

२-परार्थ--जो बचन रूप है अर्थात् बचन के ज़रिये से जानाजाता है दूसरेके ज़रिये से जाना जाता है मसलन शास्त्र और श्रुतज्ञान ज्ञान रूप और बचन रूप भी है।

[६२४] प्रार्थ के इक़साम उनके नाम और हरएककी तारीफ़ बयानकरो।

उ० प्रार्थकी दो क़िसमें हैं।

१ ज्ञानात्मक--जो बग़ैर लफ़्ज़ के जाना जावे।

२ शब्दात्मक--जो शब्द के ज़रिये से जाना जावे।

(६२५) नयकी इक़साम और नाम और हरएक की तारीफ़ बतलाओ।

उ० नय दो क़िसम की हैं।

१ द्रव्यार्थिक नय--जो सिर्फ़ द्रव्यही के स्वरूपको बतलाताहै द्रव्यकी जो कुछ पर्यायहै वह सब उसके अन्दर शामिल है वह मुख़्तसर और मुजमिल तौर पर एक चीज़को बतलाती है।

२ पर्यायार्थिक--जो चीज़को ज़्यादा तफ़सील और तशरीह के साथ बतलाती है--और भाव निक्षेप को पर्यायार्थिक नय बतलाती है।

वस्तु के दो विषयहैं एक धर्म और दूसरा धर्मी जो धर्मको विषय करे वह पर्यायार्थिक और जो धर्मीको विषय करे वह द्रव्यार्थिक।

(६२६) तीसरी नय गुणार्थिक क्यों न कही।

उ० पर्याय दो क़िसम की है।

१ सहभावी जो साथ रहती है।

२ क्रिया भावी-जो नम्बर वार होती है।

गुण सहभावी पर्याय में दाख़िल है इस लिये पर्यायार्थिक नय में गुण और पर्याय दोनों शामिल हैं।

(६२७) प्रमाण और नय के जानने का क्या २ ज़रिया हैं और उस लिहाज़ से उस की कै इक़साम हैं हरएक का नाम और तारीफ़ बयान करो।

उ० दो ज़रिये हैं।

१ प्रमाण और नय यातो खुद अभ्यास अर्थात स्वतः से जाने जाते हैं जिन को स्वतः कहते हैं

(२) या शास्त्र या गुरुपदेश से जाने जाते हैं जिस को परतः कहते हैं।

(६२८) धर्म और धर्मी में क्या फ़र्क़ है

उ० वस्तु के स्वभाव का नाम धर्म है और जिस वस्तु में अनेकधर्म तिष्ठें उसका नाम धर्म्मी है।

जैसे जीव धर्मी है, ज्ञान दर्शन यह जीव के धर्म हैं, पुद्गल धर्मी है स्पर्श, रस, गंध, वर्ण यह धर्म हैं

(तशरीह) दुनिया में यही दो क़िस्में पदार्थ की हैं॥

(६२९) नय कौन से ज्ञान में मुख्य है

उ० नय की मुख्यता सिर्फ़ श्रुतज्ञान के ही विषय में है क्योंकि यह ज्ञान परोक्ष है और इन्द्रिय वग़ैरा के ज़रिये हासिल होता है।

(६३०) नय का विषय कौन से ज्ञान में नहीं है

उ० नय का विषय प्रत्यक्ष ज्ञान में नहीं है

(६३१) अधिगम के मानी, इक़साम, नाम, और हरएक की तारीफ़ बतलावो

उ० अधिगम के मानी हैं जानना पस अपना स्वरूप या दूसरे का स्वरूप आकार सहित निश्चय करना इसका नाम अधिगम है

अधिगम दो तरह से होता है।

(१) ज्ञानात्मक—अर्थात मति, श्रुति, अवधि, मनःपर्य्यय और केवल ज्ञान रूप है।

(२) शब्दात्मक-विधि और निषेध रूप श्रुत ज्ञान है।

(६३२) विधि और निषेध के मानी बतलावो.

उ० [१] एक चीज़ के मौजूद होने को विधि कहते हैं

[२] एक चीज़ के न होने को निषेध कहते हैं

(६३३) स्वामी भद्रसुमंतजी ने कितने पक्ष बताये हैं और उस हिसाब से कितने भंग होते हैं.

उ० स्वामी भद्रसुमन्तजी ने आप्त परिक्षा के लिये देवागम बनाया है उसको आप्त मीमांसा भी कहते हैं वहां दश पक्ष बतलाये हैं।

१ अस्ति।

२ नास्ति

३ एक

४ अनेक

५ नित्य

६ अनित्य

७ भेद अपेक्षा

८ अभेद अपेक्षा

९ देव

१० पौरुष

इन को सप्त भंग में ज़रब देने से ७० होगये

(६३४) सप्तभंगी किसको कहते हैं और यह क़ायदा किस काम में आता है

उ० वस्तु के स्वरूप को यथावत कहना उसको स्याद्वाद कहते हैं, उसी को सप्त भंगी कहते हैं--भंग करने के मानी हैं वस्तु के धर्मको भेदसे कहना अर्थात उनका फ़र्क़ दिखलाना

हर एक चीज़में द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव, चार तारीफ़ ज़रूर होती हैं इन्ही चारों के एतबार से सप्त भंगी के ज़रिये से चीज़ों को साबित करते हैं।

संख्यात प्रकार से कहाजाता है उसके मुख्य ७ भंग है

[१] स्यात् अस्ति-अर्थात किसीप्रकारसे होना, भावार्थ अपने द्रव्य क्षेत्र काल भाव से होना

[२] स्यात् नास्ति---अर्थात किसी प्रकारसे न होना, भावार्थ पर द्रव्य क्षेत्र काल भाव से न होना

[३] स्यात अस्ति नास्ति--अर्थात् किसी प्रकार से वोही वस्तु स्वचतुष्टय याने अपने द्रव्य, क्षेत्र, काल भावकी अपेक्षा अस्तिरूप है परचतुष्टय याने पर द्रव्य क्षेत्रकाल, भावकी अपेक्षा नास्ति रूप है

[४] स्यात अवक्तव्यं--अर्थात् किसी प्रकार से एक काल दोनोंको न कह सकना, भावार्थ वही वस्तु स्वचतुष्टय से अस्ति रूप है परच तुष्टय से नास्ति रूप है परंतु एक काल दोनों युगपत् कहे नहीं जासक्ते, क्योंकि दोनों अस्ति नास्ति धर्म वस्तु में एक काल में युगपत् विद्यमान हैं तथापि कहने में नहीं आते इसलिये स्यात् अवक्तव्य है।

५ स्यात् अस्ति अवक्तव्यं-अर्थात् वस्तु अस्ति नास्ति दोनों रूप है वह एक शकल कही नहीं जाती इसलिये अवक्तव्य है और वक्ताको अस्ति कहने से प्रयोजन है इसलिये स्यात् अस्ति अवक्तव्य है।

६ स्यात् नास्ति अवक्तव्यं-अर्थात् वस्तु अस्ति नास्ति

दोनों रूप हैं वह दोनों धर्म एक काल कहे नहीं जाते इसलिये अवक्तव्य है, और वक्ता को नास्ति कहनेसे प्रयोजनहै इसलिये स्यातनास्तिअवक्तव्यहै

७ स्यात् अस्ति नास्ति अवक्तव्यं-अर्थात् एक कालमें वस्तु अस्ति नास्ति रूप है और युगपत कहे नहीं जाते और वक्ता को क्रमसे कहने का प्रयोजनहैं इसलिये वस्तु स्यात् अस्ति नास्ति अवक्तव्यरूपहै

(६३५) असल भंग कितने हैं, फिर सात क्यों होगये।

उ० असिल भंग दो हैं।

१ अस्ति

२ नास्ति

१ ज्यादा विस्तार अर्थात तशरीह के वास्ते सात भंग होगये, एक चीज़ अपने स्वरूपके एतबार से मौजूद है यह अस्ति है मसलन घड़ा अपनी शकल के एतबार से अस्ति है।

२ वही चीज़ बएतबार दूसरी चीज़के स्वरूप के उसके स्वरूप के मुवाफ़िक नहीं है इसलिये नास्ति है। मसलन घड़ा दूसरी चीज़ की शकल का नहीं है, इस लिये औरों के एतबार से नास्तिहै। इसीको अभाव धर्म भी कहतेहैं, क्योंकि अभाव एक क़िस्म धर्मकी है जो वस्तु में मौजूद है।

(६३६) हरएक वस्तु के कै परिणाम हैं उनके नाम और तारीफ़ बतलावो

उ० हरएक वस्तु में दो क़िस्मका परिणाम है।

१ समान—अर्थात दो या ज़्यादह चीज़ें एक क़िस्मकी

हो उसको समान कहते हैं जैसे कि गौ जितनी हैं वह सब समान हैं, आदमी जितने है सब समान हैं।

२ असमान--जो समान न होवे उसको असमान कहते हैं, मसलन गौ और भैंस वग़ैरह।

(६३७) वस्तु के धर्म कितने हैं

उ० वस्तु के बेशमार धर्म हैं मसलनः—

[१] भेद बृत्ति, भेदोपचार--जब एक पदार्थ का फ़र्क़ दूसरे पदार्थ से दिखलाया जावे

(२) अभेद बृत्ति—अभेदोपचार--अर्थात जब पदार्थोंका बयान इस तरह पर किया जावे कि एक से दूसरे में फ़र्क़ न दिखलायाजावे।

(६३८) हर एक चीज़में कै तरह पर भेद होता है

उ० हर एक चीज़ में ८ तरह पर भेद होता है

(१) काल
(२) आत्म रूप।
(३) अर्थ।
(४) सम्बन्ध।
(५) उपकार।
[६] गुण देश।
[७] संसर्ग।
[८] शब्द।

(६३९) भेद बृत्तिऔर अभेद बृत्ति किस को कहते हैं

[क] अभेद बृत्ति उसको कहते हैं कि एक वक्त़ में सब को एक साथ बग़ैर किसी फ़र्क़ के बयान कियाजावे

१ काल-मसलन जिस वस्तु में जिस वक़्त अस्तित्व मौजूद है उस वक़्त वस्तु में जो और बेशुमार धर्म हैं वह भी मौजूद होवें।

२ आत्म रूप अर्थात जिस वस्तुमें अस्तित्व धर्म अपने रूप है वैसे ही अनेक धर्म सब अपने२ रूप मौजूद होवें

३ अर्थ से मुराद है आधार-अर्थात जिसके सहारे से रहे, जैसे कि अस्तित्व धर्म द्रव्य के सहारे पर है वैसे ही अनेक धर्म भी द्रव्य के सहारे हैं।

४ सम्बन्ध-जैसे कि अस्तित्व धर्म का तअल्लुक़ द्रव्य से है वैसेही औरबेशुमारधर्मों का सम्बन्ध द्रव्यसेहै

५ उपकार-अर्थात फ़ायदा, जैसे की अस्तित्व धर्मका द्रव्य को उपकार है, अर्थात अस्तित्व धर्म ही की वजह से द्रव्य क़ायम है ऐसेही बेशुमार गुणों का उपकार द्रव्य के लिये है

६ गुण देश--अर्थात चेत्र [जगह]-जैसी अस्तित्व धर्म की जगह द्रव्य में है वैसेही और गुणों की भी वही जगह है

७ संसर्ग--अर्थात मिलाप जैसे अस्तित्व धर्म द्रव्य से मिला हुवा है वैसेही और धर्म भी मिले हुवे हैं

८ शब्द--अर्थात वचन जैसे द्रव्यके अस्तित्व धर्मको लफ़्ज़ के ज़रिये से बयान करेंगे वैसेही अन्य धर्मोंको शब्द से वर्णन करेंगे।

नोट-यह अभेद वृत्ति उसवक़्त होगी जिसवक़्त द्रव्यार्थिक नय मुख्य होगी और पर्य्यार्थिक नय गौण होगी॥

(ख) भेदवृत्ति--अर्थात जिसवक्त पर्य्यायार्थिक नय मुख्य और द्रव्यार्थिक नय गौण होती है तब यही आठ बातें उस वस्तु में भेद अर्थात फ़र्क़ करदेती हैं।

१ काल-जैसे जीव में जिसवक्त मनुष्य पर्य्याय का अस्तित्वहै उसवक्त दूसरी पर्यायका अभावहै

२ आत्मरूप—जैसे कि जो रूप अस्तित्व धर्म का द्रव्य में है वह दूसरे धर्म का रूप नहीं है हर एक धर्म का रूप दूसरे से जुदा है।

३ अर्थ—जैसे अस्तित्व धर्मका सहारा द्रव्य में है अगरचे वैसाही सहारा और धर्मों का भी है मगर सहारा हरएकका दूसरे से जुदा है मिलाहुवा नहीं है।

४ सम्बन्ध--इसीतरह अगरचे हरएक द्रव्यका सम्बन्ध द्रव्य से है मगर वह सम्बन्ध एक धर्म का दूसरे से जुदा है।

५ उपकार-इसीतरह हरएक धर्म को उपकार एक दूसरे से जुदा है।

६ गुणदेश-इसी तरह हरएक धर्म का क्षेत्र दूसरे धर्म से जुदा है।

७ संसर्ग-इसी तरह एक धर्मका संसर्ग दूसरे धर्म से जुदा है।

८ शब्द-इसीतरह एक धर्मका शब्द दूसरेसे जुदाहै

[६४०] स्वात्मा और परात्मा किसको कहते हैं।

उ० हरएक चीज़की नाम, स्थापना, द्रव्य, भावसे व्यवहार में

प्रवृत्तिहै इसलिये जिसमें यह चारों निक्षेप मौजूद होवें तो वह उसका स्वात्मा है और अगर चारों निक्षेप नहीं हों वह उसका परात्मा है।

(६४१) द्रव्यार्थिक नय, व्यवहार नय, और ऋजुसूत्र नय, इन सबकी तारीफ़ करो।

उ० १ एक घड़ा और चीज़ों से जुदा है और उसी क़िस्म के सब घड़ों को घड़ा कहते हैं यह द्रव्यार्थिक नय का उदाहरण है।

२ बहुत से घड़ों में से एक घड़ा खास निशानी से छांट लिया यह व्यवहार नयका उदाहरण है।

३ घड़ा उसवक्त कहा गया जबकि वह हालत मौजूदा में घड़े का काम देरहा है, जैसे कि पानी भरा हो। पहिली या पिछली हालत के एतबार से घड़ा नहीं कहते, क्योंकि मुमकिन है कि बन कर फूटजाये, या काम न दिया हो पस जबकि उसने घड़े का काम नहीं दिया वह घड़ा कभी हुवा नहीं।

(६४२) घट और अघटकी पूरी बहस बयानकरो और उसकी कै क़िस्म हैं

उ० १ घड़े को हालत मौजूदा में बएतबार उसकी शकल के घड़ा कहते हैं, क्योंकि घड़ा अपनी शकलहीकी वजह से घड़ाहै, जिसमें वह शकल न होवे वह घड़ा नहीं है।

२ घड़े को मिनजुमला चारतारीफ़ों अर्थात स्पर्श रस, गन्ध, वर्ण के सिर्फ़ वर्ण अर्थात घड़े के एतबार से घड़ा कहते हैं क्योंकि रूप तो आंखसे नज़र आता है बाक़ी और तारीफ़ें आंखसे नज़र नहीं आतीं।

३ घड़ेको बएतबार लफ़्ज़के घड़ा कहते हैं मगर उस वक्त,

जब कि वह घड़े का काम दे रहा हो और बाकी उससे जुदा है।

४ घड़े को देख कर या ज़बान से कहकर या ख़्याल से जो घड़े की सूरत का ज्ञान होवे वह घडा है, असिल जो चीज़ घड़ा है वह उससे जुदा है।।

५ उपयोग-उसको कहते हैं कि आत्मा का और दूसरी चीज़ का ज्ञान में तअल्लुक़ होजावे तो यह तअल्लुक़ सबसे पहिले होजावे, और जबतक रहे [जैसेकी एक घड़े को आंख देखतेही आत्मा को उस घड़े के आकारका ज्ञान हुवा] सबसे पहिला समय ज्ञान होनेका स्वात्मा है वाकी वक्त परात्मा है।

(६४३) घट और अघट एकही चीज़ हैं या जुदागाना चीज़ हैं

उ० यहांतक घट और अघट को जुदा साबित किया है मगर कहते हैं कि घट और अघट दो चीज़ें जुदा नहीं हैं दोनों एक ही हैं इस लिये एक से दूसरे को जाना जाता है, कथंचित् एक है कथंचित् भिन्न हैं विवक्षित अपेक्षा से

(६४४) जैन मत में के प्रमाण माने गये हैं

उ० दो प्रमाण

१ प्रत्यक्ष

२ परोक्ष

(६४५) नय के कै भेद हैं हर एक का नाम और तारीफ़ बतलाओ

उ० नय के सात भेद हैं

[१] नैगम

[२] संग्रह

[३] व्यवहार

[४] ऋजु सूत्र
[५] शब्द
[६] समभिरूढ़
[७] एवंभूत

१ नैगम उसको कहते हैं कि जो चीज़ अपने सामने मौजूदा वक्त में पूरी बनी हुई तैयार नहीं हुई थी उस चीज़ को अपने ज्ञान में पूरी बनी हुई समझ लेना--पस इस फ़र्ज़ करने की मन्शा को नैगम नय कहते हैं, जैसे कि एक शख़्श कुल्हाड़ा लिए जारहा है किसी ने पूछा कहां जाते हो तो कहाकि मैं ढोल लेने जाताहूं, हालांकि मन्शा उसका यह है कि लकड़ी काट कर लावेगा तब ढोल बनावेगा--

नोट--नैगम दर असल संकल्प करने को कहते हैं।

२. संग्रह के मानी हैं मजमुए के--पस संग्रह नय उसको कहते हैं कि एकही नाम की चीज़ों में जो छोटी बड़ी वग़ैरह का भेद होवे उस भेद को भेद न समझना और सबको एकही चीज़ समझना, मसलन घड़ा कहने से सब क़िस्म के घड़े समझना।

३ व्यवहार--संग्रह से जो चीज़ क़बूल करली गई थी अब उसकी तफ़सील करना-अर्थात् जहांतक उस की क़िस्में और दरजे हो सकें वहां तक भेद दिखलाना, जैसे कि आदमी यह संग्रह नय है, इस में सब आदमी दाख़िल हैं, अब कहना कि हिंदुस्तानी, काबुली, जापानी, चीनी वग़ैरह, फिर यह कहना कि हिन्दू, मुसलमान, ईसाई, फिर यह कहना वैश्य, ब्राह्मण, क्षत्री,

शूद्र, फिर यह कहना कि गोरा काला, छोटा, बड़ा आदि, अमीर, ग़रीब, वग़ैरह, ग़रज़ इसी तरह दरजे ब दरजे बयान करते चले-जावें जहां तक कि ऋजु सूत्र नय आवे इसी का नाम व्यवहार नय है

४ ऋजुसूत्र-ऋजुके मानी सीधा, सूच्यते के मानी बयान करना पस जिस नय से सीधा बयान किसी वस्तु की मौजूदा हालत का होवे वह ऋजुसूत्र का विषय है, जिस में पहली अगली अवस्था पर्याय का कुछ विचार न हो-जैसे सूर्य को देखकर सूर्य कहना

५ शब्द—जो

१ लिंग

२ संख्या।

३ साधन के

दोष को दूर करनेवाली होवे वो शब्दनय है मसलन एक मानीके वास्ते चन्द लफ़्ज़हों जिसमें से बाज़ स्त्रीलिंग और बाज़ पुल्लिंग हों, जैसे कि निर्वाण हुवा और मुक्ति हुई, मतलब दोनोंका एक ही है। अब किसी ऐसे फ़िक़रे के साथ बयान करने में कि जिसके साथ व्याकरणके क़ायदे के मुवाफ़िक पुल्लिंग कहना चाहिये था, लेकिन बजाय उसके स्त्रीलिंग बयान कर दिया, यह व्याकरण का दूषण शब्द नय से दुरुस्त होगया।

६ समभिरूढ़--एक लफ़्ज़ के बहुत मानी होवें उन मान्यों में से एक मशहूर मानी लेलेना समभिरूढ़ कहलाता है।

मसलन जैसे कि गौके बहुत मानी हैं, मगर चलते हुए बैठेहुये सोतेहुये सब अवस्था में उस जानवर को जिसको गो कहते हैं गो कहना सम्भिरूढ़ है

नोट—एक लफ्ज़ जिसके बहुत से मानी होवें उन में विख्यात मानी को ग्रहण करना सम्भिरूढ़ कहलाता है।

७ एवंभूत--जो पुरुष जिस नामसे प्रसिद्ध हो और जिसवक्त वही क्रियाकरै अर्थात अपने नामानुसार क्रिया करे उसको एवम्भूत कहते हैं, जैसे राजा राज्यसिंहासन पर बैठ कर न्याय करे उसवक्त उसको राजा कहिये, यह ऐवंभूत नय का विषय हैं।

(६४६) हेतू और नय में क्या फ़र्क़ है

उ० हेतु वह अलामत है जिससे कोई चीज़ जानी जाती है और वह उसी चीज़ में रहती है उसी को वस्तु का धर्म कहते हैं

नय श्रुत ज्ञान का अंश अर्थात जुज़ है, नय के ज़रिये से उस हेतु से वस्तु जानी जाती है

(६४७) जो नय ऊपर बयान की हैं उनमेंसे कौन नय किस २ किस्मकी है

उ० ऊपर नयकी दो क़िस्में बयान करचुके हैं।

१ द्रव्यार्थिक

२ पर्य्यायार्थिक

नयगम, संग्रह, व्यवहार, द्रव्यार्थिक हैं, और ऋजुसूत्र, शब्द, सम्भिरूढ़--एवंभूत, पर्य्यायार्थिक हैं और इसी में गुणभी दाखिल हैं।

नोट—नैगम, संग्रह, व्यवहार, और ऋजुसूत्र को अर्थ नयभी कहते हैं क्योंकि यह पदार्थ को मुख्य करके बतलाती है।

शब्द समभिरूढ़-एवम्भूत को शब्दनय भी कहते हैं क्योंकि यह पर्याय को मुख्य करके बतलाते हैं।

(६४८) नैगम नयके कितने भेद हैं उनके नाम और तारीफ़ बयान करो।

उ० १ द्रव्य नैगम-जब द्रव्य का संकल्प करे, जैसे शुद्धात्मा का संकल्प करना।

२ पर्याय नैगम-जब पर्याय का संकल्प करे, जैसे अर्हंत परमेष्टी की अवस्था का संकल्प करना।

३ द्रव्यपर्याय नैगम-जब द्रव्य, पर्याय दोनों का संकल्प करे, जैसे सिद्ध स्वरूप अर्हन्त का संकल्प करना

(६४९) नैगम नयके हरएक भेदके भेद बतलावो।

उ० (अ) द्रव्य नैगमके दो भेद।

१ शुद्ध द्रव्य नैगम

२ अशुद्ध द्रव्य नैगम

(आ) पर्याय नैगम के तीन भेद हैं

१ अर्थ पर्याय नैगम

२ व्यंजन पर्यायनैगम

३ अर्थ व्यंजन पर्याय नैगम।

(इ) द्रव्यपर्याय नैगम के चार भेद।

१ शुद्ध द्रव्यार्थ पर्याय नैगम

२ अशुद्ध द्रव्यार्थ पर्याय नैगम।

३ शुद्धद्रव्य व्यंजन पर्याय नैगम

४ अशुद्ध द्रव्य व्यंजन पर्याय नैगम

(६५०) कुल भेद नैगम नयके कितने हैं।

उ० कुल नौ ९ भेद हैं।

(६५१) पर्यायकी कितने क़िस्मे हैं उनके नाम और तारीफ़ बयान करो
उ० दो क़िस्म
(१) अर्थ पर्याय--अर्थात थोड़ी देर क़ायम रहने वाली
(२) व्यंजन पर्याय--अर्थात बहुत देर क़ायम रहनेवाली

(६५२) द्रव्य के कै भेद हैं
उ० द्रव्य के दो भेद हैं।
[१] शुद्ध--अर्थात ख़ालिस वोही चीज़ जैसे सोना पीतत्व, गुरुत्व, स्निग्धत्व, कांतिमत्व, आदि गुणों से अभिन्न है
[२] अशुद्ध--अर्थात वोही चीज़ जिसमें दूसरे का ज़रिया होवे, मसलन सोने के पीतत्व [पीलापन] गुरुत्व [भारीपन] स्निग्धात्व (चिकनापन) कांतिमत्व [चमकदारपना] आदि गुण हैं।

(नं.८/१-पस इन्हीं हालतों के एतबार से जब बयान किया जावेगा तो चीज़ और जिस हालत का बयान किया जायगा वह उसी किस्म की नय कहलाती है

नोट-२ भेद, कल्पना, निरपेक्ष जो होता है वह तो शुद्ध द्रव्यार्थिक का विषय है, जैसे द्रव्य जो है सो अपने गुणपर्याय से अभिन्नभेद कल्पना सापेक्षजो होताहै वह अशुद्ध द्रव्यार्थिक का विषय है, जैसे आत्मा के दर्शनज्ञानादि गुण हैं

(६५३) एक नयको दूसरी नय से कमी बशी में क्या फ़र्क है इसकी मिसाल बतलावो।
उ० यह नय एक दूसरे के विषय से कम होती चली जाती हैं जैसे कि एक जानवर बोलता था एक ने कहा कि गांवमें बोलता है

दूसरे ने कहा कि यह दरख्त पर बोलता है तीसरे ने कहा कि एक बड़ी डाले पर बोलता है
चौथे ने कहा कि एक छोटोसी शाख जो बड़ी डाले के ऊपर है उसपर बोलता है।
पांचवें ने कहा कि उस छोटी शाखके एक हिस्सेपर बोलता है।
छट्टे नें कहा कि यह अपने शरीरमें बोलताहै सातवें ने कहा कि यह अपने गलेमें बोलता है।

(६५४) नय के इसकदर भेद क्यों माने गये हैं।

उ० चूंकि द्रव्य में बहुत क़िस्म की ताक़तें हैं उनका स्वरूप बिना नयके नहीं कहा जासक्ता, और न पदार्थ के गुण, पर्यायों की सूक्ष्मता का यथावत ज्ञान होसक्ता है इसलिये नय मानी गई हैं इसीका नाम सम्यग् ज्ञान है अर्थात् नय विवक्षा से ही सम्यग्ज्ञान की प्राप्ति हो सक्ती है

(६५५) दरअसल नय कितनी हैं

उ० नय चक्र ग्रंथ में लिखा है कि असल में दो नय हैं
(१) निश्चय।
(२) व्यवहार

(६५६) निश्चय नय के साबित करने को कौनर नय दरकार हैं

उ० दो
(१) द्रव्यार्थिक
(२) पर्यायार्थिक

(६५७) उपनय के कितने भेद हैं हर एक का नाम और तारीफ़ बतलाओ

उ० तीन भेद हैं
(१) सद्भूत व्यवहार

(२) असद्भूत व्यवहार।

(३) उपचरित सद्भूत व्यवहार

(६५८) सद्भूत व्यवहार के कितने भेद हैं हरएकका नाम और तारीफ़ बतलाओ।

उ० दो भेद हैं।

१ सिद्ध सद्भूत व्यवहार।

२ असिद्ध सद्भूत व्यवहार।

सिद्ध सद्भूत व्यवहार उसको कहते हैं कि जिस से गुण और गुणी में कर्त्ता और कर्म और करण सम्प्रदान, अपादान, अधिकरण, लगाने की ख्वाहिश से संज्ञा, संख्या, लक्षण और प्रयोजन की अपेक्षा शुद्ध द्रव्य में फ़र्क़ बयान करें।

नोट—कर्त्ता के मानी फ़ाइल अर्थात् काम करनेवाला जैसे कुम्हार।

कर्म के मानी मफ़ऊल अर्थात् जो काम बनाया जावे जैसे घड़ा।

करण के मानी वो औज़ार जिससे बनाया जावे जैसे डण्डा।

सम्प्रदान वह ग़रज़ जिस काम के लिये कोई चीज़ बनाई जावे जैसे पानी भरने की ग़रज़।

अपादान—वह चीज़ जिस से बनाया जावे जैसे मिट्टी।

अधिकरण-वह जगह जिस में बनाया जावे।

नोट—संज्ञा के मानी नाम, संख्या के मानी शुमार, लक्षणके मानी स्वरूप। प्रयोजनके मानी मतलब।

(६५९) असद्भूत व्यवहार किस को कहते हैं।

उ० उसको कहते हैं कि एक ही द्रव्य में दूसरे के सबब

से सतमें खराबी पड़गई उस एतबार से संज्ञा, संख्या लक्षण और प्रयोजन में फ़र्क़ बयान करें।

(६६०) असद्भूत व्यवहार के इक़साम उनके नाम और हर एककी तारीफ़ बयान करो।

उ० असद्भूत व्यवहार उसको कहते हैं, कि एक वस्तु का गुण दूसरी वस्तु में बयान करना--उसके तीन भेद हैं,

(१) समान जाति असद्भूत व्यवहार—मसलन बहुत से ज़र्रे मिल कर एक स्कन्ध की पर्य्याय बन गए उसको पुद्गल द्रव्य बयान करना।

(२) असमान जाति असद् भूत व्यवहार--जिस में एक इन्द्रिय वग़ैरह देह जो पुद्गल के स्कन्ध हैं उनको जीव कहें।

(३) मिश्र असद्भूत व्यवहार-जैसे मति ज्ञान को मूर्तिक कहना क्योंकि वह ज्ञान मूर्तिक से ही पैदा होता है इसलिये उस को मूर्तिक कहना

दरअसल मतिज्ञान जीव का धर्म है जो कि मूर्तिक है मगर उसको पुद्गल का धर्म कहा गया।

(६६१) उपचरित व्यवहार किसको कहते हैं।

उ० इसके असली मानी यह हैं कि नक़ली चीज़ को असली बयान करना जैसे मिट्टी का घड़ा जिस में घी भरा हो उसको घी का घड़ा कहना।

(६६२) उपचरित व्यवहार के कितने भेद हैं उनका नाम बयान करो

उ० उपचारित व्यवहार के बहुत भेद हैं मसलन

(१) द्रव्य में पर्याय का उपचार।

[२] गुण में पर्याय का उपचार।

[३] पर्याय में द्रव्य का उपचार।

(४) पर्यायमे गुणका उपचार।

[५] द्रव्य में गुण का उपचार।

और यह भेद उस वक्त पैदा होते हैं जब कि द्रव्य और गुण और पर्याय को आपस में एक दूसरे से मिलावें जैसे कि एक प्रदेशी परमाणु को बहु प्रदेशी पुद्गल द्रव्य कहना।

(६६३) एक प्रदेशी परमाणु को बहुप्रदेशी किस तरह कहसकते हैं।

उ० एक प्रदेशी परमाणु में बहु प्रदेशी स्कंध में मिलने की शक्ति है इसलिये उसको काय माना गया है।

नोट--इस से साबित हुआ कि द्रव्य में पर्याय का उपचार है।

(६६४) गुण में पर्याय का उपचार बतलाओ और मिसाल दो।

उ० मति ज्ञानका ज्ञान कहना यह गुणमें पर्याय का उपचार है

(६६५) पर्याय में द्रव्य का उपचार बयान करो और मिसाल दो

उ० स्कन्ध पर्याय को पुद्गल द्रव्य कहना यह पर्याय में द्रव्य का उपचार है।

[६६६] पर्यायमें गुण का उपचार की मिसाल दो

उ० किसी खूबसूरत आदमी को देखकर खूबसूरत बयान करना यह पर्याय में गुण का उपचार है।

(६६७) इसकी मिसालदो कि द्रव्य में गुण का उपचार है

उ० महल को सफ़ेद कहना यह द्रव्य में गुणका उपचार है.

(६६८) उपचार के उपचारपर कौन२ भेद लगते हैं

उ० उपचार के उपचार पर यह तीनों भेद लगाना चाहिये.

(१) समान जाति।

(२) असमान जाति
(३) मिश्र

मसलन कोई शख्स अपने बेटे को बेटा कहै तो अव्वल तो बेटा भी उपचार ही है क्योंकि संसार में ऐसे तअल्लुक़ात व्यवहार से क़ायम किये गए हैं यह सब उपचार हैं।

इसमें बेटेको अपना कहना यह उपचार परउप चारहै यह मिसाल समान जाति की है।

[२] कपड़े ज़ेवर वग़ैरह को अपना कहना यह असमान जाति है

(३) यह कहना कि देश, शहर, क़िला ये मेरे हैं ये मिश्र उपचार का उपचार है

नोट—इसीतरह व्यवहार नय के बेशुमार भेद हैं

(६६६) नय चक्र में द्रव्यार्थिक नय के कितने भेद हैं हरएक का नाम और तारीफ़ बतलावो

उ० नयचक्र में द्रव्यार्थिक नय के १० भेद हैं

१ कर्मोपाधि निरपेक्ष-अर्थात बिला कर्मों की अपेक्षा के जैसे सिद्ध और संसारी जीव बराबर हैं क्योंकि जीव दोनों में एक ही है

२ उत्पाद व्यय गौण कर केवल ध्रौव्यरूपसत्ता ग्राहक-अर्थात सत्ता को ध्रौव्य रूप ग्रहण करे अर्थात किसी चीज को मौजूद समझै उत्पाद व्यय को मुक़द्दम न समझै, मसलन यह कहना कि सत रूप नित्य द्रव्य है

३ भेद निरपेक्ष-अर्थात बिला लिहाज़ फ़र्क़ की निसबत के,द्रव्यको और उसके गुणको एक समझना, मसलन गुण पर्याय सेद्रव्य अलहदा नहीं है

४ कर्मोपाधिसापेक्ष—अर्थात् कर्मोंके संबन्धकी अपेक्षा, मसलन यह कहना कि जीव रागादि रूप है।

५ उत्पादव्यय मुख्यग्राहक--अर्थातउत्पाद व्यय को मुक़द्दम समझे और ध्रौव्यको मुक़द्दम न समझे, मसलन यहकहना कि सत् है वो उत्पाद व्यय ध्रौव्यरूप है—

६ भेदसापेक्ष—अर्थात फ़र्क़ की निसबतका लिहाज़ रखना, मसलन द्रव्य है वो गुण पर्यायवान है।

७ अनवय द्रव्यार्थिक--अर्थात वो गुण जो द्रव्यके साथ में हमेशा लाज़िमी तौर पर रहताहै, मसलन आगमें गरमी।

८ स्वद्रव्यादिग्राहक—अर्थात द्रव्यक्षेत्र काल भाव कर द्रव्य सतरूप है।

९ परद्रव्यादिग्राहक—अर्थात परद्रव्य क्षेत्र काल भाव कर द्रव्य असत् रूप है।

१० परम्भावग्राहक—अर्थात जीव द्रव्यको शुद्ध अशुद्ध उपचार रहित चैतन्यमात्र बयान करै।

(६७०) पर्यायार्थिकनय के कितने भेदहैं हरएकका नाम औरतारीफ़बतलावो

उ० ६ भेद हैं।

१ अनादि नित्य पर्यायग्राही—अर्थात ऐसी पर्याय को ग्रहण करनेवाला जो अनादि होवें और नित्य होवे, जैसे चन्द्रमा वगैरह विमान, मेरु पर्वत वगैरह नित्यहैं

२ सादिनित्यपर्यायार्थिक--जैसे कर्म नाश करके सिद्धहोवें।

३ सत्ता गौणकर उत्पाद व्ययरूप पर्यायार्थिक--जैसे पर्याय एक समय ठहरनेवाली होती है,अर्थात सूक्ष्म पर्याय हरसमय बदलती रहती है।

४ उत्पादव्यय ध्रौव्यरूप सत्ताग्राही पर्यायार्थिक--अर्थात हर समय में पर्याय उत्पाद व्ययध्रौव्य रूप है।

५ कर्मोपाधि निरपेक्ष स्वभाव नित्य शुद्ध पर्यायार्थिक-अर्थात जिसमें कर्म की अपेक्षा न कीजावे और स्वभावही से नित्य शुद्ध पर्याय होवे।
मसलन यह कहना कि संसारी जीवकी पर्यायसिद्ध की पर्याय की मुवाफ़िक़ शुद्ध है।

६ कर्मोपाधि सापेक्ष अशुद्ध अनित्य पर्यायार्थिक, मसलन यह कहना कि संसारी जीव उपजता है और नाश होता है।

आन्हिक दूसरा निर्देशआदि वर्णन।

(६७१) निर्देश, स्वामित्व साधन, अधिकरण, स्थिति और विधान इन सब की तारीफ़ बयान करो।

१ निर्देश—सिर्फ़ नाममात्र स्वरूप का बयान करना, मसलन सूत्रमें कहाहै कि तत्वार्थश्रद्धान सम्यग्दर्शनहै

२ स्वामित्व—उसका मालिक कौन है।

३ साधन--किस कारण से है।

४ अधिकरण--किसके आधार से है।

५ स्थिति--कितने दिन से है और कितने दिन रहैगा

६ विधान--कितनी क़िस्म से है।

(६७२) हरएक गतिमें किस २ जीव के कौन २ सम्यक्त्व होता है।

१ नारकी जीवों के पर्याप्तिक अवस्था में सातों नरकों में उपशम सम्यक्त्व और क्षयोपशम सम्यक्त्व होसक्ता हैऔर प्रथम नरकमें पर्याप्ति और अपर्याप्त अवस्था में भी क्षायक और क्षयोपशम सम्यक्त

होताहै क्योंकि जिस जीवके निकाचित नरक आयु का बन्ध होजाय और सम्यक्त पीछे होय तो भी सम्यक्त लियेहुये भी नरक १ में जाता है।

२ देवगति में तीनों प्रकार का सम्यक्त्व पर्याप्तिक और अपर्याप्तिक जीवों के होसक्ता है।

३ मनुष्य गतिमें पर्याप्तिक और अपर्याप्तिकके क्षायिक सम्यक्त और क्षयोपशम सम्यक्त्व होसक्ता है मगर उपशम सम्यक्त्व सिर्फ़ पर्याप्तिक केही होसक्ता है और मनुष्यनीके तीनोंहीहोसक्ते हैं सो पर्याप्तिक के ही हैं और इसके क्षायक सम्यक्त्व भाव वेदही से है

४ तिर्यंचगति में पर्याप्त के उपशम सम्यक्त्व हो सक्ता है तिर्यंचगति में पर्याप्ति और अपर्याप्ति के क्षायक सम्यक्त्व और क्षयोपशम सम्यक्त्व होसकता है, तिर्यंचनीके क्षायिक सम्यक्त्व नहीं होसकता और उपशम क्षयउपशम सम्यक्त्व पर्याप्तिकेही होसकता है।

(६७३) लेश्याकी तारीफ़ और हरएकका नाम बयान करो, ये रंग क्यों क़ायम कियेगये हैं।

उ० कषाय से रंगी हुई जो योगों की प्रकीर्ति अर्थात कषाय से मिले हुये मन, वचन, काय, के योग उसको लेश्या कहते हैं, लेश्या ६ हैं।

१ कृष्ण अर्थात काला।
२ नील अर्थात नीला।
३ कापोत अर्थात कबूतर के रंग (धूसर)
४ पीत अर्थात पीला।
५ पद्म अर्थात लाल।

६ शुक्ल अर्थात सफ़ेद।
ये रंग के नाम इस वजह से बतलाये गये हैं कि जैसे २ परिणामोंमें कषायों की कमी ज़्यादती होती है उसी क़दर गहरे या हलके रंगकी अपेक्षा समझ लियाजाता है।

(६७१) मार्गणा की तारीफ़ तादाद और नाम बयान करो।

उ० जीव के १४ स्थान हैं अर्थात जीव १४ जगह पाया जाता है उसी को मार्गणा कहते हैं।

१ गति।
२ इन्द्रिय
३ काय
४ योग
५ वेद
६ कषाय
७ ज्ञान
८ संयम
९ दर्शन
१० लेश्या
११ भविया
१२ सम्यक्त्व
१३ संज्ञी
१४ आहारक मात्र

सर्वजीव इन१४ मार्गणां में हैं अर्थात तलाश करिये है

(६७१) सम्यक्त्व की अधिकरण क कितने भेद है।

उ० दो

१ वाह्यअधिकरण
२ आभ्यन्तर अधिकरण।

(६७६) आभ्यन्तर अधिकरण क्या है और वाह्यअधिकरण क्या है।

उ० आभ्यन्तर अधिकरण तो आत्माही है क्योंकि आत्माही के सहारे से सम्यक्त्व रहता है।

२ वाह्य अधिकरण क्षेत्र है अर्थात तीनलोक में जो त्रस नाड़ी है।

(६८७ लोक का विस्तार और शकल वतलावो।

उ० लोककी कुल उंचाई चौदह राज है और नीचेसे चौड़ाई सात राजू है और वीच में एक राजू है ऊपरभी एकराजू है और दक्षिण उत्तर सब जगह सात राजू बराबर है
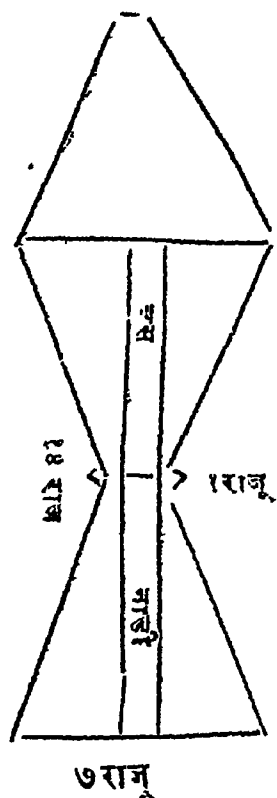
(६७८) त्रस नाडी किसको कहते है।

उ० नीचे से ऊपर तक चौदह राजू की ऊंचाई है और एक राजू की चौड़ाई है इस जगह को त्रसनाड़ी कहते हैं अर्थात् उसीमें त्रसजीव पैदा होते हैं, उससे बाहर त्रस जीव पैदा नहीं होते हैं सिवाय एकेन्द्रिय के, इसलिये जो जीव लोक के, उस हिस्से में है जिसका नाम त्रस नाड़ी है उन्हींको सम्यक्त्व होसकता है।

इससे यह सिद्धहुवा कि बाह्य आधार अर्थात ज़ाहिरी सहारा सम्यक्त्व का त्रसनाड़ी है।

(६७९) उपशम सम्यक्त्व क्षय पशम और क्षायिक इनकी कितनी स्थिति है

उ० उपशम सम्यक्त्व की स्थिति सिर्फ अंतर्मुहूर्त है।

नोट—अन्तर्मुहूर्तके भेद बहुत यानी असंख्यातभेद हैं,

क्षयोपशमकी स्थिति कमसे कम अन्तर्मुहूर्त ज़्यादा से ज़्यादा ६६ सागर है।

क्षायिक की स्थिति अनन्तानन्त अर्थात बेशुमार है क्योंकि क्षायिक सम्यक्त्व होकर कभी छूटता नहीं, मगर संसार की अपेक्षा यह कहा जाता है कि क्षायिक सम्यक्त्व संसार में कितनी मुद्दत तक रहता है इस वजहसे कमसे कम अन्तर्मुहूर्त ज़्यादहसे ज़्यादह तेतीस सागर दो किरोड़ पूर्व अधिक अन्तर्मुहूर्त आठवर्ष कम ।

(६८०) गुणस्थान और मार्गणा मे क्या फर्क है ।

उ० गुणस्थान तो जीव के परिणाम अर्थात भाव हैं और मार्गणा जीव के रहने का ठिकाना है जो ऊपर कहचुके हैं।

(६८१) विधान किस को कहते हैं ।

उ० सम्यक्त्व की क़िसमों का नाम विधान है।

(६८२) सम्यक्त्व की कितनी क़िसमें हैं।

उ० सामान्य कर।

एक अपेक्षा दो क़िसम हैं।

१ निसर्गज।

२ अधिगमज।

दूसरी अपेक्षा तीन क़िसम हैं।

१ क्षायिक।

२ उपशम।

३ क्षयउपशम।

विशेष कर अनन्तानन्त भेद हैं जितने आतमाओं के प्रणाम उतनेही सम्यक्त्व के भेद।

आह्निक तीसरा सतसंख्या आदि वर्णन

(६८३) सतके भेद उनके नाम और तारीफ़ बयान करो।

उ० सत् अर्थात अस्तित्व, उसके २ भेद हैं।

१ सामान्यकर--अर्थात परिणाम विशुद्धता करके जीव गुणस्थानों में हैं, कुल जीव १४ गुणस्थानों में हैं, उनसे कोई बाहरनहींहै और सिद्धभगवान गुणस्थान से रहित हैं।

२ विशेषकर--अर्थात रहने के ठिकाने के एतबार से मार्गणा में हैं।

नोट—अस्तित्व मौजूदगी को कहते हैं।

[६८४] किस २ गतिमें कौनर गुणस्थान होता है।

उ० १ देवगति में सिर्फ़ अव्वलके चार गुणस्थान होते हैं।

२ सातों नरकों में अव्वलके चार गुणस्थान होते हैं।

३ तिर्यंच गतिमें अव्वल के पांच गुणस्थान होते हैं

४ मनुष्यगति में पूरे चौदह गुणस्थान होते हैं।

(६८५) किस २ इन्द्रियके जीवके कौन २ गुणस्थान होता है।

उ० एकेन्द्रियसे लेकर चार इन्द्रियतक सिर्फ पहिला गुणस्थान होता है और पंचेंद्रिय के १४ गुणस्थान होते हैं।

(६८६) किस २ कायके जीव के कौन २ गुणस्थान होता है।

उ० पृथ्वी वगैरह अव्वल के पांच कायके जीवों के सिर्फ अव्वल गुणस्थान होता है त्रसकायके लिये पूरे १४ हैं

(६८७) किस२ योगमें कौन२ गुणस्थान होता है।

उ० मन, वचन, कायमें १३ गुणस्थान हैं और १३ वें गुणस्थान तक सयोग केवली कहलाते हैं और अरिहन्त पदवी पैदा होती है, अयोग केवली के सिर्फ १४ वां गुणस्थान है इसमें मन, वचन, काय का कुछकाम नहीं होता केवल शरीर रहता है।

(६८८) किस२ वेद में कौन२ गुणस्थान होता है

उ० पुरुष वेद में १४ गुणस्थान।
नपुंसक वेद में पाच गुणस्थान।
स्त्री वेद में पांचवें गुणस्थान से ज़्यादा नहीं होता।

नोट--वेद जिस कर्म का नाम है वह सत्तामें नवें गुणस्थान तक रहता है इसलिये तीनो वेदों में नवें गुणस्थान तक भाव वेद बयान किये हैं। नवें गुणस्थान से लेकर चौदवें गुणस्थान तक वेद कर्म नहीं बनता। इसी अवस्था का नाम वेद रहित है।

[६८९] कौन २ कषाय किस२ गुणस्थान में रहती है

उ० क्रोध, मान माया, लोभ ये चारों कषाय तो नवें गुणस्थान तक रहती हैं सिर्फ लोभ दशवें गुणस्थान तक रहता है, ग्यारवें से चौदहवें तक चारों का अभाव हो जाता है अनंतानुबंधी पहले गुणस्थान तक और अ-

प्रत्याख्यान चौथे गुणस्थान तक प्रत्याख्यान पांचवें गुणस्थान तक संज्वलन नवें तक संज्वलन सूक्ष्मलोभ दशवें तक रहता है।

(६९०) कौन२ ज्ञान किस२ गुणस्थान में होता है।

उ० मति अज्ञान, श्रुत अज्ञान, और अवधि अज्ञान अव्वल के दो गुणस्थान तक होता है। मतिज्ञान, श्रुतिज्ञान अवधि ज्ञान चौथे गुणस्थान से लेकर बारवें गुणस्थान तक होता है मनः पर्य्यय ज्ञान छठे गुणस्थान से बारवें गुणस्थान तक होता है और केवल ज्ञान सिर्फ १३वें और १४वें गुणस्थान में होता है।

(६९१) संयम कौन२ गुणस्थान में है।

उ० अव्वल ४ गुणस्थान में संयम नहीं, सामान्यता कर संयम छठे गुणस्थान से चौदहवें तक है। विशेष कर इस तरह पर है परिहारविशुद्धि छठे और सातवें में सूक्ष्म साम्प राय सिर्फ़ दशवें में यथा ख्यात ११ वें से लेकर चौदवें तक संयता संयत सिर्फ पांचवें गुणस्थान में सामायिक छेदोपस्थापन छठेसे अनिवृत्ति करण पर्यंत।

(६९२) कौन२ दर्शन किस२ गुणस्थान में है

उ० चक्षु, अचक्षु दर्शन अव्वल से बारहवें तक हैं। अवधि दर्शन चौथे से बारहवें तक, केवल दर्शन सिर्फ १३ वें और १४ वे में है।

(६९३) कौन लेश्या किस२ गुणस्थान में है

उ० कृष्ण नील कापोत लेश्या पहिले चार गुणस्थानों में हैं। पीत पद्मलेश्या पहिले से सातवें गुणस्थान तक हैं शुक्ल लेश्या पहिले से तेरहवें तक हैं चौदवें गुण स्थान में कोई लेश्या नहीं है

नोट—असिल में कषाय सिर्फ़ १० वें गुणस्थान तक रहती है और असली लेश्या सिर्फ़ वहीं तक हैं। सिर्फ़ योगों की अपेक्षा वहां तक कहा है।

(६९४) भव्य किस२ गुणस्थान तक जाता है

उ० भव्य पहिले से चौदहवें गुणस्थान तक जाता है।

(६९५) अभव्य किस २ गुणस्थान तक जाता है

उ० अभव्य का सिर्फ़ पहिला गुणस्थान है

(६९६) कौन २ सम्यक्त्व किस २ गुणस्थान तक है।

उ० क्षायिक सम्यक्त्व चौथे से १४ वें तक है, क्षयोपशम सम्यक्त्व ४ से ७ वें तक है, उपशम सम्यक्त्व चौथे से ११ वें तक है सासादन सम्यग्दृष्टि दूसरे गुणस्थान में सम्यग्मिथ्यादृष्टि तीसरे गुणस्थानमें ही रहते हैं।

[६९७] संज्ञी किस२ गुणस्थान तक हैं।

उ० पहिले से बारहवें गुणस्थान तक।

नोट—तेरहवें और चौदहवे गुणस्थान में संज्ञी अवस्था नहीं है।

[६९८] असंज्ञी किस २ गुणस्थान तक है।

उ० सिर्फ़ पहिले गुणस्थान में।

(६९९) आहारक किस २ गुणस्थानतक होता है।

उ० पहिलेसे १३ गुणस्थान तक—अनाहारक विग्रह गतिमें होता है, और पहिले दूसरे चौथे गुणस्थानमें होताहै

नोट—जीव एक शरीर छोड़कर दूसरा शरीर धारण करताहै इन दोनों के बीच में जो ज़माना गुज़रताहै उसका नाम विग्रहगति है।

(१००) हरएक गुणस्थान में संख्या कितनी है।

उ० सामान्यकर पहिले से लेकर १४ वे गणस्थान तक जीव अनन्त हैं, सर्व संसारी जीव राशि है, ऐसेही हर एक गति में मार्गणावों में जीवोंकी संख्या है।

नोट १–कथन सर्वज्ञ का किया हुवाहै और सर्वज्ञने अपने ज्ञान में यह बात देखली है कि हरएक गुणस्थान में ज़्यादह से ज़्यादह कितने जीव होसकते हैं इसीवास्ते संख्या मुक़र्रिर करदी है।

नोट२–चारों गति में हरवक़्त अनन्तानन्त जीव हैं कोई संख्या मुक़र्रिर नहीं है।

[१०१] क्षेत्र के भेद नाम और नाम बयान करो

उ० क्षेत्र दो प्रकार हैं।

(१) गुणस्थान सामान्य कर।

(२) मार्गणा विशेषकर।

(१०२) गुणस्थान और मार्गणा में कौन२ द्रव्य हैं

उ० सिवाय जीव के और कोई द्रव्य नहीं है।

(१०३) कौन २ क़िसम का जीव किस२ क्षेत्रमें है.

उ० १ मनुष्य जीव तो अढ़ाई द्वीपमें हैं

२ तिर्यंच सर्वलोक में हैं।

३ देव उर्द्ध्वलोक के सोलहस्वर्ग नवग्रैवेयक नवानुदिश पंचानुत्तर विमाणों में हैं और ज्योतिषी देव पृथ्वी से सात सौनव्वे (७९०) जोजन ऊंचे–और एक सो दस (११०) जोजन के मध्य ज्योतिषपटल में हैं और व्यंतर देव असंख्याते द्वीप समुद्रोंमें हैं और बहुतसी जगह भवन बासी भी हैं और अधो·

लोक में प्रथम पृथ्वी के खरभाग और पंक भाग में भी है

४ और नारकीपहली पृथ्वीके अब्बहूलभाग औरनीचली छहों पृथ्वी में है और त्रसनाड़ी में त्रसजीव हैं और थावर भी है और त्रसनाड़ीके बाद सर्वस्थानों में हैं।

नोट--मध्यलोक से नीचे की पृथ्वी के ३ भाग हैं उनके नाम खरभाग, पंक भाग, अब्बहूल भाग हैं।

(७०४) स्पर्शन की तारीफ बयान करो

उ० जो जीव अपने उत्पत्ति के स्थान से उस पर्याय में जिस२ स्थानमें गमन करसकता है उस उस स्थान को स्पर्शन कहते हैं जैसे सौधर्म स्वर्ग का इंद्र १ नरक तक जासकता है तो यहां तक उसका स्पर्शन है अर्थात् जो जीव उसी पर्याय में एक जगह से चलकर दूसरी जगह जाकर फिर उसी जगह लौट आवे इसका नाम स्पर्शन है।

[७०५] स्पर्शन के प्रकारका है और हरएक की तारीफ़ बतावो।

उ० स्पर्शन चार के भेद हैं।

१ स्वस्थानविहार--अर्थात अपनी जगहके एतबार से

२ परस्थान विहार--दूसरेकी जगहके एतवार से।

३ मार्गणान्तिक समुद्घात--अर्थात मरतेवक्त आत्मा के प्रदेश निकलते हैं और सब जगह फैलते हैं।

४ उत्पाद--अर्थात पैदा होने की अपेक्षा।

(७०६) कालकी के भेद

उ० दो भेद हैं

१ सामान्य कर गुणस्थान में
२ विशेष कर मार्गणा में

(नोट)इस की बहुत बड़ी तफ़सील है असिल ग्रन्थ में देखो

(३०७) अन्तर किनको कहते हैं।

उ० अन्तर उसवक्त का नाम है जो एक अवस्थाको छ ड़ कर दूसरी अवस्था को ग्रहण करे और उसमें रहे मगर फिर पहिली अवस्था में वापिस आजावे तो पहिली अवस्थासे जाने और वापिस आने के बीच में जो हिस्सा वक्त का गुज़रा है उसका नाम अन्तर है। मसलन एक मिथ्या दृष्टि जीव को सम्यक्त हुवा वह पहिले गुणस्थान से चौथे में पहुंचा और कुछ काल तक सम्यक्त में रहा फिर गिर कर पहिले में वापिस आगया। पस पहिले गुणस्थान छोड़ने से फिर उसी गुणस्थान तक वापिस आने में जो समय गुज़रा है वह अन्तर है।

(३०८) अन्तर के प्रकार का है

उ० अन्तर दो प्रकार का है।
(१) गुणस्थान के अपेक्षा।
(२) मार्गणा के अपेक्षा।

(३०९) भावके क्या मानी हैं।

उ० भाव के मानी है परिणाम, अर्थात् औपशमिक क्षायिक क्षायोपशमिक औदायेक पारणामिक यह पंच भाव हैं और इन्हीं के तरेपन भेद हैं।

(३१०) भाव के प्रकार के हैं।

उ० भाव दो प्रकार हैं।

१ सामान्य कर गुणस्थान में।

२ और विशेषकर मार्गणा में।

(७११) जीव के कितने भाव हैं हरएक का नाम और तारीफ़ बतलाओ।

उ० पांच भाव हैं

१ उपशम--अर्थात जीव में अनन्त शक्ति है वह कर्मों से दबी हुई है और कर्मों की ख़ूब ताक़त है वह किसी सबब से ज़ाहिर न होवै दबी हुई रहै, जैसे कि पानी के नीचे कतकफल व गद्दरे से गाद बैठ जाती है और पानी साफ़ ऊपर नज़र आता है।

२ क्षय-अर्थात कर्म से आत्मा बिलकुल छूट जावे, जैसे पानी मेंसे गाद बिलकुल दूर होजावे

३ मिश्र---अर्थात कुछ उपशम होवे और कुछ क्षयहोवे सर्वघाती स्पर्द्धकों का उदयाभाव क्षय देश घाती स्पर्द्धकों का सत्ता में मौजूद रहकर उपशम होना वह क्षयोपशम (मिश्र) है

४ औदयिक-कर्म के फल का प्राप्त होना जिसके द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव कारण हैं जीव का वह भावजो उसमें हमेशा से बिला किसी सबब व ज़रिये मौजूद है

५ पारणामिक--जीव में जो ज़िन्दा रहनेका परिणामहै क्योंकि जीव कभी नहीं मरता और भव्यपणा और अभव्यपणा अनादि पारणामिक है किसी कारण में नहीं।

[७१२] उपशम और क्षयिक किसके होते हैं।

उ० भव्य के ही होते हैं।

(७१३) मिश्रभाव किस २ के होता है

उ० भव्य और अभव्य दोनों के होता है।

(७१४) औदयिक और पारणामिक किस २ के होते हैं

उ० भव्य और अभव्य दोनों के होते हैं

(७१५) औपशमिक भाव के कितने भेद हैं

उ० दो भेद हैं

१ उपशम सम्यक्त्व।

२ उपशम चारित्र

(७१६) क्षायिक भाव के कितने भेद हैं उनके नाम और तारीफ बयानकरो

उ० क्षायिक भाव के नौ भेद हैं

१ क्षायिक ज्ञान-अर्थात केवलज्ञान, क्योंकि जब ज्ञानावर्णी कर्म का सर्वथा नाश हो जावे तब यह ज्ञान पैदा होता है

२ क्षायिक दर्शन--अर्थात केवल दर्शन, क्योंकि दर्शनावर्णी कर्म के सर्वथा नाश होने से केवल दर्शन होता हैं।

३ क्षायिकदान-अर्थातअभयदान, क्योंकि दानान्तराय कर्म के सर्वथा नाश होने से केवली के अभयदान अनंत जीवों का उपकार करने वाला है।

४ क्षायिक लाभ--अर्थात कवलाहार का नाश होना जो लाभान्तराय कर्म के सर्वथा नाश होने से कर्म परमाणु का ग्रहण जिसमें शरीर कोड़ पूर्वतक बना रहे होता है।

नोट--१ केवली के नो कर्म का आहार है

नोट--२ नो कर्म के मानी हैं सूक्ष्म पुद्गल परमाणु का शरीर रूप होना और उदय में आकर निर्जरा होना।

५ क्षायिक भोग--अर्थात भोगान्तराय कर्म का सर्वथा नाश होनेकी वजह से देवता फूलों की वर्षा करते हैं

६ क्षायिक उपभोग--अर्थात् उपभोगान्तराय कर्मका सर्वथा नाश होने से सिंहासन चमर वग़ैरह अतिषय ज़ाहिर होती है।

७ क्षायिकवीर्य--वीर्यान्तराय कर्मके सर्वथा नाश होनेसे अनन्त वीर्य पैदा होता है

८ क्षायिकसम्यक्त्व-मोहनीय कर्मकी सातप्रकृति सर्वथा नाश होने से क्षायिक सम्यक्त्व पैदा होता है

९ क्षायिकचारित्र--चारित्र मोहनीय कर्मके सर्वथा नाश होने से क्षायिक चारित्र पैदा होता है ।

(७१७) मिश्रभाव के कितने भेद हैं उनके नाम और तारीफ़ बयान करो

उ० मिश्रभाव के १८ भेद हैं

१-४-मतिज्ञान के ४ भेद मति, श्रुत, अवधि, मनः पर्यय

५-७-अज्ञान के ३ भेद कुमति, कुश्रुत, कुअवधि

८-१०-दर्शन के तीन भेद चक्षु, अचक्षु, अवधि

११-१५लब्धि ५-दानलब्धि, लाभलब्धि, भोग लब्धि उपभोग लब्धि, वीर्यलब्धि।

१६ सम्यक्त्व

१७ चारित्र।

१८ संयमासंयम

(७१८) औदयिक भावके कितने भेद हैं नाम और तारीफ़ बतलावो

उ० औदयिक भाव के २१ भेद हैं

१-४-गति चार

५-८-कषाय चार

९-११-लिङ्ग ३

१२-मिथ्यादर्श १।

१३-अज्ञान १।।

१४-असंयत १।

१५-२०-लेश्या ६।

२१-असिद्ध १।

(७१९) पारणामिक भाव केकितने भेद हैं उनकेनाम और तारीफ़ बतलावो।

उ० पारणामिक भाव के तीन भेद हैं।

१ जीवत्व--चैतन्यता

२ भव्यत्व--अर्थात सम्यग्दर्शन वग़ैरह जिसके होवैंगा उसको भव्य कहते हैं।

३ अभव्यत्व--अर्थात जिसके सम्यग्दर्शन वग़ैरह नहीं होसकेगा।

[७२०] सिद्धों के शरीर में ये नौ भेद क्षायिक भावके क्योंकर कहसक्ते हैं

उ० इस वजह से कि परम उत्कृष्ट अनन्त वीर्य अव्याबाध इसके अन्दर वो सब शामिल है।

नोट--अव्याबाध उसको कहते हैं जिस ताक़त में किसी क़िस्म की रुकावट नहीं रही उसमें बाधा नहीं होसकती

[७२१] पारणामिक भाव के जो तीन भेद हैं वह किसके होते हैं और किस कारण से।

उ० यह तीनों सिर्फ़ आत्माही के होते हैं और आपसे आप होते हैं किसी कर्म के उपशम वग़ैरह की ज़रूरत नहीं है।

(७२२) कौन २ भाव किस गुणस्थान में होता है।

पहिले गुणस्थान में औदयिक क्योंकि, यहां सिर्फ़

कर्म का उदय है मोहनी कर्म का उपशम चयोप-
शम या च्चय नहीं है।

दूसरे गुणस्थान में पारणामिक भाव।

तीसरे में च्चयोपशमिक भाव।

चौथेमें औपत्तमिक भावच्चयोपशामिकऔरचायिक

पांचवेंमें औदयिक भाव और च्चयोपशामिक भाव।

छठे और सातवें में च्चयोपशमिक भाव।

आठवें से लेकर१० दशवें तक औपशमिक और
चायिक भाव है और ११ वें में केवल औपत्तमिक
भाव है ये सब बवजह मोहनीय कर्म के हैं।

बारहवें से चौदहवें तक चायिक भाव है।

नोट–मार्गणा के बयान के लियेअसिल ग्रन्थ देखना चाहिये।

(७२३) अल्प बहुत्व से क्या मतलब है।

उ० किसी दो गुणस्थानोंका परस्पर अपेच्चा थोड़ा घ-
ना विशेषकी प्रतीत करना अर्थात एक गुण
स्थानका दूसरे गणस्थान से मुक़ावला करके यह बत-
लाना कि किसमें किससे जीव कम या ज़्यादा हैं, अल्प
बहुत्व कहलाता है।

[७२४] गुणस्थानका मुकाबला करके बतलावो कि किस २ गुणस्थान में
बमुकाबले दूसरे के जीव कमोवेश हैं।

उ० मिथ्यात्व में सब गुणस्थानों से अनन्तगुणे हैं, और
उपशमक गुणस्थान वाले सब से थोड़े हैं, और उप-
शांत कषाय वाले भी उतनेही हैं, और तीन च्चपक वाले
संख्यात गुणे हैं, च्चीण कषायवालेभी उतनेही हैं
सयोग केवली अयोग केवली प्रवेशक करके बराबर है,

सयोग केवली अपने कालकी अपेक्षा संख्यात गुणे हैं, और अप्रमत्त गुणस्थानवाले संख्यात गुणे हैं, और प्रमत्त संयतवाले इससे संख्यात गुणे हैं सासादन सम्यग्दृष्टि वाले संख्यात गुणे हैं मिश्रवाले असंख्यात गुणे हैं, असंयतसम्यग्दृष्टि वाले असंख्यातगुणे हैं ।

(७२५) ज्ञान के आठ ज़रिये क्यों बयान किये गये कम या ज़्यादा क्यों नहीं बयान किये गये ।

उ० (१) नास्तिक कहते हैं कि कोई वस्तु नहीं है इसलिये सत साबित करने से नास्तिक की दलील तोड़ी गई

(२) बाज़ कहते हैं कि वस्तु एक ही है उसमें किसी क़िसम का भेद नहीं है यह हुज्जत संख्या अर्थात शुमार साबित करने से तोड़ी गई ।

(३) बाज़ कहते हैं कि वस्तु के प्रदेश नहीं है यह हुज्जत क्षेत्र साबित करने से तोड़ी गई ।

नोट-जितनी जगह में परमाणु आवे उस हिस्से का नाम प्रदेश है ।

(४) बाज़े लोग वस्तु को क्रिया रहित कहते हैं यह हुज्जत स्पर्शन से तोड़ी गई ।

नोट—एक जगह से दूसरी जगह जाने को क्रिया कहते हैं

(५) बाज़े लोग वस्तुको प्रलय होनेवाली मानते हैं यह हुज्जत काल साबित करने से तोड़ी गई ।

(६) बाज़ेलोग वस्तु को क्षणिक मानते हैं यह हुज्जत अन्तर से तोड़ी गई ।

(७) बाज़े लोग वस्तु को कूटस्थ मानते हैं यह हुज्जत भाव साबित करने से तोड़ी गई है।

नोट—कूटस्थ उसको कहते हैं कि जिसकी हालत तबदील न होवे

(८) बाज़ लोग वस्तु को एक ही मानते हैं बाज़ अनेक ही मानते हैं यह हुज्जत अल्प बहुत्व से तोड़ी गई।

अध्याय छठा, निक्षेप वर्णन ॥

(७२६) निक्षेप की तारीफ़ बयान करो

उ० निक्षेप अर्थात स्थापन करना जैसे किसीका नाम वग़ैरह

(७२७) निक्षेप के भेद, हर एक के नाम बयान करो।

उ० निक्षेप चार प्रकार है।

(१) नाम।
(२) स्थापना
(३) द्रव्य।
(४) भाव।

(७२८) नाम निक्षेप की तारीफ़ और मिसाल बतलाओ।

उ० नाम निक्षेप से यह मतलब है कि किसी चीज़ का वह नाम रक्खा जावे जिसमें वह तारीफ़ न पाई जावे और दुनियामें ज़ाहिरदारी के लिये उस नाम से पुकारें और चार क़िसम के गुण उसमें न होवें जैसे किसी घोड़े का नाम शाहजहां रखदें।

गुणकी चार क़िसम यह हैं।

(१) द्रव्य-जैसे कुंडल पहने हुवे को कुण्डली कहना।
(२) गुण--जो तारीफ़ जिस में होवे।
(३) कर्म--जैसें लिखते हुवे को मुन्शी कहना।
(४) जाति--जैसे घोड़ा ऊंट वग़ैरा।

(७२९) स्थापना निक्षेप की तारीफ़ और मिसाल बतलाओ

उ० स्थपना निक्षेप उसको कहते हैं कि लकड़ी या कागज़ आदिका पुतला या तसवीर क़ायमकरलें, जैसे कि शतरञ्ज के मोहरे में यह क़ायम करें कि यह घोड़ा है यह ऊंट है यह प्यादा है यह बादशाह है।

(७३०) स्थापनाके भेद हरएक कानाम और तारीफ़ बयान करो।

उ० स्थापना के दो भेद हैं।

[१] तदाकार-अर्थात जो चीज़ मौजूद रही होवे उसी के मुवाफिक़ मूरत बनावें और ऐसी बनावें जैसी कि असली सूरत है जिससे देखने वाले को फौरन मालूम हो जावे कि वह शख़्स है या वह चीज़ है

[२] अतदाकार-जिसमें मूरत देखकर यह मालूम न होवे कि यह किसकी है। दूसरे के बतलानेकी ज़रूरत पड़े।

(७३१) द्रव्य निक्षेपकी तारीफ़ और भेद बयान करो॥

उ० द्रव्य निक्षेप उसको कहते हैं कि जिसमें जो आगामी हालत होनेवाली होवे उस को अभी से ऐसा कहने लगें जैसे कि राजा के लड़के को अभीसे राजा कहें इस के दो भेद हैं।

१ आगम द्रव्य निक्षेप

२ नो आगम द्रव्य निक्षेप

[७३२] आगम द्रव्य निक्षेप और नो आगम द्रव्य निक्षेप की तारीफ़ और मिसाल बयान करो।

१ आगम द्रव्य निक्षेप उसको कहते हैं कि जिस काम का जाननेवाला जो शख़्स है वह ऐसी हालत

में होवे कि वह उस कथनके कामको न कररहा होवे उसवक्त भी उसको वैसाही कामवाला कहना, जैसे कि एक पंडितको उस वक्त में जब कि वह कपड़े सीरहा हो परिडत कहना।

२ नो आगम द्रव्य निक्षेप--अर्थात शरीर में निक्षेप करना इसको नो आगम द्रव्य निक्षेप कहते हैं, जैसे कि परिडत के मुर्दा शरीर को भी परिडतकहना, नोआगम द्रव्य निक्षेप के तीन भेद हैं।

१ ज्ञायक शरीर
२ भावी
३ तद्व्यतिरिक्त

(७२३) ज्ञायक शरीर के कै भेद हैं हरएक के नाम और तारीफ़ बयान करो

उ० ज्ञायक शरीरके तीन भेद हैं।

१ भूत--अर्थात मुर्दा परिडत के शरीरको यह कहना कि यह बड़ा परिडत था।

२ भविष्यत-अर्थात एक मौजूदा ज़िन्दा विद्यार्थीको यह कहना कि यह बड़ा परिडत होगा।

३ वर्तमान-अर्थात एक मौजूदा ज़िन्दा परिडतको यह कहना कि इसका शरीर बड़ा विद्वान है।

(७२४) भावी किसको कहते हैं।

उ० जो शरीर अर्थात कार्माण शरीर जो जीव के साथ लगाहुवा है अगली पर्यायमें जिस शरीरमें जावे उसको उसवक्त बयान करना, मसलन किसी आदमी ने देव गति बांधी है उसके शरीर को उसीवक्त देव कहना।

(७३५) तद्व्यतिरिक्त किसको कहते हैं ॥

उ०—तद्व्यतिरिक्त उसको कहते हैं कि जो शरीर और ज्ञायक शरीर दोनों से जुदा होवे और उसके दो भेद हैं।

१ ज्ञानावर्णादि कर्म के सबब से कहना, जो किसी शरीर में आगामी होनेवाला होवे उसको पहिले बयान करना, मसलन ज्ञानावर्णी कर्म की वजह से जो कोई शख्स पागल होनेवालाहोवे उसको कहना कि यह पागल हो जायगा इसका नाम तद्व्यतिरिक्त नो आगम द्रव्य निक्षेप है।

२ आहार वगैरा के सबब से जो शरीर रूप होवेगा उसको पहले ही से कहना मसलन आहार को शरीर कहना यह नो कर्म तद्व्यतिरिक्त नो आगम द्रव्य निक्षेप हैं।

(७३६) भाव निक्षेप के भेद और हर एक की तारीफ़ बयान करो।

उ०—जैसे को वैसाही कहना वह भाव निक्षेप है इसके दो भेद हैं।

१ आगम भाव निक्षेप अर्थात् जो शख्स जैसा होवे उसको उपयोग की हालत में वैसाही कहना जैसा कि उसका शरीर है जैसे सीने वाले दरज़ी कोसीने के समय दरज़ी कहना।

२ नो आगम भाव निक्षेप अर्थात् जो शरीर जैसा होवे उसको शरीर की अपेक्षा वैसाही कहना जैसा कि उसका होवे जैसे कोई शख्स सीता होवे उसके शरीर को सीने के समय दर्ज़ी कहना।

(७३७) यह चारों निक्षेप किस २ द्रव्य पर लगते हैं

उ०--यह चारों निक्षेप जीव अजीव वगैरा सातों तत्वों पर लगते हैं और सम्यक्दर्शन वगैरा पर भी लगते हैं अर्थात् जो जीव और शरीर का बयान निक्षेप में किया है जिस तत्व अर्थात अजीव आश्रव बन्ध सम्वर निर्जरा मोक्ष में होगा उसी निक्षेप के साथ उसी तत्व का नाम लगावेंगे ।

(७३८) इन निक्षेपों में से द्रव्यार्थिक कौन२ हैं और उनको द्रव्यार्थि क्यों कहते हैं और पर्य्यायार्थिक कौन२ हैं और उनको पर्य्यायार्थिक क्यों कहते हैं

उ०--नाम स्थापना द्रव्य तो द्रव्यार्थिक रूप है अर्थात् द्रव्य पर लगाये जाते हैं और भाव पर्यायार्थिक है । द्रव्यार्थिक उसको कहते हैं जो द्रव्य पर लगाया जावे पर्य्यायार्थिक उसको कहते हैं जो पर्य्याय पर लगाया जावे

अध्याय सप्तम्

॥ क्षेत्रादिक रचना ॥

(७३९) भूमि कितनी हैं उनके क्या २ नाम हैं ॥

उ०--भूमि (प्रथ्वी) सात हैं

१ रत्न प्रभा ।

२ शर्करा प्रभा ।

३ बालुका प्रभा ।

४ पंक प्रभा ।

५ धूम प्रभा ।

६ तमः प्रभा ।

७ महातमः प्रभा ।

नोट १ इनके नाम इनकी शकल के ऊपर हैं और यह नर्कको प्रथ्वी हैं

(७४०) यह भूमि बराबर हैं या किस तरह।

उ०--सिलसिले वार एक से दूसरी नीचे होती गई है

(७४१) यह भूमि किस तरह ठहरी हुई हैं

उ०-तीन वातवलय के और आकाश के आधार ठहरी हुई हैं अर्थात् समस्त भूमियां
घनों दधि वात वलय के आधार हैं और घनो दधि वात वलय घन वात वलय के आधार हैं और घनवातवलय तनवातवलय के आधार है और तनवात वलय आकाश के आधार हैं (आकाश निराधार है)

(नोट) घनो दधि वात वलय (अर्थात् जिस में जल और हवा दोनों बराबर हैं) घन वात वलय अर्थात् जिस में हवा ज्यादा और जल कम हो, तन वात वलय-जिस में जल थोड़ा है।

(७४२) इन पृथ्वियों में कितने २ बिले हैं

उ०---१ पहला रत्न प्रभा में तीस लाख ३००००००
२ शर्करा प्रभा में पचीस लाख २५०००००
३ बालुका प्रभा में पंद्रह लाख १५०००००
४ पंक प्रभा में दस लाख १००००००
५ धूम प्रभा में तीन लाख ३०००००
६ तम प्रभा में पांच कम एक लाख ९९९९५
७ महातम प्रभा में पांच हैं।

(७४३) नारकी जीवों के लेश्या, परिणाम, देह वेदना, विक्रिया कैसी होती है

उ०--परिणाम बहुत बुरे रहते हैं; देह (शरीर) बिडरूप डरावनी अशुभ होती है, विक्रिया (एक रूप से दूसरा रूप करलेना) अशुभ विक्रिया ही कर सकते हैं जिसके देखने से भय हो।

लेश्या-अशुभ तर लेश्या होती है।

वेदना—अशुभ तर वेदना होती है।

क्योंकि नारकियों के निरन्तर अशुभ कर्म का उदय होता है।

(७४४) नारकी जीवों का आपसमें एक दूसरे का वरताव किस किसमका है

उ०--आपस में एक को एक देख कर बहुत क्रोध से पेश आता है मारना चीरना काटना आदि हर वक्त करते रहते हैं विश्वास देकर घात करते हैं

(७४५) कौन से नर्क तक देवता नारकी जीवों को आपस में लड़ाते हैं और किस तरह लड़ते हैं

उ०---तीसरे नर्क तक असुर कुमार के देव लड़ाते हैं और भयंकर रूप करके उनको पकड़ २ आपस में मूंड भड़ते हैं। पहले जन्म का उन नारकियों को वैर याद कराते ह तपाया तांबा गलाया हुवा सिंडासी से मुह फाड़कर पिलाते हैं घांणी में पेलते हैं कुहाड़े बसोले से काटते हैं घाव कर खारे जल से गरम तेल से सींचते हैं जिन्हों ने मनुष्य जन्म पाकर वेश्या को सेवन की है उनको लोहे की पुतली लाल कर लिपटाते हैं जिन्हों ने शराब वगैरा नशीली वस्तु सेवन कर महा पाप बंध किया उनको गरम तांबा लोहा गलाकर जबरदस्ती से पिलातेहुवे पिछली शराब याद दिलाते हैं भाड़ में भूभल में भुलस्ते हैं वैतरनी में डबोते हैं इत्यादि असंख्यात दुख आपस में नारकी २ को देता है वह कुछ थके मालूम होते हैं यह असुर जाति के दुष्ट परिणाम वाले देव दुःख देते हैं लड़ाते हैं जिस नर्क की जरा सी मिट्टी की

दुर्गंध से कोसों के जीव मरजाते हैं जहां पैदा होते ही ज़मीन को छूने मात्र ५०० योजन ऊपर उछलता है मानिन्द गेंद के जैसे गेंद को ज़मीन में मारा तो उछलती है कई मरतबा उछल २ कर आखिर वहीं ही ठहरती है यह जीव उस ज़मीन के छूने से इतना दुख पाता है एक दम हज़ार ज़हरीले बिच्छू जैसे काट खाने मे दुख होता है।

(७४६) हर एक नरक में जीवों की कितनी२ आयु है।

१ पहले नर्क में एक सागर की है।

२ दूसरे में तीन सागर की है।

३ तीसरे में सात सागर की है।

४ चौथे म १० सागर की है।

५ पांचवे में १७ सागर की है

६ छठे में २२ सागर की है।

७ सातवें में ३३ सागर की है

(७४७) इस पृथ्वी पर द्वीप और समुद्रों की रचना किस तरह पर है उनके नाम क्या २ है।

उ०—इस मध्य लोक में जिसका आकार थाली के मवाफिक गोल है सबसे बीच में जम्बू दीप नाम द्वीप रहने का स्थान क्षेत्र है वह एक लाख योजन चौड़ा और एक लाख योजन लम्बा और तीन लाख योजन के परिधि है ऐसा द्वीप है उसके चारों तरफ लवण समुद्र है उसके चारों तरफ फिर घात की खंड द्वीप है उसके चारों तरफ कलो दधि समुद्र है इसी प्रकार एक द्वीप के बाद एक समुद्र एक दूसरे से बढ़ा हुवा है स्वयम्भु रमण समुद्र प्रर्यन्त असंख्यात द्वीप और समुद्र हैं।

नाम कुछ द्वीप और समद्रों के।

१ जम्बूद्वीप। १ लवण समुद्र
२ धातकी खंड द्वीप। २ कालोदधि समुद्र
३ पुष्कर द्वीप। ३ पुष्करवर समुद्र
४ वारुणी द्वीप। ४ वारुणीवर समुद्र इत्यादि

(७४८) इन द्वीप और समुद्रों की शकल क्या है और हर एक का विस्तार क्या है

उ०--गोल हैं मानिन्द कड़े के दूणा २ विस्तार है यानी सिल सिलेवार द्वीप से समुद्र का दूणा समुद्र से द्वीप का दूना विस्तार है।

(७४९) मेरु पर्वत किस जगह है उसकी क्या शकल है और कितना विस्तार है

उ०---जम्बू द्वीप के बीच में मेरु पर्वत नाभि की तरह है और एक लाख योजन का ऊंचा है।
हजार योजन तो पृथ्वी में है और (९९०००) निन्यानवे हजार योजन पृथ्वी से ऊंचा है।

(७५०) जम्बू द्वीप का विस्तार किस कदर है

उ०---एक लाख योजन का चौड़ा है लम्बा है इतनाही गोल है अर्थात् कुतर एक लाख योजन है और इसका परिधि ३१६२२७ योजन ३ कोस १२८ धनुश १३॥ अंगुल से कुछ ज्यादा है।

(७५१) इस जम्बूद्वीप में कौन २ क्षेत्र हैं।

उ०---इस में छह क्षेत्र हैं।

१ भरत क्षेत्र
२ हैमवत
३ हरि

४ विदेह
५ रम्यक
६ हैरण्यवत
७ ऐरावत

(७५२) इसमें कौन कौन पर्वत हैं वह पर्वत क्या २ काम आते हैं ॥

उ०----इस में छे पर्वत हैं वह पूरब पच्छम लम्बे हैं

१ हिमवान
२ महा हिमवान
३ निषिध
४ नील
५ रुक्मि
६ शिखरी ।

इनपरबतोंसे उन क्षेत्रोंका विभाग हुआ है अर्थात भरत क्षेत्र के आगे हिमवान पर्वत बीच में पड़ गया फि: हैम वत क्षेत्र है इसके आगे महा हिमवान बीच में है ऐसे क्षेत्रों की जुदायगी करने का इनका काम है

(७५३) इन परवतों के क्या २ रंग हैं उनकी शोभा कैसी है,

उ०—इन छहों के छे रंग हैं

१ हिमवान पर्वत सुवर्ण मयी है ।
२ महा हिमवान सफेद है ।
३ निषिध—तपाये हुये सोना के मुवाफिक रंग है ।
दुपहर का सूर्य के वर्ण समान है
५ रुक्मि पर्वत सुफेद है
६ शिकरी पर्वत पीले पाट समान है

और इनके पीछे के भाग अनेक रत्नो के जड़े हुये हैं

मूल से ऊपर तक एक सार है अर्थात् पीछे के हिस्से में एक सार दीवार की मुवाफ़िक़ सीधे हैं कहीं कमी वेशी नहीं है

(७५८) इन परबतों पर कौन कौन तालाब हैं और किस पर्वत पर कौन २ तालाब है

उ०--१ हिमवान पर पद्मनामा तालाब है।

२ महा हिमवान पर महापद्मा तालाब है

३ निषिध पर तिगिंछ तालाब है

४ नील पर केशरी नामा तालाब है

५ रुक्मी परवत पर महा पुण्डरीक तालाब है

६ शिखरी पर पुण्डरीक तालाब है।

(७५५) पहला तालाब (हृद) कितना लम्बा और कितना चौड़ा और गहरा है

उ०--१ पहला पद्म नामा तालाब पूरब पच्छम में हजार योजन और दक्षिण उत्तर पांच सौ योजन है अनेक प्रकार सुवर्ण चांदी आदि करि विचित्र इनके किनारे हैं और दश योजन का गहरा है

(७५६) उन में कोई कमल है या नहीं उसका क्या नाम है और कितना विस्तार है

उ०---इन में पहले सरोवर में एक योजन लम्बा चौड़ा रत्नमई एक कमल है

(७५७) और तालाब किस क़दर लम्बे चौड़े हैं और उसका कमल कितना लम्बा चौड़ा है।

उ०—पहले तालाब से दूने २ लम्बे चौडे तालाब और कमल हैं

(७५८) हर एक कमल में कौन २ देवी रहती है

उ०---उन कमलों में पुर्णमाशी के चांद की तरह निर्मल स्वच्छ

शोभायमान एक कोश लंबे आध कोश चौड़े कुछ कम कोश ऊंचे महल हैं तिनमें रहनेवाली देवी हैं उनके नाम
१ श्री देवी
२ ह्री देवी
३ धृति
४ कीर्ति
५ बुद्धि
६ लक्ष्मी

इनकी एक २ पल्यकी उमर है ।

(७५९) इन सातों क्षेत्रों में कौन २ नदी हैं और वह कहां से निकली हैं
उ॰ इन क्षेत्रों में १४ नदी हैं और वह सरोवर से निकली हैं

१ गगानदी
२ सिंधु
३ रोहित
} यह पद्म तालाब से निकली हैं ।

४ रोहितास्या
५ हरित्
} महापद्म तालाब से निकली हैं ।

६ हरिकांता
७ सीता
} तिगिंछ तालाब से निकली हैं ।

८ शीतोदा
९ नारी
} केशरी नामा तालाब से निकली हैं ।

१० नरकान्ता
११ सुवर्णकूला
} महापुण्डरीकतालाब से निकली हैं

१२ रूप्यकूला
१३ रक्ता
१४ रक्तादा
} पुण्डरीक तालाब से निकला हैं

इस तरह चौदह नदी इनमें से निकली हैं ।

(१६०) हरएक क्षेत्र में कौन २ नदी बहती है

उ० दो दो नदियों में से पहली नदी अर्थात जैसे गंगा सिंधु दो नदियोंमेसे पहली गंगा पूर्व समुद्र को गई है और दूसरी सिंधु पश्चिम समुद्र को गई है।
भरतक्षेत्रमें गंगा, सिंधु; हैमवतमें, रोहित और रोहितास्या हरिक्षेत्रमें, हरित और हरिकान्ता; विदेहक्षेत्रमें, सीता और सीतोदा; रम्यक क्षेत्रमें, नारि और नरकान्ता; हैरण्यवत में स्वर्णकूला और रूप्यकूला और ऐरावत क्षेत्र में रक्ता और रक्तोदा बहती हैं इन १४ मेंसे गङ्गा रोहिता हरित सीता, नारि, स्वर्णकूला, रक्ता पूर्वकेसमुद्रमें गिरती हैं और सिंधु, रोहितास्या, हरिकान्ता, सीतोदा, नरकान्ता रूप्य-कूला, रक्तोदा पश्चिम के समुद्र में गिरती हैं।

(१६१) गंगा आदि नदियोंमें और कितनी नदियां शामिल होती है।

उ० हरएक में चौदह हजार छोटी २ नदियां और शामिल हुई हैं।

(१६२) भरत क्षेत्र का विस्तार किस कदर है।

उ० क्षेत्रका विस्तार ५२६ $\frac{6}{19}$ योजन है।

(१६३) और क्षेत्रों और पर्वतों का विस्तार किसकदर है।

उ० विदेह क्षेत्र पर्यन्त के परवत और क्षेत्र भरतक्षेत्र से दुगने २ विस्तार वाले हैं अर्थात सिलसिलेवार एकसे दूसरा दुचंद होता चलागया है। फिर कमती होते चलेगये हैं विदेहक्षेत्र उत्तर तीन पर्वत और तीन क्षेत्र दक्षिण के पर्वत और क्षेत्रों की बराबर हैं।

(१६४) भरत और ऐरावत क्षेत्रोंमें किस काल से आयु वगैरह घटती बढती है।

उ० उत्सर्पणी और अवसर्पणी काल से।

इन दोनोंके हिस्सों के नाम यह हैं।

१ सुखमा सुखमा (पहला काल) चार कोड़ाकोड़ी सागर।

२ सुखमा (दूसरा काल) तीन कोड़ा कोड़ी सागर।

३ सुखमा दुखमा (तीसरा काल) २ कोड़ाकोड़ी सागर।

४ दुखमा सुखमा (चौथा काल) एक कोड़ा कोड़ीसागर ४२ हज़ार बरस कम।

५ दुखमा [पंचमकाल] २१००० वर्ष।

६ दुखमादुखमा छठाकाल २१००० वर्ष।

नोट१—उतसर्पिणी काल उसको कहते हैं जिसमें आयु बल बुद्धि इत्यादि बढ़ते रहते हैं।

नोट२-अवसर्पिणी काल उसको कहते हैं जिसमें आयु, बल, बुद्धी इत्यादि घटती रहती है इस हिसाब से एक उत्सर्पणी काल और एक अवसर्पणीकाल दस २ कोड़ाकोड़ी सागर और दोनो मिलकर २० कोड़ाकोड़ी सागर के हुये।

नोट ३—इसमेंसे अवसर्पिणीके पहले तीन कालोंमें उत्तम, मध्यम, जघन्य भोग भूमि कीसी रचना व रीति होती है और बाकीके तीन काल में कर्म भूमि कीसी रचना होती है और उत्सर्पिणी के पहिले तीन कालों में कर्म भूमिकीसी और बाकी तीन कालों में भोग भूमिकीसी रचना होती है।

(७६५) बाकी क्षेत्रों में भी आयु वगैरा घटती बढ़ती है या नहीं।

उ० भरत ऐरावत के सिवाय कहीं भी कमी वेशी नहीं होती।

(७६६) हिमवान और हरिक्षेत्रके मनुष्यों की और भोगभूमि के मनुष्योंकी आयु किसकदर है।

उ० हिमवान क्षेत्र में और हरिक्षेत्र में देवकुरु में दक्षिण दिशा की तरफ़ की तीन भोगभूमि हैं॥

पहली भोग भूमि में दो हज़ार धनुष शरीर एक पल्य आयु एक दिन के अन्तर भूख लगती है यह जघन्य भोग भूमि है॥

दूसरी भोग भूमि जो हरिक्षेत्र में है जिसको मध्यम भाग भूमि कहते हैं वहां चार हज़ार धनुष का शरीर दो पल्य की आयु दो दिनके बाद भूख लगती है तीसरी उत्तम भोग भूमि विदेह के हिस्से में को है, छः हज़ार धनुष की उंचाई शरीर की, ३ पल्यकी आयु तीन दिन के बाद आहार की इच्छा होती है।

(७६७) दक्षिण उत्तर की तरफकी रचना में कुछ फ़र्क है या नहीं।

उ० कुछ फ़र्क नहीं है। अर्थात् हैरण्यवत क्षेत्र की रचना हैमवतक के बराबर है रम्यक क्षेत्र की रचना हरि क्षेत्र की बराबर है और उत्तर कुरुकी रचना देवकुरुकी बराबर है। इस तरह उत्तम मध्यम जघन्य रूप इन तीनों भोगभूमि के दो २ क्षेत्र हैं इस तरह पांच मेरू संबन्धी ३० भोग भूमियां हुई ॥

(७६८) पांचों विदेह में आदमी की आयु किसकदर है ॥

उ० पांचों मेरु के पांचों विदेह में मनुष्य की आयु संख्यात वर्ष की है

(७६९) भरत क्षेत्र का विस्तार कितना है।

उ० जम्बूद्वीप का $\frac{1}{190}$ यानी एक लाख योजन का $\frac{1}{190}$ ॥

(७७) धात की खण्ड में भरत वगैरह क्षेत्र कितने है और धात की खण्ड का विस्तार किसकदर है।

उ० धातकी खण्डमें भरत ऐरावत दो२ हैं यानी जम्बूद्वीप से दूणी २ रचना धातकी खण्डकी है धातकी खण्ड चारलाखयोजन चौड़ा है।

(७७०) पुष्करद्वीप में किसकदर क्षत्र हैं और उनकाकिस कदर विस्तार है।

उ० पुष्कर द्वीप के आधे हिस्से में दो२ भरतादि क्षेत्र हैं यानी जम्बू द्वीपसे दूणीरचना है।

पुष्कर द्वीप १६ लाख योजन चौड़ा है उसके बीचमें एक हज़ार बाईस योजन चौड़ा मानुषोत्तर पर्वत है दूसरे आधे भाग में ऐसी रचना नहीं है॥

(८३२) आदमी कहांतक है।

उ० पुष्कर द्वीप के मध्य में एक मानुषोत्तर पर्वत है उसके बाहर मनुष्य नहीं हैं वहांतकही मनुष्यों का गमन है वह मानुषोत्तर ज़मीन मे सत्तरासौ योजन ऊंचा है। अर्थात् अढ़ाई द्वीपमें मनुष्य हैं अर्थात् जम्बू द्वीप धात की खंड और आधे पुष्कर द्वीप में।

(८३३) आदमी के क़िस्म के है उनकी तफ़सील बतावो।

उ० दो क़िस्म के हैं।

१ आर्य।

२ मलेच्छ।

अ० आर्य दो तरह के हैं॥

(क) ऋद्धि प्राप्त।

(ख) अनऋद्धि प्राप्त॥

[क] ऋद्धि प्राप्त आर्य सातत्तरह के हैं वह ८ प्रकार के भी हैं।

१ क्रिया ऋद्धि आर्य॥

२ विक्रिया ऋद्धि आर्य।

३ तप ऋद्धि आर्य।

४ बल ऋद्धि आर्य।

५ औषधि ऋद्धि आर्य।

६ रस ऋद्धि आर्य।

७ अक्षीण ऋद्धि आर्य॥

८ आठवां प्रकार बुद्धि ऋद्धि आर्य है।

(१) क्रिया ऋद्धि—इसके दो भेद हैं।

(अ) चारण ऋद्धि--जैसे जल चारण ऋद्धि, अर्थतात जल काय के जीवोंको न विराधते हुए जल पर पृथ्वी की तरह चलना॥

जंघाचरणऋद्धि--पृथ्वी से चार अंगुल ऊपर आकाश में शीघ्र गमन करना इत्यादि।

(आ) आकाश गामनि--पद्मासन या कायोत्सर्ग से थिर आसन पग के निक्षेप विना आकाश में निराधार गमन करना॥

(२) विक्रिया ऋद्धि--इसके अनेक भेद हैं॥

अणिमा--शरीर को अणुमात्र छोटा बनालेना और कमल के तन्तुमात्र छिद्र विषय प्रवेशकर चक्रवर्त्ती की बिभूति को रचना।

महिमा—मेरु पर्वत से भी बड़ा शरीर बनाना

लघिमा-पवन से भी हलका शरीर बनालेना।

गरिमा-बहुतभारी शरीर बनालेना।

प्राप्ति--पृथ्वी पर बैठकर अंगुलीसे मेरु के शिखर सूर्य आदिको छूना।

प्राकम्य--भूमिमें जलकी तरह और जलमें भूमिकी तरह डुबकी लेना॥

ईशत्व--तीन लोक का प्रभुत्वपना॥

वशित्व--सब जीवों को वश में करने की सामर्थ्य।

अप्रतिघात—परवत में आकाश की तरह गमन करना

अन्तर्धान–अदृश्य होजाना ॥

सकाम रूपित्व सब काल में अनेक रूप करने की सामर्थ्य इत्यादि ॥

२ तप ऋद्धि ७ तरह की है ॥

[अ] उग्रतप ऋद्धि–उपवास, बेला, तेला, चौला या पक्ष, मास आदि अनशन का प्रारम्भ करके मरणपर्यन्त उपवास करे ।

[आ] दीप्ततप ऋद्धि–महान उपवास करने परभी काय, वचन, मन का बल बढ़ता रहे, शरीर में दुर्गन्धि न आवे, श्वासोस्वास में सुगन्धि आवे शरीर की दीप्ति न घटे ।

(इ) तप्ततप ऋद्धि–जैसे तप्त कढ़ाई में जल तुरत सूख जाता है वैसेही शरीर में आहार मल रुधिर रूप न परणवे ।

(ई) महातप ऋद्धि–सिंहनि क्रीड़ित आदि महोपवास के आचरण में लग रहना ।

(उ) घोरतप-सन्निपात आदि महारोगों के उत्पन्न होनेपर शरीर सन्ताप रूप होनेपर भी तपसे न डिगना तथा अनेक भयानक उपसर्ग होते हुवे भी तप से न डिगना ।

(ऊ) घोर पराक्रम-घोर उपसर्ग होते हुवे भी घोर तप में तत्पर रहनेवाले मुनि,तपयोग बढ़ाने में सामर्थ्य ।

(ऋ) घोर ब्रह्मचार्य–बहुत कालते ब्रह्मचर्य रखते हुए भी चारित्र मोहनी कर्म के उपशम होनेसे खोटे विचार स्वप्न में भी न होना ।

४ बल ऋद्धि—तीन प्रकार है ।

(अ) मनोबलि—मनकी इतनी सामर्थ्य होना कि द्वादशाङ्ग के अर्थ को अन्तरमुहूर्त में विचार कर लेना ।

(आ) वचन बलि--अन्तरमुहूर्त्त में समस्त द्वादशाङ्ग को उच्चारण करनेकी सामर्थ होना और निरन्तर उच्चस्वर से उच्चारण करते हुये भी खेद रहित कण्ठ स्वर भंग न होना ।

(इ) कायबलि--असाधारण ताकत का पैदा होना जिससे मासिक चातुर्मासिक वार्षिक प्रतिमा योग धारते भी खेद रहित होना ।

बद्धि ऋद्धि के १८ भेद हैं ।

[१] केवल ज्ञान
[२] अवधिज्ञान } इनको ऊपर कहचुके हैं ।
[३] मनःपर्ययज्ञान

[४] बीज बुद्धि--संवारे क्षेत्र विषय जैसे कालादिके सहाय से बीज बोया अनेक फल दे तैसे नो इन्द्रिय श्रुत ज्ञानावरणी वीर्यान्तराय के क्षयोपशम के प्रकाश होते एक बीज के ग्रहणसे अनेक पदार्थ का ज्ञान होय वह बीज बुद्धि है ।

[५] कोष्ट बुद्धि--जैसे कोठारी के धरे न्यारे २ प्रचुर धान्य बीज ते विनाश न भये कोठे ही में धरे हैं तैसे आपही जाने जो अर्थ के बीज प्रचुर न्यारे२ बुद्धि में बने रहैं जिसकाल काढ़ै ताकू कोष्ट बुद्धि कहिये ।

[६] पादानुसारी--यह तीन प्रकार है अनुश्रोत्र, प्रतिश्रोत्र औरदोउ रूप तहां एक पदका अर्थ परसे सुन आदि विषय तथा अन्त विषय सर्व ग्रन्थ का अवधारण करना

[७]संभिन्न श्रोत्र--चक्रवर्ति का कटक १२ योजन लम्बा ९ योजन चौड़ा विस्तार में पड़े ताविषय गज वाजि मनुष्यादिक का अक्षर अनक्षर रूप शब्द से एककाल प्राप्त भये तिनको तप केवल ते पाया जो श्रोत्र इन्द्रि का बल ताते समस्त का एक काल श्रवण होय उसको संभिन्न श्रोत्र कहते हैं।

[८]सामर्थ रसनेन्द्रियज्ञान लब्धि--तपके विशेषकर प्रकट हुवा जो रसना इन्द्रिय का नव योजनसे भी बहुत अधिक विषय उसके स्वादके जाननेकी सामर्थ्य।

[९]सामर्थस्पर्शनेन्द्रियज्ञानलब्धि-तपकेविशेषकर प्रकट हुवा जो असाधारण स्पर्शन इन्द्रियका नव योजन से भी अधिक विषय उसके स्पर्शकी सामर्थ्य।

(१०)सामर्थ चक्षु इन्द्रिय ज्ञान लब्धि--तप के विशेष कर प्रकट हुवा जो असाधारण चक्षु का विषय उसका ४७२६३ योजन से भी अधिक विषय उसके देखने की सामर्थ।

(११) सामर्थश्रोत्रेन्द्रिय ज्ञान लब्धि--तपके विशेषकर उत्पन्न हुवा श्रोत्र इन्द्रिय का विषय जिसमें १२ योजनसे भी अधिक शब्द सुनता है।

[१२]सामर्थ घ्राणेन्द्रिय ज्ञान लब्धि--तपश्चरणके प्रभाव से उत्पन्न हुवा जो घाण इन्द्रिय का विषय उससे

नौयोजन से भी अधिक दूर वरती पदार्थों को सूंघने की सामर्थ्य

(१३) दश पूर्वत्व-जिस विद्या के प्रभाव करके महा रोहणी आदि विद्यावों के देवता आकर आज्ञा पालन करें।

(१४) चतुर्दश पूर्वत्व-सम्पूर्ण श्रुत ज्ञान की प्राप्ति होती है और यह श्रुत केवली के होती है।

(१५) अष्टांगनिमित्तज्ञान ऋद्धि-इसके ८ भेद हैं।

(अ) अन्तरिक्ष-चंद्रमा, सूर्य, ग्रह, नक्षत्र, ज्योतषिन का अस्त उदय आदि करके अतीत अनागत का फल कहना।

(आ) भौम-पृथ्वी की सख्ती छिद्रमयी या चिकनाई आदि देखने से दिशा में सूतादि स्थापन करके हानि वृद्धि जय, पराजय आदि का जान ना। या सुवर्ण, रत्नादिक का बताना।

(इ) अंग-मनुष्यके आंगोपांगके देखने या स्पर्शादि से तीन काल के सुख दुखादिक का जानना।

(उ) स्वर=अक्षररूप या अनक्षर रूप शुभ अशुभ शब्द के सुनने से अच्छे बुरे का फल जानना।

(ऋ) व्यञ्जन-माथे पर या मुख आदि पर तिल मसा आदि चिन्ह देख कर तीन कालके हित अहित को जानना।

(ॠ) लक्षण-श्री, वृक्ष, स्वास्तिकादिक चिह्न देखने से तीन काल में मनुष्य के स्थान, मान, ऐश्वर्य आदिक का विशेष जानना।

(लृ) छिन्न-वस्त्र, शस्त्र, छत्र, पगों की जोड़ी आसन शय्यन देव, मनुष्य, राक्षस आदिक के त्रिभाग कर शस्त्र से कटे या कांटे से कटे या मूसे आदिक के काटे हुवे को देख कर तीन काल के लाभ अलाभ सुख दुख का जानना ।

(ॡ) स्वप्न--वात, पित, कफके दोष रहित जो मनुष्य को रात के पिछले भाग में स्वप्न आवे मसलन सूर्य चंद्रमा या पृथ्वी समुद्रका मुख में प्रवेशदेखे या समस्त पृथ्वी मंडलका आच्छादन देखे, ऐसे शुभ स्वप्न या घी तेल से अपना शरीर गीला देखे या गधे ऊंट पर आपको चढ़ा देखे, या दिशान्तर में गमन दीखे ऐसे अशुभ स्वप्नको देखनेसे आगामी सुखदुख जाने

(१६) प्रज्ञा श्रमनत्व ऋद्धि--द्वादशांग १४ पूर्वके न जानने परभी श्रुत ज्ञानावर्णी के विशेष क्षयोपशम से ऐसी बुद्धि प्रकटहो जो १४ पूर्व के पढनेवाले ने सूक्ष्म तत्व का विचार अवगाहन में एक पद कहा तिससे निःसन्देह निरूपण करे ।

(१७) प्रत्येक बुद्धि ऋद्धि--परके उपदेश बिनाही अपनी शक्तिके विशेष ज्ञान संयमके विधान में निपुणताहो

[१८] वादित्व ऋद्धि--जिसके प्रभावसे जो इन्द्रभी आकर वाद विवाद करे तो उसको निरुत्तर करे और वादी के दोषोंको जान जावे ।

(ख) अनऋद्धिप्राप्त आर्य्य ५ तरह के हैं ।

१ क्षेत्र आर्य्य काशी कोशलादि आर्यदेश में उत्पन्न हुये वह क्षेत्र आर्य हैं॥

२ जाति आर्य्य—इक्ष्वाकजाति भोज कुलादिमें उपजै वह जाति आर्य है।

३ क्षान्ति आर्य्य।

४ कर्म आर्य।

५ चारित्र आर्य।

कर्म आर्य तीन तरह के हैं।

[अ] सावद्य कर्म आर्य।

[आ] अल्प सावद्य कर्म आर्य।

[इ] असावद्य कर्म आर्य।

(अ) सावद्य कर्म आर्य छह तरह के हैं।

१ खड्ग धनुष आदि शस्त्र के चलाने में जो चतुर हों वह असि कर्म आर्य हैं।

२ जो आय व्यय के हिसाब रखनेमें चतुरहों मसि कर्म आर्य है।

३ खेती का काम करने वाले कृषी कर्म आर्य हैं।

४ चित्राम गणितादि कलोवों में चतुर हो वह विद्या कर्म आर्य है।

५ धोबी नाई लुहार कुंभार सुनार वगैरह शिल्प कर्म आर्य हैं।

६ व्योपार करने वाले वाणिज्य कर्म आर्य हैं।

(आ) अल्पसावद्य कर्म आर्य देश वृती श्रावक हैं।

(इ) असावद्य कर्म आर्य सकल वृती मुनि हैं वहही क्षान्ति कर्म आर्य हैं।

[५] चारित्र आर्य २ प्रकार के हैं।

(अ) अनभिगत चारित्र आर्य—चारित्र मोह के उपशमते बाहर के उपदेश तें चारित्र परिणाम जिनके होय

(आ) दर्शन आर्य ।

दर्शन आर्य १० प्रकार हैं।

(१) आज्ञा सम्यक्त्वान, सर्वज्ञ अरहन्त प्रणीत आगम की आज्ञा मात्र कारणते श्रद्धावान होय वह आज्ञा सम्यक्त्वान है ।

(२) मार्ग श्रद्धावान-निर्ग्रन्थ मोक्ष मार्गके दर्शनश्रवण मात्र वह श्रद्धावान होय ते मार्ग श्रद्धावान हैं।

(३) उपदेश रुचिवान-तीर्थंकर आदि के पुराणादि के उपदेशके निमित्तसे श्रद्धावान होय ।

(४) सूत्र सम्यक्त्वान--मुनिन के आचार सूत्र के श्रवण मात्रसे श्रद्धावान होय ।

(५) बीज रुचिवान-बीज पद रूप जो सूक्ष्म अर्थ ताके निमित्त से श्रद्धावान होय।

(६) संक्षेप रुचिवान-जीवादि पदार्थकासंक्षेप उपदेश से श्रद्धावान होय।

(७) विस्तार रुचिवान-अङ्गपूर्व में जैसे कहे तैसे विस्तार रूप प्रमाण नयादिक से निरूपण किये जो तत्वार्थ तिनके श्रवणसे श्रद्धावान होय ।

[८] अर्थ दर्शनवान--वचनके विस्तार सुनाये बिना अर्थ के ग्रहणसे श्रद्धावान होय ।

[९] अवगाढ़रुचिवान द्वादशांग के जाननेसे श्रद्धा वान होय।

[१०] परमावधि गाढ़रुचिवान--परमावधि केवलज्ञान दर्शन से जीवादि पदार्थन कों जाने जो आत्मा उज्ज्वल श्रद्धान रूप भया वह।

(७७४) कर्म भूमि की रचना कहां २ है और कर्म भूमि किसको कहते हैं

उ० ५ पांच भरत
५ पांच ऐरावत
५ पांच बिदेह

ऐसे पंदरा क्षेत्रोंमें कर्मभूमि हैं (कर्म करने से क्षुधादिक निवारना) जहां असि १ मसि २ कृषि ३ सेवा ४ वाणिज्य ५ शिल्प ६ ऐसे छः तरहके कर्म करें वोह कर्म भूमि है या शुभ अशुभ कर्म जहां उपार्जन करें अर्थात जहां शुभ कर्म तो ऐसा करसके कि तीर्थंकर पदवी तक प्राप्त करसकें और अशुभ कर्म ऐसा कर सके कि सातवें नर्क तक जा सके।

(७७५) ज़्यादा से ज़्यादा और कम से कम आयु आदमी की कितनी है।

उ० ज़्यादा से ज़्यादा मनुष्यों की आयु तीन पल्य की है। कम से कम अन्तर्मुहूर्त की है।

(नोट १) अन्तर्मुहूर्त-दो घड़ी के अन्दर जो होवें, मुहूर्त दोघड़ी को कहते हैं
(नोट २) पल्य का विस्तार गणित विस्तार से जानना।

(७७६) तिर्यंच की आयु ज़्यादा से ज़्यादा क्या है और कम से कम क्या है।

उ० कमसे कम दो घड़ी के अन्दर की (अन्तर्मुहूर्तकी है) और ज़्यादा से ज़्यादा तीन पल्यकी है।

अष्टम अध्याय (स्वर्गलोक वर्णन)

(७७७) देव कै क़िस्म के हैं

उ० चार तरह के है

1. भवन वासी ।
2. व्यन्तर ।
3. ज्योतिषी ।
4. वैमानिक ।

(७७८) उन देवों के क्या २ रंग हैं कौन २ सी लेश्या है

उ० भवनवासी १ व्यन्तरी २ और ज्योतिषी ३ तिन के

1. कृष्ण लेश्या ।
2. नील लेश्या ।
3. कापोत लेश्या ।
4. पीत लेश्या है ।

(७७९) हरेएक क़िस्म के देवो की कै२ क़िसम है

उ० १ भवनवासी देव दश तरह के हैं

२ व्यन्तर वासी आठ तरह के है

३ ज्योतिषी ५ तरह के होते हैं

४ कल्पवासी (स्वर्ग में रहनेवाले देव) बारह तरह के हैं

(७८०) कौन २ देवो में कौन २ भेद नहीं है

उ० १ व्यन्तर वासी देवों में

२ और ज्योतिषी देवों में

१ त्रायस्त्रिंशत् मंत्री पुरोहित वग़ैरह ३३ देव-

२ लोकपाल कोटवाल

यह दो भेद नहीं हैं—

(१८१) इन्द्र कितने हैं और किन २ में है

उ० कुल इन्द्र सौ हैं सो मनुष्य तिर्यंचों सहित है और देवों में ९८ इन्द्र हैं
भवनबासी देवों में दो २ इन्द्र है
दस तरह के भवनबासी देव दो २ इन्द्र दो २ प्रतीन्द्र इसतरहपर चालीस हुवे, व्यन्तर बासियों में भी दो २इन्द्र है इनमें ३२ इन्द्र हैं
कल्पबासी देवों में एक इन्द्र एक प्रतींद्र ऐसे २४ इन्द्र हैं और ज्योतिष जाति के देवों में २ इन्द्र ही हैं चंद्रमा इन्द्र है और सूर्य प्रतींद्र है कुल ९८ इन्द्र हैं।

(१८२) किस २ जगह के किस २ क़िस्म के देवों में मनुष्य के मुवाफ़िक़ काम सेवन होता है

उ० पहले दूसरे स्वर्ग के भवन बासी व्यंतर और ज्योतिषी तीन प्रकार के देवों के मैथुन (काम सेवन) मनुष्यों के मुवाफ़िक़ हैं

(१८३) किस २ स्वर्ग में सिर्फ़ छूनेहीसे काम की ख़्वाहिश पूरी होजाती है।

उ० तीसरे चौथे स्वर्ग में (अर्थात् सनत्कुमार और महेंद्र में) देव और देवांगना के शरीर से शरीर छूनेसेही तृप्ति होजाती है
पांचवें छठें सातवें आठवें स्वर्गों में देव देवांगना के शृंगार रूप बिलास चतुराई मनोग्य भूषणादिके देखने से ही प्रसन्न होजाते हैं देवांगना देवों की रूपलावण्यता देखकर तृप्त होजाती हैं इसी तरह नौमें से बारवें तक देव देवी आवाज़ गानादि सुनकर तृप्त होते हैं आगे तेरवें से

सोलवें तक मनमें विचार से ही प्रसन्न होजाते हैं ऐसे सोलह स्वर्गों का काम सेवन जानो।

(४) कोन २ जगह में काम की ख्वाहिश बिलकुल नहीं होती।

उ० स्वर्गों के ऊपर नवग्रैवेयकों के ३०९ विमान और नव अनुदिश विमान तथा पांच अनुत्तर विमान इन सब के रहने वाले देव (अप्रवीचारः) कामसेवन रहित हैं।

(५) भवनवासी देवों की क़िस्में बताओ

उ० दश क़िस्म के हैं

१ असुर कुमार।
२ नाग कुमार।
३ विद्युत कुमार।
४ सुवर्ण कुमार।
५ अग्नि कुमार।
६ वात कुमार।
७ स्तनित कुमार।
८ उदधि कुमार।
९ द्वीप कुमार।
१० दिग् कुमार।

—यह भवनवासी आभूषण शस्त्र सवारी खेल क्रीड़ा वगैरह से बालक की तरह सोहते हैं इसवास्ते इनको कुमार कहते हैं।

(६) व्यन्तरों की क़िस्में बतलाओ

व्यन्तर—विविध देशों में जिनका रहना हो वह व्यन्तर कहलाते हैं उनकी आठ क़िस्म हैं।

१ किन्नर ।
२ किंपुरुष ।
३ महोरग ।
४ गंधर्व ।
५ यक्ष ।
६ राक्षस
७ भूत ।
८ पिशाच ।

(नोट) इन देवों के वास्ते अन्य मत वाले मांस वगैरह का खाना मनु को खाना, इत्यादि कहते है वह सब बहुत असत्य यह देव वैक्रिय देह के धारी पवित्र उज्वल महासुन्दराकार शराब मांस खाना कहना महा पाप कर्म का बंध करना है।

(७८७) ज्योतिष के देवों की कौन २ किसम है ।

उ० पांच क़िस्म है ।
१ सूर्य ।
२ चन्द्रमा ।
३ ग्रह ।
४ नक्षत्र
५ तारा ।

(नोट) इन देवों का जोति स्वभाव है इस वास्ते जोतिष जाति के इसपृथ्वी से सात सै नब्बे योजन पर इनका निवास है सब नीचे तारावों के विमाण है तारावों से दश योजन ऊपर सूर्य का विमान है सूर्य से अस्सी योजन पर चंद्रमा का विमान है उससे तीन योजन पर नक्षत्रों का विमाण है उससे तीन योजन पर बुधका, ऊपर तीन योजन जाके शुक्रका ऊपर तीन योजन बृहस्पति का बाद चार योजन ऊपर मंगल का इससे चारयोजनऊपर शनिश्चरका है इस तरहपर एकसौ दश योजन आकाश में जानना ।

:) यह सब किसचीज़ के गिरद फिरते हैं।

यह जोतिषी देव मेरु पर्वत के गिरद निरंतर फिरते रहते हैं।

मेरु को ग्यारह सौ इक्कीस योजन छोड़ कर चौतरफ़ फिरते हैं।

क्यों फिरते हैं और उससे क्या फायदा होता है

इन जोतिषी देवों के विमानों में लगे हुवे देवों का स्वभाव ऐसाही है जो हरवक्त विमान को लिये हुवे फिरते रहते हैं यह चमक विमाणों में जोति जाति के परमाणुवों की है इनके फिरने से समय अर्थात दिन, रात्रि, आदि का प्रकाश होता है।

किस जगह सूर्य चंद्रमा नहीं फिरते।

मनुष्य लोकसे बाहर नहीं फिरते सिर्फ़ अढ़ाई द्वीप में फिरते हैं।

:) विमान कै क़िस्म के हैं और उनके नाम क्या२ हैं वैमानिक देव कै क़िस्म के हैं

विमाण तीन क़िस्म के हैं।

१ इन्द्रक।

२ श्रेणी बद्ध

३ पुष्प प्रकीर्णक।

दो क़िस्म के वैमानिक देव हैं

१ कल्पोपन्न--सोधर्मादि १६ स्वर्गों के विमानों में इन्द्रादिक १० प्रकार के देवों की कल्पना संभव है इसकारण इन विमानों की कल्प संज्ञा है—कल्पों में उत्पन्न हो उन्हें कल्पोपन्न कहते हैं।

२ कल्पातीत-जिन बिमाणों में इन्द्रादिक की कल्पना नहीं है ऐसे ग्रैवेयकादिकोंको कल्पातीत कहते हैं।

(१६२) यह विमान बराबर २ हैं या ऊपर नीचे है।

उ० यह विमाण ऊपर २ हैं

दो २ का युगल है और आठ युगल सोलह स्वर्गों के दक्षिण उत्तर दिशा में हैं॥

और नवग्रैवेयक के नौ विमाण ऊपर २ हैं नौ अनुदिश के तीन २ बराबर होने से तीन युगल हैं।

और विजयादिक पांच बिमाण का एकही छत है

(१६३) सोलह स्वर्ग के नाम बतावो और उनमें कौन रहता है।

उ० १ सौधर्म

२ ईशान।

३ सनत्कुमार।

४ माहेंद्र।

५ ब्रह्म।

६ ब्रह्मोत्तर।

७ लांतव।

८ कापिष्ट।

९ शुक्र।

१० महा शुक्र।

११ सतार।

१२ सहस्रार।

१३ आनत।

१४ प्राणत।

१५ आरण ।

१६ अच्युत ।

इन में कल्पोपन्न और कल्पातीत देव रहते हैं जितना जितना ज़्यादा पुण्य संचय किया है धर्म सेवन किया है उतनेही ऊपर२ पैदा होते हैं ।

(१९४) यह देव किस बात में एक दूसरे से ज़्यादा है।

उ० १ स्थिति--आयु ज़्यादा २ है

२ प्रभाव--दूसरे के उपकार करने या बुरा करनेकी ताक़त

३ सुख-इंद्रिय सुख विषय भोगना ।

४ द्युति--वस्त्र आभूषण की दीप्त ।

५ लेश्या--कषाय सहित योगों की विशुद्धि उज्ज्वलता

६ विशुद्धिइन्द्रिय निषय--विषय का जानना

७ अवधि--अवधिकर द्रव्य क्षेत्र कालभाव रूप विषय का जानना इनकर एकदूसरे ज़्यादा२ है

(१९५) देव किस २ चीज में एक दूसरे से कम है

उ० १ गति--गमन ।

२ शरीर--ऊपर २ शरीर छोटा २ है

३ परिग्रह--परिवार देवांगना वग़ैरह कम हैं

४ अभिमान--कषाय थोड़ा हैं

इनसे ऊपर २ कमी होती चली जाती है ।

(१९६) इनका रंग कैसा है इन स्वर्गों के देवों की कैसी २ लेश्या हैं ॥

उ० चार स्वर्गों में पीत लेश्या है ।

चार से आगे दश तक पद्म लेश्या है ।

दशसे सोलह स्वर्ग तक शुक्ल लेश्या है ।

(१९७) ग्रैवेयक किसको कहते हैं।

उ० सोलह स्वर्गों के ऊपर जो नौ विमाण हैं उनको ग्रैवेयक कहते हैं (ग्रीवा नाड़ को कहते हैं लोकका पुरुषकासा आकार है तहां नाड़ के नीचे २ तो स्वर्गोंकी रचना है और ग्रीवा (नाड़ या गले) की जगह नौ विमाण हैं वे ग्रैवेयक कहलाते हैं।

स्वर्गों के ऊपर यह सब विमाण कल्पातीत कहलाते हैं।

(१९८) लौकांतिक देव किसको कहते हैं और वोह कहा रहते हैं।

उ० ब्रह्मलोक (पांचवां स्वर्ग) के अन्त में जो रहैं वे लोकांतिक देव है।

या-जन्म मरण करि सहित जो लोक सो जिनके अन्तको प्राप्तहोजाय अर्थात् दूसरे भवसे मनुष्य जन्म धारण करके मोक्षही जाय वे लोकांतिक हैं यह सब पांचवें स्वर्ग में रहते हैं

(१९९) लौकांतिक देवों की कै क़िस्म हैं उन के नाम बतावो।

उ० १ सारस्वत।

२ आदित्य।

३ वह्नि।

४ अरुण।

५ गर्दतोय।

६ तुषित।

७ अव्याबाध

८ अरिष्ट।

ये ८ प्रकार के लौकान्तिक देव हैं

(२००) कौन कौन से देव द्विचरमी होते हैं और द्विचरमी किसको कहते हैं

उ० विजयादि विमाणवाले द्विचरमी अर्थात् दो मनुष्य के

भव लेकर मोक्षमें जानेवाले होते हैं।

विमाणों के नाम।

१ विजय।

२ वैजयन्त।

३ जयन्त।

४ अपराजित।

५ सर्वार्थ सिद्धि।

(८०१) कौन से दैव एकाभवतारी होते हैं और कौन चर्म शरीर होते हैं

उ० विजयादिक चार विमानों के दैव, चर्म शरीरी होते हैं अर्थात दो भव मनुष्य जन्म धारण करके मोक्ष जाते हैं और सर्वार्थ सिद्धि के दैव एका भवतारी होते हैं अर्थात एकभव मनुष्य धारण करके मोक्षप्राप्त करते हैं।

८०२ तिर्यंच गति में कौन से जीव हैं।

उ० देवनारकी मनुष्य।

इनतीनों गति के सिवाय सबजीव तिर्यञ्च योनि में हैं

८०३) असुर कुमार वग़ैरह की किसक़दर आयु है॥

उ० भवनवासी देव जो दश तरह के हैं उनमें असुर कुमारों की एक सागरकी आयु है।

नागकुमारोंकी तीन पल्य की है—सुपर्ण कुमारों की अढ़ाई पल्य की है—द्वीप कुमारोंकी दो पल्यकी है।

बाक़ी--सबकी डेढ़ २ पल्यकी आयु है इसप्रकार भवन वासी देवों की उत्कृष्ट आयु है।

८०४) सौधर्म और ईशान के देवों की किसक़दर आयु है।

उ० १ सौधर्म स्वर्ग के देवों की।

२ ईशान स्वर्ग के देवों की आयु।
दो सागर से कुछ अधिक है

(८०५) सनत्कुमार और माहेंद्र स्वर्ग के देवों की किसकदर है कासा
उ० सनित्कुमार और माहेंद्र स्वर्ग की सात से
अधिक है।

(८०६) बाकी स्वर्गों में कितनी आयु है।
उ० ब्रह्म ब्रह्मोतर में दश सागर से कुछ अधिक है।
लांतव कापिष्ट में चौदह सागर से कुछ अधिक
शुक्र महाशुक्र में सोलह सागर से अधिक है
सतार सहस्रार में अठारह सागर से अधिक है आनत
प्रानत में बीस सागर से अधिक नहीं है आरण अच्युत
में बाईस सागर से अधिक नहीं है।

(८०७) नवग्रैवेयकवगैरह में कितनी आयु है।
उ० नवग्रैवेयक में एक २ सागर बढ़कर है याने
ग्रैवेयक में तेईस सागर की दूसरे में चौबीस
तीसरे में पचीस की इस तरह एक २ सागर
नवे में ३१ की है।
नौ अनुदिशमें एकही सागर ज़्यादा बत्तीस सागरकी है
विजय, बैजयन्त, जयन्त, अपराजित, और सर्वार्थ
सिद्धिमें उत्कृष्ट३ सागर की आयु है।

(८०८) सौधर्म ईशान में कम से कम कितनी आयुहै।
उ० पहले दूसरे स्वर्ग में कम से कम एक पल्य से कुछ
अधिक है।

एक स्वर्ग में कमसे कम कितनी आयु है।

[illegible]र स्वर्गों में पहले २ जुगल की उत्कृष्ट आयु
२ युगल में जघन्य है जैसे पहले दूसरे स्वर्ग
[illegible]ो दो सागर की है तो तीसरे चौथे स्वर्ग में वोह
[illegible]न्य आयु है इसीतरह आगे सबमें जानो।

[illegible] नर्क में कम से कम कितनी आयु है।

पहले नर्क में कमसे कम दश हज़ार वर्ष की आयु है

दूसरे से लेकर सातवें नर्क तक हर एक में कमसे कम कितनी आयु है

जो पहले नर्क में उत्कृष्ट है दूसरे में वोह जघन्य है
[illegible]तरह सातों में जानो।

[illegible]न बासियों की कम से कम कितनी आयु है

[illegible]वनवासी देवों में भी कमसे कम दश हज़ार वर्ष
की आयु है।

[illegible]न्तर देवों की कमसे कम कितनी आयु है।

(८०३) [illegible] देवोंकी कमसे कम आयु दश हज़ार वर्षकीहै।

उ० [illegible] प्रकार के देवों में किस २ नाम से भेद होता है।

[illegible]के दश भेद होते हैं।

[illegible] औरों से असाधारण गुण अणिमादिक ऋद्धि
सहितहो, इन्दति बहुत घनसंपदा, ईश्वरता जिस में
हो वह इन्द्र है।

२ सामानिक देव—हुक्म मालिकपना जिन का इन्द्र
के बराबर नहीं परन्तु उमर, बल, परिवार, भोग
वग़ैरह इंद्र के बराबर हो गरु उपाध्याय समान गिने
जावें, उनको सामानिक देव कहते हैं।

३ त्रायस्त्रिंशत्--तैंतीस देव ऐसे होते हैं जो मंत्री पुरोहित की जगह कामकरनेवाले ।

४ पारिषददेव--सभा में बैठनेवाले ।

५ आत्मरक्ष-सुभट, शस्त्रधारी रक्षक ।

६ लोकपाल--हाकिम फौजदार देव ।

७ अनीक-पयादा, अश्व, वृषभ, रथ, हस्ती गंधर्व नृत्यकी यह सात प्रकार की सेना के देव हैं ।

८ प्रकीर्णक देव-नगर में रहने वाले जैसे व्योपारी जन

९ अभियोग्य-सेवा करने वाले नौकर दास वगैरा

१० किल्पिशजाति के देव-चांडाल भंगी समानजो में नहीं आसक्ते ।

नोट—यदि देवों में घातादिक नहीं हैं तथापि ऋद्धि विभवकी के लिये इसप्रकार के भेद हैं ।

इति प्रश्नोत्तर श्रीसर्वार्थसिद्धीसमाप्तम् शुभम् ।